सुप्रसिद्ध भाषाविद्

डा० उदयनारायण तिवारी

(व्यक्तित्व और कृतित्व)

डा० शिवगोपाल मिश्र

सुप्रसिद्ध भाषाविद्

डा० उदयनारायण तिवारी

(व्यक्तित्व और कृतित्व)

लेखक
डॉ० शिवगोपाल मिश्र
25, अशोक नगर,
इलाहाबाद-1
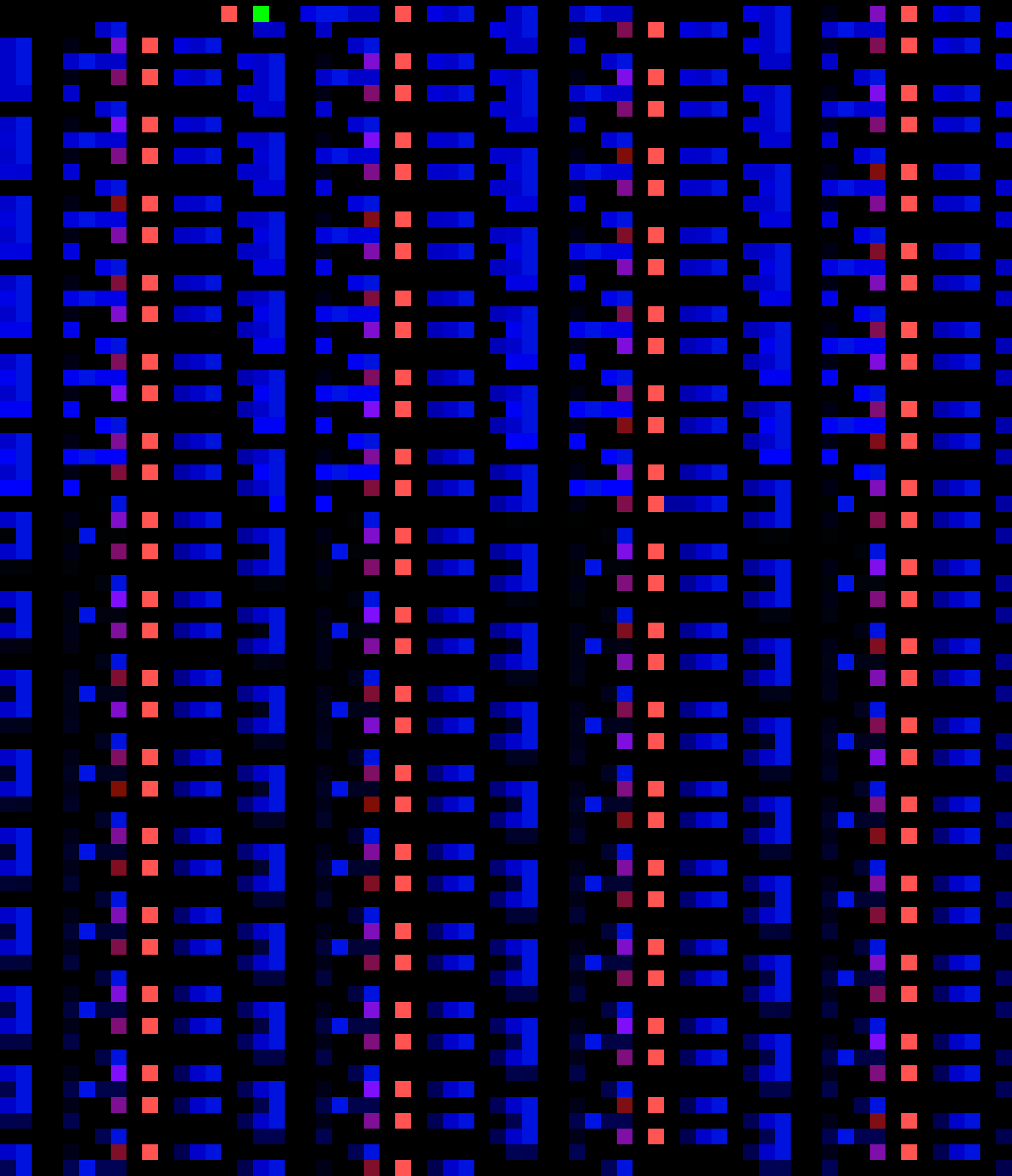
लेखक तथा प्रकाशक :
डा0 शिवगोपाल मिश्र
25, अशोक नगर,
इलाहाबाद

कम्प्यूटर कम्पोजिंग :
त्रिवेणी कम्प्यूटर्स
अल्लापुर, इलाहाबाद
फोन-2500507

आवरण तथा चित्र सज्जा :
चन्द्रा आर्ट
20/17, तालाब नवल राय, नया बैरहना
इलाहाबाद-211 003
फोन-2558001

मुद्रक :
नागरी प्रेस
91/186, अलोपीबाग,
इलाहाबाद-211 006
फोन-2502935 2500068

भूमिका

जब डॉ0 तिवारी अपना उच्च अध्ययन समाप्त करके इलाहाबाद के दारागंज स्कूल मे अध्यापन कर रहे थे, तब मेरा जन्म हुआ। अपने से इतने ज्येष्ठ पुरुष की जीवनी लिखना दुस्साहस नही तो क्या है? आज उनके अधिकांश मित्र तथा प्रशंसक नही रहे अत' यदि जीवनी लिखने का कोई साधन बचा है तो मात्र उनकी डायरियॉ तथा पुस्तके है, जिनके माध्यम से उनके विषय मे कुछ उलझे तारो को सुलझाया जा सकता है।

हॉ, मुझे इतना सौभाग्य अवश्य प्राप्त है कि मै 34 वर्षो तक उनके सम्पर्क मे रहा मैने उन्हे पास से देखा और समझा भी। यही नहीं, उनकी जिन प्रमुख व्यक्तियों से घनिष्ठता थी, यथा महापंडित राहुल सांकृत्यायन, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, प0 श्रीनारायण चतुर्वेदी, डॉ0 बाबूराम सक्सेना, प0 क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय, उनसे भी मैं परिचित था।

मुझे यह भी सौभाग्य प्राप्त है कि मैं उनका जामाता बना। किन्तु मैं इसके पूर्व से उनसे परिचित था उनके सम्पर्क से ही भाषा विज्ञान के प्रति मेरा झुकाव हुआ। मैने साहित्य महोपाध्याय के लिए उन्हे निर्देशक चुना था। विषय था "दक्खिनी हिन्दी का गद्य"। किन्तु दुर्भाग्यवश इस दिशा मे कार्य आगे बढ नही पाया। मेरी पत्नी श्रीमती रामकुमारी ने अपने पिता का अनुसरण करते हुए भाषा विज्ञान म शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की। इससे भी मैं भाषा विज्ञान से गहरे जुड़ा। जब तिवारी जी ने विदेश से वापस आकर आधुनिक भाषा विज्ञान पर शोध कार्य शुरू कराया तो उनके प्रिय शिष्य श्री महावीर सरन जैन से मेरी अन्तरगता हुई। इसी प्रकार मै अमर बहादुर सिंह के सम्पर्क मे आया तो आधुनिक भाषा विज्ञान की कुछ मुख्य बाते उनसे समझी।

डॉ0 तिवारी ने इलाहाबाद से दूर जाकर कलकत्ता मे रहकर तुलनात्मक भाषा विज्ञान का अध्ययन उस समय के दिग्गजो के शिष्यत्व मे किया था। इनमे से डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या तथा डा0 सुकुमार सेन की प्रशंसा डॉ0 तिवारी के श्रीमुख से सुनता रहता था। सुनीति बाबू के दर्शन का सौभाग्य 1953 मे ही मिल चुका था जब मै निराला जी के अभिनन्दन मे उनके साथ कलकत्ता गया था।

डॉ0 तिवारी की मातृभाषा भोजपुरी थी, उसी पर उन्होने शोधकार्य भी किया। वे हिन्दी, संस्कृत पाली, उर्दू, ईरानी, अंग्रेजी के धुरन्धर विद्वान थे। (मै विज्ञान का छात्र, अवधी भाषा क्षेत्र से जुड़ा हुआ नवयुवक था।) डॉ0 तिवारी का बलिया के ग्रामीण क्षेत्र से निकलकर इलाहाबाद आना उनके लिए सभी प्रकार से लाभप्रद सिद्ध हुआ। उन्होने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त करके तुरन्त ही दारागंज हाई स्कूल मे अध्यापन कार्य शुरू किया। बी0 ए0 म उन्होने जितनी हिन्दी पढ़ी था उससे वे सन्तुष्ट नही थे अत स्वान्त सुखाय 'साहित्यरत्न' और फिर प्राइवेट रीति से हिन्दी म एम0 ए0 उत्तीर्ण किया और भाषा विज्ञान म शोध कार्य करने के अपने पूर्व सकल्प की दिशा मे अग्रसर हुए। गृहस्थ होते हुए भी उन्होने जिस तरह कलकत्ता मे रहकर भाषा विज्ञान तथा पाली मे उच्च डिग्रियाँ प्राप्त की और फिर भाषा विज्ञान मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी0लिट् डिग्री के लिए शोधकार्य शुरू किया, वह प्रशंसनीय है।

इलाहाबाद मे रहते हुए उन्होने अनेक साहित्यकारो के बीच अपना परिचय बढ़ाया और अन्त

मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे अध्यापक नियुक्त हुए। प्राय 15-16 वर्षों तक इस विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने के बाद वे जबलपुर विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर बन कर चले गये। किन्तु उनका अन्तिम समय इलाहाबाद मे ही बीता। उन्होने अलोपी बाग वाले किराये के मकान को खरीद कर उसे अपना कर लिया था। इसी मकान मे 1984 म इनका निधन हुआ। मै 1950 के बाद डॉ0 तिवारी के इलाहाबाद के जीवन का दर्शक एवं साक्षी रहा हूँ। जबलपुर भी दो बार गया — वहाँ उनकी लोकप्रियता तथा ख्याति की बानगी ले आया था। तब डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा डॉ0 राजबली पाडेय, डॉ0 पति वहाँ थे और अचल जी चर्चा मे थे।

डॉ0 तिवारी का परिवार भरा पूरा था — दो पुत्र और चार पुत्रियाँ थी। बहुत दिनो तक उनके माता पिता तथा पितृव्य जो भी जीवित रहे जो कभी-कभी इलाहाबाद आते रहते थे। यही नही पूरा इलाहाबाद उनका परिवार बन चुका था। शायद ही कोई ऐसा छात्र या साहित्यकार रहा हो, जो डॉ0 तिवारी को न जानता रहा हो। इसका कारण था, उनकी सादगी, उनकी सहजता मिलनसारता, उनकी मृदुभाषिता, उनकी भारतीय वेशभूषा, कुर्ता धोती पहने, सिर मे चोटी रखे, हाथ मे प्राय छाता लिए, कभी पैदल तो कभी रिक्शे पर शहर के भीतर या विश्वविद्यालय तक जाना और भोजपुर क्षेत्र के लोगो से भोजपुरी मे वार्तालाप, ईश्वर चन्द्र विद्या सागर जैसा व्यक्तित्व-सादगी की प्रतिमूर्ति पाण्डित्य का भडार। अभिमान उन्हे छू तक नहीं गया था। चाहे घर हो या विश्वविद्यालय का क्लासरूम-सर्वत्र ही वे किसी भी छात्र से या अपने परिचित से बाते करने मे कोई हिचक नही दिखाते थे। वे किसी की भी सहायता करने के लिए तुरन्त चल पड़ते थे। उनमे लडकियों (छात्राओं) के प्रति विनम्रता थी। वे स्त्री शिक्षा के समर्थक थे। वे रुष्ट भी बाते थे लेकिन उपहासपूर्ण हँसाते या सुनते रहते। बोलते तो मधुर वचन ही। तिवारी जी की स्मरणशक्ति अच्छी थी। घटनाओ का वर्णन, प्राय भाषा विषयक चर्चा या फिर धार्मिक चर्चा-निन्दा रस से दूर। सरल स्वभाव के कारण उन्होने तमाम तरह की झझटें पाल रखी थी।

सभा-सोसाइटियो म समय से पहुँचना और अवसर के अनुसार बोलना, प्राय सस्मरण सुनाना तिवारी जी की विशेषता थी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्यो के लिए राजर्षि टडन से प्राय मिलना, राजा मुन्नजा और भइया जी (प0 श्रीनारायण चतुर्वेदी) से भी कुछ स्कूलो की व्यवस्था के विषय में विचार-विनिमय के लिए जाना — उनकी व्यस्तता को बढाने वाले होते जिसका उनकी पत्नी प्राय विरोध करती। डॉ0 तिवारी भोजपुरी परिषद एव लिंग्विस्टिक स्टडी सर्किल के उत्सवो मे शरीक होते रहे। वे प्राय नगर की साहित्यिक सस्थाओं मे अतिथि बनकर जाते। 'निराला परिषद' की बैठको मे वे अवश्य सम्मिलित होते थे किन्तु दारागज में भइया जी की बगिया मे उनका जाना सुनिश्चित था। जैसे ही भइया जी लखनऊ से इलाहाबाद आते, सदेशा आता और तिवारी जी वहाँ जाते। रास्ते से प्रभाकर ठाकुर, व्रजभूषण शुकुल को भी साथ ले लेते। रात मे देर से लौटते-कभी पैदल किन्तु प्राय रिक्शे पर। वे दारागज जायें और निराला जी से न मिलें — ऐसा कभी नही हुआ। वे ठाकुर कमला शकर सिंह से भी बाते करते। जबलपुर से लौटने के कुछ वर्षो बाद यदि उन्हे शहर से बाहर जाना होता तो अपने शिष्य आत्माराम जी को बुला लेते और उन्हे अपने साथ ले जाते। वे उनका सारा व्यय वहन करते। वे रुपया-पैसा रखने मे बहुत ही शिथिल थे।

डॉ0 तिवारी का अपने प्रकाशको से मधुर सम्बन्ध था। 'भारती भडार' के वाचस्पति पाठक जी तथा विन्दा ठाकुर से तो उनकी अंतरगता थी। रामनारायण लाल एण्ड सन्स के प्रह्लाद दास भी तिवारी जी को बहुत मानते थे। 'लोकभारती' के दिनेश तथा राधे मोहन चोपडा भी तिवारी जी का सम्मान करते थे। जब भी वे दिल्ली जाते तो मोती लाल बनारसीदास के यहाँ रुकते। एक बार

जब मैं दिल्ली में कार्यरत था तो उनसे भेंट करने मोती लाल जी के यहाँ गया था, रात भर वहीं रुका भी था।

कलकत्ते में अध्ययन के दौरान इण्डियन प्रेस इलाहाबाद के पटल बाबू ने डॉ0 तिवारी के रहने की व्यवस्था की थी जो सम्भवतः 'भइया जी' के कारण सम्भव हुआ होगा।

जब डॉ0 तिवारी विदेश जाने लगे तो उन्होंने पहली बार पाइंट-कोट बनवाया और आधुनिक बन गये। वैसे जाड़ों में वे बन्द गले का कोट पहनते थे। कभी-कभी टोपी भी लगाते। घर में पूजा के समय खड़ाऊँ पहनते। वे दुर्गा सप्तशती का पाठ करते और अनेक व्रत यथा रामनवमी शिवरात्रि का व्रत रखते थे। वे गंगास्नान करने भी जाते। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर वे अपने गुरु डॉ0 बाबूराम सक्सेना का दर्शन करने अवश्य जाते। एक बार तो रिक्शे से गिर भी पड़े थे।

तिवारी जी की पत्नी अत्यधिक धार्मिक थीं। उनके अनुरोध पर अपने शिष्यों के साथ बद्रीनाथ केदारनाथ तथा रामेश्वरम् की यात्राएँ कीं। उन्होंने एक तोता भी पाल रखा था। वैसे डॉ0 तिवारी गोभक्त थे — उनके घर पर बहुत समय तक गाय थी। जब वे जबलपुर जाने लगे तो उसे मवेशी स्कूल में भेज दिया था।

डॉ0 तिवारी नित्य प्रातः 4 बजे ही जग जाते और शौचादि से निवृत्त होकर व्यायाम, ध्यान करते। फिर अपने साथियों के साथ दूर-दूर तक भ्रमण करते। लौटकर चाय पीते और फिर थकान मिटाने के लिए विश्राम करते और तब अखबार पढ़ते।

डॉ0 तिवारी को डायरी लिखने का शौक था। वे नित्य ही शाम को दिन भर की चर्या लिख डालते। तिवारी जी का हस्तलेख बहुत ही सुन्दर होता। वे फाउंटनपेन से लिखते। इससे लिखावट में एकरूपता बनी रहती। वे पत्रों का उत्तर अवश्य देते– प्रायः पोस्टकार्ड या इनलैंड पर। वे पुस्तकों का प्रूफ देखने में पटु थे, कारण कि पहले से राहुल जी की पुस्तकों का प्रूफ 1935 से 1950 तक देखते रहे थे। डॉ0 तिवारी परम वैष्णव एवं शाकाहारी थे। दूध, मट्ठा, दही उन्हें अतिप्रिय था।

उनकी पत्नी 1968 से ही अस्वस्थ थीं तथा बिस्तर पर पड़ी रहतीं। उन्हें दवा देते, कभी-कभी भोजन भी पकाते। उनकी नौकरानी बल्लो सामने ही रहती थी, वह माता जी (उनकी पत्नी) की सेवा-सुश्रूषा में हाथ बँटाती रही। तिवारी जी बाहर के कमरे में चौकी पर बैठते, उसी में बैठकर लिखते, उसी में आगन्तुकों से मिलते और उसी में सोते रहे। उसी कमरे से लगी गोलकी (पुस्तक कक्ष) में उनकी सारी पुस्तकें रहतीं। भेंट में आने वाली पुस्तकें चौकी पर बिखरी रहतीं। बाद में उन्होंने स्टील की अल्मारियाँ खरीद लीं तो महत्वपूर्ण भाषा विज्ञान की पुस्तकों को उन्हीं में रखवा दिया।

उन्हें अखबार पढ़ने का शौक था, अंग्रेजी हिन्दी, दोनों के अखबार आते थे। कभी-कभी इनके लिए सामयिक लेख, संस्मरण भी लिखते रहे।

जब रेडियो स्टेशन जाना होता तो वहाँ से वाहन आता। रेडियो वालों के लिए वे पूरी तैयारी करते। एक बार घड़ी देखकर उसे पढ़ भी लेते थे।

अध्यापक होने के कारण तिवारी जी के पास साल भर विभिन्न विश्वविद्यालयों की उत्तर पुस्तिकाएँ मूल्यांकन के लिए आती रहतीं। उनको जाँचने, अंक चढ़ाने, अंक भेजने के लिए सीलबन्द लिफाफा तैयार करने और पास के डाकखाने में पोस्ट करने में उनका काफी समय निकल जाता। उनके पास इंटर बोर्ड, सम्मेलन की भी उत्तर पुस्तिकाएँ आतीं। जब उन्हें टैबुलेशन का कार्य मिलता तो यदा-कदा मेरी या अन्य किसी परिचित की सहायता लेते थे।

लोक सेवा आयोग का भी कार्य तत्परता से निपटा लेते थे। अन्तिम कुछ वर्षों तक भी बिहार, बंगाल, मध्य प्रदेश, हरियाणा आदि से मूल्यांकन हेतु शोध प्रबन्ध आते ही रहते। कभी कभी मुझे भी दिखाते। वे पूरा शोध प्रबन्ध पढ़कर तब विस्तृत रिपोर्ट हाथ से लिखते और आवश्यकता पड़ने पर मौखिक परीक्षाएँ लेने जाते। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के कुछ छात्रों के डी0 फिल गाइड भी रहे। अन्तिम वर्षों में हम लोग उन्हें ज्यादा यात्राएँ करने से मना करते किन्तु वे मानते नहीं थे।

वे अपनी आय का पूरा हिसाब रखते और आयकर जमा करते।

वे अन्तिम समय में ग्रियर्सन की पुस्तक का अनुवाद कर रहे थे। इसके लिए मुझसे सूफी कवियों पर एक विवरण लिखने को कहा था। उन्होंने एक लिपिक रख लिया था, जो उनके द्वारा बोले गये वाक्यों को लिखता जाता था।

वे स्वास्थ्य के मामले में आजीवन सतर्क रहे, फिर भी जुकाम-खाँसी से पीड़ित होते तो होमियोपैथिक दवाओं पर ज्यादा विश्वास करते। अन्त समय में वे गठिया से पीड़ित हुए तो घूमना कम कर दिया। अपनी पत्नी की रुग्णता के कारण वे एक तरह से घर में आबद्ध हो चुके थे।

बीच-बीच में उनके भाई विश्वनाथ या बलिया से परिचितजन आते रहते। वे अपने परिचितों का भरपूर आतिथ्य करते, चाहे परशुराम चतुर्वेदी हों, कृष्णदेव उपाध्याय हों, राहुल जी हों, भदन्त आनन्द जी हों या कि रामसिंहासन लाल, पहाड़िया बाबा आदि। उन्होंने अपने पुत्रों / पुत्रियों की शिक्षा-दीक्षा का पूरा-पूरा ध्यान रखा किन्तु उन्हें मन के अनुसार कार्यक्षेत्र चुनने की अनुमति दे दी थी।

उनके शती वर्ष पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर यह पुस्तक लिखकर मैं श्रद्धासुमन अर्पित कर रहा हूँ।

मैं नहीं जानता कि इस भाषाविद् के विषय में हिन्दी के विद्वानों ने क्यों मौन साध रखा है। आशा है मेरी इस शोधपरक सामग्री से भावी जिज्ञासुओं के लिए प्रकाश की किरण मिल सकेगी।

इलाहाबाद — शिवगोपाल मिश्र

28-7-2003

डॉ0 उदयनारायण तिवारी

जन्म स्थान	बलिया जनपद का पाण्डेयपुर ग्राम।
जन्म तिथि	2 जुलाई 1903 (प्रमाण पत्र मे 1 जुलाई 1905)
प्रारम्भिक शिक्षा	1914-1918 हिन्दी मिडिल स्कूल, तहसील बलिया
हाई स्कूल परीक्षा (स्कूल लीविंग सर्टीफिकेट परीक्षा)	1923 गवर्नमेंट हाई स्कूल बलिया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा भी उत्तीर्ण की।
इण्टरमीडिएट परीक्षा :	1925 कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद
बी0 ए0	1927 इलाहाबाद विश्वविद्यालय (अंग्रजी, हिन्दी अर्थशास्त्र लेकर)
एम0 ए0 (अर्थशास्त्र)	1929 इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अध्यापन कार्य

दारागज हाई स्कूल इलाहाबाद 22 जुलाई 1929 से 1945 तक

अध्यापन काल मे ही उच्च अध्ययन

एम0 ए0 (हिन्दी) 1932 आगरा विश्वविद्यालय

एम0 ए0 (पाली) ग्रुप संस्कृत 1939 कलकत्ता विश्वविद्यालय

एम0 ए0 (कम्परेटिव फिलालाजी) 1941 कलकत्ता विश्वविद्यालय

डी0 लिट् (भाषा विज्ञान) 1946 इलाहाबाद विश्वविद्यालय

विषय The Origin and Development of Bhojpuri

विश्वविद्यालयों में अध्यापन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय	हिन्दी विभाग मे लेक्चरर तथा रीडर पद पर 1945-1961
जबलपुर विश्वविद्यालय	प्रोफेसर (हिन्दी) दिसम्बर 1961 से जुलाई 1971
पुनः इलाहाबाद विश्वविद्यालय	यू0 जी0 सी0 प्रोफेसर जुलाई 1972 से जुलाई 1974 तक
पटना विश्वविद्यालय	एमेरिटस प्रोफेसर
वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय	अतिथि व्याख्यानदाता
मृत्यु	28 जुलाई 984 अलोपीबाग इलाहाबाद में

शोध निदेशक	डी0 फिल 35, डी0 लिट् 9
कृतियाँ	मौलिक 9, अनुवाद 4, सम्पादित 3, संकलन (पाठ्य पुस्तक) 1
निबन्ध	82 जिसमे से 12 अंग्रेजी मे

पुरस्कार/सम्मान

देव पुरस्कार 1955-56

बिहार सरकार द्वारा सम्मान 1959

भोजपुरी एकेडमी पटना द्वारा सम्मान

चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन, दिल्ली मे सम्मान (30 अक्टूबर 1983)

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान सम्मान (साहित्य भूषण) 1 फरवरी 1981 (यह सम्मान 31 मार्च 1981 को ग्रहण किया)

सदस्य/अध्यक्ष/आदि

1 आजीवन सदस्य लिग्विस्टिक सोसाइटी आफ इडिया, 1955 से
2 सदस्य लिग्विस्टिक सोसाइटी आफ अमरीका 1958-60
3 सदस्य लिंग्विस्टिक स्कूल आफ पटना 1955 से
4 आजीवन सदस्य हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद
5 कार्यकारिणी सदस्य - हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
6 कार्यकारिणी सदस्य साहित्य अकादमी, दिल्ली, 1968-73
7 सदस्य : वर्धा राष्ट्र भाषा प्रचार सभा
8 मन्त्री · उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन
9 साहित्य मन्त्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद (संवत 1990)
10 प्रधानमन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (संवत 2004)
11 अध्यक्ष लिंग्विस्टिक सोसाइटी आफ इडिया, 1963
12 सदस्य Association for National Integration भारतीय साहित्य भवन कलकत्ता
13 सदस्य (Board of Studies, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय 1968-70)
14 Subject Panel Linguist शब्दावली आयोग, 1968
15 साहित्य अकादमी मे भाषाओं को मान्यता देने वाला पैनेल 30 मार्च 1970

❑ ❑ ❑

विषय-सूची

1
जीवन वृत्त

बलिया जिले मे एक ग्राम है रघुनाथपुर पियरपांती। यह बलिया रेलवे स्टेशन से उत्तरपूर्व 2.75 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। वहाँ के एक सम्पन्न ब्राह्मण (तिवारी) परिवार मे गति तिवारी[1] के शिवपूजन तथा हनुमान प्रसाद नाम से दो पुत्र हुए। उनमें से शिवपूजन बडे थे (जिनका देहान्त 1949 मे हुआ)। हनुमान प्रसाद[1] का विवाह लाहेश्वरी देवी के साथ हुआ जिनसे उन्हे दो पुत्र तथा चार पुत्रियां प्राप्त हुई। पुत्रो के नाम थे—उदय नारायण तथा विश्वनाथ।[2] पुत्रियो के नाम थे —सामा, पार्वती, दलकेश्वरी तथा रामसखी।

उदय नारायण का जन्म उनके ननिहाल पाण्डेयपुर नामक ग्राम में 2 जुलाई, 1903 को अपराह्न (3-1/2 बजे) हुआ।[3]

ननिहाल में जन्म लेने के कारण उदयनारायण को नानी (सिमिरखा देवी) का अपार स्नेह प्राप्त था। नाना का स्वर्गवास हो चुका था। अभी वे 11 वर्ष के थे तभी उनका विवाह उनकी नानी ने जनेऊपुर ग्राम में माहेश्वरी नाम की कन्या के साथ कर दिया।

बालक उदय नारायण की प्रारंभिक पढाई 1914 मे बलिया के तहसीली हिन्दी मिडिल स्कूल मे शुरू हुई और 1918 मे उन्होंने हिन्दी मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। बलिया से ही 1923 में स्कूल लीविंग सर्टीफिकेट परीक्षा (हाई स्कूल) उत्तीर्ण की।

अब आगे की पढाई के लिए उन्हे 1923 मे इलाहाबाद आना पड़ा। यहाँ पर वह कायस्थ पाठशाला में भर्ती हो गये और अपने मित्रों के साथ रहने लगे। 1924 में वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पास बहादुरगंज मे रहते थे और सम्मेलन भवन से पुस्तके लेकर पढ़ते भी थे। मार्च 1924 मे साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन मे सम्मिलित होने दिल्ली गये। 1925 मे इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण की और फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बी० ए० प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया। उन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी तथा अर्थशास्त्र विषय चुने और 1927 मे द्वितीय श्रेणी में बी ए परीक्षा उत्तीर्ण की। बी ए के बाद एम ए में अर्थशास्त्र विषय चुनकर पढाई शुरू की। गणित अच्छी थी अत अर्थशास्त्र मे खूब मन लगा। उस समय सी. डी टामसन अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष थे। एम ए के अन्तिम वर्ष मे डिजर्टेशन (अधिनिबन्ध) लिखना पडता था, जिसके लिए तिवारी जी ने शीर्षक चुना "The scatteredness and smallness of holdings in three villages of Ballia Distt"। इसका पता उस प्रमाण पत्र से लगता है जो उनके विभागाध्यक्ष ने 8.5.1929 को दिया था। इस तरह तिवारी जी ने 1929 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. परीक्षा (अर्थशास्त्र) द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण की।

---

1. [illegible] गति तिवारी का पूरा नाम रामगति तिवारी था, वे ज्योतिष के विद्वान थे। हनुमान प्रसाद जी अधिक पढ़े लिखे न थे, उनका निधन 1959 मे हुआ। उनकी पत्नी का देहान्त उनसे 10 वर्ष पूर्व हो चुका था। [illegible] उनके पुत्र उन्हे काका और बडके काका को बाबूजी कहते रहे।
2. विश्वनाथ तिवारी अपने बडे भाई उदयनारायण के साथ रहकर इलाहाबाद मे बी ए, एम ए परीक्षाएं उत्तीर्ण की और बाद मे बलिया के सतीश चन्द्र डिग्री कॉलेज मे अध्यापक बन गये। बलिया मे रहते हुए वे [illegible] का प्रबन्ध भी देखते रहे।
3. हाईस्कूल के प्रमाण पत्र मे जन्मतिथि 1 जुलाई, 1905 दी हुई है किन्तु डा० तिवारी ने अपनी डायरी में 2 जुलाई 1903 को असली तिथि माना है।

विश्वविद्यालय मे प्रवेश लेन के पूर्व से ही (1925 से) वे दारागज म रहने लगे थे।[1] व स्वय भोजन पकाते थे।

सौभाग्यवश तिवारी जी को एम ए कर लेने के बाद ज्यादा परेशान नही होना पड़ा क्योकि 22 जुलाई, 1929 को ही उन्हे दारागज हाई स्कूल मे अध्यापन करने का अवसर प्राप्त हो गया। वे इतिहास तथा गणित पढाने लगे।[2] 1930 मे प श्री नारायण चतुर्वेदी ने तिवारी जी से कहा "तुम ट्रेनिंग कर लो, मैं तुम्हे ट्रेनिंग कालेज मे भर्ती करा दूँगा, तुम गवर्नमेंट कालेज के अध्यापक और फिर धीरे-धीरे डिप्टी इन्स्पेक्टर बन सकोगे। किन्तु तिवारी जी न कहा "मै सरकारी सेवा से विरत रहने का व्रत ले चुका हूँ। अतः स्वराज्य मिलने पर भी सरकारी सेवा नही करूँगा।" जब चतुर्वेदी जी ने पूछा कि तब क्या करोगे? तो उत्तर दिया" मैं अधिनिबन्ध लिखकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी0 लिट उपाधि प्राप्त करूँगा। तिवारी जी के सकल्प को जानकर चतुर्वेदी जी न कहा था "तो जब मेरी सहायता की आवश्यकता पड़े तो नि सकोच कहना।" सचमुच ही बाद मे चतुर्वेदी जी ने तिवारी जी का काफी ध्यान रखा। यहा स्मरण रखना होगा कि तिवारी जी का विवाह हो चुका था किन्तु सौभाग्यवश उनके माता-पिता का उन्हे सरक्षण प्राप्त था अत पत्नी बलिया म ही रही आई। तिवारी जी छुट्टियो मे गाव चले जाया करते थे। किन्तु उनका मन कवल जीविका प्राप्त करने मे नही रमा था। वे आगे शोध कार्य करना चाहते थे, वे पशोपेश मे थे क्योकि अर्थशास्त्र मे शोध कार्य का अर्थ था कि नौकरी छोड़ कर विश्वविद्यालय मे डाक्टरेट के लिए प्रवेश ले। सोच-विचार कर उन्होने हिन्दी मे प्राइवेट रूप से एम ए करने की सोची और अध्यापन के साथ-साथ इसकी तैयारी करते रहे। इस तरह वे 1932 मे हिन्दी मे एम ए द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए। इसी बीच तिवारी जी ने 'साहित्य रत्न' की भी परीक्षा दे डाली। इस तरह हिन्दी के प्रति उनका अनुराग बढ़ता गया।

1930 म साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के दौरान पटना मे तिवारी जी की भेट बगाल के सुप्रसिद्ध भाषाविद् डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या से हुई। कुछ ऐसी बात हुई जिसस तिवारी जी को भोजपुरी भाषा में शोधकार्य करने की प्रेरणा मिली। किन्तु इसके लिए आवश्यक था कि वे भाषा विज्ञान मे उच्च डिग्री प्राप्त करे फलत 1939 म कलकत्ता विश्वविद्यालय से पहले 'पाली' मे एम. ए. (द्वितीय श्रेणी मे) और फिर 1941 मे 'कम्परेटिव फिलालाजी' मे एम ए (द्वितीय श्रेणी) में उपाधि प्राप्त की। फिलालाजो म उनका विषय—Indo-Aryan Philology with Vedic and Classical Sanskrit Pali Prakrit, Avesta, old Persian and Greek ग्रुप था — यानी एकसाथ अनेक भाषाओ का अध्ययन। इसके लिए तिवारी जी को इलाहाबाद छोडकर कलकत्ता जाना पडा। यही नही, दारागंज स्कूल से अवकाश भी लेना पडा। एक ग्रामीण युवक, अपनी नौकरी की परवाह न करके सुदूर पूर्व कलकत्ता मे जाकर किस तरह रहा होगा और अध्ययन किया होगा, इसकी कल्पना करना कठिन है।

---

1 पहल 1925 मे व श्रीनारायण चतुर्वेदी जी के सामने के मकान म रहते थे। लगता है कि जब अध्यापक हुए तो वेणी माधव मन्दिर के पास रहने लगे। 1928 मे गंगा स्नान करते समय सुनने लगे थे प0 जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ने इन्हे बचाया था

2 उनकी नियुक्ति पत्र 80 रुपये पर हुई थी

इसे तिवारी जी का सौभाग्य ही समझना होगा कि दारागज का निवास उनके लिए लाभप्रद रहा। वहीं पर प0 श्रीनारायण चतुर्वेदी (भइया जी) जी का आवास था। उनसे परिचय का लाभ यह रहा कि उनके कारण इण्डियन प्रेस के पटल बाबू ने तिवारी जी को धर्मतल्ला स्ट्रीट कलकत्ते मे इण्डियन प्रेस मे रहने की व्यवस्था कर दी। 1941 के बाद भी तिवारी जी कलकत्ते आते जाते रहे।

इस तरह वे कलकत्ते मे 1939 से 1943 तक रहे। इस बीच वे बलिया जाकर अपने परिवार वालो से मिलते रहे। तब तक उनके 4 कन्याएँ तथा 2 पुत्र जन्म ले चुके थे।[1]

डॉ0 तिवारी के पास से प्राप्त रिकार्डो से पता चलता है कि 28 मार्च 1942 को कलकत्ता मे भाषा विज्ञान के सहपाठियों ने उन्हे विदाई दी और एक मानपत्र भी दिया था।

दारागज में

लगता है कि 1925 मे जब तिवारी जी बी ए मे थे, तो वे बहादुरगज से दारागज मुहल्ले चले आये। एक संस्मरण मे उन्होंने लिखा है कि 1925 मे वे द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी के घर के सामने रहते थे। यहाँ वे 1928 तक रहे। यह घर उसी पतली गली मे था जो छोटी कोठी के पीछे से होकर प0 श्रीनारायण चतुर्वेदी जी की बगिया को छूती हुई जाती है।[2] यहीं पर 1926 मे तिवारी जी का परिचय भगवती चरण वर्मा से हुआ। तब तिवारी जी दारागज की साहित्य गोष्ठी के मंत्री थे और भगवती चरण वर्मा उसमें आते रहते थे। यह साहित्य गोष्ठी 1926 मे प0 श्रीधर पाठक के सुझाव पर स्थापित की गई थी। 1928 मे जब श्रीनारायण चतुर्वेदी इग्लैंड से वापस आये तो साहित्य गोष्ठी ने उनका स्वागत समारोह आयोजित किया। यद्यपि तिवारी जी श्रीनारायण जी को 1924 मे दिल्ली मे देख चुके थे और बाद मे उनके घर के सामने रह रहे थे किन्तु उनसे असली परिचय 1930 मे हुआ।

ऐसा लगता है कि तिवारी जी बी ए, एम ए मे पढ़ते समय दारागज से विश्वविद्यालय तक (बंध रोड से) पैदल जाते रहे होगे क्योकि उन्हे साइकिल चलानी नहीं आती थी। इसीलिए बाद मे भी लगातार या तो पैदल या रिक्शे पर आते-जाते रहे।

एम ए करने के बाद जब 1929 वे दारागंज हाई स्कूल मे अध्यापक नियुक्त हुए तो वे बेनीमाधो मन्दिर के पास किसी पंडे के मकान मे किराये पर रहने लगे (सरयू प्रसाद पाण्डेय से मिली सूचना के अनुसार)। बीच-बीच मे गॉव जाते रहे क्योकि वे अपना परिवार नही ला पाये थे। यह भी सुनने मे आया कि उनके पिता घी तथा अन्य वस्तुएँ समय-समय पर बलिया से यहाँ लाते रहे। जब परिवार लाने का मन बनाया तो उन्हे दारागज छोड कर अलोपी बाग आना पडा।

दारागज उन दिनो साहित्यिक केन्द्र था।[3]

---

1 कन्याओं के नाम–राजकिशोरी, रामकुमारी तथा लीलावती एव कलावती। पुत्रो के नाम – लक्ष्मीनारायण तथा राजनारायण।

2 भारत मे प्रकाशित लेख 'हिन्दी के प्राण राजर्षि टडन' भाग 1 मे डा तिवारी ने लिखा है कि 1926 मे मै दारागज मे रहने लगा था।

3 दारागज मे अनेक साहित्यिक रहते थे जिनमे प0 द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी प0 जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, प0 लक्ष्मीधर वाजपेयी, प0 गिरिजा दत्त शुक्ल गिरीश, प0 उमाशंकर दुबे प0 सिद्धनाथ दीक्षित प0 विद्या भास्कर शुक्ल, ठाकुर गोपीनाथ सिंह, प0 भगवती प्रसाद वाजपेयी, श्री शम्भू दयाल सक्सेना प0 गणेश पाण्डेय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। [illegible] तिवारी के मित्र बन चुके थे क्योंकि वे भी साहित्य गोष्ठी में आते थे

दारागंज में ही 1930 में प0 श्रीनारायण चतुर्वेदी से अन्तरंगता स्थापित हुई। इनके अलावा प0 राम हर्ष जी, मसुरिया दीन पाण्डेय तथा सीताराम निषाद से भी परिचय हुआ।

यहीं 1934 में महापंडित राहुल सांकृत्यायन से भी उनका परिचय हुआ।

इस साहित्यिक वातावरण ने उन्हें प्रेरित किया कि वे अध्यापन के साथ कुछ लेखन कार्य भी करें। उन्होंने हिन्दी में एम ए कर लिया था। अत पुस्तकों का सम्पादन किया एवं पुस्तकें भी लिखीं।

इनका विवरण इस प्रकार है—

कवितावली (तुलसीदास कृत की टीका, पृष्ठ संख्या 244)

वीर काव्य संग्रह 1940, सम्मेलन के लिए (बाद में संशोधित संस्करण 1948 में)

रास पंचाध्यायी तथा भ्रमर गीत की भूमिका (1937 में)

राय रामचरण अग्रवाल तिवारी जी के सहपाठी थे। अत: जब 1943-44 में परिवार लाने की समस्या उठी तो राय रामचरण ने अलोपी बाग के अपने एक मकान को (जो धर्मशाला का अंग था) किराये पर दे दिया। बाद में तिवारी जी ने उसमें परिवर्तन कराया[1] और उनका अन्तिम समय उसी में बीता। 14 मार्च 1967 को इस मकान की रजिस्ट्री करा ली तो यह पूरी तरह उनका हो गया। इसमें वे 17 वर्षों तक सुख से रहे।

महापंडित राहुल के पत्रों से भी तिवारी जी के कलकत्ता जीवन के बारे में कुछ बातें मालूम होती हैं।

1937 से 1943 तक राहुल जी पत्रों द्वारा तिवारी जी से पाली, भाषा विज्ञान, थीसिस के बारे में लगातार पूछताछ करते रहे और सुझाव भी देते रहे। यहाँ यह जानने की उत्सुकता होती है कि राहुल जी से तिवारी जी का परिचय कैसे हुआ?

लगता है कि यह परिचय 1934 में हुआ जब वे दारागंज में रह रहे थे और राहुल जी अपनी पुस्तकों के प्रकाशन के सिलसिले में छात्र हितकारी पुस्तकमाला से बात चला रहे थे।

1942-43 तक तिवारी जी दारागंज में ही रहे। इसकी पुष्टि राहुल जी के उन आठ पत्रों से होती है जो उन्होंने 22 9 42 से 15.2 43 के मध्य तिवारी जी को लिखे। इससे यह भी पता चलता है कि तिवारी जी कलकत्ते से शिक्षा समाप्त करके अध्यापन कार्य में लौट आये थे। कम से कम 8 मास के लिए, किन्तु बीच-बीच में कलकत्ता जाते रहते थे। इलाहाबाद प्रवास के दौरान तिवारी जी ने राहुल जी की पुस्तक 'वोल्गा से गंगा' के प्रूफ देखे (23 12 42) और उनकी 'दर्शन दिग्दर्शन' पुस्तक के छपाने की व्यवस्था में लगे रहे। जून 1943 में तिवारी जी पुनः कलकत्ता चले गये क्योंकि राहुल जी का 14 6 43 का पत्र माहेश्वरी विद्यालय कलकत्ता के पते पर गया था। सम्भवत वे शोधकार्य के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर रहे थे—अब उन्हें डॉ0 चाटुर्ज्या तथा डॉ0 सुकुमार सेन जैसे भाषाविदों का आशीर्वाद प्राप्त हो चुका था।

राहुल जी अपने पत्रों में दारागंज का पता ही लिखते थे- पता रहता था प0 उदयनारायण तिवारी एम ए साहित्यरत्न। कभी-कभी उदयनारायण 'त्रिपाठी' भी लिखते रहे किन्तु लन्दन से

---

1. इस घर में परिवर्तन कराने का कार्य 21 जनवरी, 1955 को शुरू किया और 13 मार्च, 1955 को गृह प्रवेश किया। इस बीच जार्ज टाउन में एक बंगला किराये पर ले लिया था। इसी बंगले में उन्होंने ब्राह्मण भोज दिया था—तब निराला जी पधारे थे

पहली बार (1946) उन्होंने डॉ0 उदयनारायण तिवारी 'एम.ए., डी. लिट' लिखा। तब अलोपीबाग का पता था।

राहुल जी अलोपीबाग में डॉ0 तिवारी के ही घर रुकते एवं भोजन करते। राहुल जी ने 16 3 1934 से लगातार 1951 तक फिर 1953, 1956 तथा 6 11 1961 तक डॉ0 तिवारी को पत्र लिखे।

इस तरह लगता है कि राहुल जी से प्रथम परिचय मार्च 1934 मे हुआ होगा—तब तिवारी जी दारागंज में ही रहे थे।

तिवारी जी ने कलकत्ता मे प्रवास के दौरान बीच बीच में नागपुर तथा बनारस की यात्राएं की। उदाहरणार्थ वे लिखते हैं कि 20-1-43 को नागपुर गये थे। इसके बाद फरवरी के पहले सप्ताह में बनारस गये — यह यात्रा थीसिस के सम्बन्ध मे थी। राहुल जी को 15 2 43 के पत्र में तिवारी जी ने लिखा है कि मैं 8-10 दिन के लिए बनारस चला गया था।

इसी के बाद वे कलकत्ता चले गये क्योंकि अप्रैल में थीसिस टाइप करानी थी (400 पृष्ठ तक) और थीसिस को जमा करने के लिए 200/- फीस का प्रबन्ध करना था।

इस तरह 1942-43 का अन्तराल भाग-दौड़ का काल था। उन्हें अर्थोपार्जन के लिए परीक्षा सम्बन्धी कार्य करने पड़ते थे।[1]

कलकत्ता से लौट कर तिवारी जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ0 बाबूराम सक्सेना से सम्पर्क साधा और डी0 लिट् की थीसिस प्रस्तुत करने के लिए उन्हें अपना निर्देशक चुना। विषय मे हुआ ' The Origin and Development of Bhojpuri और 1 दिसम्बर, 1945 को यह शोध प्रबन्ध इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा डी0 लिट् डिग्री के लिए स्वीकृत हुआ।

अभी डी0 लिट् डिग्री प्राप्त नहीं हुई थी किन्तु इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे डॉ0 अमरनाथ झा, डॉ0 बाबूराम सक्सेना तथा क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय इनके कार्य से परिचित हो चुके थे। तब तक इनके कई शोधपत्र भी छप चुके थे। अतः जुलाई, 1945 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में लेक्चरर पद पर इनकी नियुक्ति हो गई।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे अध्यापन (1945-1961)

"अभिनव भाषा विज्ञान" मे 'दो शब्द' के अन्तर्गत डॉ0 तिवारी ने लिखा है—

सन् 1942-43 मे मैं कलकत्ता से प्रयाग आ गया और सन् 1944 में मेरी नियुक्ति इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में, हिन्दी विभाग मे हो गई।[2] यहाँ हिन्दी विभाग के अध्यक्ष स्व. डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा ने हिन्दी के माध्यम से भाषा विज्ञान के अध्यापन का भार मुझे सौंपा। यद्यपि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे कुछ दिनों पूर्व, भाषा विज्ञान के अध्ययन का कार्य डॉ0 श्याम सुन्दर दास ने आरम्भ किया था, किन्तु इसे उत्कर्ष पर पहुंचाने का कार्य डॉ0 बाबू राम सक्सेना एवं डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा ने किया। इन दोनों विद्वानों ने उत्तरी भारत के हिन्दी क्षेत्र में भाषा विज्ञान के अध्ययन-अध्यापन को विशेष गति दी

---

1 15-2 43 के ही पत्र में राहुल जी को लिखा "मन के प्रतिकूल होते हुए भी प्रतिवर्ष परीक्षा सम्बन्धी कार्य करना पड़ता है क्योंकि पैसे के बिना एक दिन भी काम चलने वाला नहीं।

2 यह तिथि भ्रामक है। उनकी नियुक्ति 1945 में हुई।

डॉ0 एम बहुत कम बोलते थे। वह बातें कम तथा कार्य अधिक करते थे। भाषा विज्ञान के अध्ययन अध्यापन को सम्पुष्ट करने के लिए अपने इस विज्ञान के भीष्म पितामह डॉ0 सिद्धेश्वर वर्मा के शिष्य डॉ0 हरदेव बाहरी[1] की नियुक्ति इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे की। इनके निर्देशन में कई मौलिक शोध प्रबन्ध हिन्दी विभाग में प्रस्तुत किये गये।

1944-53 तक मेरे भाषाविज्ञान के अध्यापन का एकमात्र आधार तारापुरवाला की कृति थी। इसके पूर्व कलकत्ता विश्वविद्यालय में टकर की भाषा विज्ञान की पुस्तक छात्र पढा करते थे। उसका हिन्दी अनुवाद डॉ0 श्याम सुन्दर दास तथा प0 पद्मनारायणाचार्य ने इंडियन प्रेस प्रयाग से प्रकाशित कराया था किन्तु सन 1940 ई0 मे जब मैं अपने अध्ययन के सिलसिले मे कलकत्ते पहुँचा तो यह पुस्तक पुरानी मानी जाने लगी थी। प्रयाग मे अध्यापन करते समय मैने ब्लूमफील्ड, सापिर तथा स्तुतर्वा की कृतियो का अवलोकन एवं मनन किया। इनमे वर्णनात्मक भाषाविज्ञान एवं स्वनिम (ध्वनिग्राम — फोनीम) का उल्लेख तो मिला, किन्तु न तो इन्हें मैं ग्रहण कर पाया और न इनके सम्बन्ध म मेरी धारणा ही स्पष्ट हो सकी।"

अभिनव भाषाविज्ञान की ओर

डॉ0 तिवारी 1953 मे वर्णनात्मक भाषा शास्त्र की कार्यशाला, जो डॉ0 कत्रे के द्वारा पुणे मे आयोजित हुई थी, भाग लेने गये। वहाँ से उनमे वर्णनात्मक भाषाविज्ञान के प्रति रुचि जगी। फिर तो वे लगातार इन कार्यशालाओं मे जाते रहे और अन्त मे ऐसा भी अवसर आया जब उन्हे एक वर्ष के लिए अमरीका जाकर अभिनव भाषाविज्ञान का अध्ययन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

(इसका विवरण अलग से दिया गया है।)

हिन्दी विभाग मे तिवारी जी बी ए. तथा एम ए की कक्षाएँ पढ़ाने लगे। डी0 लिट् डिग्री प्राप्त करने के बाद डॉ0 तिवारी की ख्याति भाषाविज्ञानी के रूप मे फैलने लगी। अत जब हिन्दी विभाग में डॉ0 हरदेव बाहरी आ गये, जो कि भाषाविज्ञानी थ, तो इन दोनो ने मिलकर भाषाविज्ञान को विशेष विषय के रूप में बी ए तथा एम ए मे पढ़ाये जाने का प्रयत्न किया और अन्ततः इसमे सफल हुए। किन्तु उसी के बाद डॉ0 तिवारी को इलाहाबाद से जबलपुर विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर पद पर जाना पडा।

हिन्दी विभाग मे रहते हुए डॉ0 तिवारी भाषाशास्त्र की कार्यशालाओं में भाग लेने जाते रहे। बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् मे 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' पर कई व्याख्यान दिये और अन्त मे एक वर्ष के लिए 1958-1959 मे विदेश यात्रा की।

डॉ0 तिवारी की अमरीका यात्रा

डॉ0 तिवारी 28 अगस्त, 1958 को इलाहाबाद से अमरीका के लिए एक वर्ष के शैक्षिक कार्यक्रम के अन्तर्गत रवाना हुए और 30 अगस्त 1959 को लौट कर आ गये।

नव्य भाषाविज्ञान के प्रति ललक के कारण वे घर से एक वर्ष बाहर रहने का मन बना चुके थे। वे अलोपीबाग वाले घर मे अपने परिवार को (पत्नी, दो पुत्र बधुएँ तथा दो पुत्र) छोड़कर जा रहे थे।

---

1 डॉ0 बाहरी की मृत्यु 31 3 2000 को हो गई। वे बहुत बड़े कोशविज्ञानी थे। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे 1949-1971 तक रीडर रहे, इसके पूर्व वे लाहौर म 1935 से 1947 तक लेक्चरर थे। उनकी पुस्तक 'हिन्दी का उद्भव विकास और रूप' 1965 मे छपी। उन्होने लहदी पर शोधकार्य किया था।

उन्हे विदा करने इलाहाबाद रेलवे स्टेशन पर शहर के अनेक व्यक्ति, शिक्षक, प्रकाशक, परिचित एव आत्मीयजन गये थे। मै भी गया था। अमरीका पहुँचकर डॉ0 तिवारी नियमित रूप से पत्र लिखते रहे। उन्होने 2 सितम्बर को ही पत्र लिखना शुरू किया किन्तु यहाँ पर उनके पत्र देर से मिलने के कारण उनके 4 पत्र लिख चुकने के बाद सबसे पहले जब उन्हे मेरा पत्र मिला तब उन्हें राहत मिली।

डॉ0 तिवारी राहुल जी के पत्राचार से परिचित थे। अत वे अपने पत्रो मे अमरीका के विभिन्न स्थानों, वहाँ की शिक्षण-पद्धति आदि के बारे मे लगातार अपने पत्रो मे लिखते रहे। वे अपनी यात्रा का वृत्तान्त यहाँ के अखबारो के लिए भी भेजते रहे। वे यहाँ के समाचार जानने के अत्यन्त उत्सुक रहते। वे कभी निराला जी के बारे मे, तो कभी राहुल जी के बारे मे भी पूछते रहते। वे अपने अध्ययन के बारे मे भी लिखते और अपने आगामी कार्यक्रमो की सूचना अवश्य देते।

जब उन्हे अपने एक व्याख्यान के लिए आधुनिक कवियो के बारे मे कुछ सामग्री की आवश्यकता पडी, तो मुझे लिख भेजा।

अभी उन्हे गये 6 मास ही हुए थे कि वे यह लिखने लगे कि 22-23 अगस्त तक भारत लौट आऊँगा-यद्यपि बाद मे ये तिथियाँ बदल गई।

अमरीका मे साथ मे रह रहे डॉ0 बहल, डॉ0 ग्लीसन, गुम्पर्ज, तथा जगदेव चौधरी की भी चर्चा करते रहे। वहाँ के Summer School का उल्लेख करना नही भूले। अमरीका से भारत आते समय यूरोप के देशो और अन्त मे रूस होते हुए भारत पहुँचने का उल्लेख कई पत्रो मे किया।

डॉ0 तिवारी की विदेश यात्रा, वहाँ की जीवनचर्या आदि का पता उनके उन 9 पत्रो मे सुरक्षित है जो उन्होने 24 सितम्बर, 1958 से 15 अगस्त, 1959 के बीच मुझे लिखे थे।

जब वे अमरीका जा रहे थे तो मेरी पत्नी की थीसिस का कार्य चल रहा था। वे उसके विषय मे काफी चिन्तित थे।

मैने उनके पास एक पत्रिका 'अन्तर्वेद" भेजी तो उन्होने लिखा कि उसे पढ़कर वहाँ के पुस्तकालय को दे दी।

उन्ही दिनो इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी के प्रोफेसर पद के लिए विज्ञापन निकला तो उन्हे सूचित किया गया।

यात्रा विवरण

डॉ0 तिवारी अमरीका प्रवास के संस्मरण अमृत पत्रिका, भारत तथा सरस्वती मे लिख कर भेजते रहे। अमृत पत्रिका के लिए जिन चार लेखो की किश्त भेजी वे थे–

(1) अमरीकी जीवन के कुछ पहलू —2 भाग तथा (2) अमरीका मे छात्रो का जीवन (भाग 4)। ये अक्टूबर-नवम्बर, 1958 के अंको मे छपे।

इन लेखो से विदित होता है कि डॉ0 तिवारी 31 अगस्त को फिलाडेल्फिया मे सीधे श्री अरविन्द कृष्ण जोशी के निवासस्थान पर पहुँचे—कारण कि श्री जगदेव चौधरी जिन्हे डॉ0 तिवारी ने पत्र लिखा था, वे कनाडा गये थे। डॉ0 जगदेव चौधरी जून 1957 मे भाषाशास्त्र का उच्च अध्ययन करने पेन्सल्वेनिया विश्वविद्यालय गये थे अत वे अपने मित्र जोशी जी से कह गये थे कि वे डॉ0 तिवारी को जाकर ले आवेगे।

जब डॉ0 चौधरी 4 सितम्बर को कनाडा से लौटे तो डॉ0 तिवारी के साथ मिलकर दोनो ने

4 सितम्बर को ही विश्वविद्यालय के पास एक मकान किराये पर ले लिया। इसी में डॉ0 तिवारी भी चौधरी दम्पत्ति के साथ रहने लगे।

डॉ0 तिवारी ने पेन्सलवेनिया के अध्ययन-अध्यापन के विषय में एक लेख 'सरस्वती' में भी प्रकाशनार्थ भेजा। "भारत" में "मेरी अमेरिका यात्रा" लेख भेजा जो प्रकाशित हुआ था। उसके कुछ अंश इस प्रकार है—

"24 अगस्त को कालका मेल से इलाहाबाद से रवाना होकर उसी दिन 9 बजे रात दिल्ली पहुंचा —साथ थे लक्ष्मीनारायण, पत्नी तथा सत्यव्रत अवस्थी। स्टेशन से सीधे 11 इलक्ट्रिक लेन बाबू जी (टंडन जी) के यहाँ गये। 29 अगस्त को 11 बजे रात "पैन अमेरिकन" वायुयान से रवाना होना था।"

डॉ0 तिवारी ने अमरीका में अपने कार्यक्रमों तथा गतिविधियों का विवरण अपनी डायरी में लिखा है। किन्तु उनके द्वारा मेरे नाम भेजे गये पत्रों से अमरीका में फिलाडेल्फिया से शिकागो, वर्कले, मिशिगन जाकर अध्ययन / शिक्षण करने का जैसा अंकन हो सकता है, उसे संक्षेप में दे रहा हूँ। इसके बाद वे जब देश के लिए लौटने लगे तो पहले लन्दन फिर मास्को और तब दिल्ली कब/ कैसे पहुँचे इसका भी विवरण दे रहा हूँ।

फिलाडेल्फिया में 1 सितम्बर, 1958 से 5 फरवरी, 1959 तक यूनिवर्सिटी आफ पेन्सलवेनिया में (4 मास) अध्ययनरत रहे। बीच में 26 जनवरी, 1959 को पूर्व के विश्वविद्यालय येल (न्यूहावेन) तथा हार्वर्ड भी हो आये थे। पुनः नवम्बर, 1958 में वे वाशिंगटन भी गये।

5 फरवरी को शिकागो के लिए रवाना हुए जहाँ पर 10.2.59 तक रहे। शिकागो से सैनफ्रांसिस्को भी गये। इसके बाद वे वहाँ से बर्कले विश्वविद्यालय गये जहाँ 4 मास रहकर अध्ययन करना था। वे 15 जून, 1959 तक बर्कले में रहे। किन्तु बीच में 22–26 मार्च, 1959 को वाशिंगटन गये जहाँ South Asia Committee का एक सेमिनार था। बर्कले से ही वे 27 मार्च, 1959 को लास ऐंजिलिस गये और टूसन से मिशिगन एन अर्बोर पहुँचे। वहाँ पर 15 जून से 25/26 जुलाई, 1959 तक Summer School था। (कुल 40 दिन–पहले 27-28 जून तक ही रहना था।)

डॉ0 तिवारी मिशिगन से ही 28 जुलाई को अमरीका छोड़कर लन्दन पहुँचे जहाँ पर 10 दिन (6 अगस्त, 1959) तक रहकर विभिन्न स्थानों की सैर की। वे लन्दन से वियना (19 से 21 अगस्त तक) भी गये। बीच में लन्दन से 7 अगस्त को पेरिस भी घूम आये। फिर लन्दन से 21 को मास्को के लिए रवाना हुए जहाँ 7 दिन बिताये। अन्ततः मास्को से दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। वे 29 अगस्त को दिल्ली आ गये थे और 30 अगस्त को इलाहाबाद पहुँचे। (उन्होंने 24 जनवरी के पत्र में लिखा था कि वे 22/23 अगस्त को इलाहाबाद पहुँचेंगे।)

डॉ0 तिवारी अपने अमरीका प्रवास में भाषा विज्ञान की कक्षाओं में जाते, घर पर होमवर्क पूरा करते। वे वहाँ के विभिन्न स्टोरों से भाषा विज्ञान की अच्छी-अच्छी पुस्तकें खरीद कर पढ़ते रहे। बीच-बीच में हिन्दी के लेख भी लिखते जाते और भारत की हिन्दी पत्रिकाओं / समाचारपत्रों में प्रकाशनार्थ भेजते भी रहते।

उनकी डायरी के पढ़ने से लगता है कि उनमें नवयुवकों की सी स्फूर्ति आ गई थी। वे बारम्बार सोचते कि मैं जिस भाषा विज्ञान के ज्ञान को लेकर भारत पहुँचूँगा क्या उसका लाभ छात्र उठा पावेंगे? यद्यपि घर की चिन्ता सताती थी पर अपने इष्टमित्रों से भी पत्र व्यवहार जारी रखा। वे यहाँ के समाचारों से लगातार अपने को लैस करते रहते थे।

अभी वे वर्कले में थे, तभी उन्होंने काफी पुस्तकें पानी के जहाज के द्वारा भारत रवाना कर दी थीं।
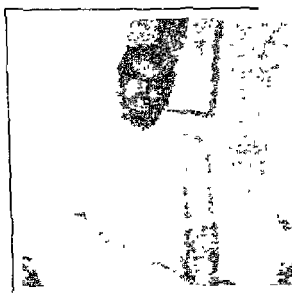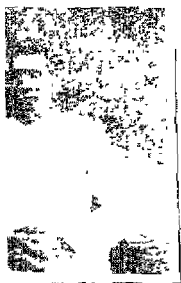
डा0 उदयनारायण तिवारी (1950-56 के मध्य)
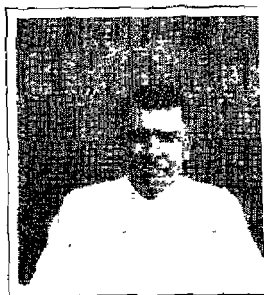
1951 में चित्रकूट की सैर, डा तिवारी (हाथी पर) साथ मे
तथा बलदेव प्रसाद गुप्त

महापंडित राहुल सांकृत्यायन
के साथ डा. तिवारी

...न कार्यशाला, पुणे
(1956) में

भाषाविज्ञान कार्यशाला, पुणे (1955)
डा. तिवारी अपनी दो पुत्रियों
कु. लीलावती तथा कु. राम कुमारी
के साथ

डा. तिवारी अपनी पत्नी श्रीमती माहेश्वरी के साथ (26

। के पूर्व (1958) डा. उदय नारायण तिवारी

28 अगस्त 1958
स्टेशन पर अमरी
प्रस्थान करते हुए

अमरीका प्रवास के समय
(1959)
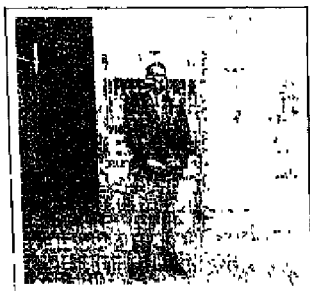
अमरीका प्रवास
(1959)

अमरीका में डा. गुम्पर्ज तथा श्रीमती गुम्पर्ज
के साथ डा. तिवारी
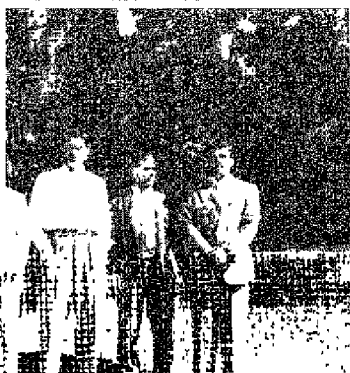
ा प्रवास (1959) के समय डा. तिवारी अपने
भाषाविज्ञानी मित्रों के साथ

अमरीका से लौटते समय (1959) रूस में डा. ति
श्री डी डी. खन्ना के साथ
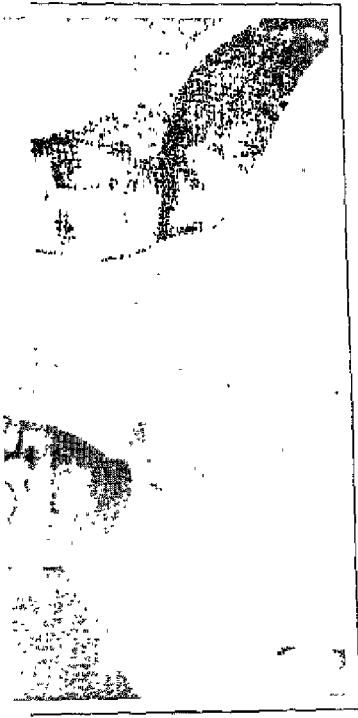
डा. उदयनारायण तिवारी तथा उनकी पत्नी श्रीमती माहेश्वरी देवी (1962)
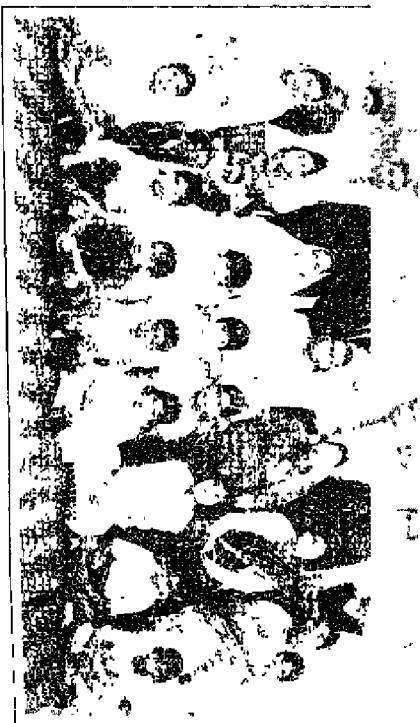
श्रीमद्भागवत कथा की समाप्ति के बाद (1970) ग्रुप फोटो जिसमें डा. तिवारी अपनी पत्नी, पुत्रों, पुत्रियों, पौत्रों, पौत्रियों, जामाताओं के साथ
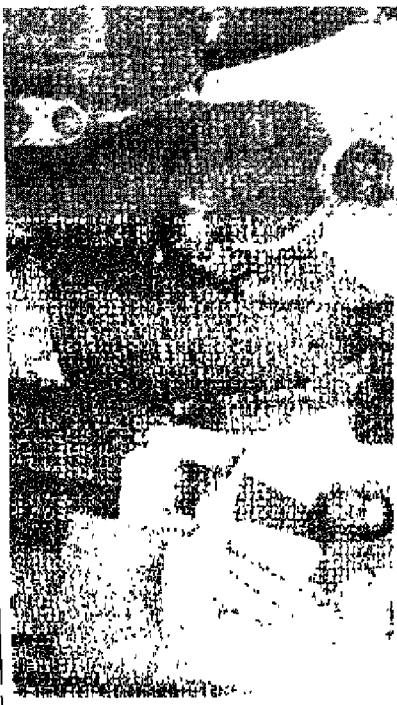
जबलपुर विश्वविद्यालय में डा राजबली पाडेय डा हजारी प्रसाद द्विवेदी के साथ डा तिवारी

अन्तिम यात्रा (1984)

जबलपुर में श्री नर्मदा प्रसाद खरे तथा अपनी पत्नी के साथ डा तिवारी
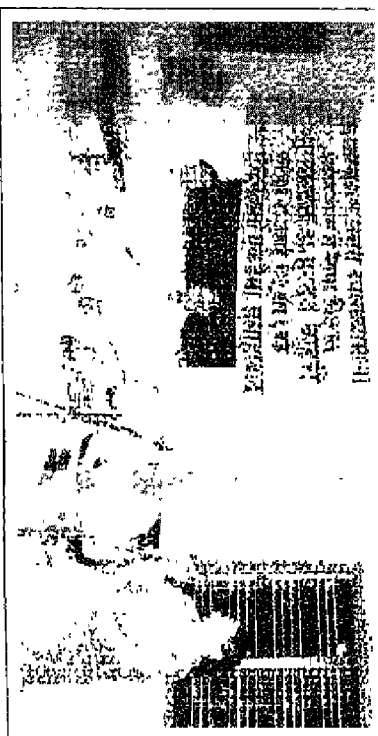
डा. उदयनारायण तिवारी स्मृति व्याख्यान (1997) : डा बाहरी का व्याख्यान। मंच पर डा गयाचरण त्रिपाठी, डा. रामकमल राय, डा. हरदेव बाहरी तथा डा. राम कुमारी मिश्रा (परिचय देते हुए)

वहाँ से लौटने के बाद हिन्दी विभाग मे भाषा विज्ञान के अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया गया। पुस्तक लिखी।

डॉ0 तिवारी दिसम्बर, 1961 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग मे कार्यरत रहे।

इस तरह लगभग 16 वर्षों तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन करने के बाद जबलपुर विश्वविद्यालय चले गये।

जबलपुर विश्वविद्यालय मे

डॉ0 तिवारी 9 12 1961 से 22 जुलाई, 1971 तक जबलपुर विश्वविद्यालय मे कार्यरत रहे।

उनकी पहली नियुक्ति इन्स्टीट्यूट ऑफ लान्गुएजेज एण्ड रिसर्च (एम. पी. गवर्नमेंट) म हिन्दी प्रोफेसर के रूप मे (850-50-1250 ग्रेड) 5 वर्ष के लिए 11 12 1961 से 10 12 1966 तक के लिए हुई। किन्तु 10 जनवरी, 1962 को श्री वी पी बाजपेयी के स्थान पर इनकी नियुक्ति डिपार्टमेंट आफ स्टडीज इन हिन्दी के हेड के रूप मे हुई।[1]

जब इनका कार्यकाल 10 12 1966 को समाप्त होने लगा तो इनकी पुन नियुक्ति हो गई जिसके अनुसार इन्हे जून 1970 मे अवकाश ग्रहण करना था। किन्तु सेवाकाल एक बार पुन 31 12 1971 तक के लिए बढा दिया गया। बाद म विश्वविद्यालय की उठापटक के कारण डॉ0 तिवारी को 22 जुलाई, 1971 को ही सेवामुक्त कर दिया गया।

डॉ0 तिवारी को 1 8 69 को जबलपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के अतिरिक्त भाषा एव शोध संस्थान का आचार्य पद भी दिया गया। इसी के साथ-साथ इस भाषा एव शोध संस्थान पुस्तकालय का प्रभारी आचार्य भी नियुक्त किया गया।

डॉ0 तिवारी जब जबलपुर विश्वविद्यालय गये थे तो डॉ0 कुजी लाल दुबे वाइस चान्सलर थे। इनके बाद क्रमश डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा तथा डॉ0 राजबली पाण्डेय वाइसचान्सलर बने। डॉ0 तिवारी का इन सभी के साथ बहुत ही सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध रहा।

डॉ0 तिवारी, 1969-72 तक विश्वविद्यालय कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे।

1965 मे जबलपुर मे कवि दरबार हुआ तो उसमे डा0 तिवारी ने मैथिलीशरण गुप्त की भूमिका निभाई

डॉ0 तिवारी को जबलपुर विश्वविद्यालय के वाइसचान्सलर कुजी लाल दुबे का 5 12 61 का पत्र मिला कि आपकी Prof of Hindi in the Institute of Language and Research (M P Govt) in the grade (850-50-1250) पर नियुक्ति की गई है।

डॉ0 तिवारी ने 8 12 61 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार को पत्र भेजा कि वे जबलपुर विश्वविद्यालय के आफिसर पद पर जाना चाहते है अत उन्हे 4 12 61 से 2 वर्ष के लिए अवकाश प्रदान किया जाय जो स्वीकृत हो गया। 10 जनवरी, 1962 को उन्हे श्री वी पी बाजपेयी के स्थान पर हेड आफ द डिपार्टमेंट आफ स्टडीज इन हिन्दी नियुक्त किया गया।

20 12 1963 को डॉ0 तिवारी ने वहा से इलाहाबाद विश्वविद्यालय को अपना त्यागपत्र भेज दिया जो 18 1 1964 की बैठक म 11 12 63 से स्वीकार कर लिया गया।

जबलपुर म 1 8 1969 को डॉ0 तिवारी को 'अध्यक्ष हिन्दी विभाग तथा प्रभारी आचार्य भाषा एव शोध संस्थान' के रूप मे नियुक्त किया गया।

नियुक्ति के अनुसार डॉ0 तिवारी को जून 1970 मे अवकाश प्राप्त करना था किन्तु उनका सेवा काल 31 12 1971 तक बढ़ा दिया गया। दुर्भाग्यवश बीच मे ही किन्ही आन्तरिक कारणो से उन्हे 22 जुलाई 1971 को मुक्त कर दिया गया।

वे जबलपुर मे रहते हुए मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालयो मे नियुक्ति के लिए विषय विशेषज्ञ के रूप मे जाते रहे। जबलपुर से रायपुर, उज्जैन, नागपुर की यात्राएँ भी की।

डॉ0 तिवारी ने नागपुर विश्वविद्यालय मे भाषा विज्ञान पर 5 भाषण भी दिये।

उपलब्धियाँ

(1) जबलपुर मे रहते हुए डॉ0 तिवारी ने भाषा-विज्ञान पर मौलिक पुस्तके लिखी, 21 मार्च, 1968 को मध्य प्रदेश शासन परिषद स डॉ0 एम एस कत्रे की पुस्तक इण्ट्रोडक्शन टू इण्डियन टक्स्टूरल क्रिटिसिज्म (Introduction to Indian Textural Criticism) का हिन्दी अनुवाद करने का कार्य मिला।

इसी तरह मोती लाल बनारसी दास दिल्ली से 12 12 68 को मैक्सम्यूलर की पुस्तक Historical Linguistics का अनुवाद करने का निमन्त्रण मिला।

10 1 69 को मोती लाल बनारसी दास ने Introduction to Desciptive Linguistics का हिन्दी अनुवाद करने के लिए पत्र भेजा।

जबलपुर प्रवास के ही समय रामनारायण लाल पब्लिशर्स इलाहाबाद ने इटरमीडियेट बोर्ड, उत्तर प्रदेश के लिए गद्य की पाठ्य पुस्तक का सकलन करने का निमन्त्रण दिया। यह कार्य 'गद्य-पथ' के नाम से (1963-65) सपन्न हुआ।

(2) **शोध निर्देशन**–डॉ0 तिवारी ने कुल 25 पीएच0 डी0 छात्रो के शोधकार्य का निर्देशन किया[1]—सुभाष मिश्र, कमलनारायण दुबे, श्यामा मालवीय, स्वराज्यमणि अग्रवाल, गोकर्ण नाथ शुक्ल, मजु अवस्थी, श्री गीता चौधरी, कैलाश नारायण तिवारी, हर पसाद स्थापक, पूरनचन्द श्रीवास्तव, सुमन मिश्रा रामशकर मिश्र, एन सुन्दरम, विश्वनाथ सिह, सुरेश कुमार वर्मा, पुरुषोत्तम खर, एन एन गुप्ता विमला जैन, लक्ष्मी प्रसाद तिवारी, शिव कुमार शर्मा मलय, गुर प्रसाद पाठक, राम दयालु कोष्ठा, हरिकृष्ण देवसरे तथा आत्माराम त्रिपाठी। शेष 2 ने बिहार तथा राँची विश्वविद्यालय स पी एच डी की। ये हैं श्रीधर मिश्र तथा नगेन्द्रनाथ पाण्डेय।

डा0 तिवारी के निर्देशन मे कुल 9 डी0 लिट् हुए–महावीर सरन जैन, भोलानाथ तिवारी, त्रिलोचन पाण्डेय, लक्ष्मी प्रसाद तिवारी वैल्याणी अर्जुनन, शारदा प्रसाद वर्मा, सुरेश वर्मा, भगत सिह–सभी जबलपुर मे तथा श्रीधर मिश्र बिहार विश्वविद्यालय से किन्तु 5 के विषय ज्ञात हो पाये—भाषा विज्ञान मे 2 लोक साहित्य मे 1, तथा साहित्य म 2।[1] डॉ0 श्रीधर मिश्र ने भोजपुरी "लोक साहित्य का सास्कृतिक अध्ययन" पर बिहार विश्व विद्यालय से और फिर डी0 लिट् की भी उपाधि प्राप्त की। डॉ0 नगेन्द्रनाथ पाडेय को भी राँची यूनिवर्सिटी से पीएच0 डी0 उपाधि मिली। इनका शोध प्रबन्ध हिन्दुस्तानी एकेडमी से प्रकाशित हो चुका है।

डॉ0 श्रीधर मिश्र डा0 तिवारी की ही जन्मभूमि क निवासी हैं। वे गुरु खालसा कालेज बम्बई म हिन्दी के विभागाध्यक्ष रह चुके है और अब अवकाशप्राप्त करके शोध निर्देशन कर रहे है।

इनके अतिरिक्त पजाब विद्यालय से एक शोध छात्र ने भाषा विज्ञान पर और बिहार विश्वविद्यालय से एक छात्र ने लोक साहित्य पर कार्य किया।

---

1 लोक साहित्य 2, साहित्य सस्कृति 1?, भाषा विज्ञान, 8 पाठालोचन 1, तुलनात्मक अध्ययन 1 हिन्दी साहित्य का इतिहास 1 कुल 23। इस तरह कुल मिलाकर (इलाहाबाद तथा राँची सहित) 35 डी फिल / पी एच-डी तथा 9 डी लिट का निर्देशन किया।

पुन. इलाहाबाद में

किन्तु जब जबलपुर मे सेवाकार्य समाप्त हुआ तो वे पुनः इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे यू. जी सी रीएम्पलायमेन्ट स्कीम म हिन्दी विभाग मे अध्यापन करते रहे। यह अध्यापन 22 जुलाई, 1972 से 31 6 74 तक चला– यानी लगभग 3 वर्ष। इस अवधि मे एम ए मे भाषा विज्ञान पढाने के अलावा तीन शोध छात्रो का मार्ग निर्देशन भी किया। ये थे गोविन्द स्वरूप, मीना अवस्थी तथा बी एम मैथ्यू। उन्होने 4 साल मे दो शोधपत्र भी लिखे।

इस तरह डा0 तिवारी ने पहले के 16 वर्ष मिलाकर कुल 19 वर्षो तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे अध्यापन किया। इस अध्यापन के साथ-साथ वे शोधकार्य का भी निर्देशन करत रहे —जबलपुर जाने के पूर्व तक तथा जबलपुर से वापस आने के बाद भी।

कुल मिलाकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 10 छात्रा न उनके निर्देशन में डी0 फिल0 की उपाधि प्राप्त की।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे अध्यापन क काल में ही उन्होंने पहले "भोजपुरी भाषा और साहित्य" (1954) तथा उसक बाद 'हिन्दी भाषा का उदगम और विकास' (1955) पुस्तक लिखी जिनकी अत्यधिक प्रशसा हुई।

उन्होने ग्रियर्सन की पुस्तक का अनुवाद "भारत का भाषा सर्वेक्षण" नाम से किया।

1961 तक सत्यव्रत सिनहा, गंगाचरण त्रिपाठी, विन्दु अग्रवाल, शिवनन्दन कपूर, रामकुमारी मिश्र सालिगराम शर्मा, महावीर सरन जैन, और 1971 के बाद गोविन्द स्वरूप गुप्त, मीना अवस्थी तथा बी एम मैथ्यू ने साहित्य, भाषा विज्ञान तथा पाठालोचन पर शोध कार्य किया।

अन्तिम समय

डॉ0 तिवारी 1914 स 1929 तक अध्ययन करते रहे। फिर 1929 से 1974 तक विभिन्न पदो पर अध्यापन कार्य में लग रहे। इस तरह उनके जीवन के 71 वर्ष कर्मठता एव कर्तव्यपरायणता मे बीते। स्वाभाविक है कि ऐसा व्यक्ति अवस्था बढने के साथ भी कार्यरत रहना चाहेगा।

डॉ0 तिवारी 31 जून, 1974 स 28 जुलाई, 1984 तक अपने अलोपीबाग वाले घर पर ही रहे। ये दस वर्ष प्राय स्वाध्याय मे बिताने पडे। घर मे पत्नी की अस्वस्थता और स्वय की वृद्धावस्था दोनो ही बेचैनी पैदा करने वाली स्थितियाँ थीं। अन्त के कुछ वर्षों मे डॉ0 तिवारी को भी गठिया रोग ने जकड लिया जिससे उनके घूमने-फिरने तथा दूर दूर तक की यात्राएँ करने पर अकुश लग गया

यह 10 वर्ष की अवधि वानप्रस्थ-सन्यास की मिश्रित अवस्था रही। वे अन्त समय तक कुछ न कुछ करते रहे। पुस्तक लिखना, पुरानी पुस्तको के परिवर्धित सस्करण निकालना, अनुवाद करना, लेख आदि लिखना, कभी-कभी सभा-सोसाइटियो मे जाकर कुछ बोलना, डायरी लिखना, कभी-कभी हाथ से भोजन बनाना, रामकृष्ण मिशन तथा रजनीश साहित्य पढना, घर पर आने वाले लोगो से मिलना जुलना—यही जीवनचर्या रही। डॉ0 तिवारी के सम्मानार्थ[1] 1 मार्च, 1981 को हिन्दुस्तानी एकडमी में उनके शिष्यो ने एक आयोजन भी किया जिसमे प्रयाग के सारे विद्वज्जन सम्मिलित हुए।

---

[1] परिशिष्ट म मानपत्र की प्रतिलिपि दी गई है जो 1 मार्च, 1981 को उन्हें प्रदान किया गया था।

अन्तिम 5-6 वर्षों में तिवारी जी को अपने सारे दाँत निकलवा देने पड़े। गठिया के लिये आयुर्वेदिक दवाएं लेते, तेल मालिश करते, होमियोपैथिक और एलोपैथिक दवाएं भी लेते। किन्तु विशेष लाभ नहीं हुआ। वे दिनोंदिन कमजोर होते गये। यदि उन्हें कमजोरी है तो किससे कहें? पत्नी तो बहुत पहले से पक्षाघात से पीड़ित थी। उसी में गिर पड़ने से कूल्हे की हड्डी टूट गई तो वे बिस्तर पर पड़ गईं। उनको स्नान कराना, भोजन कराना–सभी तिवारी जी के जिम्मे पड़ा क्योंकि नौकरानी पर कितना निर्भर रहा जाता।

इस काल में उन्होंने पैतृक सम्पत्ति तथा ननिहाल में मिली सम्पत्ति को बेच दिया (10 अक्टूबर 1983) और एक तरह से गाँव से नाता टूट गया। उनके मित्र राम सिंहासन लाल वकील थे जो उनके मुकदमा की पैरवी करते रहे। अन्तिम बार जब गाँव गये तो उन्होंने अपनी माता के नाम पर बलिया में एक पाठशाला खोले जाने के लिए आंशिक मदद की।

तिवारी जी ने अपने अलोपीबाग वाले मकान को अपने जीते-जी अपने पुत्रों में बाँट देना चाहा। फलस्वरूप बगल वाले दूसरे मकान को भी खरीद कर अपने दोनों पुत्रों को दो मकान दे दिये।

डॉ० तिवारी को अपने जीवन काल में अपने पिता, अपनी माता, अपनी एक पुत्री (इसका नाम कलावती था और लीलावती की जुड़वा थी। इसका देहान्त 12 वर्ष की आयु में ही हो चुका था) तथा सबसे बड़ी पुत्री का मृत्युशोक झेलना पड़ा।

डॉ० तिवारी की मृत्यु 28 जुलाई, 1984 को अलोपीबाग के अपने घर में हुई।[1] बतलाते हैं कि बाहर के कमरे में कुर्सी पर बैठे थे। अचानक सिर में पीड़ा हुई। उन्होंने बाजो नौकरानी को पुकारा। उनकी पत्नी अस्वस्थता के कारण घर के भीतर वाले कमरे में थी। वे भी जोर से चिल्लाई क्या हुआ? नौकरानी ने बतलाया कि बाबूजी का सिर झुक गया है। और तुरन्त ही प्राणान्त हो गया। उनके पास अपना कोई न था।

उसी समय हिन्दुस्तानी एकेडमी में एक गोष्ठी चल रही थी। मैं तथा मेरी पत्नी दोनों इसमें शरीक होने आये थे। शाम के 6 बज रहे थे। मेरे पुत्र आशुतोष ने अशोक नगर से साइकिल पर आकर बताया— नाना जी की मृत्यु हो गई'। उस गोष्ठी में अनेक साहित्यिक व्यक्ति थे। उनमें से श्री अमृतराय जी ने हम दोनों को मोटर में बैठाया और अलोपी बाग पहुंचे।

डॉ० तिवारी की मृत्यु के तीन वर्ष बाद 1987 में उनकी पत्नी का इलाहाबाद में ही देहान्त हुआ। 13 वर्ष बाद उनके सबसे छोटे पुत्र डॉ० राजनारायण तिवारी का देहान्त 1997 में हृदय घात के कारण हुआ। उनके बड़े पुत्र लक्ष्मी नारायण भी 10 मार्च, 2002 को दिवंगत हो गये। उनके छोटे भाई विश्वनाथ भी दिवंगत हो चुके हैं। अब उनकी दो पुत्रियाँ—राम कुमारी मिश्र तथा लीला आज्ञा-जीवित हैं। दोनों ही इलाहाबाद में अपने-अपने परिवार के साथ क्रमशः अशोक नगर तथा गोविन्दपुर में रह रही हैं।

एक भाषा विज्ञानी की यदि कोई निशानी है तो मात्र उनकी पुत्री डॉ० रामकुमारी जिन्होंने भाषा विज्ञान के दीप को जलाये रखा है।

मृत्यु के पश्चात्

डॉ० तिवारी की मृत्यु एकाएक हुई थी अतः उनकी मृत्यु का समाचार जब रेडियो तथा समाचार-पत्रों के माध्यम से लोगों तक पहुँचा तो शोक सन्देशों का ताँता लग गया। इनमें उनके मित्रों, परिचितों,

---

1 डॉ० शिवमंगल सिंह सुमन तथा श्री भक्त दर्शन द्वारा भेजे शोक सन्देश से पता चलता है कि डॉ० तिवारी 23 जुलाई को [illegible] की बैठक में भाग ले [illegible] गये थे।

पत्र

साहित्यकारों के अलावा विभिन्न संस्थानों, संस्थाओं, विश्वविद्यालयों से तार तथा पत्र के रूप में कम से कम 100 शोक सन्देश प्राप्त हुए थे। मैं इनमें से 21 संदेशों के आवश्यक अंश प्रस्तुत कर रहा हूं (पृष्ठ 15)। अन्य 35 मुख्य सन्देश भेजने वालों के नाम भी दे रहा हूँ। ये हैं—

डी. डी. तिवारी, कृष्ण चन्द्र बेरी, रास बिहारी पाण्डेय, नारायण दत्त तिवारी, डॉ0 महेश मिश्र शास्त्री (दिल्ली), डॉ0 डी. खन्ना, कालिका प्रसाद मोहिले, तारकेश्वर पाण्डेय, आर. एन. दण्डेकर, राम नुसरे लाल केडिया, डी. एन. चतुर्वेदी, सुरति मणि नारायण त्रिपाठी, मोती लाल बनारसी दास, दारागंज प्रकाशन सभा, म. रिन्पोछे (बनारस), डॉ0 श्रीधर मिश्र, डॉ0 गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, जनार्दन पाण्डेय, डॉ0 विनय मोहन शर्मा, विश्वम्भर नाथ त्रिपाठी, डॉ0 आनन्द कृष्ण, महादेव साहा, श्रीनारायण चतुर्वेदी, देवनारायण पाण्डेय (राजापुर), गौरी पाठशाला, गोपाल चन्द्र सिंह, नगेन्द्र नाथ उपाध्याय, देव स्वरूप मिश्र, वासुदेव सिंह, डॉ0 दशरथ ओझा, त्रिलोचन पाण्डेय, राधारमण इण्टर कालेज, दारागंज, त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय, तारकेश्वर पाण्डेय।

शिष्यों की उदासीनता

डॉ0 तिवारी के शिष्यों की संख्या अत्यधिक है किन्तु उनकी मृत्यु के 20 वर्ष बाद भी किसी ने यह आवश्यक नहीं समझा कि उनके संबंध में कोई विशेष आयोजन किया जाता या किसी हिन्दी पत्रिका या समाचार पत्र का विशेषांक ही छपता। न ही, किसी ने कभी रुचि दिखाई कि उनके विषय में लेख लिखा कर संकलन छपवाया जाय।

अभी तक मुझे उनकी मृत्यु के बाद केवल दो लेख देखने में आये—

(1) श्रीरंजन सूरिदेव का लेख 'बहुश्रुत भाषा-शास्त्री उदयनारायण तिवारी' जो डॉ0 तिवारी की मृत्यु के बाद ही परिषद पत्रिका के अक्टूबर 1984 अंक में छपा था।

(2) डॉ0 श्रीधर मिश्र का लेख 'तपस्वी गुरु : डाक्टर उदयनारायण तिवारी' 'आज' (वाराणसी) 31 अगस्त, 1984

अन्त में मुझे साहसिक कदम उठाना पड़ा। मैंने 1987 में तै किया कि डॉ0 तिवारी के नाम पर एक व्याख्यानमाला शुरु कराई जाय। मैंने डॉ0 हरदेव बाहरी से परामर्श किया, उन्होंने लिंग्विस्टिक सोसाइटी आफ इण्डिया को पत्र लिखने के लिए निर्देश दिया। कई मास तक जब कोई उत्तर नहीं आया तो डॉ0 बाहरी ने मुझे अनुमति दी कि मैं हिन्दुस्तानी एकेडमी के अध्यक्ष डॉ0 रामकमल राय से बात करूं।

सौभाग्यवश डॉ0 राय ने मेरे प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। मैंने तुरन्त ही उनके पास 25000/ रु0 चेक भेज दिया और यह अनुरोध किया कि इसी वर्ष से यह व्याख्यानमाला शुरू हो। इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 28 जुलाई को प्रतिवर्ष किसी प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी को बुलाकर व्याख्यान कराये जायें। इसके लिए मैंने 1000/- और दिए। मेरी एक शर्त और थी कि पहला व्याख्यान डॉ0 हरदेव बाहरी दें।

बहरहाल यह व्याख्यानमाला शुरू हो गई और अभी तक डॉ0 हरदेव बाहरी, डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया, डॉ0 महावीर सरन जैन, डॉ0 सूरजभान सिंह, डॉ0 विद्या निवास मिश्र तथा डॉ0 एन. सुन्दरम के व्याख्यान सम्पन्न हो चुके हैं।

व्याख्यानमाला के ही प्रसंग में डॉ0 भाटिया ने मुझे लिखा कि वर्ष 2003 में डॉ0 तिवारी की जन्मशती मनाई जानी चाहिए। मैं डॉ0 तिवारी के कई शिष्यों से इस सम्बन्ध में बातें कर चुका हूँ किन्तु कोई कुछ करता नजर नहीं आया।

अन्त में मैंने संकल्प लिया कि हिन्दी के एक महान भाषा-विज्ञानी की जन्मशती मनाने के लिए सबसे अच्छा कार्य यही होगा कि उनके सम्बन्ध मे जो कुछ भी ज्ञात कर सकूँ, उसे लिपिबद्ध करके पुस्तक का रूप दे दूँ।

डॉ0 तिवारी का पुस्तकालय

डॉ0 तिवारी की मृत्यु के 16 वर्ष बाद उनकी पुत्रवधू विजया ने एक दिन मुझे फोन करके पूछा कि वे डॉ0 तिवारी की पुस्तके दान-स्वरूप किसी पुस्तकालय को देना चाहती है। मैंने उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन का नाम सुझाया। प्रसन्नता की बात है कि वर्ष 2000 मे उन्होने 2500 पुस्तके सम्मेलन को दान में दे दी है। मैं 17 मई, 2001 को उन पुस्तको को देखने सम्मेलन गया। मुझे सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री विभूति मिश्र ने बताया कि सम्मेलन संग्रहालय के सबसे ऊपरी खण्ड में एक बरामदे को विशेष रूप से घेर कर डॉ0 तिवारी की पुस्तकों का संग्रह सुरक्षित कर दिया गया है

मैं नही जानता कि इन पुस्तको का अभी तक कोई उपयोग हुआ कि नही।

हिन्दी जगत द्वारा एक अन्य भाषा वैज्ञानिक की उपेक्षा का उदाहरण इलाहाबाद नगर के ही डा0 हरदेव बाहरी की पुस्तकों का है।

शोक समाचारों से

1 **महाबीर सरन जैन, बुखारेस्ट से**

गुरु जी जैसा मनुष्य इस कलियुग मे मिलना दुर्लभ है। मेरी तो श्रद्धा के केन्द्र ही नही रहे।

2 **बाबू राम सक्सेना**

उनका जीवन इतना पवित्र और स्वच्छ था कि ईश्वर निश्चय ही उनको शाश्वत शान्ति प्रदान करेगे। अभी चल बसने के 15 दिन पूर्व गुरु पूर्णिमा पर अपने एक शिष्य के द्वारा प्रणाम और मिठाई भेजी थी . वे मेरे अनुज थे और जो स्नेह और श्रद्धा उन्होने मुझे दी वह कभी भुलाया नही जा सकता

3 **प्रभात, बंबई**

डॉ0 साहब के निधन के समाचार से एक जबरदस्त धक्का लगा। . . मै सबसे पहले सन् 1946 मे उनसे मिला था। गुरु-शिष्य का जो स्नेह सबध उस समय जुडा वह अन्त तक वैसा ही अकलुष रहा। जब वे बंबई आते थे तो मेरे पास ही ठहरते थे।

हिन्दी मे भाषा-विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र की गरिमा जिन थोडे से मनीषियो ने बढाई है उनमे डाक्टर साहब का नाम बहुत ऊपर है। वे इस पीढी के वरेण्य आचार्य थे और कर्मठता की प्रतिमूर्ति थे।

4 **मण्डन मिश्र, केन्द्रीय सस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली**

डॉ0 तिवारी जी ने भाषा विज्ञान और हिन्दी साहित्य के विकास मे जो अभूतपूर्व योगदान किया है उसके लिए सारा ससार उनका ऋणी है।

5 **गणेश चौबे - चम्पारन**

वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के अप्रतिम विद्वान थे — रागद्वेष से परे ब्रह्मर्षि थे। मै उम्र मे उनसे दस वर्ष छोटा हूँ। उनका मुझ अपार स्नेह प्राप्त था।

6 **डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, वाराणसी**

डॉ0 उदयनारायण तिवारी जी मेरे घनिष्ठ मित्रो मे थे। उनकी आज्ञा को मै कभी टालता नहीं था

7 **डॉ0 शिवमगल सिह सुमन, उपाध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान**

अभी विगत् 23 जुलाई को कार्यकारिणी की बैठक में सम्मिलित हुए और वृद्धावस्था के कारण दुर्बल दिखाई पडने पर भी उसी उल्लास से मुझ पर आशीर्वादो की वर्षा की थी।

8 **डॉ0 विद्या निवास मिश्र, निदेशक, के. एम इंस्टीट्यूट, आगरा**

स्व तिवारी जी ने भाषा विज्ञान के क्षेत्र मे जो सेवाएँ की है वे अप्रतिम है।

9 डॉ0 रामसिंह तोमर, शान्ति निकेतन

28/7 को ही रेडियो से समाचार सुना, हृदय को बड़ा आघात लगा। उनको यहाँ आमंत्रित करने मैं स्वयं उनसे मिलने गया था। वे तैयार हो गये मैं बीमार हो गया, उनका आना नहीं हो सका।

10 बलदेव उपाध्याय, वाराणसी

उनकी विद्वता जितनी उदात्त थी, उनका स्वभाव उतना ही कोमल और मधुर था . उन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी की सेवा बड़ी लगन से एवं बड़ी निष्ठा से की थी। उनके भाषाशास्त्रीय ग्रन्थ हिन्दी साहित्य के अनुपम रत्न हैं जिनकी ज्योति सर्वदा शारदा के मन्दिर को उज्ज्वलित करती रहेगी।

उनका मेरा सम्पर्क तथा परिचय सन् 1925 से ही था।

11 रामसिंहासन सहाय मधुर, बलिया

भाई उदयनारायण जी मेरे 72 वर्ष के साथी और निकटतम मित्र थे। उनके देहावसान से मैं शोकसंतप्त हूँ।

12. सुमन चटर्जी, कलकत्ता

Dr Tiwari was a very favourite student of my late father Dr Suniti Kumar Chatterji They have had a very cordial friendship to the last days of my father

13 डॉ0 सुभाष चटर्जी, खैरा, प्रोफेसर कलकत्ता विश्वविद्यालय

I should like to convey that the teachers of the Dept of Linguistics deeply mourn the death of Dr. U N Tiwari, a distinguished alumnus of the Department

14. श्री भक्त दर्शन, देहरादून

23 जुलाई को लखनऊ में उ प्र हिन्दी संस्थान की बैठक में उनसे भेंट हुई थी और उन्होंने बहुत प्रेम बातें की थी अत: उनके आकस्मिक निधन से मुझे व्यक्तिगत आघात पहुंचा है।

15 मंत्री, भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता

उनके निधन से हिन्दी भाषा विज्ञान तथा साहित्य की जो अपूरणीय क्षति हुई है उसकी पूर्ति सम्भव नहीं। तीन वर्ष पूर्व डॉ0 तिवारी ने भारतीय भाषा परिषद की डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा व्याख्यानमाला का प्रथम भाषण दिया था।

16 डॉ0 राम करण शर्मा, वाराणसी

हमारे अभिभावक आचार्य उदय नारायण तिवारी का निधन समस्त संस्कृत परिवार एवं समस्त भाषा विज्ञान परिवार के लिए अपूरणीय क्षति है। वैदुष्य, सौजन्य, लोकप्रियता एवं सहानुभूति का ऐसा समन्वय अब हमारे लिये सुदुर्लभ हो जायगा।

जीवन वृत्त

17 **विद्याभास्कर जी, वाराणसी**

वैसा सरल हृदय विद्वान कहां मिलेगा?

18 **भाषा विज्ञान विभाग, सागर विश्वविद्यालय**

हिन्दी क्षेत्र मे भाषाविज्ञान की नीव रखने वालो में डॉ0 तिवारी का प्रमुख हाथ रहा।

19 **रामदयाल पाण्डेय, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना**

इस अनभ्रवज्रपात की बेला मे परिषद् शोक व्यक्त करती है।

20 **डॉ0 आनन्द प्रकाश दीक्षित, पुणे**

हिन्दी का एक प्रथितयश महारथी उठ गया। प0 जी विनम्रता एवं सद्भाव की प्रतिपूर्ति थे। जीवन भर राजनीतिक दलबदी से परे रहकर साहित्य और भाषा की साधना मे समर्पित भाव से लगे रहे।

21 **श्री नारायण चतुर्वेदी, लखनऊ**

हतबुद्ध हूँ! मेरा दाहिना हाथ टूट गया।

22 **डा0 श्रीधर मिश्र, बम्बई**

उनके निधन से जो रिक्तता आई है उसकी पूर्ति दिखाई नहीं देती।

❑ ❑ ❑

❷

व्यक्तित्व

किसी व्यक्ति के जीवनवृत्त को ही जान लेना पर्याप्त नहीं होता। उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जानने के लिए अन्य अनेक बातों की जानकारी आवश्यक है। डॉ0 तिवारी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उनके व्यक्तित्व की कुछ उल्लेखनीय विशेषताएँ थी– उनका मृदु स्वभाव, उनकी सरल वेशभूषा, उनका विस्तृत परिचयक्षेत्र, उनकी व्यापक पठन-रुचि एवं उनकी परम वैष्णवता। इसी के साथ ही उनका अच्छा स्वास्थ्य प्रेरित करता था कि उनकी आदतों के बारे में भी जाना जाय। यूँ तिवारी जी का जीवन "खुली पुस्तक" के समान था। उनका हृदय अत्यन्त विशाल था। उनके घर तथा हृदय के कपाट समान रूप से सदैव खुले रहते थे, जिनमें झाँका ही नहीं जा सकता था, अपितु उसमें सहभागिता का आस्वाद भी लिया जा सकता था।

डॉ0 तिवारी में गहन अध्ययन के प्रति प्रारम्भ से ही अभिरुचि थी। वे न केवल भाषाविज्ञान को नवीनता देते रहे, अपितु साहित्य के अन्य विषयों पर लगातार पुस्तकें पढ़ते रहते। उन्होंने बहुत अच्छा पुस्तकालय बना लिया था, जिसमें से उनके परिचित प्रायः आवश्यक पुस्तकें उधार ले जाते थे। (पर सभी पुस्तकें वापस नहीं आ पाती थीं। तिवारी जी को मांगने की आदत नहीं थी।) वे पुस्तकें खरीदते भी थे और भेटस्वरूप भी पुस्तकें उन्हें प्राप्त होती रहती थीं।

डॉ0 तिवारी में संग्रह प्रवृत्ति पहले से ही थी, फलतः उन्होंने तमाम उपयोगी पत्रिकाओं के महत्त्वपूर्ण अंक भी संकलित कर रखे थे। यही नहीं, उन्होंने अपने कुछ परिचितों के पत्रों का भी संकलन कर रखा था जिनमें महापंडित राहुल सांकृत्यायन तथा भदन्त आनंद जी के पत्र मुख्य हैं।

डॉ0 तिवारी अपने जीवन का पूरा लेखा-जोखा अपनी डायरियों में वर्षानुवर्ष संक्षेप में लिखते जाते थे। यही कारण है कि 1954 से 1983 तक की डायरियों के आधार पर ही उनके विषय में बहुत सी बातें उद्घाटित हो सकी हैं और अन्य कुछ बातों की पुष्टि हो सकी है। अन्यथा उनकी मृत्यु के बाद उनके विषय में बताने वाले भी अब नहीं रह गये।

डॉ0 तिवारी प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा के प्रतीक थे। उनके मन में अपने गुरुओं के प्रति असीम सम्मान एवं श्रद्धा थी। वे अपने से छोटों को भी "आप" कहकर सम्बोधित करते थे। उनकी जीवन-चर्या नियमित थी। ब्राह्ममुहूर्त में जग जाना, व्यायाम, ध्यान आदि करना, फिर घूमने जाना, लौट कर विश्राम तथा समाचार पत्र वाचन, फिर कुछ लेखन कार्य और तब विश्वविद्यालय जाना, लौट कर गृह कार्य करना और रात में जल्दी सो जाना—उनके अच्छे स्वास्थ्य का यही रहस्य था।

अवकाश के दिनों में या अध्यापन आदि के बाद वे विभिन्न गोष्ठियों या सभाओं में जाते, समयानुकूल बोलते। उन्हें अन्यों को बोलने सुनने में आनन्द मिलता था।

तिवारी जी प्रातःकाल जब भ्रमण करने जाते तो प्रायः मित्रमंडली के साथ दूर-दूर तक किला, रामबाग, दारागंज तक जाते। केदार नाथ गुप्त, लल्ली पाण्डेय, भारमल शर्मा, प्रभाकर ठाकुर आदि उनके साथ घूमने जाते। दारागंज से लौटते समय साग-सब्जी भी लेते आते।

पैदल चलना तो उनका स्वभाव था। किन्तु जब विश्वविद्यालय जाते या अन्यत्र मिलने-जुलने जाते तो रिक्शे पर ही जाते।

तिवारी जी परम वैष्णव थे– शुद्ध शाकाहारी। उनकी पत्नी भी अति धर्मपरायणा–पूजा पाठ, गगा स्नान गोपालन मे रुचि रखने वाली।

वैसे तो तिवारी जी हॅसमुख एवं मृदुभाषी थे किन्तु कभी-कभी क्रोध भी करते थे। लोग बताते है कि दारागज स्कूल मे पढाते समय उन छात्रों की पिटाई भी करते थे जो समय से नहीं पहुचते थे या काम करके नहीं लाते थे। वे यदा-कदा अपने पुत्रों पर भी क्रुद्ध हो जाते थे। किन्तु जब पत्नी पर क्रोध करते तो मुँह पर हाथ लगाकर हट जाते और फिर पश्चाताप करते कि अब पुन नहो डाटूँगा। उनकी डायरियो मे ऐसे कई अवसरो का उल्लेख है। वे मन के स्वच्छ थे, तभी तो ऐसा लिख भी देते थे।

वे अपने पुत्रो तथा पुत्रियो को समान रूप से पिता का प्यार देते रहे। सबो की शादियों मे अपनी पत्नी की सलाह ली। शादी कर देने के बाद पुत्रिया के घर जाते रहे किन्तु वहाँ पानी तक नहीं पीते थे। समाचार पूछकर, कुछ देर रुककर वापस चले आते थे।

डॉ0 तिवारी सादगी के अवतार थे। सिर पर छोटे-छोटे बाल, बीच मे चुटिया, शरीर पर खादी का कुर्ता और धोती तथा पॉव मे खादी भडार के जूते– यही उनकी वेशभूषा थी। बंगाल मे रहने के कारण प्राय छाता भी अपने पास रखते। वे छडी (बेत) भी लेते थे। जब 28 अगस्त, 1958 को विदेश जाने लगे तो मित्रो के आग्रह पर उन्होने कोट, पाइट, टाई तथा शू धारण किया। वे मुच्छे नहीं रखते थे।

वे जीवन भर गांधीवादी बने रहे। कांग्रेस के प्रति उनकी श्रद्धा थी। वे गाधी, नेहरू, इन्दिरा के प्रशसक थे। वे लोहिया जी का भी आदर करते थे। वे राजर्षि टडन, लाल बहादुर शास्त्री तथा कमलापति त्रिपाठी से जुडे थे। अपने अन्तिम समय मे देश में राजनीतिक उथल-पुथल को लेकर क्षुब्ध रहते थे (डायरियो से पता चलता है)।

धार्मिकता तो मानो उन्हे अपने पूर्वजों से विरासत में मिली थी। माघ मेला मे जाकर भजन-कीर्तन उपदेश सुनना बद्रीनाथ, केदार नाथ (1954), रामेश्वरम् की यात्रा करना, दशहरे का मेला देखना, शिवरात्रि तथा नवरात्रि के व्रत रखना, सत्यनारायण कथा तथा भागवत सुनना (1970) पितृ श्राद्ध तथा पिण्डदान, अन्य धर्मों के महात्माओ को सम्मान देना, गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु के घर जाकर प्रणाम करना — ये सारे कृत्य उनकी धार्मिकता को पुष्ट करने वाले हैं।

आयु बढने पर उन्हें ऑख, दॉत एवं पैर की व्याधि ने घेरना शुरू कर दिया था।

डॉ0 श्रीधर मिश्र ने (आज मे 31 8 1984) डॉ0 तिवारी के विषय मे ठीक ही लिखा है 'वे सघर्ष मे नहीं समन्वय मे विश्वास करते थे। वे ईर्ष्या में नहीं बल्कि कर्म में विश्वास करते थे। उन्होने प्रेम स्नेह, निर्माण की नीति अपनाई। जहा वे अपने अग्रेजो गुरुओ के प्रिय रहे वहीं वे अपने कर्मठ मित्रो, विद्यार्थियो के लिए पूज्य और प्रेरणा स्रोत रहे।'

हमने इनके बारे मे विस्तृत जानकारी के लिए उनकी डायरियो का सहारा लिया है। पाठको के मनोरंजनार्थ तद्विषयक विवरण प्रस्तुत हैं—

स्वास्थ्य

6 जनवरी, 1955 — ऑख की परीक्षा कराई। चश्मा लगेगा। बडी थकावट मालूम हो रही थी अत थोड़ा आराम किया।

12 जनवरी, 1955 — मुझे न जाने क्यो आजकल क्रोध आ जाता है। यह ठीक नहीं।

27 अगस्त, 1959	मास्को। घोर ऋतु परिवर्तन। जुकाम हुआ।
6 फरवरी, 1968	पत्नी के दाहिने हाथ तथा पैर में पक्षाघात।
1 अप्रैल, 1968	दो दाँत उखड़वाये।
23 अगस्त, 1968	पत्नी को चक्कर पर चक्कर। जबलपुर अस्पताल ले जाना पड़ा।
2 मार्च 1970	आज से सिर में पीड़ा प्रारम्भ, कमर में भी दर्द। शरीर बहुत कमजोर।
26 जून, 1970	डॉ0 मलिक की क्लीनिक में दाँत उखड़वाया।
29 जून, 1970	भार 134 Kg तथा रक्तचाप 124/80 दोनों ठीक।
17 जुलाई 1970	शौच के बाद बवासीर के कारण खून आया।
28 जुलाई, 1970	शरीर के जोड़ जोड़ में दर्द। बहुत कठिनाई से चल पाता हूँ।
3 सितम्बर, 1970	मृत्यु से भय नहीं, किन्तु रुग्ण पत्नी की अत्यधिक चिन्ता है।
22 नवम्बर, 1973	भोजन के समय मन अशान्त हो गया और मैं क्रोध में पागल हो गया। छः सात महीने के बाद आया किन्तु वेग में न्यूनता थी।
23 नवम्बर, 1973	आँखों को त्रिफला से धो रहा हूँ।
23 जनवरी, 1974	आज क्रोध का दौरा आया। एक घंटे तक पागल बना दिया।
10 जनवरी, 1977	मानसिक शैथिल्य अधिक है। शिव-शिव कहकर जीवन काट रहा हूँ।
19 दिसम्बर, 1977	अर्श के कारण तबियत खराब।
11 जून, 1978	नीचे के दो बचे दाँत उखड़वा कर बेदान्ती बन गया।
22 जनवरी, 1981	गाँठों में इतना दर्द कि चलना दूभर।
13 जुलाई, 1981	टहलना बन्द।
20 अगस्त, 1981	रात में अब कम दिखाई देने लगा।
20 सितम्बर, 1981	आजकल निष्क्रिय जीवन व्यतीत हो रहा है।
27 नवम्बर, 1981	दाहिनी कलाई में किंचित दर्द।
21 फरवरी, 1982	आज से आयुर्वेदिक दवाएं लेना प्रारम्भ किया।
18 जनवरी, 1983	चक्कर आया। पैर लड़खड़ा रहे हैं।
25 फरवरी, 1983	आज से उबला सोयाबीन लेना प्रारम्भ किया। निम्न रक्त चाप हो गया (100/80)

धार्मिकता

10 जनवरी, 1954	माघ मेला का दृश्य बहुत ही सुन्दर लग रहा था।
14 जनवरी, 1954	पहली बार उस पार झूँसी गया। प्रत्येक अखाड़े को देखा।
24 जनवरी 1954	करपात्री जी के कैम्प आया।
27 जनवरी, 1954	इस वर्ष ग्रीष्मावकाश में उत्तराखण्ड-केदारनाथ बद्रीनाथ की यात्रा सपत्नीक करने का विचार है।

3 फरवरी, 1954	अपार जनसमूह (माघमेला) के कारण त्रिवेणी जाने की हिम्मत नही पडी .... बहुत से लोग दब कर मर गये। आज चित्त अधिक दुखी। भोजन न कर सका।
14 जून, 1954	बदरीनाथ की यात्रा पर रवाना। (10 जुलाई को लौटे और 18 जुलाई को ब्राह्मण भोज कराया जिसमें निराला जी सम्मिलित हुए)।
7 अक्टूबर, 1954	दशहरा दल जार्स्टनगज मे देखा।
8 अक्टूबर, 1954	एकादशी व्रत कर रहा हूँ।
18 दिसम्बर, 1954	जन्मपत्री पास मे रखा।
26 जनवरी, 1955	प्रात घूमते हुए सगम की ओर गया। प्रतिवर्ष की भाँति अयोध्या के वैष्णव साधु इस वर्ष भी यहाँ आए है।
2 फरवरी 1955	पभुदत्त ब्रह्मचारी के स्थान झूसी गया। थोडी देर तक उनसे गो-हत्या निषेध बिल के सम्बन्ध मे बाते हुई। तदुपरान्त कीर्तन चलता रहा। देवरहवा बाबा के दर्शन का अपूर्व सौभाग्य प्राप्त हुआ।
13 मार्च, 1955	गृह प्रवेश सम्बन्धी कार्य का शुभारम्भ।
10 मार्च, 1956	आज शिवरात्रि व्रत कर रहा हूँ।
17 मार्च, 1961	आज से नवरात्र प्रारम्भ हुआ अतएव सप्तशती का पाठ शुरू किया। गुडहल और गुलाब का फूल लाया। पूजा प्रारम्भ की। पाठ मे ढाई घटे लगे।
2 फरवरी, 1962	चूंकि आज से अष्ट ग्रहो का योग है अत चारो ओर भजन कीर्तन चल रहा है।
5 अप्रैल, 1962	स्नानोपरान्त 8 बजे दुर्गा सप्तशती का पाठ पारम्भ किया। कील कवच के साथ 10 बजे समाप्त कर डाला।
27 फरवरी, 1970	श्रीमद्‌भागवत की कथा आरम्भ हुई।
1 अक्टूबर, 1970	आज चण्डी पाठ पर बैठा।
16 अगस्त, 1972	अरैल पहली बार गया। बाबा जी का दर्शन किया।
2 अक्टूबर, 1972	एकादशी को मेरे पूज्य पिता का निधन हुआ अत आज पिण्डदान किया।
25 नवम्बर, 1973	मनकामेश्वर मे रामचरित मानस का अखण्ड पाठ चल रहा था। एकान्त मे बहुत अच्छा लग रहा है।
18 अगस्त, 1974	पुरुषोत्तम मास शुरू। कुल परम्परानुसार शिवलिग की स्थापना करके बिल्व पत्र, धूप, पुष्प द्वारा पत्नी सहित शिवपूजन किया। यह एक मास चला।
14 सितम्बर, 1974	पत्नी को एक घटे तक रामचरित मानस सुनाया।
7 अक्टूबर, 1974	पत्नी को एक घटे तक रामचरित मानस सुनाया।
25 दिसम्बर, 1974	आज ईसा का जन्म दिन है। महामना मालवीय एव शारदा माँ का भी आज ही जन्म दिन है। इन तीनो ने अहकार पर विजय प्राप्त की थी।

3 दिसम्बर 94	आज वर्ष का अन्त है टेनिसन की प्रसिद्ध कविता याद आ रही है।
1 जनवरी, 1977	जीवन मे प्रत्येक दिन नवीन और प्रथम है। इसी प्रकार एक-एक दिन व्यतीत हो रहा है और हम मृत्यु के निकट जा रहे है।
14 जनवरी, 1977	आज सक्रान्ति स्नान के लिए 48-49 लाख व्यक्ति प्रयाग आये।
29 जनवरी, 1977	शीत लहरी। मरणोपरान्त स्वर्ग पाने की आशा मे इस जन्म मे कष्ट सह रहे है। धर्मान्धता का कोई ठिकाना नही।
28 मई, 1978	शीतला सप्तमी। आज सोहबतिया बाग मे रौजा पर मेला था।
29 मई, 1978	आज सोमवार का बडका मेला तो हुआ किन्तु 15-20 वर्ष पहले जैसे यह होता था उसका चौथाई भी न था।
17 जुलाई, 1981	गुरु पूर्णिमा। डॉ0 बाबूराम सक्सेना के घर जाकर माल्यार्पण किया।
6 जुलाई, 1982	गुरुपूर्णिमा को चट्टोपाध्याय के घर जाते रिक्शा उलटा फिर भी बाबूराम सक्सेना के यहाँ गया।
18 मई, 1983	गया गया। पिंडदान किया। पीतल किवाड का पडा किया।

डॉ0 तिवारी का परिचय-क्षेत्र

डॉ0 तिवारी का परिचय-क्षेत्र व्यापक था। अपनी जन्मभूमि बलिया के परिचितो के अतिरिक्त इलाहाबाद के दारागजवासियो से उनकी घनिष्ठता थी। दो विश्वविद्यालयो मे अध्यापन के कारण देश के साहित्यकारो तथा भाषाविज्ञानियो से परिचय था। लेखक होने के कारण प्रकाशको के साथ भी उनके सम्बन्ध थे।

अपने छात्रो तथा शोध-छात्रों के बीच तो वे प्रिय थे ही। वे उनसे घुलमिलकर बाते करते, और आशीर्वाद देते। यदि उनका कोई कार्य पडता तो पत्र लिखकर या स्वय जाकर कार्य करने का प्रयास करते।

तिवारी जी अपने गुरुजनो का विशेष सम्मान करते रहे। उन्हे प्रणाम करना, उनके पाद स्पर्श करना, विशेष अवसरो पर उनके घर जाकर मिलना अथवा यदा-कदा अपने घर आमन्त्रित करना तिवारी जी के स्वभाव के अग थे—जो प्राचीन वैदिक परम्परा के अग है।

तिवारी जी प्रारम्भ से ही अनेक संस्थाओं से जुडे रहे—इनमे हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रादेशिक हिन्दी सम्मेलन, राष्ट्र भाषा प्रचार सभा, वर्धा, हिन्दुस्तानी एकेडमी मुख्य थी।

तिवारी जी का सम्पर्क एवं पत्रव्यवहार कुछ विदेशी भाषावैज्ञानिको के साथ भी था।

इस व्यापक परिचय क्षेत्र का कारण था उनका सरल, निस्पृह, निश्छल, मिलनसार स्वभाव। उनके मित्रो एव प्रशसकों की सख्या निरन्तर बढती ही गई। डॉ0 तिवारी सबो का यथायोग्य सम्मान देते, आत्मीयता से बाते करते और उनके सुख-दुख मे हिस्सा बँटाते रहे।

तिवारी जी भोजपुरवासियों से भोजपुरी मे बाते करते। अन्यथा खडी बोली या आवश्यकता पडने पर अंग्रेजी का इस्तेमाल करते। वे बगला मे भी अच्छी तरह बाते कर लेते थे।

जिन साहित्यकारों से डॉ0 तिवारी की घनिष्ठता थी व थे—महाकवि निराला म[illegible]पन्त [illegible] [illegible] सांकृत्यायन भदन्त आनन्द कौसल्यायन जगदीश कश्यप डॉ0 [illegible] [illegible]रण उपाध्याय [illegible]ची [illegible] नागार्जुन

महादेव साहा, डॉ0 राम प्रसाद त्रिपाठी, श्रीराम नरेश त्रिपाठी, प0 श्रीनारायण चतुर्वेदी, डॉ0 रमाशंकर शुक्ल रसाल, प0 जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, डॉ0 प्रकाश चन्द्र गुप्ता, प्रो0 एस0 सी0 दत्त, श्री अमृतराय, श्री पहाड़ी जी, रामधारी सिह दिनकर, भगवती प्रसाद बाजपेयी, किशोरीदास बाजपेयी, लक्ष्मीधर बाजपेयी, प0 कृष्णदत्त बाजपेयी, डॉ0 दशरथ ओझा, श्री अंचल जी, श्री ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल, प0 सुमित्रा नन्दन पन्त, श्रीमती महादेवी वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, प0 इलाचन्द्र जोशी, श्री ओंकार शरद, श्री बिस्मिल इलाहाबादी, डॉ0 ईश्वरी प्रसाद, श्री दयाशंकर दुबे, श्री रघुपति सहाय फिराक, श्री बच्चन जी, डॉ0 के0 के0 भट्टाचार्य, पं0 अमरनाथ झा, प0 लक्ष्मी नारायण मिश्र, श्री रायकृष्ण दास, डॉ0 रामकुमार वर्मा, प0 उमाशंकर शुक्ल, डॉ0 जगदीश गुप्त, प0 विद्या निवास मिश्र, डॉ0 माता बदल जायसवाल, प0 हरिश्चन्द्रपति त्रिपाठी, श्री गोपीकृष्ण गोपेश, पं0 मुरलीनारायण मणि त्रिपाठी, प0 परशुराम चतुर्वेदी, श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, डॉ0 रामविलास शर्मा, डॉ0 शिवमंगल सिंह सुमन, डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, डॉ0 गोपाल त्रिपाठी, प0 चन्द्रबली पाण्डेय, नामवर सिंह, डॉ0 राजबली पाण्डेय, डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ0 प्रभाकर माचवे। दारागंज के लोगों में गिरीश जी, गणेश पाण्डेय, केदारनाथ अग्रवाल, जगपति चतुर्वेदी, श्री लल्ली प्रसाद पाण्डेय, प्रभात शास्त्री, मसुरियादीन, राय रामचरन अग्रवाल तथा सीताराम निषाद आदि।[1]

इनके छात्रों में डॉ0 पारसनाथ तिवारी, डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ0 सत्यव्रत सिन्हा, श्री राजकुमार शर्मा प्राय उनसे मिलने आते रहते। स्थानीय प्रकाशकों में श्री वाचस्पति पाठक, बिन्दा ठाकुर, श्री दिनेश जी, पहलाद दास प्राय तिवारी जी के यहाँ आते और तिवारी जी भी निःसंकोच इनसे मिलने जाते रहे।

डॉ0 तिवारी का परिचय कुछ राजनैतिक व्यक्तियों से भी था। इनमें राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, लाल बहादुर शास्त्री, कमलापति त्रिपाठी, श्री राम मनोहर लोहिया मुख्य थे। वैसे तो वे डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, जमनालाल बजाज आदि से भी मिल चुके थे। महात्मा गांधी और प0 जवाहर लाल नेहरू से भी साक्षात्कार हुआ था।

डॉ0 तिवारी के गुरुओं में बंगाल के डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या तथा सुकुमार सेन एवं स्थानीय गुरुओं में डॉ0 बाबूराम सक्सेना तथा प0 क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय थे। वे डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा को भी अत्यधिक सम्मान देते रहे।

डॉ0 तिवारी के सहपाठियों एवं सहकर्मियों में डॉ0 रामकुमार वर्मा, डॉ0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, डा0 माता प्रसाद गुप्त, डॉ0 ब्रजेश्वर वर्मा, डॉ0 हरदेव बाहरी, प0 उमाशंकर शुक्ल के नाम उल्लेखनीय है। डा0 तिवारी श्री सेनगुप्त, डॉ0 उमेश मिश्र, पं0 चन्द्रिका प्रसाद शुक्ल का भी सम्मान करते थे। सम्मेलन के सहायक मन्त्री प0 राम प्रताप शास्त्री तथा रेडियो के अधिकारी श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय के साथ भी घनिष्ठता थी। विश्वविद्यालय के अन्य विभागों में से रसायन विभाग के डॉ0 सत्येश्वर घोष, डॉ0 सत्य प्रकाश एवं डॉ0 रामदास तिवारी, सैन्य विभाग के श्री जी0 एस0 तिवारी तथा डी0 डी0 खन्ना, इतिहास विभाग के श्री गोवर्धन राय शर्मा, डॉ0 गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, डॉ0 यू0 एन0 राय तथा डॉ0 एस0 एन0 राय से भी उनकी घनिष्ठता थी। भौतिकी विभाग के केदारेश्वर बनर्जी का नाम वे प्राय लेते थे। गणित विभाग के डॉ0 गोरख प्रसाद, डॉ0 बी0 एन0 प्रसाद, डॉ0 श्रीराम सिन्हा, डा0 टी0 पन्ती से भी उनकी अन्तरंगता थी। उर्दू विभाग के डॉ0 एजाज हुसैन, डॉ0 एहतशाम हुसैन

---

[1] डा0 तिवारी की मृत्यु पर पत्र /तार द्वारा शोक व्यक्त करने वाले लोगों की संख्या सैकड़ों में है। हमने जीवनवृत्त के अन्तर्गत उनके नामों तथा कुछ के उद्गारों को उद्धृत किया है।

रचनाओं तथा डॉ0 तिवारी के संस्मरण से अन्य परिचितों के नाम ज्ञात किये जा सकते हैं।

को भी वे सम्मान देते रहे। निराला परिषद के श्री जय विशाल अवस्थी तथा 'कल्पना' के सम्पादक श्री कैलाश कल्पित से भी डॉ0 तिवारी आत्मीयता जताते रहे।

जिन विदेशी विद्वानो से उनका परिचय था वे या तो इंग्लैंड के थे, या रूस अथवा अमरीका के। इनके नाम थे डॉ0 ग्रियर्सन डॉ0 टनर, डॉ0 वारान्निकोव, डॉ0 चेलिशेव, डॉ0 गुम्पर्ज, श्री चर्निशोव बर्खुदारोफ आदि। ये सभी भाषाविज्ञानी थे। देश के वरिष्ठ भाषावैज्ञानिकों मे डॉ0 कत्रे, डॉ0 ताहरी डॉ0 सिद्धेश्वर वर्मा, डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद, किशोरी दास बाजपेयी, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, डॉ0 शिव पसाद सिंह का वे सम्मान करते रहे। वे काशी प्रसाद जायसवाल तथा तारापोरवाला के प्रति भी श्रद्धावनत थे।

श्री राजर्षि टंडन तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन से सम्पर्क

डॉ0 तिवारी द्वारा लिखित राजर्षि टंडन के विषय में जो लेखमाला 'भारत' मे छपी उसके प्रथम लेख में उन्होंने राजर्षि टंडन के प्रथम दर्शन से लेकर उनके साथ आत्मीयता स्थापित हो जाने तक का विस्तृत उल्लेख किया है। साथ ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन से अपने जुड़ने की कहानी भी लिख दी है। मैं उसे यावत् रूप में उद्धृत कर रहा हूं।

हिन्दी के प्राण राजर्षि टण्डन (1) ('भारत' से)

"आदरणीय बाबू पुरुषोत्तम दास जी टंडन का नाम मैंने 1921 के असहयोग आन्दोलन के दिनो मे सुना था किन्तु उनका प्रत्यक्ष दर्शन करने का अवसर तो मुझे सन् 1923 की जुलाई मे मिला। मैं उसी वर्ष स्कूल लीविंग परीक्षा मे उत्तीर्ण होकर कायस्थ पाठशाला कालेज मे इंटर मे अपना नाम लिखाने आया था। बाबूजी उस समय साहित्य भवन लिमिटेड मे बैठते थे मैंने इसी दुकान से Trial and Death of Socrates की एक प्रति खरीदी—यह इंटर पाठ्यक्रम मे थी।

1924 मे पयाग में अर्ध कुम्भ पड़ा। उस समय मैंने आदरणीय टंडन जी की दूसरी दिव्य झांकी देखी। आप सिर पर खददर का साफा, खद्दर का कुर्ता, खद्दर की धोती पहने हुए सेवा समिति कैम्प मे विराजमान थे।

सन् 1923 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ था। . वार्षिक अधिवेशन मार्च, 1924 मे दिल्ली मे हुआ था। हरिऔध जी आजमगढ से प्रयाग आ गये थे और टण्डन जी के साथ दिल्ली जा रहे थे। मैंने भी इस सम्मेलन मे सम्मिलित होने का निश्चय किया। सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन मे सम्मिलित होने का यह मेरा पहला अवसर था। इसी अधिवेशन मे मुझे पद्मसिंह शर्मा, प0 द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी, नाथूराम शंकर शर्मा, प0 जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल प0 गया प्रसाद शुक्ल सनेही, पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, पं0 श्रीनारायण चतुर्वेदी आदि के दर्शन करने का अवसर मिला।

हिन्दी के प्राण राजर्षि टण्डन (2)

मै उन दिनो बाहदुरगंज मे रहता था और कभी-कभी सम्मेलन भवन से पुस्तक लेकर पढ़ता था।

1925 के वार्षिक अधिवेशन मे मै सम्मिलित न हो सका।

1926 मे मै वृन्दावन हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन मे सम्मिलित हुआ किन्तु बाबू जी इसमे नही गये। मै दारागंज मे रहने लगा था। 1926 मे कानपुर के कांग्रेस अधिवेशन मे सम्मिलित

हुआ। दारागंज में अनेक साहित्यिक रहते थे जिनमे प0 द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी, प0 जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल प0 लक्ष्मीधर वाजपेयी, प0 गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश, प0 दयाशंकर दुबे, प0 सिद्ध नाथ दीक्षित प0 विद्याभास्कर शुक्ल ठाकुर श्रीनाथ सिंह, प0 भगवती प्रसाद वाजपेयी, श्री शम्भूदयाल सक्सेना, प0 गणेश पाण्डेय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

1928 का सम्मेलन का अधिवेशन मुजफ्फरपुर में प0 पद्मसिंह शर्मा के सभापतित्व में हुआ . उस समय मैं किसी दल विशेष से सम्बन्धित न होते हुए भी प0 लक्ष्मीधर वाजपेयी के साथ था। तब मैं विश्वविद्यालय का छात्र था। मै इसी अधिवेशन मे सर्वप्रथम स्थायी समिति का सदस्य चुना गया।

मै गोरखपुर सम्मेलन में (1929-30) भी सम्मिलित हुआ।

तब तक मैं टंडन जी के निकट सम्पर्क मे नही आया था।

1930 मे मैं सम्मेलन की स्थायी समिति का सदस्य था और उसके कार्यों मे दिलचस्पी लेने लगा था।

मैं 1930 के कलकत्ता सम्मेलन तथा 1931 के झासी सम्मेलन मे नही गया।

मैं 1932 मे ग्वालियर सम्मेलन अधिवेशन मे गया।

1933 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन दिल्ली मे महाराज सयाजीराव गायकवाड की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। पर इसमे मैं नही जा सका। किन्तु मैं साहित्य मन्त्री चुन लिया गया।

एक दिन टंडन जी ने सम्मेलन मे बुलाया और साहित्य विभाग के अन्तर्गत पुस्तकों का जो स्टाक था, उसकी सूची बनाने की आज्ञा दी। मैंने दारागंज के हाई स्कूल के अपने कतिपय छात्रों तथा प0 जयनारायण पाण्डेय की सहायता से सम्मेलन मे उपलब्ध पुस्तकों की पूरी सूची तैयार कराई,. जब मैंने विवरण प्रस्तुत किया तो बाबू जी (टंडन जी) प्रसन्न हुए।

सम्मेलन संग्रहालय बनाने के लिए मैंने नन्द किशोर अग्रवाल का नाम सुझाया।

1935 मे इंदौर मे सम्मेलन का अधिवेशन हुआ जिसमे महात्मा गांधी अध्यक्ष थे। पर मैं नही गया था।

1938 मे साहित्य सम्मेलन अधिवेशन शिमला मे हुआ। इसमे हिन्दी-उर्दू का झगड़ा उठा।

शिमला सम्मेलन के बाद मेरा सम्मेलन से और भी घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया। मैं सम्मेलन की प्राय सभी महत्वपूर्ण समितियो का सदस्य हो गया था। यहाँ तक कि राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा का भी सदस्य निर्वाचित कर लिया गया, ... जब भी अधिवेशन होता मैं बाबू जी के साथ सम्मिलित होने जाया करता था। वर्धा मे ही मेरी गांधी जी से भेंट हुई।

1940-41 मे बंगाल मे मुस्लिम लीग का मंत्रिमण्डल था और मुख्य मंत्री थे श्री फजलुल हक तथा स्पीकर थे अजीजुल हक। उन दिनो मैं अपने अध्ययन एवं अनुसन्धान के सिलसिले मे कलकत्ते मे था। मैं उन दिनो धर्मतल्ला स्ट्रीट में इण्डियन प्रेस में रहता था।

1941 मे अबोहर सम्मेलन (टंडन जी जेल मे थे और राजेन्द्र बाबू हिन्दुस्तानी का समर्थन करने लगे थे) मे डॉ0 अमर नाथ झा सभापति बने।

1942 मे टंडन जी के साथ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की बैठक मे गया। उसके बाद 1943 मे वार्षिक अधिवेशन हरिद्वार मे हुआ।

1944 में वार्षिक अधिवेशन जयपुर में हुआ।

1945 में वार्षिक अधिवेशन उदयपुर में हुआ जिसमें मैं गया।"

इस तरह तिवारी जी को टंडन जी के दर्शन का जो सौभाग्य 1923 में मिला था, वह 10 वर्ष बाद 1933 में घनिष्ठता में परिणत हो गया। फिर तो, चाहे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन होते रहे हों, या कि राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा की बैठक हो, डॉ0 तिवारी टंडन जी के साथ छाया की भाँति लगे रहे। टंडन जी भाषा विषयक सारी सलाह उन्हीं से ही लेते। यहाँ तक कि बाद में जब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई तो इसमें भी टंडन जी ने डॉ0 तिवारी को आगे-आगे रखा।

टंडन जी से सम्बन्ध होने का अर्थ ही था हिन्दी साहित्य सम्मेलन से जुड़ना। तिवारी जी ने सम्मेलन की विशारद तथा रत्न परीक्षाएँ उत्तीर्ण की थीं। उनके मन में सम्मेलन की प्रति आकर्षण तो था ही। वे 1928 में सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य चुने गये। 1933 में साहित्य मन्त्री चुने गये। उन्हें 1938 में राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा का भी सदस्य चुन लिया गया।

शायद 1941 का अबोहर अधिवेशन हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अन्तिम अधिवेशन था। उसके बाद सम्मेलन कानूनी विवाद में फँस गया किन्तु जब 1947 में महापंडित राहुल सांकृत्यायन साहित्य सम्मेलन के सभापति चुने गये तो डॉ0 तिवारी को सम्मेलन का प्रधानमंत्री पद सँभालना पड़ा। बाद में डॉ0 तिवारी की श्री प्रभात शास्त्री से नहीं पटी, हालांकि राम प्रताप त्रिपाठी शास्त्री, जो सहायक मन्त्री थे, डॉ0 तिवारी का अत्यधिक आदर करते रहे।

③

कृतित्व

डॉ0 तिवारी की ख्याति भाषाविज्ञानी के रूप मे रही है। उनके लेख, उनकी पुस्तके उनके द्वारा किये गये अनुवाद, समय-समय पर दिये गये व्याख्यान एव रेडियो वार्ताएँ उनके कृतित्व की वाहक है।

लेख

उन्होंने 1933 से ही भाषाविज्ञान विषयक लेख लिखने शुरू किये। ये भोजपुरी बोली के विविध पक्षो पर थे और "नागरी प्रचारिणी पत्रिका" तथा "हिन्दुस्तानी" मे छपे। उन्होने 1959 मे अपने विदेश प्रवास के दौरान भाषाविज्ञान विषयक लेखो के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी लेख लिखे। 1960 के बाद उन्होने अनेकानेक व्यक्तियो से सम्बद्ध सस्मरणात्मक लेख भी लिखे।

उन्होंने 1971 मे अपने 12 लेखो का एक सग्रह "पाणिनि के उत्तराधिकारी"* नाम से प्रकाशित कराया। किन्तु उनके अन्य सारे लेख असकलित रह गये। मैंने उनके ऐसे लेखों की सूची बनाने का प्रयास किया है — इसके लिए मैने 1954 से 1983 तक की उनकी डायरियो मे आये उल्लेखो को आधार बनाया। (इनमे अनेक लेखो को लिखने की तिथियाँ, उनको समाचारपत्रो / पत्रिकाओ मे भेजने की तिथियाँ अकित है।) कुछ लेखो की मुद्रित कतरन भी उपलब्ध हैं। इतने पर भी कुछ वर्षो की डायरियाँ न होने से लेखो की सूची अधूरी ही रह गई।

डॉ0 तिवारी ने प्रारम्भ से अग्रेजी मे भी लेख लिखे। ये लेख नितान्त शोधपरक है जो भाषा विज्ञान की शोधपत्रिकाओ मे छपते रहे।

मेरे अनुमान उनके कुल 82 लेख होंगे (सूची दी जा रही है) जिनमे से 12 लेख अंग्रेजी मे हैं। (सूची सलग्न)।

इन सारे लेखो को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है—

(1) भाषाविज्ञान सम्बन्धी लेख (20 हिन्दी + 12 अग्रेजी) = 32

(2) सस्मरणात्मक = 40

सस्मरणात्मक लेखो मे निराला, राहुल, हीरालाल खन्ना, द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी, सिद्धनाथ दीक्षित, गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश, जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, महादेवी वर्मा, रामचन्द्र शुक्ल, रामनरेश त्रिपाठी, माखन लाल चतुर्वेदी, पुरुषोत्तम दास टण्डन विषयक संस्मरण मुख्य है।

(3) विविध = 10

योग 82

---

*पाणिनि के उत्तराधिकारी मे सकलित 12 लेखो में से 6 अन्यत्र प्रकाशित है अत शेष 6 मिलकर 82 + 6 88 लेख हो जाते हैं।

हिन्दी-लेख

1933	भोजपुरी बोली पर एक दृष्टि	नागरी प्रचारिणी पत्रिका
1939	भोजपुरी लोकोक्तियाँ[1]	हिन्दुस्तानी
1940	भोजपुरी मुहावरे	हिन्दुस्तानी
1941	भोजपुरी मुहावरे	हिन्दुस्तानी
1942	भोजपुरी बोलियाँ	हिन्दुस्तानी
	भोजपुरी का नामकरण	नागरी प्रचारिणी पत्रिका
	[2]कबीर की भाषा	हिन्दी अनुशीलन, प्रयाग वि0 वि0
[2]1950	पालि साहित्य का इतिहास	हिन्दी अनुशीलन, प्रयाग वि0 वि0
[2]1951	पालि साहित्य का इतिहास	हिन्दी अनुशीलन, प्रयाग वि0 वि0
1951	तुलसी स्मारक	संगम (अगस्त मास)
1960	हिन्दी के प्राण बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन 10 लेख	"भारत" प्रथम 6 भाग 1960-61 भाग 7 15 जुलाई, 1962 भाग 8-10 साप्ताहिक भारत 1962
1960	हिन्दी के प्राण, पुरुषोत्तम टंडन	अभिनन्दन ग्रन्थ मे
1962	हिन्दी अपराजेय है	धर्मयुग (8 अप्रैल)
[3]1966	शब्द व्युत्पत्ति	अनुसन्धान
1968	आदि भाषाविद पाणिनि का देश आज परमुखापेक्षी क्यो?	युग धर्म (रायपुर) (21 सितम्बर)

अन्य निबन्ध–

हिन्दी विश्व मे इसका स्थान तथा स्वरूप बोध

प्राक्कथन . व्रजभाषा[ब्रजधायन] की भूमिका

तुलसीदास वैज्ञानिक अनुसन्धान का आरम्भ

विदेशो मे प्रेमचन्द की लोकप्रियता

[4]पालि साहित्य त्रिपिटक हिन्दी अनुशीलन

---

1 इस नाम से पुस्तिका भी छपी थी जो हिन्दी साहित्य सम्मेलन संग्रहालय मे है किन्तु तिथि नहो दी गई।

2 डॉ0 तिवारी की पुस्तक पाणिनि के उत्तराधिकारी मे 12 लेख संग्रहीत हैं जिनमे पालि वाड्मय शीर्षक लेख पृष्ठ 16 से 58 तक विस्तीर्ण है। अवश्य ही ये लेख तथा आगे के 3 लेख जो पालि साहित्य के विषय मे हैं पुस्तक के इस एक लेख में समाहित हैं।

3 यह लेख व्युत्पत्ति विज्ञान के क्रम से इसी पुस्तक में संकलित है

4 पाणिनि के [illegible] मे संग्रहीत

द्वितीय युग — हिन्दी अनुशीलन
अभिधम्म पिटक — हिन्दी अनुशीलन

भारतीय एकता का आधार — रामकथा

आगत शब्द

द्विवेदी मेला

अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन

ायरी के आधार पर अन्य लेखो की सूची

?4 नवम्बर, 1954	बाबू पारसनाथ सिंह	भारत
26 जनवरी, 1956	भाषाशास्त्र का अध्ययन	सरस्वती
1958	पाणिनि के उत्तराधिकारी	सरस्वती
26 अप्रैल, 1959	हिन्दुस्तान गदर पार्टी	सरस्वती
30 अप्रैल, 1959[1]	तुर्की भाषा का सुधार आन्दोलन (1-6 भाग)[2]	
1959	अली आदिल शाह की कविता[3]	सरस्वती[4]
1959	राष्ट्रभाषा की समस्या	सरस्वती
29 जून, 1959	सिद्धनाथ दीक्षित, गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश तथा ललिता प्रसाद शुक्ल के निधन पर शोकांजलि लिखी जिसे 'भारत' मे प्रकाशनार्थ भेजा।	
[5]नवम्बर 1959	हिन्दी क्षेत्र मे भाषा शास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता	सरस्वती
17 दिसम्बर, 1959	मेरी प्रेरणा का स्रोत भारती भवन पुस्तकालय	
1960	भाषा की परिभाषा तथा उसके स्वरूप	सरस्वती
	अवधी के ध्वनिग्राम · श्री टंडन अभिनन्दन ग्रन्थ	
	भोजपुरी के ध्वनि ग्राम · डॉ० धीरेन्द्र वर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ (हिन्दी अनुशीलन)	
24 जनवरी, 1962	राष्ट्रभाषा निर्माण और शब्दावली —रजत जयन्ती अंक · राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा के लिए	
26 जनवरी, 1962	स्वर्गीय रामनरेश त्रिपाठी	नई दुनिया/भारत

---

1 'पाणिनि के उत्तराधिकारी' मे संग्रहीत।

2 तिवारी जी ने अमरीका प्रवास के समय 1959 मे कुल 12 लेख लिखे जो 'भारत' तथा 'सरस्वती' मे प्रकाशित हुए।

3 इनका लेखन 30 अप्रैल, 1959 से लेकर 5 जून, 1959 के मध्य किया।

4 6 जून 1959 को ध्रुपद पर पुस्तक पढ़कर लिखना शुरू किया।

5 पाणिनि के उत्तराधिकारी पुस्तक मे संकलित।

6 फरवरी, 1962	सरस्वती की हीरक जयन्ती
20 फरवरी, 1962	राहुल जी पर लेख लिखाया
9 मार्च, 1962	हिन्दी अजेय है (यह लेख धर्मयुग में छपा।
12 अक्टूबर, 1970	मध्य प्रदेश की बोलिया का संक्षिप्त व्याकरण
11 दिसम्बर, 1970	द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी पर लेख शुरू किया किन्तु यह अक्टूबर, 1972 को समाप्त हुआ।
28 जुलाई, 1972	अठारहवी तथा उन्नीसवी शताब्दी में पूर्वांचल में हिन्दी गद्य का स्वरूप—इंदिरा गांधी अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए लिखना शुरू किया।
15 जनवरी, 1973	हिन्दी की लोक भाषाएं—समस्या एवं समाधान
3 मई, 1973	धीरेन्द्र वर्मा के सम्बन्ध में टिप्पणी-सरस्वती के लिए
21 अगस्त, 1973	मैंने उर्दू कैसे सीखी-लेख शुरू किया किन्तु 6 जनवरी, 1978 को 'अमृत प्रभात' के लिए पूरा किया।
10 मार्च, 1974	प0 क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय पर संस्मरण (जो उनके श्राद्ध दिवस पर छपेगा)
11 जून, 1974	डॉ0 राजबली पाण्डेय स्मृति ग्रन्थ के लिए लघु संस्मरण
3 दिसम्बर, 1974	अपनी जीवनी Famous Publication, 57 Dariya Ganj, Delhi के लिए भेजी।
22 दिसम्बर, 1974	भाषा शिक्षण पर छोटा सा लेख : नागपुर विश्व हिन्दी सम्मेलन के लिए
फरवरी, 1975	श्री नारायण चतुर्वेदी अभिनन्दन के लिए लेख लिखा (अभिनन्दन टलने से 29 अक्टूबर, 1976 को 'भारत' में छपा।) यही लेख 'हिन्दी सेवा की संकल्पना' पुस्तक में (1976) में संकलित हुआ है। इसके सम्पादक डॉ. विद्या निवास मिश्र है।
5 दिसम्बर, 1975	सूर्यकान्त बाजपेयी (भारत में प्रकाशनार्थ)
16 दिसम्बर, 1975	स्व. नर्मदा प्रसाद खरे एवं स्व. सुखदेव प्रसाद बिस्मिल पर लेख शुरू किया।
30 नवम्बर, 1976	सुनीति कुमार चटर्जी : व्यक्तित्व और कृतित्व (किन्तु यह लेख 20 फरवरी, 1977 को समाप्त हुआ। इसमें 5 लेख है जो 29 मई 1977 की मृत्यु के बाद (सरस्वती में) छपे।
26 दिसम्बर, 1976	झाबर मल्ल अभिनन्दन ग्रंथ के लिए लघु संस्मरण
11 मार्च, 1977	क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय स्मृति अंक के लिए लेख लिखना शुरू किया
15 जून, 1977	डॉ0 चटर्जी पर विविध समाचारपत्रों के लिए लेख
22 सितम्बर, 1977	राष्ट्रीयता का प्रतीक हिन्दी (सरस्वती)
30 अक्टूबर, 1977	प्रयाग के वे दिन : अमृत प्रभात
6 दिसम्बर, 197[illegible]	कश्यप जी पर लेख, जिसे शान्तिनिकेतन भेजा

कृतित्व

़ जनवरी, 1978	पन्त जी पर लेख (भारत)
15 जनवरी, 1978	माघ मेला (अमृत प्रभात)
11 मार्च, 1978	किशोरी दास वाजपेयी पर लेख
़ मई 1978	सुमित्रा नन्दन पन्त पर लेख
16 सितम्बर, 1978	नागार्जुन पर लघु सस्मरण
17 सितम्बर, 1978	ग्रियर्सन पर भोजपुरी मे लेख
7 अक्टूबर, 1981	ग्रियर्सन और सुनीति बाबू—भोजपुरी मे लिखना शुरू किया।
27 नवम्बर, 1981	राजर्षि टडन और हिन्दी सेवा लिखना शुरू किया जो अप्रैल, 1982 मे बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पत्रिका मे छपा
9 मई 1982	आचार्य बल्देव उपाध्याय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर लेख
19 जून, 1982	मधुर जी पर लेख, लल्ली प्रसाद पाण्डेय पर लेख (शकुन्तला सिरोठिया के लिए)
27 अगस्त 1982	हिन्दी के विकास मे भोजपुरी की देन
12 नवम्बर 1982	पाणिनि जीवनवृत्त, युग तथा महत्व (अर्जुन सिह अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए)
6 दिसम्बर, 1982	नागरी लिपि एशिया की एकता (विश्व हिन्दी सम्मेलन पत्रिका मे प्रकाशनार्थ)
30 जनवरी, 1983	राष्ट्रभाषा की परम्परा (दिनमान के लिए)
8 फरवरी, 1983	श्री धवले के बारे मे सस्मरण
9 मार्च, 1983	डॉ0 गणेश प्रसाद पर 20 पृष्ठीय लेख (मधुर जी क पास भेजा)
17 जून, 1983	ग्रियर्सन का जीवन वृत्त एव कृतित्व (लिख रहा हूँ)
12 अगस्त, 1983	श्रीमती महादेवी वर्मा पर लेख-
16 सितम्बर, 1983	आधुनिक आर्य भाषा मे पजाबी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी तथा बिहारी का व्युत्पत्ति मूलक अध्ययन (बिहार राष्ट्र भाषा पत्रिका मे प्रकाशनार्थ भेजा। (यह लेख जनवरी, 1984 मे छपा)।
14 अक्टूबर, 1983	रामचन्द्र शुक्ल पर लेख (जो अप्रैल, 1984 मे बिहार राष्ट्र भाषा पत्रिका मे छपा)।

अंग्रेजी-लेख

1. A dialect of Bhojpuri–Journal of Bihar and Orissa Research Society Patna, Vol xx, xxi, xxi Pt III
2. Bhojpuri Verbs—J Bloch Memorial volume, The Linguistic Society of India

---

टिप्पणी–रायल एशियाटिक सोसाइटी जर्नल मे 1946 Origin and Development of Bhojpuri शोधग्रथ छप चुका था किन्तु मुझे देखने को नहीं मिल पाया

3 Anabtyxis in Bhojpuri—R L. Turner commemoration volume, Linguistic Society of India 1954

4 Piriya-"Man"—A Journal & Anthropology published from Ranchi in memorry of S C. Das.

5 Bhojpuri—Encyclopeddia of Literature Edited by J T Shipley, Newyork 1946

6 Derivation of some words of Bihari Satsai Philology Calcutta

7 Formation of Tenses in some of the important dialects of Hindi Madhya Bharati (Journal of the Institute of Languages & Research Jabalpur) 1962

8 A comparative study of Tense formation in some of the main ddialects (standard Hindi, Brij Bhasha & Awadhi) of Hindi Published in Pt Chattopadhyay Samman Ank, Vol xxiii part II Pages 685-696

9 Traditional values in Modern Hindi Literature अमरीका की गोष्ठी मे प्रस्तुत

10 Descriptive Analysis of Hindi 1958

11. Intrusive vowels in Bhojpuri 1958

12 Bhojpuri Language & its Literature जायसवाल इंस्टीटयूट मे प्रकाशित होने वाले इतिहास के लिए

पुस्तक लेखन

डॉ0 तिवारी द्वारा सम्पादित, मौलिक तथा अनूदित पुस्तको की सख्या 17 है—

सम्पादित	3
मौलिक	9
अनूदित	4
सकलित (पाठ्य पुस्तक)	1
कुल	17

पुस्तके

1940 वीरकाव्य सग्रह (सम्पादक डॉ0 उदयनारायण तिवारी तथा पं0 भगीरथ प्रसाद दीक्षित) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

1946 Origin and Development of Bhojpuri एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल (इसका द्वितीय संस्करण 1984 मे हुआ) 706 पृष्ठ

1946/1950 तुलसीदल (बरवै रामायण, कवितावली, पार्वती मगल, जानकी मगल की विस्तृत भूमिका के साथ सम्पादन) प्रयाग सू0 भा0

1948[1] वीर काव्य - भारती भडार, इलाहाबाद

(1956 मे पुन सस्करण - सम्मेलन तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय हेतु)

---

1 टिप्पणी डॉ0 तिवारी ने हिन्दुस्तानी एकेडमी से प्रकाशित 'हिन्दी वीर काव्य सग्रह' का सशोधन 1956 मे किया और उसमे 7 पृष्ठ की भूमिका लिखी।

1954 भोजपुरी भाषा और साहित्य · राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना (20 अगस्त, 1954 को छप कर आ गई)

1955 गद्य पथ (संकलन) हाई स्कूल के लिए रामनारायण लाल, इलाहाबाद

1956 हिन्दी भाषा का उदगम और विकास · भारती भडार, इलाहाबाद (677 पृष्ठ) 17 जनवरी, 1956 को प्रकाशित

1958 रासपचाध्यायी और भवरगीत तरुण भारत ग्रथावली, इलाहाबाद

1959 भारत का भाषा सर्वेक्षण (डॉ0 ग्रियर्सन की पुस्तक "इण्ट्रोडक्टरी वाल्यूम का अनुवाद) प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश (368 पृष्ठ)

1962 हिन्दी भाषा तथा साहित्य राजकमल एण्ड सन्स, दिल्ली

1964 भाषा शास्त्र की रूपरेखा भारती भण्डार इलाहाबाद (328 पृष्ठ)

1970 भाषा विज्ञान (एफ0 मैक्समूलर की पुस्तक) "साइन्स आफ लागुएजेज का अनुवाद (702 पृष्ठ)

1971 भारतीय पाठालोचन की भूमिका (डॉ0 एम0 एस0 कत्रे की पुस्तक Textual Criticism का अनुवाद, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (174 पृष्ठ)

1971 पाणिनि के उत्तराधिकारी (निबन्ध सग्रह) लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद (234 पृष्ठ)

1982 83 अभिनव भाषा विज्ञान · किताब महल इलाहाबाद

1983 भाषा विज्ञान का संक्षिप्त इतिहास भारती भडार, इलाहाबाद (150 पृष्ठ)

1984 भारतीय आर्य भाषाएँ (डॉ0 ग्रियर्सन के लेख का अनुवाद) भारती भडार, इलाहाबाद

इन पुस्तको के अलावा डॉ0 तिवारी की विभिन्न डायरियो से निम्नाकित पुस्तकें लिखाने के कान्ट्रेक्ट होने या लिखे जाने के उल्लेख मिलते है—

1 'हिन्दी के कवि और काव्य' भाग 1 (इसका कान्ट्रेक्ट 19-9-54 को हुआ)
2 'लिपि कथा'[3] के कान्ट्रेक्ट 13-12-54, फिर 25-5-74 और 29-12-74 को हुए। उन्होने 29 दिसम्बर, 1974 को लेखन कार्य भी शुरू कर दिया (किन्तु छपी नही)।
3 आत्म कथा इसे 21 अगस्त, 1972 को लिखना शुरू किया (किन्तु छपी नही)
4 स्वन (ध्वनि) विज्ञान लेखन कार्य 1 जनवरी, 1976 को शुरू किया।

१९५४ मे गद्य सरिता प्रयाग यूनिवर्सल बुक।

2 इस पुस्तक मे 12 निबन्ध सकलित है जिनमे से 6 निबन्ध उसके पूर्व विभिन्न पत्रिकाओ मे प्रकाशित हो चुके थे

लिपिकथा (क्रमाक 2 तथा 7 पर) लिखकर पडी रही जिसे 1971 मे "पाणिनि के उत्तराधिकारी" पुस्तक मे पाचवे निबन्ध 'भारतीय लिपियो की उत्पत्ति तथा विकास' नाम से सकलित कर दिया। यह 63 पृष्ठो का निबन्ध है

टिप्पणी 1968 मे मनुष्य और समाज (अनुवाद) पुस्तक दिल्ली पीपुल्स पब्लिशिग हाउस से छपी है किन्तु सम्भवत यह किसी अन्य व्यक्ति की है क्योंकि एक हिन्दी कोश भी उदय नारायण तिवारी के नाम से है जो डा0 तिवारी द्वारा रचित नही है

5. भाषा विज्ञान के सिद्धान्त · लेखन कार्य 8 जून, 1955 को शुरू किया।
6 'हिन्दी भाषा और लिपि' · 30 जनवरी, 1955 को राजकमल प्रकाशन के लिए लिखना शुरू किया।
7 'लिपि कथा' का लेखन 14 अक्टूबर, 1954 को शुरू किया। 1956 मे भी इसे लिख रहे थे।
8. भाषा विज्ञान की पुस्तक का लेखन कार्य 1 जनवरी, 1972 को शुरू किया जो 25 मई, 1974 तक चल रहा था।

इनके अतिरिक्त राम प्रताप शास्त्री के एक सस्मरणात्मक लेख मे डॉ0 तिवारी द्वारा (1) सस्कृत व्याकरण का इतिहास, (2) भूषण सग्रह (भाग-1 व 2) तथा (3) 'कहानी कुज' के लेखन/सम्पादक का उल्लेख हुआ है। 'नए एकाकी' नाम का सकलन मोतीलाल बनारसी दास के यहाँ से प्रकाशित होने की सूचना है।

स्पष्ट है कि डॉ0 तिवारी मुद्रित पुस्तको के अतिरिक्त अनेक पुस्तको के लेखन की योजनाएँ बनाते रहे जो या तो पूरी नही हुई अथवा उन्हे अन्य पुस्तको का रूप दे दिया गया होगा।[2]

डॉ0 तिवारी की पुस्तको मे से 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' के कई संस्करण उनके जीवन काल में हो चुके थे। इसी तरह 'हिन्दी का उद्गम और विकास' का चतुर्थ सस्करण 1974 मे हुआ था। "भाषा शास्त्र की रूपरेखा" के भी कई सस्करण हुए।

'भोजपुरी भाषा और साहित्य' की समीक्षा Leader में 1 4 56 को डॉ0 हरदेव बाहरी द्वारा तथा 'हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास' की समीक्षा 22 4 56 को डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा लिखी गई। ये समीक्षाएँ दृष्टव्य हैं। डॉ0 बाहरी ने काफी विस्तृत समीक्षा लिखी है। 'भाषा शास्त्र की रूपरेखा' पर डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी द्वारा 29.7 1963 को डा0 तिवारी के नाम पत्र उल्लेखनीय है।

डॉ0 तिवारी जी द्वारा प्रणीत पुस्तको की कुल सख्या 17 है। प्रारम्भ मे उन्होंने कुछ साहित्यिक कृतियो का सम्पादन किया। भाषा विज्ञान विषयक उनकी पहली पुस्तक उनकी डी0 लिट् थीसिस थी जो Origin and Development of Bhojpuri (ओरिजिन एण्ड डेवलेपमेन्ट आफ भोजपुरी) नाम से 1946 मे Asiatic Society of Bengal (एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल) से प्रकाशित हुई। इसके बाद 1956 से हिन्दी में भाषा विज्ञान विषयक पुस्तको का लेखन शुरू हुआ जो 1983 तक चलता रहा।

ज्ञात हो कि डॉ0 तिवारी ने अपनी भाषा विज्ञान की पुस्तको के कारण बहुत कम समय मे साहित्य जगत मे अनूठा स्थान बना लिया था। उन्होंने अग्रेजी के कई प्रामाणिक ग्रन्थो का हिन्दी अनुवाद भी किया जिससे कि भाषा विज्ञान का क्षेत्र उर्वर बन सके।

---

1 लिपिकथा (क्रमांक 2 तथा 7 पर) लिखकर पडी रही जिसे 1971 मे "पाणिनि के उत्तराधिकारी" पुस्तक में पांचवे निबन्ध 'भारतीय लिपियों की उत्पत्ति तथा विकास' नाम से सकलित कर दिया। यह 63 पृष्ठों का निबन्ध है।

टिप्पणी 1968 में मनुष्य और समाज (अनुवाद) पुस्तक दिल्ली पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस से छपी है किन्तु सम्भवत यह किन्ही अन्य व्यक्ति की है क्योंकि एक हिन्दी कोश भी उदय नारायण तिवारी के नाम से है जो डा0 तिवारी द्वारा रचित नही है।

कृतित्व का विश्लेषण

डॉ0 तिवारी का कृतित्व लेखो तथा पुस्तको के रूप मे उपलब्ध है। इस कृतित्व का काल विभाजन कुछ इस प्रकार है—

(1) 1940 तक फुटकर कार्य

(2) 1948 के बाद मौलिक लेखन

(3) 1959-71, 1984 मे अनुवाद कार्य

(4) 1933 से 1984 तक लिखे गये लेख/निबन्ध।

डॉ0 तिवारी ने 1945 से अपनी प्रतिभा का सदुपयोग इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे अपने अध्यापन-कौशल मे किया जिसके फलस्वरूप अनेक छात्र शोधकार्य के प्रति उन्मुख हुए। भाषा विज्ञान के अलावा लोक साहित्य मे भी डॉ0 तिवारी की अभिरुचि थी। वे एम ए कक्षाओं मे इस विषय को पढाते भी रहे।

उन्होने 1961 से 1971 के मध्य जबलपुर विश्वविद्यालय मे जिस लगन से शोधकार्य का निर्देशन किया उसके फलस्वरूप दो दर्जन से अधिक शोध छात्रो ने भाषा विज्ञान, लोक साहित्य तथा साहित्य के विविध पक्षो पर शोध प्रबन्ध लिखे। इसे हमे डॉ0 तिवारी की रचयता के अंश रूप मे ही ग्रहण करना होगा।

डॉ0 तिवारी 1953 से ही भाषा विज्ञान की ग्रीष्मकालीन कार्यशालाओं मे सम्मिलित होकर नव्य भाषा विज्ञान के विषय मे अधिकाधिक ज्ञानार्जन करने के लिए प्रयत्नशील रहे। किसी भी जिज्ञासु अध्यापक के लिए ऐसा करना अनिवार्य है, तभी वह नूतनतम विषयवस्तु से परिचित होकर अपने छात्रो तक उस ज्ञान को पहुंचा सकता है और उसे अपनी कृतियो मे समाविष्ट कर पाता है। डॉ0 तिवारी ने ऐसा ही किया। वे 1956 मे पुन ग्रीष्मकालीन कार्यशाला मे 28 अप्रैल से 23 जून, 1956 तक मे पुणे गये। मई-जून, 1964 मे पचमढी की ग्रीष्मकालीन कार्यशाला म भी गये। अत डॉ0 तिवारी के कृतित्व के अन्तर्गत शोध के लिए परिष्कृत अभिरुचि को भी ध्यान मे रखना आवश्यक है हिन्दी क्षेत्र म नव्य भाषा विज्ञान के अध्यापन एव हिन्दी लेखन के सूत्रपात का श्रेय एकमात्र डा0 तिवारी को दिया जाना चाहिए। वे भाषा विज्ञान की खोज में 1958-59 म अमरीका मे भी रहे। डा0 तिवारी की भाषा विज्ञान की तृष्णा बुझाये नही बुझती थी। वे 9 जनवरी, 1955 को फ्रेंच का अभ्यास करने का उल्लेख करते है और 8 अक्टूबर, 1973 को (अवकाश ग्रहण करने क बाद) पुन भाषा विज्ञान के अध्ययन मे जुट जाते है। उन्होंने जबलपुर विश्वविद्यालय के कार्यकाल मे जो पहली पुस्तक लिखी वह 'भाषा शास्त्र की रूपरेखा' थी जो 1964 म प्रकाशित हुई।

उन्होने प्रयोग के रूप में अपने कुछ नए निबन्धो को 'पाणिनि के उत्तराधिकारी'' नाम से 1971 मे प्रकाशित किया। यही नही, 1970 मे मैक्समूलर की भाषा विज्ञान की पुस्तक का हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। उन्होने जबलपुर मे अध्यापन एव शोधकार्य निर्देशन के फलस्वरूप जिन विषयो पर गूढ चिन्तन-मनन किया उसके परिणाम स्वरूप, जब वे जबलपुर से कार्यमुक्त होकर इलाहाबाद आ गये, तो उन्होने दो अन्य महत्वपूर्ण पुस्तके लिखी—'अभिनव भाषा विज्ञान' तथा 'भाषा विज्ञान का सक्षिप्त इतिहास।' ये दानो पुस्तके 1982-83 मे प्रकाशित हुई। वे अपने अन्तिम वर्षो मे ग्रियर्सन के भाषा सर्वेक्षण के बिहारी भाषा वाले खण्ड का अनुवाद करते रहे (जो उनकी मृत्यु के उपरान्त प्रकाशित हुआ)।

डॉ0 तिवारी बड़े जीवट के व्यक्ति थे। उन्होंने 1930 से लेकर 1984 तक का, अर्धशताब्दी

के अधिक का काल केवल भाषा विज्ञान के चिन्तन, मनन, लेखन, अध्यापन एवं भाषण में बिताया। वे कर्मनिष्ठ साधक थे। (भाषा विज्ञान के विषय में उनकी चिन्ताओं को हमने अलग से दे रखा है।)

शायद अपनी इसी एकरसता को दूर करने के लिए ही वे अपने जीवन से सम्बद्ध घटनाओं, या व्यक्तियों के विषय में लिखते-बोलते रहते थे।

वे अपने नैत्यिक कार्यकलापों में समय के पाबन्द रहकर सामाजिकता तथा बुद्धिजीवी गतिशीलता के लिए समय निकालते रहे। मैं दर्शक रहा हूँ, 34 वर्षों की उनकी दिनचर्या एवं अन्य कार्यकलापों का। मुझे लगता था कि इतनी अधिक उम्र में भी वे किस तरह अपने दायित्व का निर्वाह कर लेते हैं। वे अधूरे नहीं पूरे मानव थे। अत्यन्त सुसंस्कृत, निष्ठावान, तप.पूत।

भोजपुरी भाषा और साहित्य

डॉ0 तिवारी अभी बी. ए. में थे तभी वे डॉ0 ग्रियर्सन के भोजपुरी विषयक अभिमत से (डॉ0 ग्रियर्सन के अनुसार भोजपुरी भाषा क्षेत्र हिन्दी के बाहर पड़ता है) तिलमिला उठे थे। उनके मन में यह संकल्प दृढ़ होता गया कि भाषा विज्ञान का अध्ययन करके अपनी बोली भोजपुरी का उद्धार किया जाय। जैसा कि अन्यत्र कहा जा चुका है, वे सन् 1930 से 1945 तक लगातार भाषा विज्ञान का अध्ययन करते रहे। उन्होंने पहले कलकत्ता जाकर डॉ0 चटर्जी तथा डॉ0 सुकुमार सेन के संरक्षण में भाषा विज्ञान का अध्ययन किया। तब डी0 लिट् डिग्री के लिए शोधकार्य शुरू किया जो Orgin and Development of Bhojpuri के सम्बन्ध में था। इसके लिए उन्होंने कलकत्ता में ही रहकर कार्य नहीं किया, अपितु शोध सामग्री के लिए भाषा सर्वेक्षण भी किया। भोजपुरी की सीमाएं निश्चित करने के लिए उन्हें नेपाल की सरहद तक यात्राएँ करनी पड़ीं। चूँकि भोजपुरी भाषा पर यह पहला शोधकार्य था, और उनके समक्ष कोई भारतीय सामग्री उपलब्ध नहीं थी अतः उन्हें ग्रियर्सन के 'भाषा सर्वेक्षण' को आधार मानकर उसी में संशोधन-परिवर्धन करना था। उन्होंने शोध प्रबन्ध लिखने के लिए डॉ0 चटर्जी की पुस्तक "बंगला भाषा का विकास" का ही आधारभूत ढाँचा बनाया और विभिन्न पक्षों के लिए शब्द जुटाने शुरू किये। उन्होंने भोजपुरी भाषा में प्राप्त लिखित सामग्री को भी ध्यान में रखा। यही नहीं, भोजपुरी के प्राचीन पत्रों तथा दस्तावेजों का भी संग्रह किया। उन्होंने लोक साहित्य का भी विधिवत् अवगाहन किया।

किन्तु सबसे बड़ी समस्या थी, भोजपुरी भाषा की सीमाओं का निर्धारित करने की। उन्हें डॉ0 ग्रियर्सन द्वारा 'पूर्वी हिन्दी' तथा "बिहारी" को लेकर काफी माथापच्ची करनी पड़ी। उनके समक्ष सबसे बड़ा प्रश्न था कि किस क्षेत्र की भाषा को मानक के रूप में प्रयुक्त किया जाय। उन्होंने जो परिश्रम किया है वह "भोजपुरी भाषा और साहित्य" पुस्तक के प्रारम्भ में दिये गये मानचित्र के रूप में है जिसमें भोजपुरी तथा उसकी उपभाषाओं की सीमाएँ दी गई हैं—

(1) राजनैतिक सीमा, (2) भोजपुरी की सीमा, (3) उत्तरी आदर्श भोजपुरी, (4) पश्चिमी आदर्श भोजपुरी, (5) दक्षिणी आदर्श भोजपुरी, (6) नगपुरिया, (7) नेपाल

डॉ0 तिवारी ने इस ग्रन्थ के विषय में "दो शब्द" के अन्तर्गत स्वयं लिखा है "आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के सम्बन्ध में अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि विदेशी भाषाओं ने अनेक पाण्डित्यपूर्ण वैज्ञानिक विवेचनात्मक ग्रंथ प्रस्तुत किये हैं परन्तु हिन्दी में इस कोटि का कोई ग्रंथ आज तक (1954 तक) प्रकाशित नहीं हुआ था। मेरी इस कृति का परम सौभाग्य है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी में इस प्रकार का प्रथम ग्रंथ होने का श्रेय इसे प्राप्त है।"

यही नहीं, वे यह भी लिखते है कि 'भोजपुरी भाषा के सम्बन्ध में मेरा यह कार्य (अंग्रेजी

मे 1946 मे ही) रायल एशियाटिक सोसाइटी जर्नल मे छप चुका था। यह कुछ नवयुवको को, भोजपुरी भाषा एव साहित्य के विविध पक्षो के वैज्ञानिक परिशीलन म प्रवृत्त करने मे सफल हुआ है। इसी कार्य के अनुसरण स्वरूप डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद ने "भोजपुरी ध्वनि शास्त्र" के विवेचन पर लन्दन विश्वविद्यालय से, डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय ने 'भोजपुरी लोकगीतों' का अध्ययन कर लखनऊ विश्वविद्यालय से तथा डॉ0 तिवारी के शिष्य डॉ0 सत्यव्रत सिनहा ने 'भोजपुरी लोकगाथाओ' के परिशीलन पर प्रयाग विश्वविद्यालय से डी0फिल की उपाधि प्राप्त की।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि डॉ0 तिवारी की डी0 लिट् थीसिस अंग्रेजी में थी। हिन्दी जिज्ञासुओ को सुलभ कराने की दृष्टि से ही डॉ0 तिवारी ने स्वय ही इसका हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया किन्तु यह निरा अनुवाद नही है। डॉ0 तिवारी ने स्वय कहा है "इसमे भोजपुरी सम्बन्धी अनेक नवीनतम गवेषणाओ का समावेश किया गया है और इसमें आधुनिकतम खोजो का उपयोग करने का प्रयत्न किया गया है। श्रद्धेय गुरुवर चाटुर्ज्या तथा डॉ0 सेन के लेखों, भाषणो एव ग्रन्थो का मैंने इस पुस्तक मे पर्याप्त उपयोग किया है।"

डॉ0 तिवारी ने "भोजपुरी भाषा और साहित्य" को दो खण्डों मे विभाजित किया है। इनके अतिरिक्त उन्होने प्रथम 227 पृष्ठो मे "उपोद्घात" के रूप मे ससार की भाषाओ का वर्गीकरण, भारोपीय परिवार, भारतीय आर्य भाषा, फिर आधुनिक आर्यभाषाओं तथा बोलियों का वर्गीकरण (जो ग्रियर्सन तथा चटर्जी पर आधारित है), हिन्दी के विभिन्न तत्व, पूर्वी तथा पश्चिमी हिन्दी मे अन्तर, बिहारी का वर्गीकरण, बिहारी बोलियो की एकता, मैथिली, मगही आदि का व्याकरण प्रस्तुत किया है वस्तुतः यह अश उनकी अंग्रेजी थीसिस का अंग नहीं था। इसे उन्होने भोजपुरी भाषा के तारतम्य के रूप मे भूमिकास्वरूप प्रस्तुत किया है। इतना ही नहीं, इस 'उपोदघात' की सामग्री को यथावत् "हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास" पुस्तक मे भी सम्मिलित कर लिया है। भोजपुरी का वास्तविक विवरण तो उपोदघात के बाद प्रथम तथा द्वितीय खण्डो मे (क्रमश 1 से 70 तथा 71 से 307 पृष्ठो मे) दिया हुआ है। प्रथम खण्ड मे दो अध्याय हैं—प्रवेशक तथा साहित्य। इसका द्वितीय खण्ड ही ज्यादा महत्वपूर्ण है जिसमे व्याकरण एव रूप तत्व- ये प्रमुख विभाग हैं जिनमे से व्याकरण के अन्तर्गत 10 अध्याय हैं और रूपतत्व मे 7 अध्याय हैं। इस तरह कुल 17 अध्याय है।

व्याकरण के अन्तर्गत जो अध्याय रखे गये है वे हैं (1) ध्वनि, (2) स्वर परिवर्तन, (3) आदि स्वर, (4) शब्द के अभ्यन्तर के स्वर (5) भोजपुरी के भीतर स्वरो का अक्षुण्ण रहना, (6) सम्पर्क स्वर, (7) स्वरागम, (8) भोजपुरी स्वरो की उत्पत्ति, (9) भारतीय आर्यभाषा के व्यजन परिवर्तन, (10) भोजपुरी व्यंजनो की उत्पत्ति।

रूपतत्व के अन्तर्गत के अध्याय हैं— (1) प्रत्यय-उपसर्ग, (2) समास, (3) सज्ञा रूप, (4) विशेषण, (5) सर्वनाम, (6) क्रियापद, (7) अव्यय।

पुस्तक के अन्त मे परिशिष्ट है जिसमे सोहर, पुरान कागद-पत्र, आधुनिक भोजपुरी के उदाहरण तथा शब्दो की अनुक्रमणिका है। (1-24 पृष्ठ)।

डॉ0 तिवारी ने विभिन्न विकल्पों के होते हुए 'भोजपुरी' शब्द को ही क्यो चुना? इसको विस्तृत विवेचना उन्होने की है। वैसे 'भोजपुरिया' शब्द भी प्रचलित था किन्तु 1868 मे ही जान बीम्स ने 'भोजपुरी बोली' नाम से एक लेख छापा था। वैसे बगाल मे भोजपुर वालो को हिन्दुस्तानी, देशवाली, खोट्टा, पश्चिमा भी कहा जाता था। किन्तु डॉ0 तिवारी कहते हैं "बगाली तथा भोजपुरी दोनो इससे अनभिज्ञ थे कि उनकी भाषाएँ एक ही मागधी भाषा से प्रसूत हुई है। शिक्षित बगाली भी भोजपुरी को हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी के अन्तर्गत मानते है।"

उत्तरी भारत में भोजपुरियों को "पुर्बिया" और उनकी बोली को "पूर्वी बोली" कहते है— पूरब "अवध" बनारस तथा बिहार प्रान्त से तात्पर्य है। आज भी कोसल (अवध) के लोग बिहार निवासियों को 'पुर्बिया' कहते है। राहुल साकृत्यायन ने भोजपुरी भाषा के स्थान पर मल्ली" (मल्ल जनपद के नाम पर) का प्रयोग किया है। इसका खण्डन करते हुए डॉ0 तिवारी का कथन है कि मल्ल' की भांति 'काशी' जनपद का उल्लेख मिलता है जहां भोजपुरी ही बोली जाती है। अत मल्ल के साथ काशी का होना भी आवश्यक है। राहुल जी ने इसे "काशिका" कहा है। डॉ0 तिवारी को इस तरह के नामकरण पर आपत्ति है—"भोजपुरी को छोटे-छोटे टुकड़ो मे विभक्त करना अनावश्यक तथा अनुपयुक्त है। आज भोजपुरी क्षेत्र एक विस्तृत क्षेत्र की भाषा है, यही कारण है कि प्राचीन जनपदीय नामो को पुन प्रचलित करने की अपेक्षा इसी का प्रयोग वाछनीय है। इस नाम के साथ साथ भी कम से कम 300 वर्षों की परम्परा है।"

डॉ0 तिवारी ने कलकत्ता को भोजपुरियो का सबसे बडा अड्डा बताया है और उसे भोजपुरी जीवन और सस्कृति का केन्द्र स्वीकार किया है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, भोजपुरी की सीमा का निर्धारण के लिए डॉ0 तिवारी को स्वय सर्वेक्षण करना पड़ा। उन्होंने ग्रियर्सन द्वारा दी गई सीमा को आँख मूँद कर स्वीकार नही किया। वे लिखते हैं 'डॉ0 ग्रियर्सन द्वारा लिंग्विस्टिक सर्वे मे दी हुई सीमा मे–विशेषत भोजपुरी की उत्तरी सीमा मे–थाड़ा अन्तर है। भाषा की विशेषता की दृष्टि से भारत तथा नेपाल की सीमा बहुत कुछ अस्पष्ट है डॉ0 ग्रियर्सन ने केवल राजनैतिक सीमा देकर ही सन्तोष कर लिया है—यद्यपि यह भी इगित किया है कि हिमालय की तराई मे भी भोजपुरी बोली जाती है। वर्तमान लेखक ने स्वय जाँच करके इस सीमा को डॉ0 ग्रियर्सन द्वारा दी हुई सीमा से और उत्तर निर्धारित की है।" इसके लिए डा0 तिवारी को नेपाल की तराई मे भ्रमण करके अनेक स्थानों में भाषा की जॉच करनी पड़ी और तब यह सीमा निश्चित हो सकी। तराई मे जो पट्टी अवधी की सीमा म प्रविष्ट कर गई है, वहाँ थारू लोग निवास करते है। ये भोजपुरी भाषा-भाषी है। हॉ, अवधी बोलने वाले भी व्यापार के लिए यहाँ आ जाते है।

डॉ0 तिवारी ने लिखा है कि भोजपुरी दो राज्यो में फैली है—उत्तर प्रदेश तथा बिहार। वस्तुत यह उत्तर प्रदेश के पूर्व के जिलो तथा पश्चिमी बिहार की भाषा है। इसको बोलने वालो की सख्या भी अन्य दो बिहारी बोलियो —मैथिली तथा मगही की सयुक्त सख्या से लगभग दुगुनी है। दो राज्यो मे विभक्त होने पर भी भोजपुरियो की संस्कृति एवं रीति-नीति में कोई अन्तर नही पाया जाता है।

डॉ0 ग्रियर्सन ने भोजपुरी को चार भागो मे विभक्त किया है — उत्तरी (सरवरिया तथा गोरखपुरी) दक्षिणी, पश्चिमी तथा नगपुरिया। डॉ0 तिवारी कहते है कि दक्षिणी भोजपुरी ही 'आदर्श भोजपुरी है जिसका क्षेत्र इलाहाबाद, सारन बलिया, पूर्वी देवरिया तथा पूर्वी गाजीपुर है। आदर्श भोजपुरी अपनी अन्य बोलियो की अपेक्षा अधिक श्रुतिमधुर है। आदर्श भोजपुरी को अन्य बोलियो से पृथक करने वाला सर्वनाम 'रउआँ' है। इस सर्वनाम का भोजपुरी की अन्य बोलियो मे अभाव है। आदर प्रदर्शन के लिए ही आपके अर्थ मे 'रउआँ' तथा 'राउर' का प्रयोग किया जाता है। प्राकृत मे यह लाउल, संस्कृत मे राजकुल्य है, मैथिली में इसके लिए आइस तथा अहां का प्रयोग होता है (सा0 आयुष्मान)। अवधी, व्रज तथा अन्य पछांही बोलियो मे इस सर्वनाम का समानार्थक कोई शब्द है ही नही।

डॉ0 तिवारी ने भोजपुरी शब्दकोश के अन्तर्गत तत्सम, तदभव, अनार्य भाषाओ के शब्द, फारसी अरबी तुर्की अंग्रेजी भाषाओं से लिए शब्दों पर विचार किया है

उन्होने कैथी को भोजपुरी की लिपि बताया है किन्तु यह भी लिखा है कि इधर नागरी लिपि का व्यवहार होने लगा है।

भोजपुरी संस्कृति के अन्तर्गत लोकोक्तियों तथा मुहावरो का उल्लेख मात्र किया है। किन्तु यह बताना प्रासंगिक होगा कि डॉ0 तिवारी "हिन्दुस्तानी" मे बहुत पहले इन दोनो के विषय में विस्तृत निबन्ध लिख चुके थे।

भोजपुरी साहित्य के अन्तर्गत उन्होने कबीर, धरमदास, धरनीदास, लक्ष्मी सखी के काव्य के उद्धरण दिये हैं।

डॉ0 तिवारी ने लिखा है कि भोजपुरी का अध्ययन सर्वप्रथम श्री बीम्स ने 1867 मे प्रारम्भ किया था। डॉ0 ग्रियर्सन ने भोजपुरी लोकगीतो का संग्रह प्रकाशित किया। इनके बाद विलियम क्रुक, ग्राउस आदि यूरोपीय विद्वानो ने भोजपुरी लोकगीतो का अंग्रेजी पत्रिकाओ मे प्रकाशन कराया। यूरोपीय विद्वानो के अतिरिक्त प0 रामनरेश त्रिपाठी ने हिन्दी लोकगीत के अन्तर्गत 19 भोजपुरी गीत दिये। डा0 कृष्ण देव उपाध्याय ने भोजपुरी ग्राम गीत (प्रथम भाग तथा द्वितीय मे क्रमश 27 तथा 430 गीत) दिए। देवेन्द्र सत्यार्थी, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह ने भी लोकगीत संग्रह किया।

डॉ0 तिवारी ने भोजपुरी के आधुनिक कवियो मे बिसराम, तेगअली, रामकृष्ण वर्मा, दूधनाथ उपाध्याय, अम्बिका प्रसाद, रघुवीर नारायण, भिखारी ठाकुर, मनोरंजन प्रसाद सिनहा, रामविचार पाण्डेय, प्रसिद्ध नारायण सिंह, महेन्द्र शास्त्री, श्याम बिहारी तिवारी, चंचरीक बाबू, रणधीर लाल श्रीवास्तव, स्वामी जगन्नाथ दास जी तथा अशान्त-इन 16 कवियों की कविता पर विचार किया है।

उन्होंने भोजपुरी गद्य मे नाटको की विशेष चर्चा की है। इनमे भिखारी ठाकुर के बिदेसिया नाटक के अलावा राहुल सांकृत्यायन के आठ नाटकों का उल्लेख किया है और उनसे उद्धरण भी दिये हैं। ये सभी 1942 के पूर्व लिखे हुए हैं।

इस पुस्तक का **द्वितीय खण्ड व्याकरण से संबंधित** है जिसमे ध्वनि तत्व तथा रूपतत्व पर वैज्ञानिक ढंग से विवेचना की गई। वस्तुत डॉ0 तिवारी के शोध प्रबन्ध का यही मुख्य अंश है जिसके लिए उन्होंने डॉ0 चटर्जी की पुस्तक का सहारा लिया। उल्लेखनीय है कि डॉ0 तिवारी के बाद जितने भी बोलियो के भाषा विज्ञान विषयक अध्ययन हुए उनमे इसी ढाँचे (पैटर्न) को अपनाया गया। डॉ0 तिवारी हिन्दी मे **भाषाविज्ञान के असली सर्जक** कहे जा सकते हैं। हिन्दी साहित्यकारो ने जब उनके ग्रंथ को देखा, पढ़ा और मनन किया तो उन्हे सचमुच डॉ0 तिवारी मे ऐसे 'भगीरथ' के दर्शन हुए जो उल्टी गंगा बहाकर लाये थे- पूर्व (बंगाल) से पश्चिम मे और अपना झंडा प्रयाग मे गाड़ दिया।

चूंकि डॉ0 तिवारी को इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषा-विज्ञान का अध्यापन करना था अत उन्होने अपने भोजपुरी शोध अनुभव एवं ज्ञान का उपयोग हिन्दी मे "हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास" पुस्तक के लेखन मे किया। इस तरह जो हिन्दी के विद्वान डॉ0 तिवारी को भोजपुरी का उद्धारक मानते रहे, वे अब उन्हे **हिन्दी का अग्रणी भाषावैज्ञानिक** भी मानने लगे। यही नहीं, डा0 तिवारी के कई शिष्य भी भाषाविज्ञानी बने। बाद मे जब डॉ0 तिवारी विदेश जाकर नव्य भाषा विज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके तो उन्होने पुस्तक लिख कर **नव्य भाषाविज्ञान की हिन्दी में नींव डाली** और उनके शिष्यो मे डॉ0 महावीर सरन जैन ने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया।

ज्ञात हो कि हिन्दी भाषाविज्ञान को गति प्रदान करने वालो मे बीम्स, हार्नले, केलाग तथा ग्रियर्सन के बाद कामता प्रसाद गुरु का हिन्दी व्याकरण आधुनिक हिन्दी के अध्ययन में काफी सहायक सिद्ध हुआ है। श्याम सुन्दर दास चन्द्रधर शर्मा गुलेरी पद्मसिंह शर्मा गौरीशंकर हीरा चन्द ओझा

किशोरी दास वाजपेयी, रामचन्द्र वर्मा, चन्द्रबली पाण्डेय आदि ने हिन्दी के विभिन्न पक्षो पर परम्परा पद्धति से कार्य किया। रामाज्ञा द्विवेदी तथा कपिल देव द्विवेदी ने क्रमश अवधी और संस्कृत के अर्थतत्व पर शोध कार्य किया। इसी तरह विद्यानिवास मिश्र, रामदेव त्रिपाठी तथा रामसुरेश त्रिपाठी ने पाणिनि तथा व्याकरण दर्शन पर मौलिक शोधकार्य प्रस्तुत किये।

यूरोपीय भाषाविज्ञान की आधुनिक शोध परम्परा म संस्कृत भाषा तथा आधुनिक भाषाशास्त्र के ख्यातिलब्ध आचार्यों मे डॉ0 सिद्धेश्वर वर्मा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसी परम्परा म सुनीति कुमार चटर्जी, सुकुमार सेन, बाबू राम सक्सेना, धीरेन्द्र वर्मा के बाद डॉ0 उदयनारायण तिवारी का नाम आता है। इन सारे विद्वानो ने शिक्षण संस्थानो म सेवारत रहते हुए अपनी स्थानीय बोलियो को शोध का विषय चुनकर कार्य किया। इससे यह लाभ हुआ कि ग्रियर्सन के सर्वेक्षण मे जो अनेक अप्रामाणिक बाते आ गयी थीं, उनका निराकरण हो गया। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, सुनीति कुमार चटर्जी यद्यपि बंगला भाषा के विशेषज्ञ थे फिर भी उनका हिन्दी का ऐतिहासिक तुलनात्मक शोधकार्य सबके लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुआ। बाबूराम सक्सेना अवधी के प्रथम आचार्य थे जो संस्कृतज्ञ होने पर भी आधुनिक भाषा विज्ञान के प्रति आकृष्ट हुए। डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा खड़ी बोली के सर्वप्रथम अध्येता तथा व्रजभाषा के विशेषज्ञ थे।

डॉ0 उदयनारायण तिवारी तथा विश्वनाथ प्रसाद भारत में ही भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के लिए प्रशिक्षित हुए किन्तु बाद मे अमरीका तथा इंग्लैंड जाकर इस क्षेत्र मे व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। ये दोनो भोजपुरी के विशेषज्ञ थे। डॉ0 तिवारी के कई शिष्यो ने उनकी परम्परा को आगे बढ़ाया।

गुजराती की बोलिया म प्रा0 दवे, के0 का0 शास्त्री, भयाणी तथा डॉ0 पंडित के कार्य उल्लेखनीय है। पंजाबी का भाषिक एटलस डॉ0 गिल के निर्देशन मे तैयार किया गया। "बोली विज्ञान" की दृष्टि स डॉ0 बाहरी, डॉ0 ब्रहल तथा जगदेव सिंह के कार्य उल्लेखनीय हैं।

हिमालय की बोलिया पर डॉ0 सिद्धेश्वर वर्मा ने कार्य किया। पूर्वी क्षेत्र की भाषा म भोजपुरी का प्रमुख स्थान है जिस पर डॉ0 तिवारी की अमिट छाप है। पूर्वी क्षेत्र की प्रमुख उपशाखाओ मे मैथिली (सुभद्र झा), भागलपुरी (डॉ0 कामेश्वर शर्मा), मगही (श्रीकान्त शास्त्री तथा श्रीमती सम्पत्ति आर्याणी), वज्जिका (डॉ0 सियाराम तिवारी), आजमगढ़ी (डॉ0 महेन्द्रनाथ दुबे तथा कैलाश चन्द्र मिश्र) तथा बनारसी भोजपुरी (वाचस्पति उपाध्याय) पर शोधकार्य सम्पन्न हो चुका है।

राजस्थानी के क्षेत्र म टेसीटरी तथा सुनीति कुमार चटर्जी के बाद पुरुषोत्तम मेनेरिया के कार्य भी उल्लेखनीय है। मेवाड़ी (डॉ0 नरेन्द्र व्यास) तथा शेखावटी (डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल) मे महत्वपूर्ण कार्य हुए है।

पूर्वी हिन्दी मे डॉ0 बाबूराम सक्सेना के अवधी पर ऐतिहासिक कार्य के बाद बैसवाड़ी (डॉ0 देवी शंकर द्विवेदी), छत्तीसगढ़ी (कान्ति कुमार), अवधी (डॉ0 टी0 एन0 सिंह) आदि बोलियो पर विशेष कार्य हुए है। डॉ0 गोविन्द मोहन त्रिवेदी का गंगा के निचले दोआब का भाषा सर्वेक्षण महत्वपूर्ण कार्य है।

पश्चिमी हिन्दी की उपभाषाओ मे सर्वाधिक कार्य व्रजभाषा तथा बुन्देली पर हुआ है। व्रजभाषा पर डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा के अतिरिक्त मथुरा की बोली (डॉ0 चन्द्रभान रावत), अलीगढ़, बुलन्दशहर की बोली (डॉ0 अम्बा प्रसाद सुमन), बुलन्दशहर की बोली (डॉ0 महावीर सरन जैन), एटा की बोली (डॉ0 रामरक्षपाल द्विवेदी) तथा आगरा जिले की बोली (डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी) पर कार्य हुए है।

बुन्देली पर डॉ0 रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल, पूरनचन्द्र श्रीवास्तव डॉ0 एम0 पी0 जायसवाल, डॉ0

भवानीदीन मिश्र, पवन कुमार जैन, लता दुबे के शोध कार्य हुए हैं। बघेली तथा बस्तर क्षेत्र की बोलियो पर डॉ0 हीरा लाल शुक्ल के कार्य महत्वपूर्ण है।

सक्रान्ति क्षेत्रो पर भी शोध कार्य हुए हैं — यथा अवधी-भोजपुरी (डॉ0 अमर बहादुर सिंह), अवधी-कन्नौजी (डॉ0 रामलखन गुप्त), ब्रज-खड़ी बोली (डॉ0 मनोहर लाल गौड) तथा हरियाणवी-खड़ी बोली (संयुक्ता कौशल)।

हिन्दी स्वनिम विज्ञान पर कार्य करने का प्रथम श्रेय डॉ0 बाहरी को दिया जाता है। इसके बाद 1964 मे पूना से घटके की पुस्तक विशेष प्रयोजनीय है। इसके बाद कैलाश चन्द भाटिया, महावीर सरन जैन, रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव, रमेश चन्द्र मेहरोत्रा, फेयरबैंक्स आदि विद्वानो ने विभिन्न प्रायोगिक रूपो पर सूक्ष्म विश्लेषण का कार्य किया है। इस क्षेत्र मे अशोक कोण्णार की पुस्तक "हिन्दी शब्दो के स्वनिम" सर्वाधिक वैज्ञानिक कृति है। ध्वनि विज्ञान की दिशा मे गोलोक बिहारी धल्ल की पुस्तक "ध्वनि विज्ञान" काफी महत्वपूर्ण है।

क्रियापद, कारको तथा समास एव अन्य भाषा शिक्षण पर उत्तम पुस्तक प्राप्त है। भाषाविज्ञान पर कुछ महत्वपूर्ण पुस्तके निम्नवत् है —सामान्य भाषा विज्ञान (डॉ0 बाबूराम सक्सेना), भाषाविज्ञान (डा0 मंगलदेव शास्त्री), भाषा विज्ञान की भूमिका (डा0 देवेन्द्र शर्मा), भाषा और भाषिकी (देवी शकर द्विवेदी), भाषा विज्ञान (डॉ0 भोलानाथ तिवारी), भाषा तथा समाज (डॉ0 रामविलास शर्मा) तथा अभिनव भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र की रूपरेखा (डॉ0 उदयनारायण तिवारी)।

इन समस्त ग्रन्थो मे डॉ0 तिवारी के दोनो ही ग्रन्थ अभिनव भाषाविज्ञान के अध्ययन के लिए मार्गदर्शक है। उन्होने 1959 मे अमरीका प्रवास के दौरान भाषाविज्ञान का जो प्रशिक्षण प्राप्त किया उसका भरपूर उपयोग इन दोनो ग्रन्थो मे मिलता है। हिन्दी मे नव्य भाषा विज्ञान के अध्येताओ के लिए इन दोनो ग्रन्थो के अतिरिक्त डॉ0 तिवारी द्वारा लिखित 'भाषाविज्ञान का सक्षिप्त इतिहास' भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। एक तरह से 1959 से 1983 के बीच उन्होने भाषाविज्ञान के विषय मे जो भी चिन्तन किया उसे आने वाली पीढी के लिए पूरे मनोयोग से प्रस्तुत किया। ऐसे भाषा विज्ञानी की जन्मशती पर उन्हे शत-शत प्रणाम।

हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास

"भोजपुरी भाषा और साहित्य" मे डॉ0 तिवारी की मौलिक उद्भावनाएँ मिलती किन्तु उन्होने अपने इस शोध प्रबन्ध के लिए कलकत्ते मे भाषा विज्ञान का जो अध्ययन किया था और डॉ0 चटर्जी तथा डॉ0 सुकुमार सेन के व्याख्यानो तथा उनकी कृतियो से जो प्रेरणा प्राप्त की थी, उसका प्राकट्य "हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास" के रूप मे हुआ। दुर्भाग्यवश स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी हिन्दी भाषा के विषय मे कोई ऐसी पुस्तक उपलब्ध नही थी, जो उच्च शिक्षा की आवश्यकता की पूर्ति कर सकती।

डा0 तिवारी ने इस पुस्तक के आमुख मे स्पष्ट लिखा है—

'भोजपुरी भाषा और साहित्य' के प्रणयन के पश्चात् मेरा ध्यान हिन्दी भाषा की ओर आकृष्ट हुआ। यद्यपि हिन्दी राष्ट्र भाषा के पद पर आसीन हो गई है और समस्त देश मे उसके प्रसार और प्रचार का प्रयत्न हो रहा है तथापि अभी तक न तो उसका ऐतिहासिक एव तुलनात्मक व्याकरण ही लिखा गया है और न भाषातात्विक दृष्टि से इसका गभीर अध्ययन ही प्रस्तुत हो सका है।"

उन्होने डा0 चटर्जी की पुस्तक को बगला भाषा के अध्ययन के लिए श्रेष्ठ कृति बताया है और भारतीय भाषाओं एव बोलियो के ऐतिहासिक एव तुलनात्मक अध्ययन करने वालो के मार्गदर्शन

के [illegible] को वरद[illegible] माना है, वस्तुत डॉ0 तिवारी ने 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' मे डॉ0 चटर्जी की कृति का ही अनुसरण किया अत उन्हे ऐसा लगा कि हिन्दी भाषा का अध्ययन भी उसी पैटर्न पर किया जाना चाहिए।

डॉ0 तिवारी ने "हिन्दी भाषा का उदगम और विकास" की विषयवस्तु के विषय म स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है—

"मैंने हिन्दी का एतिहासिक तथा तुलनात्मक व्याकरण उपस्थित करने का प्रयत्न किया है। विवेचन के लिए मैंने परिनिष्ठित हिन्दी के रूप को ही लिया है। इसका कारण यह भी है कि हिन्दी की विभिन्न बोलियो के सम्बन्ध मे अब तक अल्प सामग्री ही प्रकाश मे आई है। पुस्तक का ढाँचा डॉ0 चटर्जी कृत "बंगला भाषा का उदगम और विकास तथा अपने भोजपुरी के प्रबन्ध का रखा है।"

यह पुस्तक (पॉचवा सस्करण) 677 पृष्ठो मे समाप्त हुई है। इगमे दो खण्ड है — पूर्व पीठिका तथा उत्तर पीठिका। पूर्व पीठिका 310 पृष्ठो की है जिसमे भारोपीय से लेकर अपभ्रश तथा सक्रान्तिकालीन भाषा की सामग्री दी गई है। यह सामग्री यत्किंचित परिवर्तन सहित उनके द्वारा पूर्वरचित 'भोजपुरी भाषा और साहित्य" मे भी प्राप्त है अत इसमे कोई नवीनता नही है। डॉ0 तिवारी का मत है कि पूर्वपीठिका मे भारोपीय, वैदिक सस्कृत, पालि, प्राकृत, आदि के सम्बन्ध मे जो सामग्री दी गई है उसे जाने बिना भाषा विज्ञान का अध्ययन करना व्यर्थ का परिश्रम करना है।

हाँ, उत्तरपीठिका म हिन्दी परसर्गो तथा अनुसर्गो एव समासो पर सर्वथा नूतन सामग्री प्रस्तुत हुई है। इस खण्ड के अध्याय (7 से 14 तक) हैं — हिन्दी की ध्वनियाँ, प्रत्यय, सज्ञा, रूप, विशेषण सर्वनाम, समास, क्रियापद तथा अव्यय।

इसम विविध बोलियो के तुलनात्मक अध्ययन के लिए टर्नर कृत नेपाली शब्दकोश का आधार बनाया गया है।

इस पुस्तक मे परिशिष्ट के रूप मे संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी एव अरबी से हिन्दी की तुलना की गई है। इस समस्त सामग्री को उन्होने डॉ0 चटर्जी के व्याख्यानो से प्राप्त किया है। प्राकृत विषयक अधिकाश सामग्री डॉ0 सुकुमार सेन के व्याख्यानो से ग्रहीत है।

हिन्दी-हिन्दुस्तानी की परिभाषा एव उर्दू की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे श्री चन्द्रबली पाडे की पुस्तको एवं लेखो से सहायता ली गई है।

पुस्तक रचना की प्रेरणा/उद्देश्य

डॉ0 तिवारी लिखते है 'भारत मे जहाँ यास्क, पाणिनि, कात्यायन, तथा पतञ्जलि जैसे भाषा शास्त्री एव वैयाकरण हो गये है वही पर आज यहाँ के महाविद्यालयो एव विश्वविद्यालयो मे भाषा तथा व्याकरण का अध्ययन कितना उपेक्षित है . हमारे देश के विश्वविद्यालयो की उच्चतर कक्षाओ के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत भाषा शास्त्र की जो शिक्षा दी जाती है उसका स्तर इतना निम्न है कि कभी-कभी छात्रो तथा छात्राओ को इसका साधारण परिचय भी नही हो पाता.. .. जब भाषा तथा भाषा शास्त्र के अध्ययन की गति मन्द पड जाती है तब साहित्य रचना मे भी शैथिल्य आ जाता है। आज हमारे साहित्य शैथिल्य का एक कारण भाषा तथा भाषाशास्त्र के अध्ययन का अभाव भी है . अपने लुप्त गौरव को प्राप्त करने के लिए भाषा विज्ञान का गम्भीर अध्ययन करना है।

"विश्वविद्यालय मे भाषा शास्त्र के अध्यापक के रूप मे मुझे छात्रो तथा छात्राओं की कठिनाइयो

एवं उनके स्तर का पूरा अनुभव है। इसी ध्यान मे रखकर ही मैंने इस पुस्तक का प्रणयन किया है।

स्पष्ट है कि डॉ0 तिवारी ने एक महत उद्देश्य से प्रेरित होकर, चुनौती स्वरूप इस पुस्तक की रचना की। वस्तुत डॉ0 तिवारी **की प्रसिद्धि हिन्दी जगत में एकमात्र इसी पुस्तक के कारण** है। इसके अनेक सस्करणो का होना भी इसी का परिचायक है। किन्तु ऐसा नहीं है कि हिन्दी मे अन्य पुस्तके नही थीं। डॉ0 बाबूराम सक्सेना, श्याम सुन्दर दास, डॉ0 भोलानाथ तिवारी की पुस्तके पाठ्य पुस्तको के रूप मे पढाई जाती रही हैं किन्तु डॉ0 तिवारी की पुस्तक ने शोधकर्त्ताओं तथा अध्यापको के लिए सर्वथा नवीन ज्ञान-स्रोत उपलब्ध कराया है।

परिशिष्ट मे "हिन्दी के ध्वनि ग्राम" पर एक अध्याय है तथा उत्तरपीठिका का सातवॉं अध्याय "हिन्दी की ध्वनियाँ" मे जो सोदाहरण तथा आरेख युक्त विवरण दिया गया है वह सर्वथा नवीन है और पाठकों को वस्तुपरक ज्ञान प्रदान करने वाला है।

डॉ0 तिवारी के नव्य भाषाविज्ञान विषयक तीन ग्रंथ

डॉ0 तिवारी ने 1963 से 1983 के मध्य (बीस वर्ष की अवधि मे) तीन पुस्तके लिखी—

1 भाषाशास्त्र की रूपरेखा 1963

2 अभिनव भाषाविज्ञान सिद्धान्त और प्रयोग 1982-83

3 भाषाविज्ञान का सक्षिप्त इतिहास 1983

वस्तुत ये पुस्तके डॉ0 तिवारी के द्वारा विदेशी भाषाओं म उपलब्ध भाषाविज्ञान की अनेकानेक पुस्तको के आलोडन के बाद काफी चिन्तन-मनन करके लिखी गई है।

भाषाशास्त्र की रूपरेखा

इनमे स पहली पुस्तक "भाषाशास्त्र की रूपरेखा" डॉ0 तिवारी द्वारा अमरीका से लौटने और जबलपुर विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर पद पर नियुक्ति के बाद, भाषा-विज्ञान के अध्यापन हेतु तैयार की गई थी। डॉ0 तिवारी जब अमरीका से लौटे तो उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे कई शोध छात्रो को भाषा विज्ञान की नई प्रणाली के अनुसार शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। इनमे स महावीर सरन जैन मुख्य थे, जो बाद मे जबलपुर विश्वविद्यालय मे अध्यापन कार्य करने लगे। इनके सुझाव स डॉ0 तिवारी ने नव्य भाषा शास्त्र के विषय मे पुस्तक लिखनी शुरू की। स्पष्ट है कि उन्होंने जल्दी म यह पुस्तक लिखी। तब तक भाषा विज्ञान के पारिभाषिक शब्द भी निर्मित नही हुए थे। इस पुस्तक मे **दस अध्याय** हैं और **परिशिष्ट** मे वर्णनात्मक पद्धति पर लिखे गये भाषा सम्बन्धी लेख है। डॉ0 तिवारी ने अपनी सूझ स ध्वनि शास्त्र, ध्वनिग्राम शास्त्र, पदग्राम शास्त्र जैसे शब्द निर्मित किये। उन्होंने ध्वनिग्राम तथा पदग्राम की परिभाषाएँ देने के लिए तमाम विदेशी भाषाशास्त्रियो के उद्धरण दिये है। चूँकि यह पुस्तक पाठ्यक्रम के लिए भी थी, इसलिए इसम व्यावहारिक पक्ष का अच्छा पुट दिया गया है।

डॉ0 तिवारी ने एक अध्याय "बोली विज्ञान" Dialectology पर भी दिया जिसमे काफी गणितीय उठा पटक है।

इस पुस्तक की विशेषता यह है कि डॉ0 तिवारी ने एक लचीली प्रणाली अपनाई जिसके फलस्वरूप पुस्तक की परिशिष्ट मे डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया द्वारा लिखित हिन्दी के ध्वनि ग्राम,

डॉ0 महावीर सरन जैन द्वारा लिखित खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा क सकान्ति क्षेत्र की बोलियो का ध्वनिग्रामिक अध्ययन, श्री दिनेश शुक्ल द्वारा लिखित अवधी के ध्वनिग्राम, स्वयं लिखित भोजपुरी के ध्वनिग्राम निबन्धो को सम्मिलित करके पुस्तक के व्यावहारिक पक्ष को सुदृढ़ बनाने मे कोई संकोच नही किया। इस प्रकार का पारस्परिक सहयोग (टाली भावना) उनकी एक अन्य पुस्तक 'अभिनव भाषाविज्ञान' मे भी दृष्टव्य है, जो इसक 20 वर्ष बाद लिखी गई।

सर्वथा नवीन विषय होने से पाठको की सुविधा के लिए पुस्तक के अन्त मे पारिभाषिक शब्दावली दी गई है जो निस्सन्देह बहुत उपयोगी है।

यहाँ यह बताना प्रासंगिक होगा कि 20 वर्ष पश्चात् प्रकाशित उनकी अन्य पुस्तक मे इस शब्दावली के अनेक मुख्य शब्द बदले हुए मिलेंगे। कारण कि शब्दावली आयोग ने तब तक मानक शब्दावली तैयार करा ली थी और डॉ0 तिवारी उसके विशषज्ञो म से थे। यही नही, डॉ0 तिवारी ने स्वय लिखा है कि "भाषा-शास्त्र की रूपरेखा" मे अनेक त्रुटियाँ है फिर भी वर्णनात्मक भाषा विज्ञान के लिए एक पुस्तक प्रकाशित हो सकी, इसका सन्तोष डॉ0 तिवारी को था।

अभिनव भाषाविज्ञान सिद्धान्त और प्रयोग

डॉ0 तिवारी इस पुस्तक के प्रारम्भ मे 'दो शब्द' के अन्तर्गत लिखते है 'सन 1961 मे मै जबलपुर विश्वविद्यालय म हिन्दी विभाग का आचार्य एव अध्यक्ष होकर चला गया। वहाँ भी निरन्तर भाषा एव भाषा विज्ञान के चिन्तन का कार्य चलता रहा और अभिनव भाषा विज्ञान सम्बन्धी पचुर सामग्री एकत्र हो गई। इसे क्रम देने तथा सुधारने म लगभग 8-9 वर्ष तक लग गये। उसी के परिणामस्वरूप इस 'अभिनव भाषा विज्ञान सिद्धान्त और प्रयोग' का प्रणयन हुआ।"

तत्पश्चात् इस पुस्तक को छपने मे 10 वर्ष और लग गये अत' जब वे अपने जीवन की अन्तिम यात्रा पर थे, तब यह प्रकाशित हुई। इसीलिए डॉ0 तिवारी ने स्पष्ट स्वीकार किया है "हिन्दी मे आज अनेक ऐसे युवक भाषाविज्ञानी है जो इस विषय पर पुस्तक लिखने मे मुझसे अधिक सक्षम है। आशा है इसकी त्रुटियो का ध्यान मे रखते हुए हिन्दी मे नवीन पुस्तके प्रकाशित होंगी।"

इस पुस्तक मे दो खण्ड है। दोनो मे मिलाकर कुल 17 अध्याय है। प्रथम खण्ड मे पांच अध्याय हैं--

(1) भाषा विज्ञान (2) भाषा विज्ञान के अध्ययन के आधार

(3) स्वन विज्ञान (4) स्वनिम विज्ञान (5) रूपिम विज्ञान

ये पाचो अध्याय डॉ0 तिवारी द्वारा भाषा विज्ञान विषयक अध्ययन-अध्यापन, चिन्तन-मनन क आधार पर लिखे गये है। द्वितीय खण्ड में उन्होने देश के नौ योग्य भाषाविज्ञानियों के द्वारा लिखित निबंध सम्मिलित किये हैं और कुछ स्वय भी लिखे हैं। जिन विद्वानो से सहयोग लिया गया है वे है—

1. रामायण प्रसाद गर्ग (हिन्दी के ध्वनिग्रामिक अध्ययन)
2. महावीर सरन जैन (हिन्दी मे रूपग्रामिक विश्लेषण की कुछ समस्याए)
3. डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया (भाषा भूगोल)
4. रामलखन गुप्त (भाषिक आदान)
5. जगदेव सिंह (अतस् तथा बहिस्तलीय सरचना का आधार)

6 रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव (बहुभाषिकता और हिन्दी भाषा समाज)

7 रामप्रकाश सक्सेना (लिप्यंतरण—सिद्धान्त तथा प्रयोग)

8 सुरेश कुमार वर्मा (अर्थ विज्ञान)

9 त्रिभुवन नाथ शुक्ल (अर्थ तत्व और कोश विज्ञान)

इनके अतिरिक्त डॉ0 तिवारी ने स्वय भी (अ) ससार की भाषाओ का वर्गीकरण (आ) तत्सम अर्धतत्सम तथा तदभव तथा लिप्यकन और (इ) लिप्यंतरण का सक्षिप्त इतिहास — ये तीन निबन्ध लिखे हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, डॉ0 तिवारी ने यह उदारवादी दृष्टिकोण भाषा-विज्ञान के अध्ययन को समग्रता प्रदान करने के उददेश्य से ही अपनाया। वे अपने से छोटो का भी सहयोग लेने को बुरा नही मानते थे। व गुरुडम नही अपितु समान भाव को प्रदर्शित करने वाले थे। इस तरह से इस पुस्तक की उपयोगिता बढ गई है और नवीन भाषा विज्ञान के अनेक पहलुओ पर नई दृष्टि प्रस्तुत हो पाई है।

यहाँ यह बताना प्रासगिक होगा कि "भाषा शास्त्र की रूपरेखा पुस्तक लिखने के बाद डॉ0 तिवारी का अनुभव होता रहा कि नव भाषाविज्ञान पर नये सिरे से पुस्तक लिखी जाय। जैसा कि उन्होने स्वय लिखा है कि 8-9 वर्षों तक वे नये-नये ग्रन्थो का आलोडन करके अपेक्षित सामग्री सकलित करने रहे। फिर उसे पुस्तक का रूप भी द दिया। किन्तु तब तक वे जबलपुर विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त कर चुके थे, और इलाहाबाद में घर की परेशानियां के कारण इस पुस्तक का प्रकाशन 10 वर्षों तक रुका रहा। निस्सदेह इस अन्तराल म भाषा विज्ञान के क्षेत्र मे नवीन विचार एव सिद्धान्त आये होग, जिन्हे डॉ0 तिवारी इसमे सम्मिलित नही कर पाय — शायद इसीलिए उन्हे दूसरे खण्ड मे नवयुवक भाषाविज्ञानियो के निबन्धो का समावेश करना पड़ा। निश्चित रूप स पुस्तक छपते समय वे पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं थे तभी तो "दो शब्द" मे स्पष्ट किया है कि "आज ऐसे युवक भाषाविज्ञानी है जो इस विषय पर पुस्तक लिखने मे मुझसे अधिक सक्षम हैं।"

"अभिनव भाषा विज्ञान" म अध्याय 3 स्वन विज्ञान पर है। वस्तुतः "भाषा शास्त्र की रूपरेखा' मे यही अध्याय 'ध्वनि विज्ञान' के रूप मे था। इसे ही परिवर्धित करके "स्वनविज्ञान" के रूप मे रखा गया है। स्वन विज्ञान Phonetics के लिए स्वीकृत नवीन पारिभाषिक शब्द है। अतः इस अध्याय म सर्वत्र ध्वनि क स्थान पर स्वन मिलता है। इस तरह पृष्ठ 46 से 60 तक की सामग्री "भाषा शास्त्र की रूपरेखा" म से पृष्ठ 88 से आगे का परिवर्धित रूप है।

अध्याय 4 स्वनिम विज्ञान पर है। प्राचीन काल के विज्ञानियो का वर्णिम ही आज का स्वनिम है। यह सामग्री "भाषा शास्त्र की रूपरेखा" मे पृष्ठ 101 से आगे प्राप्त है।

अध्याय 5 रूपिम विज्ञान पर है। इस अध्याय की सामग्री "भाषाशास्त्र की रूपरेखा' के पृष्ठ 144 से आगे की सामग्री के परिष्कृत रूप में प्रस्तुत की गई है।

कहने का तात्पर्य यह है कि अभिनव भाषाविज्ञान" पुस्तक "भाषाशास्त्र की रूपरेखा" का अत्यन्त परिष्कृत स्वरूप है। डॉ0 तिवारी को अन्तिम समय तक यही लगता रहा कि हिन्दी मे वर्णनात्मक भाषा विज्ञान का सही अर्थ मे अवतरण होना चाहिए और इसके लिए वे अवकाश ग्रहण करने के बाद भी लगातार प्रयत्नशील रहे।

इसे हम डॉ0 तिवारी का अन्तिम दस्तावेज कह सकते है। काश! हमारे भाषाविज्ञानी इधर ध्यान देने।

डॉ0 तिवारी ने 1983 मे भाषाविज्ञान की स्थिति के विषय मे पुस्तक के आरम्भ मे लिखा है—

"हिन्दी-क्षेत्र मे सबसे पहले भाषाविज्ञान के अध्ययन के लिए के. एम. मुन्शी विद्यापीठ की स्थापना आगरा म हुई. . किन्तु एक वर्ष बाद ही इस विद्यापीठ की प्रगति रुक गई किसी न किसी रूप मे यह परिचालित तो था किन्तु जिस मूल उददेश्य के लिए इसकी स्थापना हुई थी वह उपलब्ध न हो सका . । विद्यापीठ के अतिरिक्त आगरे मे ही केन्द्रीय हिन्दी सस्थान का मुख्य कार्यालय है। यहॉ पर डॉ0 बाल गोविन्द मिश्र तथा डॉ0 अमरबहादुर सिंह एव उनके अन्य सहयोगी भाषा-विज्ञान के अध्ययन-अध्यापन तथा हिन्दीतर भाषा-भाषियो के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने मे सलग्न है।"

उत्तर प्रदेश मे लखनऊ मे भी भाषा विज्ञान के स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन-अध्यापन का प्रबन्ध है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे भी स्नातकोत्तर स्तर पर भाषाविज्ञान का अध्यापन कार्य होता है। दिल्ली विश्वविद्यालय मे भाषाविज्ञान का अध्ययन डॉ0 रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव के तत्वावधान मे चल रहा है। मध्य प्रदेश मे रायपुर, सागर, जबलपुर तथा भोपाल मे भाषाविज्ञान प्रगति पर है।

हरियाणा के कुरु-क्षेत्र विश्वविद्यालय मे डॉ0 जगदेव सिंह ने स्नातक केन्द्र की स्थापना की थी जहाँ डॉ0 दवीशकर द्विवेदी कार्यरत है।

हिन्दी क्षेत्र की विशालता को देखते हुए इलाहाबाद, गोरखपुर अवध, रुहेलखड, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालयो म भी भाषाविज्ञान के अध्ययन-अध्यापन के प्रावधान की आवश्यकता है।

भाषाविज्ञान के क्षेत्र म जिन चार साहित्यकारो के योगदान का उल्लेख डॉ0 तिवारी ने किया है वे है — डॉ0 विद्यानिवास मिश्र, डॉ0 नामवर सिंह, देवन्द्र नाथ शर्मा तथा डॉ0 भोलानाथ तिवारी।

अत यह बात स्पष्ट हो जाती है कि डा0 तिवारी देश मे भाषाविज्ञान मे (दक्षिण भारत के अलावा) हो रही प्रगति का पूरा नक्शा मन में रखते रहे। वे विदेशो मे हो रहे भाषा विज्ञान के कार्य से परिचित कराने के लिए भी बचैन थे इसीलिये उन्होंने "भाषाविज्ञान का सक्षिप्त इतिहास" भी लिखा।

भाषाविज्ञान का सक्षिप्त इतिहास

यह पुस्तक डॉ0 तिवारी की भाषा विज्ञान के विषय मे अतृप्त जिज्ञासा का परिणाम है। जबलपुर विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्हे एमेरिटस प्रोफेसर के रूप मे 1978 म पटना विश्वविद्यालय मे "रामदीन व्याख्यानमाला" के अन्तर्गत व्याख्यान देने थे। उसी के लिए उन्होने जो सामग्री तैयार की थी, उसी को बाद मे पुस्तक रूप दे दिया।

आज भाषाविज्ञान के अनेक सम्प्रदाय कुछ व्यक्तियो और कुछ स्थान के नाम स प्रसिद्ध हो चले है। इन सबका सक्षिप्त इतिहास इस पुस्तक मे दिया गया है। किन्तु उन्होने देश में संस्कृत म भाषा विज्ञान की परम्परा को दृष्टि से ओझल नही होने दिया। फलत पुस्तक के प्रथम खण्ड म दो अध्यायो के अन्तर्गत 32 पृष्ठो मे इसका विस्तृत विवरण दिया गया है।

द्वितीय खण्ड मे 5 अध्याय है जिनमे क्रमश पश्चिमी भाषा चिन्तन के अन्तर्गत कोपेनहेगेन सम्प्रदाय, फिर अमरीकी सम्प्रदाय, लन्दन सम्प्रदाय, प्राहा सम्प्रदाय एव रूसी सम्प्रदाय का सक्षिप्त किन्तु सूचनाप्रद विवरण दिया गया है।

पुस्तक के परिशिष्ट भाग मे 36 पृष्ठो मे 19 परिशिष्टो के अन्तर्गत प्राकृत, पालि, हिन्दी उर्दू, गुजराती, मराठी, बगला, उड़िया, असमिया, सिन्धी, पजाबी, कश्मीरी, नेपाली, सिहली, द्रविड

भाषाएं, आस्ट्रिक भाषाएं (मुण्डा) आदि मे सम्पन्न भाषा वैज्ञानिक अध्ययनो की जानकारी है। अनप्रयुक्त भाषा विज्ञान तथा ध्वनिग्रामिक विवेचना से सम्बद्ध दो परिशिष्ट हैं। अन्त मे मैक्समूलर तथा ह्निटनी के विषय मे भी सूचनाएं हैं।

कुल मिलाकर डॉ0 तिवारी ने इस तरह से हिन्दी मे सर्वथा नवीन सामग्री प्रस्तुत करके हिन्दी भाषा प्रेमियो पर अमित उपकार किया है। केवल एक जागरूक भाषावैज्ञानिक ही ऐसा कर सकता था।

हिन्दी भाषा की भूमिका

1981 मे भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता द्वारा डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा व्याख्यानमाला के अन्तर्गत डा0 तिवारी को इस व्याख्यानमाला का प्रथम व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित किया गया। यह व्याख्यान 24 मई 1981 को सम्पन्न हुआ। इसका शीर्षक था "हिन्दी भाषा की भूमिका"। इसे ही बाद मे (1982) पुस्तिका रूप मे (32 पृष्ठ की) प्रकाशित कर दिया था।

यद्यपि इस व्याख्यान-पुस्तिका मे डॉ0 तिवारी ने अपनी पुस्तक "हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास" की सामग्री का ही संक्षेपण किया है किन्तु इसमे हिन्दुस्तानी एव खड़ी बोली के नामकरण के विषय मे विस्तार से उल्लेख हुआ है। खड़ी बोली नाम "स्टैंडिंग डायलेक्ट" या 'खाड़ी बोली' से लिया बताया गया है और डा0 ग्रियर्सन की नवीन मान्यता का समर्थन करते हुए खड़ी बोली को नितान्त पश्चिमी प्रदेश की भाषा कहा गया है जिसका पूर्वी पंजाबी से सम्बन्ध है। कर्त्ता कारक 'ने' परसर्ग पंजाबी से ही लिया बताया गया है।

इस पुस्तिका मे डा0 तिवारी ने हिन्दी को राष्ट्रव्यापी रूप देने मे गाधी जी के योगदान को सर्वोपरि माना है। इसी तरह हिन्दी को व्यापक बनाने मे काशी नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के माध्यम से प0 मदन मोहन मालवीय तथा बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन के नाम चिरस्मरणीय बताये गये है।

राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी के पक्षधर डॉ0 तिवारी ने अपने व्याख्यान मे कहा है "तथ्य यह है कि हिन्दी राष्ट्रभाषा है और समूचे राष्ट्र के हित मे तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क के लिए भी इसे विकसित होना ही है। हम अंग्रेजी को ही विश्वभाषा और अंग्रेजी साहित्य को विश्व साहित्य मानते रहकर अपने राष्ट्र का कल्याण नहीं कर सकते।

डॉ0 तिवारी ने इस व्याख्यान मे बोलियो का भी प्रश्न उठाया है और अपनी दो टूक राय व्यक्त की है—

"हिन्दी के कतिपय विद्वान यह शंका करने लगे हैं कि इन बोलियो मे साहित्य के विकास से हिन्दी की घोर क्षति पहुँचने वाली है। मेरा इस सम्बन्ध मे दृढ मत है कि इन बोलियो के विकास एव भाषा रूप धारण करने से हिन्दी को किंचित भी हानि होने वाली नहीं है। हिन्दी का क्षेत्र तथा भाषा रूप मे उसका विकास बहुत विस्तृत है। साथ ही देश मे प्रौढ शिक्षा तथा समस्त जनता को साक्षर बनाने के अभियान मे तो इन बोलियो की सहायता परमावश्यक है। कुछ लोग ऐसा समझते है कि ये बोलियाँ म्रियमाण हैं तथा उनका यथासम्भव हिन्दी मे विलीन हो जाना ही श्रेयस्कर है। मेरा मत इससे सर्वथा विपरीत है। भारत के भाषा समूह मे इन बोलियो का स्थान अप्रतिम है अतएव इनके साथ हिन्दी का सामञ्जस्य स्थापित करना ही समीचीन है।"

डॉ0 तिवारी ने इस व्याख्यान मे हिन्दी मे मानकीकरण के प्रयासो का क्रमबद्ध इतिहास भी बताया है। उन्होंने काशी के प0 सुधाकर द्विवेदी तथा सरयू प्रसाद मिश्र के अवदान के बाद पं0

बालकृष्ण भट्ट, बाल मुकुन्द गुप्त तथा महावीर प्रसाद द्विवेदी प्रभृति की शृंखला में बालकृष्ण शर्मा नवीन एवं पं0 श्रीनारायण चतुर्वेदी के नामो का भी उल्लेख किया है। अन्त मे वे कहते है—

'कुछ लोग हिन्दी को सरल बनाने की धुन में यह विचार प्रकट करते हैं कि हिन्दी का लिंग विधान अत्यन्त जटिल है, अत इसे सरल कर देना चाहिए। इस पक्ष मे बगाल के लोगो का विशेष आग्रह है। . . वास्तव मे किसी भाषा की संरचना की प्रकृति कृत्रिम नियमो द्वारा बदलना न तो उचित है और न ही वांछनीय। हिन्दी की ही तरह फ्रेंच भाषा मे भी दो ही लिंग है और इस अर्थ मे वह अंग्रेजी की अपेक्षा अधिक जटिल भाषा है किन्तु उसको कोई बदलने का नाम नही लेता।'

"आज हिन्दी भारतीय राष्ट्र की नि सन्देह राष्ट्र भाषा है और वह कितने प्रगति के साथ आगे बढ रही है उसकी प्रतीति उसी रूप मे कठिन है जिस रूप मे बहाव के साथ चलने वाली नौका की गति होती है वैयाकरण केवल प्रयोग के आधार पर अपने नियम बनाता है।"

वस्तुत अपने जीवन के अन्तिम दो-तीन वर्षों मे डॉ0 तिवारी ने भाषा, लिपि, बोलियो तथा भाषा विज्ञान के विषय में कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्षों को अपने लेखो तथा व्याख्यानों मे व्यक्त किया है जो हिन्दी तथा भाषा विज्ञान के प्रति उनकी निष्ठा के द्योतक है। इन पर ध्यान देना और तदनुसार कार्य करना भावी पीढी का कर्तव्य होगा।

सम्पादन

वीर काव्य

सर्वप्रथम हिन्दुस्तानी एकेडमी ने 1936 मे श्री गणेश प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित "हिन्दी वीर काव्य संग्रह" प्रकाशित किया। (1956 मे इसका संशोधित संस्करण प्रकाश मे आया। यह संशोधन डॉ0 उदयनारायण तिवारी जी द्वारा किया गया। उन्होने इसमें 7 पृष्ठो की भूमिका भी लिखी।)

4 वर्ष बाद 1940 हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने भी अपनी परीक्षाओ के लिए "वीरकाव्य संग्रह" का प्रकाशन किया। इसका सम्पादन डॉ0 तिवारी ने प भगीरथ प्रसाद दीक्षित के साथ मिलकर किया।

चूंकि 1936 तथा 1940 के इन सग्रहो के पश्चात् 'वीर काव्य' विषयक प्रचुर सामग्री प्रकाश मे आ चुकी थी इसलिए 1948 मे भारती भडार के प्रबन्धकों ने डॉ0 तिवारी से "वीर काव्य" पर एक पुस्तक लिखने का अनुरोध किया। चूकि डॉ0 तिवारी 8 वर्ष पूर्व इसी विषय पर कार्य कर चुके थे अत उन्होने ' वीर काव्य" का सकलन करना स्वीकार कर लिया। उन्हें 'वीर काव्य' के अध्ययन के प्रति उन्मुख करने का श्रेय पं0 दया शकर जी को जाता है क्योकि सम्मेलन के लिए उन्ही की प्रेरणा से डॉ0 तिवारी ने "वीर काव्य संग्रह" पूरा किया था। राजर्षि टण्डन, प0 अमरनाथ झा तथा प0 श्रीनारायण चतुर्वेदी के अनेकानेक सुझावो के फलस्वरूप तिवारी जी को ऐसा लगा कि नये सिरे से वीर काव्य ' का सम्पादन होना चाहिए। फलत 1948 मे उन्होने यह सकलन पूरा किया। इसके आठ वर्षो बाद ही 1956 मे हिन्दीप्रेमियो, विश्वविद्यालय तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के छात्रो तथा छात्राओ के लिए द्वितीय संस्करण करना पडा। इस संस्करण मे "पृथ्वीराज रासो" के "कैमास वध समय" तथा "पदमावती समयो" के अर्थ भी परिशिष्ट मे दे दिये गये है।

हिन्दुस्तानी एकेडमी तथा भारती भडार से प्रकाशित वीर काव्य सग्रहो मे जो प्रमुख अन्तर

दिखता है वह है वीर कवियों का चुनाव। एकेडमी वाले संग्रह में जिन ग्यारह कवियों के काव्यांश दिये गये हैं उनमें से केवल नौ को भारती भंडार वाले संकलन में स्थान मिला है और जिन दो कवियों को छोड़ दिया गया है वे हैं—जगनिक तथा केशवदास। परन्तु साथ ही इसमें नरपति नाल्ह को अतिरिक्त स्थान दिया गया है। यही नहीं, दोनों ही संग्रहों के लिए चुनी गई सामग्री एक दूसरे से सर्वथा भिन्न है अतः डॉ0 तिवारी को दो वीर काव्य संग्रहों का सम्पादक मानना उचित होगा।

वीरकाव्य की विशेषता

डॉ0 तिवारी ने 'वीरकाव्य' के प्रारम्भ में 89 पृष्ठ की जो भूमिका दी है वह अत्यन्त सूचनाप्रद है इसमें वीर रस की उत्पत्ति, विकास, रासो ग्रन्थों का परिचय चारण काव्य, राजस्थान की भाषा डिंगल का साहित्य जैसे प्रकरणों के अन्तर्गत विपुल सामग्री दी गई है।

यही नहीं, जिन 10 कवियों के काव्यों का चयन किया गया है उनके परिचय में शोधपरक विवरण दिये गये हैं।

यह पुस्तक 598 पृष्ठों में समाप्त हुई है। यह डॉ0 तिवारी के साहित्य पक्ष के प्रति उनकी अभिरुचि को द्योतक है।

डॉ0 तिवारी जी द्वारा लिखित तुलसीदास के ग्रन्थों की विवेचना एवं भ्रमरगीत की भूमिका भी इसी पक्ष की पुष्टि करती है।

निबन्ध संग्रह

पाणिनि के उत्तराधिकारी

यह पुस्तक डॉ0 तिवारी द्वारा समय-समय पर लिखित 12 उपयोगी निबन्धों का संकलन है जिसे "लोक भारती प्रकाशन" इलाहाबाद ने अप्रैल 1971 में प्रकाशित किया। इन निबन्धों में से अधिकांश "सरस्वती" पत्रिका में पहले ही छप चुके थे और इनका लेखन डॉ0 तिवारी द्वारा उनके अमरीका प्रवास (1958-59) के दौरान हुआ था, जैसा कि "आमुख" में उन्होंने स्वयं लिख दिया है।

इस संकलन में भाषा विषयक तथा लिपि सम्बन्धी कई निबन्ध हैं—जिनमें से पालि वाङ्मय, हिन्दी भाषा-शिक्षा की समस्या, राष्ट्र भाषा विषयक कतिपय प्रयोग, हिन्दी के विभिन्न रूप और समन्वय, राष्ट्र भाषा हिन्दी कुछ विचार, साम्यवादी चीन की भाषा समस्या, टर्की में भाषा सुधार शीर्षक निबन्ध भाषा से सम्बन्धित हैं, और भारतीय लिपियों की उत्पत्ति तथा विकास एक वृहद निबन्ध है जो लिपि से सम्बन्धित है। यह संभवतः डॉ0 तिवारी के दीर्घचिन्तन का परिणाम है।

अन्य निबन्धों में 'पाणिनि के उत्तराधिकारी' तथा 'पाणिनि, वात्सायन तथा पतंजलि', 'व्युत्पत्ति विज्ञान तथा हिन्दी भाषा शास्त्र', के अध्ययन की प्रगति —ये चार निबन्ध भाषा विज्ञान से सम्बद्ध हैं और इनमें से प्रथम निबन्ध के शीर्षक पर ही पुस्तक का नामकरण हुआ है।

इस संकलन में पालि वाङ्मय निबन्ध के कई अंश इसके पूर्व 1950-51 में 'हिन्दी अनुशीलन' पत्रिका में प्रकाशित हो चुके थे। इन्हें एक स्थान पर लाकर डॉ0 तिवारी ने उपकार किया है। उन्होंने इस लेख की अधिकांश सामग्री गायगर कृत "पालि भाषा एवं साहित्य" से ली है, जिसका उल्लेख

आमुख मे हुआ है इस निबन्ध के लेखन का उद्देश्य मेरी समझ मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग मे स्वीकृत पालि भाषा प्रश्न पत्र के लिए सहायक सामग्री प्रस्तुत करना था।

पाणिनि की महत्ता के विषय मे डॉ० तिवारी ने लिखा है "जब से यूरोप और अमरीका मे वर्णनात्मक (Descriptive) भाषा शास्त्र के अध्ययन का आरम्भ हुआ है, तबसे संस्कृत के वैयाकरण पाणिनि का महत्त्व बढा है। यूरोप मे भाषा शास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पाणिनि का प्रभाव परिलक्षित होता है। . महर्षि पाणिनि ध्वनिग्राम (Phoneme) से पूर्णतया परिचित थे और उन्होने चौदह माहेश्वर सूत्रो के अन्तर्गत इन्हे बॉधा था। यही बात ध्वनि शास्त्र के सम्बन्ध म भी है। पाणिनि ने अपने व्याकरण मे वर्णो के उच्चारण स्थान, मात्रा काल, उदात्त अनुदात्त स्वरित आदि के सम्बन्ध मे भी विचार किया है। पदग्राम (Morpheme) का भी पाणिनि को ज्ञान था और शब्दो की विश्लेषणात्मक पद्धति के तो वे पूर्णज्ञाता थे . भाषा के अध्ययन के लिए जिस प्रक्रिया को वर्णनात्मक भाषाशास्त्री (Descriptive linguists) बीसवी सदी के प्रथम चरण से अपनाने लगे है, वह पाणिनि को ईसा से 500 वर्ष पूर्व ही ज्ञात थी। इस बात का अनुमान करके आज अमरीका का भाषाशास्त्री पाणिनि के प्रति नतमस्तक हो जाता है। महान भाषाशास्त्री स्वर्गीय ब्लूमफील्ड ने अपनी पुस्तक मे इस प्रकार के उद्‌गार कई स्थानो पर प्रकट किये है . ऐसा प्रतीत होता है कि पाणिनि के व्याकरण की रचना के पूर्व वैयाकरणो की कई पीढ़ियाँ गुजर गई होगी। पाणिनि के व्याकरण की रचना 350-250 ई० पूर्व हुई होगी। यह व्याकरण वस्तुत मानवज्ञान का सर्वोत्कृष्ट प्रतीक है। आज तक ससार की किसी भी भाषा का इतना पूर्ण विवरण उपलब्ध नही है जितना कि संस्कृत भाषा का।"

`1940 मे प्रसिद्ध भाषाशास्त्री श्री बेजामिन ली हूर्फ ने लिखा था, "पाणिनि ने उस युग मे वह ज्ञान प्राप्त कर लिया था जो हमे आज उपलब्ध हुआ है ग्रीक लोगो ने तो इस भाषाशास्त्र की अधोगति कर रखी थी वास्तव मे 19वी शताब्दी के आरम्भ से, जब से पश्चिम ने पाणिनि को प्राप्त किया है, तभी से आधुनिक वैज्ञानिक भाषा शास्त्र का आरम्भ होता है।'

मेरी समझ मे डॉ० तिवारी ने आधुनिक भाषा विज्ञान के क्षेत्र मे पाणिनि के योगदान को जितनी स्पष्टता से भारतीय विद्वानो के समक्ष रखा है वह रोमाचक है क्योकि वे अपने लेख के अन्त मे कहते है " क्या पाणिनि के वास्तविक उत्तराधिकारी भी इनसे (अमरीकी भाषाशास्त्रियो से) शिक्षा लेंगे?"

पालि वाङमय के प्रति डॉ० तिवारी का झुकाव भाषाविज्ञानी होने के नाते होना स्वाभाविक था, किन्तु मेरे विचार से महापंडित राहुल, भदन्त आनन्द कौसल्यायन तथा जगदीश कास्यप से उनकी घनिष्ठता ने इसमे चार चॉद लगाये है।

व्युत्पत्ति विज्ञान Etymology का पर्याय है। व्युत्पत्ति विज्ञान का परम उद्देश्य शब्दो के यथार्थ स्वरूप का अवधारण है। भारतीय मेधा शब्दो की व्युत्पत्ति एव निर्वचन की ओर प्राक काल से ही केन्द्रित रही। वैदिक मत्रो के शुद्ध उच्चारण के लिए एक ओर जहाँ शिक्षा ग्रन्थो की आवश्यकता थी, वही दूसरी ओर उनके अर्थबोध के लिए शब्दो की निरुक्ति भी अपरिहार्य थी। निरुक्ति का अर्थ है शब्द के अर्थ पर विचार। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही सर्वप्रथम वैदिक कोष 'निघण्टु' का प्रणयन हुआ जो व्युत्पत्ति विज्ञान के क्षेत्र मे महर्षि यास्क द्वारा विश्व का प्रथम प्रयास था।

अद्यतन व्युत्पत्तिविज्ञानी शब्दो की व्युत्पत्ति के लिए ध्वन्यात्मक परिवर्तनो एवं प्रक्रियाओ की ओर से सापेक्षिक दृष्टि रखते है। किन्तु ध्वनि परिवर्तन के नियमो का निर्देश यास्क [illegible] के पूर्व ही कर दिया था व्यु [illegible] विज्ञान के परीक्षण के समय ध्वनि विज्ञान [illegible] भी [illegible] पेक्षा

डा0 तिवारी ने शब्दो की व्युत्पत्ति के दो प्रकार बताये है —लोक व्युत्पत्ति तथा वैज्ञानिक व्युत्पत्ति। लाक व्युत्पति का आधार अनुमानसिद्ध रहता है–जैसे "मौसी" की व्युत्पत्ति मा-सी से बताई गई है किन्तु डॉ0 तिवारी इसे यौन्तिक नही मानते। वे इसे 'मातृष्वसा' से व्युत्पन्न बताते हैं।

डॉ0 तिवारी के अनुसार वैज्ञानिक व्युत्पत्ति विज्ञान के लिए एक भाषा के साथ अन्य भाषा के शब्दो का तुलनात्मक निरूपण आवश्यक है। इस सम्बन्ध मे वे डॉ0 टर्नर का उल्लेख करते है और फिर अकारान्त क्रम से अंगूठी अंधेरा, अखाडा दूल्हा धाय, पसारी .बरात बूढा हाडी तक लगभग 130 शब्दो की विस्तृत व्युत्पत्ति देते हैं। हम यहाँ मौसी शब्द की व्युत्पत्ति उदाहरणास्वरूप उद्धृत कर रह है —मौसी (भो0 मउस्सी), प0 मास्सी लहदा, सिंधी, गु0 मासी, मराठी मावसी, प्राकृत माउस्सी माउस्सिआ, पाली मातुच्छा, संस्कृत मातृष्वसा।

यद्यपि लिपि सम्बन्धी निबन्ध पर डॉ0 तिवारी 1954 से ही चिन्तन-मनन करते रहे और यह 'हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास' (चतुर्थ सस्करण) की परिशिष्ट मे दिया हुआ है किन्तु उसे सामयिक बनाकर पुन प्रस्तुत किया गया है। आज के पाठको के लिए वे सुप्रसिद्ध भाषाविज्ञानी डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के मत को विस्तार से प्रस्तुत करते है—

समग्र भारत के लिए सामान्य लिपि के रूप मे रोमन को अपनाने के प्रबल समर्थक प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी है। आपने 1935 मे भारत के लिए रोमन लिपि (रोमन ऐल्फाबेट फार इण्डिया) शीर्षक निबन्ध प्रकाशित किया था इसमे डॉ0 चटर्जी के अनुसार देवनागरी तथा ब्राह्मी से प्रसूत अन्य लिपियो मे तीन त्रुटियाँ दीख पड़ती है जिनमे सुधार की गुंजाइश है।

1 लिखावट मे देवनागरी तथा अन्य भारतीय लिपियाँ रोमन की अपेक्षा अधिक जटिल है।

2 देवनागरी अक्षरात्मक लिपि है, रोमन की भाँति वर्णात्मक नहीं।

3 सयुक्त वर्णों को देवनागरी मे लिखने मे कठिनाई होती है।

डॉ0 चटर्जी ने अपने निबन्ध मे जो लिपि प्रस्तावित की है उसके वर्ण तो रोमन के है किन्तु उन्हे भारतीय उच्चारण के क्रम से सजाया गया है।

डॉ0 तिवारी अपना अभिमत व्यक्त करते हुए लिखते है 'नागरी लिपि की आज यदि किसी लिपि से प्रतिद्वन्द्विता है तो वह एकमात्र रोमन लिपि से है। यह इसलिए नहीं कि रोमन मे किसी प्रकार की पूर्णता है अपितु इसका एक कारण यह है कि साम्यवादी (कम्युनिष्ट) देशो को छोडकर रोमन आज यूरप की सामान्य लिपि बन गई है तथा आस्मानली तुर्की, इडोनेशिया तथा कुछ अशो मे चीन तक ने इस निर्णय को अपना लिया है। . एशिया के जिन देशों ने रोमन लिपि को अपनाया है उनके यहाँ नागरी जैसी ध्वन्यात्मक लिपि थी ही नहीं रोमन की अपेक्षा रूसी लिपि अधिक ध्वन्यात्मक एव पूर्ण है।'

"डॉ0 चटर्जी ने नागरी लिपि की यह त्रुटि बताई है कि यह अक्षरात्मक लिपि है फलतः इसके द्वारा ध्वनियो का ठीक ढग से विश्लेषण नही हो पाता।"

डॉ0 तिवारी को अपने गुरुवर डॉ0 चटर्जी का यह विचार स्वीकार नही है। वे स्पष्ट रूप से प्रतिवाद करते है "नागरी अर्धअक्षरात्मक लिपि है, और इसकी लेखन प्रणाली मे किंचित परिवर्तन करके इसे ऐसा बनाया जा सकता है कि इसके द्वारा ध्वनियो का विश्लेषण आसानी से होने लगे।' डा0 चटर्जी के दूसरे आक्षेप के सम्बन्ध मे डॉ0 तिवारी कहते हैं "अब रही सयुक्त वर्णो या व्यजन गुच्छो को नागरी मे लिखने की कठिनाई की बात, सो इधर नागरी लिपि मे सुधार कर तथा उसे मानक रूप देकर यह कठिनाई भी दूर कर दी गई है।"

अ... ये दृढ़तापूर्वक अपना निष्कर्ष देते हैं, "आज सम्पूर्ण भारत राष्ट्र की एकता को दृष्टि में रखकर सामान्य लिपि के रूप मे नागरी को स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई अन्य विकल्प नही है। सन 1860 में जब से मैक्समूलर ने संस्कृत ग्रन्थो की छपाई के लिए देवनागरी लिपि को अपनाया तब से यह संस्कृत की एकमात्र लिपि बन गई। आज यूरप म कोई भी प्राच्य विद्याप्रेमी ऐसा नहीं है जो नागरी लिपि से परिचित न हो।"

भाषा शास्त्र के अध्ययन को लेकर डॉ0 तिवारी 1953 से ही चिन्तित रहे है। वे आधुनिक युग के विदेशी भाषाशास्त्रियो के प्रबल प्रशंसक रहे है। वे स्वीकार करते हैं कि इस देश म भाषा शास्त्र को वैज्ञानिक रूप देने मे बीम्स, हार्नले, ग्रियर्सन, काल्डवेल, ब्लाख तथा टर्नर की महती भूमिका है। इन्ही यूरोपीय विद्वानो की पद्धति का अनुकरण करते हुए हमारे देश के रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर, सुनीति कुमार चटर्जी, तारापुरवाला आदि विद्वानो ने आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओ का गहन अध्ययन किया।

डॉ0 तिवारी 1928 म 'लिंग्विस्टिक सोसाइटी आफ इंडिया' की स्थापना से लेकर प्राच्यविद्या सम्मेलनो का विवरण देते है। "1953 मे डेकेन कॉलेज पूना के भाषाशास्त्री डॉ0 सुमित्र मगेश कत्रे ने चुने भाषाशास्त्रियो का सम्मेलन बुलाया जिसका व्यय भार अमेरिका के राकेफेलर फाउडेशन ने उठाया। उस सम्मेलन मे तय हुआ कि बी0 ए0 तथा एम0 ए0 पाठ्यक्रमो मे भाषा विज्ञान के अध्ययन को स्थान दिया जाय।" उन्होने तथा डॉ0 गहरी ने मिलकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे भाषा-विज्ञान के पाठ्यक्रम को लागू भी कराया और जब 1961 मे जबलपुर विश्वविद्यालय चले गये तो वहाँ भाषा विज्ञान के अध्ययन-अध्यापन को सुदृढ़ किया।

इस निबन्ध मे डॉ0 तिवारी ने डेकन कॉलेज द्वारा परिचालित भाषा-शास्त्रीय स्कूलो मे भारत के विभिन्न प्रान्तो से आये अध्येताओं की विस्तृत सूची प्रस्तुत की है और दिखाया है कि हिन्दी क्षेत्र के बहुत ही कम अध्येताओं ने इसका लाभ उठाया है। यही कारण है कि हिन्दी प्रदेशो मे भाषा विज्ञान का सशक्त आधार नही बन पाया। डॉ0 तिवारी लिखते है "समस्त हिन्दी क्षेत्र मे गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, बगाल आदि की तरह भाषा को लेकर किसी प्रकार की एकता का भाव नही है। हिन्दी प्रदेश की सबसे बड़ी कमजोरी है जातिवाद। इसने इस समस्त क्षेत्र को विखंडित कर रखा है।" डॉ0 तिवारी ने बताया है कि "अध्यापको तथा छात्रो मे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश के प्रति कोई अनुराग न होने से ही ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई। यही नही, यह कितनी विचित्र बात है कि उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल तथा इण्टर कॉलजो में हिन्दी अध्यापक होने के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है किन्तु विश्वविद्यालयो मे इसकी आवश्यकता नहीं समझी गई। . सच बात तो यह है कि हिन्दी क्षेत्र के विश्वविद्यालयो मे जब नये प्राध्यापको की नियुक्ति होती है, उस समय विषय-ज्ञान की अपेक्षा हमारी दृष्टि व्यक्तियो पर ही विशेष रूप से होती है। उस समय हिन्दी के अभिवृद्धि सम्बन्धी समस्त आदर्शों को भूल जाते है। आवश्यक बात यह है कि हम तत्काल अहिन्दी भाषी क्षेत्रो की भांति ही हिन्दी भाषी क्षेत्र मे भी भाषा शास्त्र के अध्ययन केन्द्र स्थापित करे। विश्वविद्यालयो मे भाषा शास्त्र के तीन प्रकार के भाषा शास्त्रीय अध्ययनों–ऐतिहासिक, तुलनात्मक एवं वर्णनात्मक को चालू करने की आवश्यकता है।"

"हिन्दी के विभिन्न रूप तथा उनका समन्वय' निबन्ध मे हिन्दी के विविध रूपो की चर्चा की गई है—

"हिन्दी का एक रूप आज पूर्वी पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा विहार के विश्वविद्यालयो एव कॉलेजो मे शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रचलित है जिसे हम परिनिष्ठित हिन्दी, साधु हिन्दी, उच्च हिन्दी या संस्कृतनिष्ठ हिन्दी कह सकते है। हिन्दी का दूसरा रूप वह है जिसका

पश्चिमी उत्तर प्रदेश, आगरा, दिल्ली मेरठ, मुरादाबाद, सहारनपुर, बरेली आदि के लोग अपने दैनिक जीवन मे प्रयोग करते है। इसमे तद्भव शब्दो की अधिकता होती है। इसमे अरबी फारसी के सरल एव बहुप्रचलित शब्द अपने आप आ जाते है. . हिन्दी के इस रूप में समन्वय के बीज वर्तमान हैं और भविष्य मे साहित्य मे इसके प्रयोग की अत्यधिक सम्भावना है।

"जिनकी मातृभाषा हिन्दी नही है, वे लेखक जिस प्रकार की हिन्दी लिखते है उसमें तथा उत्तरी भारत की हिन्दी मे कोई अन्तर नहीं है.. अब प्राय सभी लोग मानने लग हैं कि उर्दू हिन्दी की ही एक शैली है। हिन्दी तथा उर्दू के वाक्य विन्यास तथा व्याकरण मे कोई अन्तर नहीं है, अर्थात् उर्दू हिन्दी का चौथा रूप है। इन चार रूपो के अतिरिक्त हिन्दी क्षेत्र मे कई नवीन शैलियो एव प्रवृत्तिया का प्रादुर्भाव हुआ है। इसमे बहुप्रचलित क्षेत्रीय शब्दो का प्रयोग हो रहा है।"

"हिन्दी के विविध रूपो क समन्वय क लिए एक और आवश्यक बात यह है कि उत्तरी भारत की विविध भाषाओं एव बोलियो यथा पजाबी बांगरू, खड़ी बोली, ब्रज, कन्नौजी, बुन्देली, अवधी, बघेली राजस्थानी तथा बिहार की विविध बोलियो के कोश तैयार किये जायें।

"कतिपय राजनीतिज्ञ विदेशी भाषाओ, विशेष रूप से अग्रेजी के अधिक से अधिक शब्द हिन्दी ने ग्रहण कर इसे समृद्ध बनाने की बाते करते है। इसमे कोई हानि नही है। . किन्तु स्मरण रखने की जरूरत है कि शब्दो के उधार लेने की भी एक सीमा होती है।

डॉ0 तिवारी हिन्दी का व्याकरण बदलने के पक्ष मे नहीं है। वे लिखते है "इससे हिन्दी हिन्दी नहीं रह जायगी किसी भी राजनीतिज्ञ, वैयाकरण अथवा भाषाशास्त्री का यह अधिकार नहीं है कि वह भाषा मे मनमाने ढग से परिवर्तन करे.... सच बात तो यह है कि किसी भाषा को रूप देने वाले उसके लेखक होते है। वे ही भाषा को सरल, कठिन, स्वाभाविक एवं अस्वाभाविक बनाते हैं।"

इस पुस्तक मे सग्रहीत एक अन्य निवन्ध उल्लेखनीय है — "राष्ट्रभाषा हिन्दी कुछ विचार"। इस निवन्ध मे महाराष्ट्र के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी डॉ0 पाडुरग सदाशिव खानखोज द्वारा 1900 ई0 मे हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा बनाने के प्रस्ताव का उल्लेख किया गया है, जो शायद अधिकांश हिन्दी वालो को ज्ञात न हो। महात्मा गाधी, मदन मोहन मालवीय, सुभाष चन्द्र बोस, राजगोपालाचारी द्वारा हिन्दी का राष्ट्रभाषा बनाये जाने के सम्बन्ध मे जो विचार प्रकट किये गये उनका उल्लेख करते हुए सविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किये जाने का स्वागत करते हुए डॉ0 तिवारी आगे लिखते हैं "हमारे नेता जो राष्ट्रीय आन्दोलनों में स्वराज्य की बात करते हैं, राष्ट्रीयता की बात करते थे शासन हाथ मे आते ही सब भूल गये। अग्रेजीपरस्त अफसर ही शासन करते रहे। ये नेतागण उनके हाथो की कठपुतली बने रहे वास्तव मे जब तक हम देश में राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा नहीं कर लेते तब तक हमारी स्वतन्त्रता सदैव खतरे मे रहेगी।"

डॉ0 तिवारी की "पाणिनि के उत्तराधिकारी" पुस्तक मे जो दो बातें मुख्य रूप से उभर कर आती है वे हैं (1) डॉ0 तिवारी की निर्भीकता एव (2) विवेकसम्मत कथन। डॉ0 तिवारी रोमन लिपि के प्रस्तावक डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी से अपना स्पष्ट विरोध व्यक्त करते है, भले ही वे उनके सबसे प्रिय गुरु क्यो न रहे हो। उचित को उचित कहने में डॉ0 तिवारी चूकते नही। इसी तरह, राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर वे दो टूक बाते रखते है। वे उर्दू को हिन्दी की एक शैली रूप मे मानते हैं। चाहे प0 श्रीनारायण चतुर्वेदी हो या राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन इनको भाषा विषयक ठोस राय देने वाले डॉ0 तिवारी ही थे।

"हिन्दी भाषा के उद्गम और विकास" पुस्तक मे डॉ0 तिवारी ने डॉ0 ग्रियर्सन के हिन्दुस्तानी विषयक अभिमत का विरोध किया है यद्यपि वे डॉ0 ग्रियर्सन के बहुत बडे प्रशसक थे। डॉ0 ग्रियर्सन

द्वा द गई यह परिभाषा सर्वथा काल्पनिक है। उत्तरी भारत में हिन्दुस्तानी के रूप मे कभी कोई ऐसी सर्वमान्य भाषा अस्तित्व मे नही आई जिसका हिन्दू-मुसलमान समान रूप से व्यवहार करते थे और जो नागरी अथवा फारसी लिपि मे लिखी जाती थी। डॉ0 ग्रियर्सन ने हिन्दी को हिन्दुस्तानी की शैली अवश्य माना किन्तु उन्होंने न तो हिन्दी शब्द की निरुक्ति दी और न हमारी भाषा के नाम की प्राचीनता के सम्बन्ध मे ही विचार किया।"

वैसे डॉ0 तिवारी जब बी0 ए0 मे थे तभी उन्होने डॉ0 ग्रियर्सन के भोजपुरी भाषा विषयक मत का प्रतिवाद करने का सकल्प किया था। बाद मे उन्होने भोजपुरी भाषा पर डी0 लिट की उपाधि प्राप्त की।

डॉ0 तिवारी द्वारा अनूदित ग्रंथ

1. भाषा विज्ञान

(एफ0 मैक्समूलर कृत The Science of Language का हिन्दी अनुवाद)

प्रकाशक मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, जनवरी 1970 पृष्ठ 702 मूल्य 17=50 रु0

यह पुस्तक केवल अनुवाद नही है अपितु इसमे काफी परिवर्तन किया गया है।

मैक्समूलर ने रायल इस्टीट्यूट लन्दन मे 1861-63 मे कई भाषण दिये थे, जिन्हे सम्पादित करके उन्होने 1890 म पुस्तक रूप दिया।

मैक्समूलर ने भारोपीय परिवार की प्राचीन भाषा "वैदिक सस्कृत" तथा "पाणिनीय सस्कृत" का गहन अध्ययन किया था। वे पालि, प्राकृत एव अपभ्रश के भी पडित थे। इसके साथ ही उनकी प्रतिभा ने ग्रीक लैटिन तथा विश्व के अन्य परिवारो की समर्थ भाषाओ का भी सुधा-स्वाद लिया था। उनकी तुलनात्मक एवं वैज्ञानिक दृष्टि सर्वोपरि थी। डॉ0 तिवारी ने ऐसे विद्वान भाषाविज्ञानी की कृति के अनुवाद का सकल्प 1961 मे ही कर लिया था। अत जब जबलपुर विश्वविद्यालय गये तो 1962 से अनुवाद कार्य प्रारम्भ कर दिया। अनुवाद करते समय उन्होने कतिपय अनावश्यक अशो को छोड दिया है तथा एक दो स्थानो पर उनकी पुरानी कृति की आवश्यक सामग्री समाविष्ट कर दी है। यद्यपि अनुवाद कार्य 1963-64 मे पूर्ण हो चुका था किन्तु प्रकाशन मे विलम्ब हुआ।

इस अनुवाद की विशेषता यह है कि यद्यपि यह ग्रथ 343 पृष्ठो म पूर्ण हुआ और इसका परिशिष्ट 32 पृष्ठ का है किन्तु अनुवादक ने परिशिष्ट 2 के अन्तर्गत 196 पृष्ठो की सामग्री ग्रन्थ को विशेष उपयोगी बनाने की दृष्टि से जोड़ दी है। इस सामग्री मे भाषा विज्ञान सम्बन्धी अधुनातम ज्ञान को सक्षेप मे समाविष्ट किया गया है। यह समाविष्ट सामग्री यद्यपि भाषा-विज्ञान की प्रामाणिक पुस्तको से सकलित है किन्तु यह डॉ0 तिवारी की सूझ, उनके अनुभव, उनके भाषा विज्ञान विषयक ज्ञान की व्यापकता का सूचक है। मैक्समूलर जैसे विद्वान की कृति मे इस तरह का परिवर्धन निश्चित रूप से बहुत बड़े साहस को बताने वाला है। डॉ0 तिवारी ने लिखा है—

मेरी दृष्टि मे भाषा विज्ञान जैसे नित्य प्रगतिशील एवं परिवर्तनोन्मुख विज्ञान के सन्दर्भ मे यह नितान्त आवश्यक है कि प्रत्येक अनूदित पुस्तक म, परिशिष्ट के रूप म, अधुनातम ज्ञान उपलब्ध किया जाय। इसके लिए अनुवाद का कार्य विशेषज्ञो द्वारा अथवा उनके तत्वावधान मे होना चाहिए।"

काश! डॉ0 तिवारी जैसी ही दृष्टि से हिन्दी निदेशालय ने पुस्तको का अनुवाद कराया होता।

यहाँ एक उल्लेखनीय बात यह है कि डॉ0 तिवारी को इस कृति का अनुवाद पूरा कर लेने

के बाद यह पता चल चुका था कि हिन्दी समिति, लखनऊ ने मैक्समूलर के भाषणों का अनुवाद सुप्रसिद्ध भाषाविद डॉ0 हेमचन्द्र जोशी से करा कर पुस्तक रूप में प्रकाशित कर दिया है। किन्तु इससे डॉ0 तिवारी हतोत्साहित नहीं हुए। शायद इसीलिए उन्होंने परिशिष्ट के रूप में विपुल सामग्री जोड़ने का निश्चय किया। इस तरह उन्होंने मैक्समूलर की पुस्तक को नया स्वरूप दिया–उसका भारतीयकरण कर दिया।

डॉ0 तिवारी ने परिशिष्ट भाग में तुर्की भाषाओं का संक्षिप्त परिचय दिया है जो लगभग 43 पृष्ठ का है। निस्सन्देह इसके लिए उन्होंने अपने अमरीका-प्रवास के दौरान एकत्र की गई सामग्री का उपयोग किया है। यह सामग्री उनके द्वारा "सरस्वती" पत्रिका में लेखों के रूप में 6 खण्डों में पहले ही प्रकाशित की जा चुकी थी।

डॉ0 तिवारी अत्यन्त उदार दृष्टि के भाषाविज्ञानी रहे हैं। उन्होंने तुर्की भाषा के लिए प्रयुक्त रूसी लिपि की सराहना की है और लिखा है "क्या भारत भी इससे प्रेरणा ग्रहण करके समस्त देश में नागरी लिपि प्रचलित करने में सफल हो सकेगा? राष्ट्रीय एकता के लिए यह परमावश्यक है परिशिष्ट 2 में पृष्ठ 379 पर डॉ0 तिवारी ने लिखा है—

"एक बात यहाँ और उल्लेखनीय है। भौतिक समृद्धि और वैज्ञानिक उन्नति के कारण आज का मानव, अतीत की अपेक्षा, वर्तमान के सम्बन्ध में अत्यधिक जागरूक है। सम्प्रति मनुष्य ने प्रकृति पर जो विजय प्राप्त की है उसके कारण विश्व के विभिन्न भू-भाग एक दूसरे के अति निकट आ गये हैं। इसके साथ ही विदेशी भाषाओं को अल्प समय में सीखने की समस्या भी सामने आई है। सच बात तो यह है कि आज भाषा की समस्या केवल मुट्ठी भर राजनीतिज्ञों की समस्या न रहकर समग्र राष्ट्र की समस्या बन गई है। आज भाषाविज्ञानियों से इस बात की आशा की जाती है कि वे अपने सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ भाषा विषयक समस्याओं के सुलझाने में भी राष्ट्र एवं विश्व की सहायता करें। इसका एक परिणाम यह हुआ है कि आज भाषातत्त्ववेत्ता भाषा विज्ञान की अपेक्षा लिंग्विस्टिक्स के अध्ययन में अधिक प्रवृत्त है। आज विश्व के विश्वविद्यालयों — विशेष रूप से अमरीका में लिंग्विस्टिक्स का अध्ययन एवं अध्यापन तीव्रगति से हो रहा है तथा इस विषय की अनेक प्रामाणिक पुस्तकों का भी यहाँ प्रणयन हुआ है।"

टिप्पणी

इस पुस्तक के परिशिष्ट भाग में 471 के बाद के कुछ पृष्ठों में डॉ0 तिवारी ने "भाषा विज्ञान का व्यवस्थित अध्ययन" के अन्तर्गत जो इतिहास लिखा है उसका उपयोग उन्होंने बाद में अपनी अन्य पुस्तक "भाषा विज्ञान का संक्षिप्त इतिहास" में किया है।

2 भारतीय आर्य भाषाएँ

'ग्रियर्सन द्वारा लिखित Indo-Aryan Vernaculars नामक निबन्ध का हिन्दी अनुवाद, प्रकाशक भारती भण्डार, लीडर रोड इलाहाबाद, 1984, पृष्ठ 208, मूल्य 35=00 रु0

जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 1918-20 में "बुलेटिन आफ ओरियंटल स्टडीज" में एक लम्बा निबन्ध Indo-Aryan Vernaculars लिखा था जो भारतीय आर्यभाषाओं के सम्बन्ध में था। डॉ0 तिवारी ने इस महत्वपूर्ण लेख की उपयोगिता को समझते हुए 19 मार्च 1982 में इसे अनूदित करने की अनुमति प्राप्त कर ली और नवम्बर 1983 में इसका अनुवाद पूरा किया। उसी का प्रतिफल है यह पुस्तक। डॉ0 तिवारी ने लिखा है "भारतीय आर्यभाषाओं के सम्बन्ध में जो विचार डॉ0 ग्रियर्सन

ने इस लेख में व्यक्त किये हैं, वे एक प्रकार से अंतिम हैं।[1] इसका किसी ने अभी तक प्रतिवाद नही किया है। अपने नवीन वर्गीकरण में ग्रियर्सन ने पूर्वी हिन्दी-अवधी, बघेली छत्तीसगढ़ी को पश्चिमी हिन्दी से अलग कर दिया है और पश्चिमी हिन्दी की सीमा कानपुर तक मानी है। इसी प्रकार ग्रियर्सन ने बिहारी, राजस्थानी तथा पहाड़ी भाषाओं का स्वतन्त्र अस्तित्व स्वीकार किया है।"

यह महत्वपूर्ण निबन्ध तिरसठ वर्षों तक अनदेखा पड़ा रहा अत इसको अनूदित रूप मे प्रथम बार प्रकाशित करने का श्रेय डॉ० तिवारी को जाता है। इसका अनुवाद डॉ० तिवारी ने इस पुस्तक के पृष्ठ 139-207 मे दिया है। प्रथम 138 पृष्ठों मे उन्होंने भूमिका तथा अन्य विवेचनाओं का समावेश किया है। वे लिखते हैं—

'भारतीय आर्य भाषाएं' के चार खण्ड हैं। आरम्भ मे (1-18 पृष्ठ) ग्रियर्सन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर जो लेख है वह डब्लू० एफ० टामस तथा आर० एल० टर्नर के लेख का अनुवाद है। यह लेख ब्रिटिश एकेडमी के जर्नल में छपा था। दूसरे खण्ड (पृष्ठ 19-36) में डॉ० मुरलीधर श्रीवास्तव की पुस्तक 'यूरोपीय लोगों की हिन्दी सेवा' तथा डॉ० आशा गुप्त कृत 'जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन तथा बिहारी भाषा साहित्य" पुस्तकों से सामग्री लेकर उसे संकलित किया गया है। तीसरे खण्ड मे (पृष्ठ 37-138) डॉ० तिवारी द्वारा लिखित भूमिका है जिसमें आर्य भाषाओं का व्युत्पत्तिमूलक अध्ययन किया गया है। और चौथे खण्ड मे (139-207) डॉ० ग्रियर्सन के लेख का अनुवाद है जिसे डॉ० तिवारी ने अपने जीवन के अन्तिम दो वर्षों मे पूरा किया।

कहने को तो यह 69 पृष्ठों मे मुद्रित अनुवाद है किन्तु डॉ० तिवारी ने अपनी सूझ-बूझ से इसमे अतिरिक्त सामग्री जोड़कर इसे 208 पृष्ठ की पुस्तक बना दी है। डॉ० ग्रियर्सन के सम्पूर्ण जीवन एवं उनके कृतित्व का परिचय प्राप्त करना आवश्यक था। भूमिका के रूप मे डॉ० तिवारी ने 100 पृष्ठ से अधिक सामग्री स्वयं लिखी है। यद्यपि इसका पर्याप्त अंश उनकी पुस्तक 'हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास" के ऊपर आधारित है किन्तु कुछेक अंश सर्वथा नवीन है, जो अत्यन्त सूचनाप्रद है। यथा पृष्ठ 55 पर "भाषा", 58-60 पर "संस्कृत" शब्दों की व्युत्पत्ति और उनके वास्तविक अर्थों पर लम्बी चर्चा है। इसी तरह पृष्ठ 88 पर अब्राहम ग्रियर्सन का आधुनिक आर्य भाषाओं का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है जो उनका अंतिम प्रलेख है। इसके अनुसार उन्होंने सर्वप्रथम मध्य देश की भाषा हिन्दी को, तदनन्तर मध्यदेश की निकटवर्ती भाषाओं मे पंजाबी, राजस्थानी गुजराती, पूर्वी पहाड़ी, मध्य पहाड़ी और पश्चिमी पहाड़ी को रखा है। पूर्वी हिन्दी को बाहरी उपशाखा की भाषा से सम्बन्धित बताया है। डॉ० तिवारी ने अपनी टिप्पणी मे कहा है–

"इस तरह ग्रियर्सन का मत है कि पूर्वी हिन्दी हिन्दी नही है, मात्र पश्चिमी हिन्दी ही असली हिन्दी है जिसकी सीमा कानपुर तक है। अतएव अब तक जो लोग पूर्वी हिन्दी को भी पश्चिमी हिन्दी के साथ मानते रहे हैं, उन्हे ग्रियर्सन के इस वक्तव्य से धक्का लगेगा। किन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से ग्रियर्सन अपने आप मे सही है और हमें इस बात को स्वीकार कर लेना चाहिए सरहिन्द से लेकर कानपुर तक के विस्तृत क्षेत्र की भाषा को ही हिन्दी स्वीकार करने मे क्या आपत्ति हो सकती है?

'यहॉ एक और बात विचारणीय है कि आज हिन्दी के अन्तर्गत राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा बिहार की गणना की जाती है। प्राचीन काल मे इस क्षेत्र की साहित्यिक ब्रजभाषा भी पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख भाषा रही है, जो इस क्षेत्र में स्वीकृत रही है। आज भी इन क्षेत्रों के लोगों ने हिन्दी को अपनी शिक्षा-दीक्षा की भाषा स्वीकार कर रखी है और यह स्वीकृति निरन्तर बनी

---

1 डॉ० ग्रियर्सन ने भारतीय आर्य भाषाओं का अध्ययन 1873 से प्रारम्भ किया था और 1933 तक भाषा सर्वेक्षण चलता रहा। यह लेख अन्तिम लेख था।

रहेगी क्योंकि हिन्दी का इन क्षेत्रों की भाषाओं से कोई वैमनस्य नहीं। आज बाहरी उपशाखा की बिहार क्षेत्र की भाषाओं-मैथिली, अंगिका, बज्जिका, मगही और भोजपुरी में साहित्यिक रचना हो रही है। इन आंचलिक भाषाओं और हिन्दी में किसी प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता नहीं है प्रत्युत अपने साहित्य द्वारा ये हिन्दी में भाव प्रकाशन हेतु नये नये शब्द दे रही है। वास्तव में हिन्दी को विशाल भाषा बनाने के लिए इन भाषाओं के भावप्रवण शब्दों की आवश्यकता ही है। मैं आशा करता हूँ कि हिन्दी के लेखक एवं विचारक इन आंचलिक भाषाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करेंगे और तभी हिन्दी वास्तव में राष्ट्रभाषा होगी।'

पृष्ठ 90 पर डॉ0 तिवारी ने डॉ0 ग्रियर्सन के उस लेख का प्रसंग उठाया है जो 1880 में "कलकत्ता रिव्यू" में 'ए प्ली फार पीपुल्स टंग' शीर्षक से छपा था। इस लेख में ग्रियर्सन ने स्थानीय बोलियों का महत्त्व दर्शाया था। उनका कथन था कि हिन्दी न तो बिहार प्रान्त की भाषा है और न कभी भविष्य में हो सकती है। इस पर डॉ0 तिवारी की टिप्पणी है-

"भारतीयों को एक विदेशी प्रशासक द्वारा भाषागत अनैक्य की बात उठाना रुचिकर न लगा तत्कालीन विद्वत्समाज ने इसे शासकों की राजनीतिक चाल समझी। उनके अनुसार विद्वद्वर्ग की यह धारणा निराधार है कि शिक्षित वर्ग ने हिन्दी को साहित्यिक और राजनैतिक स्तर पर स्वीकार कर लिया है इन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि उर्दू और हिन्दी दोनों भाषाओं में तो केवल शब्दकोश और लिपि का अन्तर है किन्तु पश्चिमी और पूर्वी हिन्दी में उद्भवस्थल, उच्चारण, व्याकरण, धातु रूप, क्रिया, कृदन्त रूप तथा वाक्य रचना आदि सभी दृष्टियों से पर्याप्त भेद है।"

'डॉ0 ग्रियर्सन यह तो स्वीकार करते हैं कि बहुत सी भाषाएँ देश के लिए घातक होती हैं किन्तु इस कारण किसी देश में प्रचलित बहुभाषाओं के अस्तित्व का निषेध भी नहीं किया जा सकता। कोई जाति या राष्ट्र संसद के अधिनियम के सहारे भाषा नहीं बदल सकता।'

डॉ0 तिवारी की टिप्पणी है (पृष्ठ 93) कि "ग्रियर्सन ने 100 वर्ष पूर्व बिहारी भाषाओं को बिहार में प्रतिष्ठापित करने का प्रयत्न किया था तथा बिहार की किसी एक भाषा को प्रशासन की भाषा बनाने की वकालत की थी। यद्यपि उनका यह सपना साकार नहीं हुआ किन्तु ग्रियर्सन का यह भविष्यवाणी कि बिहार की भाषा न तो उर्दू है और न हिन्दी और बिहार में हिन्दी की जड़ कभी नहीं जम पायेगी, यह सर्वथा सत्य सिद्ध हुई है। किन्तु अंग्रेजी तथा हिन्दी में उच्च शिक्षाप्राप्त व्यक्ति अपने घरों में केवल स्थानीय बोलियों —मैथिली, मगही, भोजपुरी में बातें करते हैं। बिहारी भाषा बोलने वाले प्रायः परस्पर वार्तालाप में अपनी मातृभाषाओं के द्वारा ही अपने भावों का प्रकाशन करते हैं किन्तु जब उनके सामने कोई अन्य बोली बोलने वाला उपस्थित होता है तो उससे हिन्दी में बातें करते हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि बिहार में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम है किन्तु अपनी मातृभाषा के प्रति बिहार के लोगों का अतिशय प्रेम है।"

भोजपुरी के प्रबल पक्षधर होने के नाते डॉ0 तिवारी स्वयं सुझाव रखते हैं कि भोजपुरी को प्रशासनिक भाषा बनाना उपयुक्त होगा। किन्तु बिहार में अनेक बोलियों के होने से अन्ततः वे लिखते हैं "मेरी सम्मति में ऐसी स्थिति में हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में यथास्थिति में रखना श्रेयस्कर होगा। लेकिन बिहार में राष्ट्रभाषा को सही रूप में लोगों को सिखाना होगा। यह कार्य एक ओर राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा द्वितीय ओर हिन्दी के साथ इन बिहारी भाषाओं-मैथिली, मगही, भोजपुरी भाषाओं के व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन करना होगा। बिहारी भाषा-भाषियों को विशेष रूप से ने कर्तृरि, कर्मणि और भावे के रूप का बोध कराना होगा। इसके साथ ही लिंगानुशासन का विशेष रूप से अध्ययन कराना होगा क्योंकि बिहारी भाषाओं में इसके प्रयोग के विषय में अत्यन्त शिथिलता है।"

भूमिका के उपसहार मे डॉ0 तिवारी ने लिखा है "बिहारी भाषाओं-मैथिली, अंगिका, बज्जिका, मगही और भोजपुरी की उत्पत्ति पश्चिमी मागधी से हुई है। ये पाँचो बिहारी भाषाएँ परस्पर बोधगम्य हैं। उत्पत्ति की दृष्टि से भोजपुरी का सम्बन्ध पूर्वी हिन्दी से नहीं है जो अर्धमागधी अपभ्रंश से उत्पन्न है। इसका सम्बन्ध पश्चिमी मागधी से है। बिहारी का राष्ट्रभाषा हिन्दी से घनिष्ठ सम्बन्ध है।"

इस प्रकार डॉ0 तिवारी ने डॉ0 ग्रियर्सन के निबन्ध का अनुवाद प्रस्तुत करते हुए अपने जीवन भर के भोजपुरी भाषा के अध्ययन का सार रूप प्रस्तुत कर दिया है। डॉ0 तिवारी डॉ0 ग्रियर्सन के कोरे प्रशंसक ही नही रहे। उन्होने सम्पूर्ण मान्यताओं मे डॉ0 ग्रियर्सन को अपने सम्मुख रखा और बी0 ए0 छात्र के रूप मे डॉ0 ग्रियर्सन के प्रति जो भ्रान्त धारणा बना रखी थी उसका निराकरण करने के लिए स्वयं शोध की ऑच मे तपते रहे। जिस तरह पतंजलि ने पाणिनि की कृति पर महाभाष्य लिखकर पाणिनि को सुबोध बनाया उसी तरह डॉ0 तिवारी ने डॉ0 ग्रियर्सन के विचारो की व्याख्या करके हिन्दी, उर्दू, बिहारी आदि भाषाओ के विषय मे उनके द्वारा स्थापित मान्यताओं को उचित ठहराया और डा0 ग्रियर्सन के प्रति अपनी सच्ची निष्ठा प्रकट की।

ज्यो-ज्यो डॉ0 तिवारी आधुनिक भाषा विज्ञान का अधिकाधिक अवगाहन करते गये, त्यो त्यो उन्हे लगा कि डॉ0 ग्रियर्सन ने किसी साजिश के तहत अपनी भाषा विषयक मान्यताएँ प्रस्तुत नही की थी। इस तरह डॉ0 तिवारी डॉ0 ग्रियर्सन के सर्वाधिक प्रशंसक एव पक्षधर बन रहे।

टिप्पणी .

डॉ0 तिवारी के कृतित्व मे हम उनके भाषणों तथा रेडियोवार्ताओ को ही नहीं, उनके पत्राचार को सम्मिलित कर लेना उचित समझते है — इन सबो से उनकी रुचियों तथा पाण्डित्य का पता चलता है।

उन्होने 1954 से लेकर 1981 तक कई भाषण दिये—कुछ विद्यालयो मे, कुछ विश्वविद्यालयो, परिषदो के समक्ष जो विविध विषयों पर हैं किन्तु उनके केन्द्र मे भाषाविज्ञान बोलता मिलेगा।

उनकी कुल 17 रेडियो वार्ताओं का पता उनकी डायरियो से चलता है। ये 195 4 से 1983 के मध्य दी गई। ये हिन्दी साहित्य से सम्बद्ध हैं। एक रेडियो टेप उनसे लिये गये साक्षात्कार का उपलब्ध है जिसकी एक प्रतिलिपि श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय ने मुझे सुलभ कराई थी।

डा0 तिवारी के भाषण

1954	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद में "भोजपुरी भाषा और साहित्य" पर कई व्याख्यान
14 फरवरी, 1954	महाराणा प्रताप डिग्री कॉलेज, गोरखपुर मे लोकसाहित्य पर भाषण
15 फरवरी, 1956	मधुसूदन विद्यालय सुल्तानपुर मे
19 अप्रैल, 1956	(केशव जयन्ती रीवा मे सभापतित्व)
18 अगस्त, 1957	लोक साहित्य परिषद् के समक्ष "लोक साहित्य के अध्ययन की आवश्यकता" पर भाषण
6 जनवरी, 1959	शिकागो विश्वविद्यालय मे Modern Indian Literature सगोष्ठी मे भाग लेने का निमन्त्रण जिसके लिये 6-8 मार्च का एक लेख लिखते रहे।

23 मार्च 1959	Traditional values in modern Hindi Literature पर भाषण।
28 फरवरी, 1962	हिन्दी भवन कलकत्ता मे 'भाषा शास्त्र' पर भाषण
26 जनवरी, 1963	नागपुर मे 'हिन्दी मे शोध समस्या' पर भाषण
3 मार्च 1964	विद्वत्परिषद के समक्ष 'भारत की लिपि समस्या तथा उसमे नागरी लिपि का स्थान' पर डेढ घंटे का भाषण।
16 नवम्बर, 1965	भाषा परिषद सागर के समक्ष 'नवभाषा विज्ञान की' महत्ता पर भाषण।
24-26 फरवरी 1967	इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे यू0 जी0 सी0 लेक्चर।
1967	पटना मे संस्कृत साहित्य के अध्ययन की अनिवार्यता पर लेक्चर
29 जनवरी, 1968	मध्य प्रदेश भाषा परिषद् के तत्वावधान मे "भोजपुरी लोक गीतो मे कृष्ण का स्वरुप" पर भाषण देना था। 31 अगस्त, 1970 तक यह भाषण ठीक करते रहे। यह भाषण 24 अक्टूबर, 1975 को हुआ।
23 मार्च, 1968	गया मे प्रसार व्याख्यान
1-3 अप्रैल, 1970	बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् मे "भाषा सर्वेक्षण का महत्व" पर 3 भाषण
8 सितम्बर 1970	"उत्तम सत्य" पर भाषण
1972	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग मे यू0 जी0 सी0 लेक्चर्स के अन्तर्गत Hindi Linguism पर भाषण।
5 अगस्त, 1973	बिरला हिन्दी इस्टीट्यूट कलकत्ता मे तुलसी जयन्ती पर भाषण
5 जनवरी, 1978	बनारस मे भाषा विज्ञान कक्षाओं मे भाषण
11 मई, 1981	पटना विश्वविद्यालय हिन्दी मे भाषा विज्ञान के इतिहास पर रामदीन व्याख्यान माला
	कलकत्ता मे परिषद के समक्ष तीन भाषण देने थे। हिन्दी भाषा का उद्गम — हिन्दी की प्रादेशिक भाषाए पर।

डा0 तिवारी की रेडियो वार्ताएँ

20 1 54	हमारे पर्व (23 1 54 को ब्राडकास्ट हुआ)
9 2 54	भोजपुरी लोकगीतो मे प्रकृति चित्रण (पचायतघर मे)
11 3 54	क्या हिन्दी व्याकरण को सरल बनाना जरूरी है—(रिकार्डिंग तिथि 25 मार्च को हैदराबाद स्टेशन से प्रसारित)
15 9 54	मध्ययुग के हिन्दी साहित्य पर लोक साहित्य का प्रभाव
3 1 56	निर्गुण सम्प्रदाय को निम्न वर्ग की देन
27 1 56	बापू के सम्बन्ध में (30 1 56 को प्रसारित)
19 1 63	'वीरगाथा काल—प्रेरणा एवं पृष्ठ भूमि' की रिकार्डिंग
27 1 64	महाभारत का राजनीति पर प्रभाव (प्रसारण 16 फरवरी 1964 को)
21 9 68	विजय पर्व की परम्परा (प्रसारण 1 अक्टूबर विजया दशमी)

0 9.	कोरा कोरा पर पानी बदले बार कोरा पर बानी (10 10 77 को प्रसारण
9 6.1978	बालमुकुन्द गुप्त (16 6 78 को बम्बई से रिले)
1 9 1978	बाबू राम एव प्रो0 भटनागर के साथ सम्वाद चर्चा
20 6 1978	स्व गिरीश जी (23 6 78 को प्रसारित होना था)
5 5 1981	रेडियो टॉक (ईडन गार्डेन कलकत्ता मे रिकार्ड कराई)
4 8 1981	क्या भूलू क्या याद करूँ की रिकार्डिंग
15 5 1982	टइन जी पर टाक रिकार्ड हुई
10 9 1983	बाइरी, पहाड़ी, प्रेम शंकर गुप्त के साथ रेडियो वार्ता मे भाग लिया।

④

डॉ0 तिवारी का भाषाविज्ञान के प्रति अनुराग

यद्यपि हर विद्यार्थी व्याकरण का उपयोग करता है किन्तु भाषाशास्त्र या भाषाविज्ञान जैसे भारी भरकम शब्द से उसका परिचय स्नातक कक्षाओं मे जाकर होता है। 1925 मे कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद से इटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद तिवारी जी विश्वविद्यालय मे स्नातक कक्षा मे प्रविष्ट हुए, तभी उनके मन मे भोजपुरी के प्रति अनुराग जागा। उन्होंने अपनी पुस्तक 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' (1954) के प्रारम्भ मे दिये गये 'दो शब्द' के अन्तर्गत लिखा है "मैंने धारणा बना ली थी कि भोजपुरी हिन्दी की ही एक विभाषा है पढाई समाप्त करने के अनन्तर एक दिन भोजपुरी के सम्बन्ध मे ग्रियर्सन द्वारा फैलाये गये इस भ्रम को अवश्य ही निराधार सिद्ध करूँगा।" नवयुवक तिवारी के इस संकल्प मे ही उनके द्वारा भाषा विज्ञान को ही अपना विशेष अध्ययन-क्षेत्र बनाने का रहस्य छिपा है। किन्तु पूरे 28 वर्ष बाद जब वे भाषा विज्ञान मे निष्णात् हो चुके और विश्वभर मे भाषाविज्ञानी के रूप मे प्रसिद्ध हो गये, तो उन्होंने अपने उस उथले ज्ञान का निराकरण इन शब्दो मे किया , "भाषा विज्ञान के सिद्धान्तो को यत्किंचित सम्यक रूप मे समझ लेने के पश्चात् मुझे अपने पूर्वाग्रह पर खेद होता है जो बी ए के प्रथम वर्ष मे भाषा विज्ञान के गम्भीर परिशीलन के बिना ही मेरे हृदय मे स्थान पा गया था। आज मुझे ग्रियर्सन के परिश्रम, ज्ञान एव पक्षपातरहित विवेचना के गौरव का अनुभव होता है और इस विद्वान के प्रति हृदय श्रद्धा से परिपूर्ण हो जाता है।' स्पष्ट है कि बी. ए की कक्षा में डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा के लेक्चर में भोजपुरी विषय मे जो अभिमत सुना था और ग्रियर्सन के प्रति जो आक्रोश उत्पन्न हुआ था, बाद मे उसका उन्हें पश्चाताप हुआ। ठीक भी है। अधकचरे ज्ञान से ऐसे ही निष्कर्ष निकलते हैं। कहा भी गया है ' ज्ञान भया तब रोया।"

बी ए उत्तीर्ण कर लेने के बाद डॉ0 तिवारी का हिन्दी से सम्बन्ध छूट गया क्योकि उन्होने एम ए. मे अर्थशास्त्र विषय चुना। किन्तु उनके मन मे अपनी भाषा के प्रति जो टीस थी, वह दूर नही हुई थी। डॉ0 तिवारी लिखते है, "सन् 1929 मे एम ए कर लेने के पश्चात् मेरी रुचि पुन भोजपुरी के अध्ययन की ओर जाग्रत हुई और पूर्वकृत संकल्प का पुन स्मरण हो आया।"

तिवारी जी एम ए उत्तीर्ण कर लेने के पश्चात् 22 जुलाई, 1929 को दारागंज हाई स्कूल मे गणित और इतिहास पढाने लगे। किन्तु हिन्दी के प्रति उनका लगाव समाप्त नही हुआ। वे लिखते है—

"अपने ढग से मै भोजपुरी के अध्ययन की ओर लगा रहा। इसी बीच 1930 मे प्राच्य विद्या सम्मेलन (आल इण्डिया आरियेन्टल कान्फरेन्स) के अधिवेशन मे भाग लेने पटना गया। वहाँ मुझे देश के सम्मान्य विद्वानो के दर्शन का अपूर्व अवसर मिला।"

यही पर तिवारी जी को डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के दर्शन और सान्निध्य का प्रथम अवसर प्राप्त हुआ। डॉ0 तिवारी लिखते है—

"मुझे यह ज्ञात था कि डॉ0 चाटुर्ज्या ने ग्रियर्सन के भाषा सम्बन्धी कतिपय सिद्धान्तों का खण्डन किया है। भोजपुरी के सम्बन्ध मे जब मैंने अपने हृदय की बात डॉ0 चाटुर्ज्या से निवेदित की तो उन्होने मुझे भाषा विज्ञान के विधिवत अध्ययन के लिए अत्यधिक उत्साहित किया डॉ0

बाबूराम सक्सेना एवं प0 क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय जी से मिलकर अध्ययन की दिशा निश्चित करने का सुझाव दिया।

डॉ0 तिवारी पटना से वापस लौट कर डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा से मिले और उनके साथ डॉ0 सक्सेना से मिलने गये। उन्होंने उनसे भाषा शास्त्र के अध्ययन के सम्बन्ध मे पथ-प्रदर्शन की प्रार्थना की सौभाग्यवश डॉ0 सक्सेना ने स्वीकृति दे दी। तिवारी जी ने दारागंज हाई स्कूल मे अध्यापन कार्य मे लगे रहकर सर्वप्रथम 1932 मे आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी मे एम ए (प्राइवेट) की डिग्री प्राप्त की और फिर हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साहित्यरत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की। साथ ही भाषा विज्ञान का अध्ययन जारी रहा। इनका पहला लेख "भोजपुरी बोली पर एक दृष्टि" 1933 मे 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' मे छपा।

डॉ0 तिवारी ने लिखा है—"श्रद्धेय डॉ0 सक्सेना के निरीक्षण में एक वर्ष तक कार्य करने के बाद मैंने उनके "लखीमपुरी' के अध्ययन के आदर्श पर A dialect of Bhojpuri शीर्षक अपना निबन्ध प्रस्तुत किया। स्व0 डॉ0 काशी प्रसाद जायसवाल की सहायता से मेरा यह निबन्ध 1934 35 मे बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी के जर्नल मे प्रकाशित हुआ।"

'अभिनव भाषा विज्ञान" (1982-83) मे दो शब्द के अन्तर्गत तिवारी जी लिखते है—

"सन् 1932-34 मे मेरे पास भाषाविज्ञान के सम्बन्ध मे प्रभूत सामग्री एकत्र हो गई थी। मैने इसे डॉ0 सक्सेना को दिखाया तो उन्होंने मुझे उत्साहित करते हुए कहा—अच्छा तो है, इसके आधार पर हिन्दी मे एक पुस्तक लिख डालो। किन्तु मै पुस्तक लिखने का साहस न बटोर सका क्योकि जिस विषय को मै स्वय भली-भाँति समझ न पाया था, उस पर पुस्तक लिखना मुझे उचित न जँचा। मनुष्य को सबसे अधिक अपने प्रति सच्चा होना चाहिए।"

तीस वर्ष की अवस्था मे, केवल एक वर्ष भाषा शास्त्र का अध्ययन करके तिवारी जी ने जो पहला शोधपत्र लिखा, उससे उनकी ख्याति के द्वार खुल गये। इस शोधपत्र की सराहना डॉ0 ग्रियर्सन डॉ0 ज्यूल ब्लाख, डॉ0 टर्नर तथा डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने की।[1] इससे डॉ0 तिवारी को अत्यधिक बल प्राप्त हुआ और उन्होंने भाषा शास्त्र को अपने अध्ययन का प्रिय विषय बना लिया।

वस्तुत 1934-35 के बाद का उनका सारा जीवन—लगभग 50 वर्ष का काल खण्ड—भाषा विज्ञान के लिए ही समर्पित रहा।

1934 से 1937 की अवधि मे तिवारी जी ने भोजपुरी के विभिन्न क्षेत्रो की यात्रा की और इसकी विभाषाओ का प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त किया। जैसा कि विदित है कि भाषा विज्ञान के अध्ययन के लिए भाषा सर्वेक्षण अति महत्वपूर्ण कार्य है। इससे अध्ययन में विज्ञान-सम्मतता आती है। डा0 तिवारी ने लिखा है कि 'इन सब यत्नो तथा यात्राओ मे उन्हे डॉ0 सक्सेना का सत्परामर्श एव उनकी प्रेरणा सदैव प्राप्त होती रही।[1]

इस बीच वे भोजपुरी का व्याकरण तैयार करने मे लगे रहे और "बिहारी भाषाओ की उत्पत्ति एव विकास" नामक निबन्ध प्रस्तुत किया। यही विषय इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी0 लिट् डिग्री के लिए स्वीकृत भी हो गया किन्तु डॉ0 सक्सेना के परामर्श से उन्होने अपना अध्ययन भोजपुरी भाषा तक ही सीमित रखा। इस तरह डॉ0 सक्सेना ही तिवारी जी के मार्गदर्शक एव गुरु बने। तिवारी जी का राहुल जी से सम्पर्क होने से भी काफी लाभ पहुचा।

1 1936 (31.3 1936) के एक पत्र मे डॉ0 ग्रियर्सन ने डॉ0 तिवारी की प्रशंसा की। इसके पूर्व 29 3 36 को आर एल टर्नर ने तिवारी जी के भोजपुरी अध्ययन की चर्चा की।

महापंडित राहुल से सम्पर्क

जब डॉ0 तिवारी भाषा शास्त्र के अध्ययन मे तत्पर थे तभी उनका सम्पर्क महापंडित राहुल सांकृत्यायन से हुआ। राहुल जी का सम्बन्ध डॉ0 तिवारी की जन्मभूमि के निकट के कनैला ग्राम से था शायद व राहुल जी के नाम से पहले से परिचित रहे हो किन्तु इसकी पुष्टि के लिए कोई सबूत नहीं मिलते। लेकिन 1934 के पूर्व उनसे परिचय हो चुका था। (16 3 1934 का पत्र देखे)

स्वयं तिवारी जी ने लिखा है "महापंडित राहुल तिब्बत से दुर्लभ पुस्तकों का भण्डार लेकर लौटे थे और मेरे साथ रहकर मज्झिम निकाय, दीर्घ निकाय तथा पाली के अन्य ग्रन्थो का अनुवाद करने मे लग गये।

इस सम्बन्ध मे महापंडित राहुल द्वारा 1934 के मार्च मास से आगे के वर्षों तक तिवारी जी को लिखे गये पत्र बहुत उपयोगी है। यही नहीं, डॉ0 तिवारी के द्वारा 1942-43 मे राहुल जी को लिखे गये कुछ पत्र भी सूचनाप्रद हैं। (ये पत्र सौभाग्य से उपलब्ध है)।

राहुल जी ने आनन्द जी को जो पत्र लिखे है उनसे स्पष्ट होता है कि राहुल जी 1935 के प्रारम्भिक तीन मास इलाहाबाद मे बिताये। तो क्या डॉ0 तिवारी से इसी अवधि में उनसे सम्पर्क हुआ? किन्तु राहुल जी का पहला पत्र 16 3 34 का लिखा हुआ है।

राहुल जी के पत्रो से विदित होता है कि 1936-39 के बीच डॉ0 तिवारी राहुल जी की पुस्तको के प्रूफ देखने और प्रिंट आर्डर करने मे सहयोग देते रहे।

राहुल जी के सम्पर्क मे आने से तिवारी जी को यह लाभ हुआ कि व पाली से भी परिचित हो गये। स्वयं डॉ0 तिवारी लिखते हैं — "आगे चलकर मैं पाली के विधिवत् अध्ययन मे प्रवृत्त हुआ। इस प्रसग में मुझे हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एव प्रख्यात बौद्धभिक्षु भदन्त आनन्द कौसल्यायन और भिक्षु जगदीश काश्यप से भी बडी सहायता मिली"। फल यह हुआ कि डॉ0 तिवारी ने 1939 मे कलकत्ता विश्वविद्यालय से पाली विषय मे एम ए परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।

महापंडित राहुल 1937 से लेकर 1943 तक लगातार अपने पत्रो मे डॉ0 तिवारी से पाली, भाषाविज्ञान और थीसिस के बारे मे पूछते रहे और सुझाव भी देते रहे।

उनको यहाँ पर उद्धृत करना प्रासंगिक होगा—

16 3 34	दोहा कोश के लिए मगही व्याकरण तैयार करना है
16 9.34	बौद्धगान का वैज्ञानिक अनुशीलन आवश्यक है
8 11 37	पाली एम ए की तैयारी कर रहे हो क्या?
21 7 38	बहुत अच्छा है, आप पाली एम ए. की तैयारी करते है। उसके बाद साल भर पैरिस रहने का निश्चय कर ले। डाक्टर होकर आवे। दृढ़ सकल्प होने पर 1500/- रुपये का कहीं न कहीं से प्रबन्ध हो जावेगा।
7 6 1939	प्रसन्नता हुई कि आप पाली परीक्षा के लिए पूरी तैयारी कर रहे है। थीसिस की योजना भी ठीक है। एक बार लगकर उसे कर डालना ही अच्छा होगा।

उन्होने कलकत्ते मे ही रहकर भाषाशास्त्र का अध्ययन करने और डी0 लिट की थीसिस लिखने के लिए प्रेरित किया।

अभिनव भाषा विज्ञान में दो शब्द' के अन्तर्गत देखें–

"सन् 1940 मे अपन भाषा विज्ञान को परिष्कृत करने के लिए मैं कलकत्त चला गया तथा वहा भाषा विज्ञान विभाग मे एम ए का नियमित छात्र बन गया। वहा के दो प्राध्यापक—डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी एव डॉ0 सुकुमार सेन मेरे पथ-प्रदर्शक बने।

"कलकत्ते मे भाषा के अध्ययन-अध्यापन की सुन्दर व्यवस्था थी। यहाँ भारोपीय के साथ साथ ग्रीक, अवेस्ता, पुरानी फारसी, वैदिक सस्कृत, पालि-प्राकृत का अध्यापन सुचारु रूप से सम्पन्न होता था। वहाँ के एक प्राध्यापक जो सस्कृत व्याकरण के महापडित थे, प्राय कहा करते— जिसने मात्र सस्कृत व्याकरण पढा है, उसे वास्तविक रस उपलब्ध नही हुआ, सस्कृत व्याकरण का रसानन्द तो तब प्राप्त होता है, जब ग्रीक व्याकरण के साथ उसका तुलनात्मक अध्ययन किया जाय।'

"ग्रीक के अध्यापन मे डॉ0 चटर्जी अप्रतिम थे। वे होमरकृत इलियड के अतिरिक्त विविध ग्रीक बोलियों (Dialects) एव शिलालेखी ग्रीक के भी शीर्षस्थ विद्वान थे। उन्होने ग्रीक भाषा एव व्याकरण का अध्ययन प्रो0 मनमोहन घोष (श्री अरविन्द घोष के ज्येष्ठ भ्राता) के तत्वावधान मे किया था।"

भाषाविज्ञान में डिग्री

पाली मे एम ए करने के बाद डॉ0 तिवारी ने भाषा विज्ञान मे एम ए. डिग्री प्राप्त करने का मन बनाया। डॉ0 तिवारी लिखते हैं" 1939 मे पाली की एम ए परीक्षा देने गया। यहाँ डॉ0 चाटुर्ज्या के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

' जुलाई सन् 1940 मे पुन कलकत्ता जाकर मैंने डॉ0 चाटुर्ज्या और सुकुमार सेन के तत्वावधान मे तुलनात्मक भाषा शास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ किया और 1941 में डिग्री मिल गई।" डॉ0 तिवारी लिखते हैं कि 'कलकत्ता में भाषा शास्त्र का अध्ययन करने की सर्वाधिक प्रेरणा मुझ श्रद्धेय पं0 क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय से प्राप्त हुई। उन्ही के वेद क कुछ अश, अवेस्ता के तीन प्रश्न तथा दारयवउस के प्राचीन फारसी के शिलालेख पढ़कर मैं कलकत्ता गया था।"

प0 श्रीनारायण चतुर्वेदी के कहने से इण्डियन प्रेस के स्वामी केशव घोष (पटल बाबू) ने कलकत्ते में तिवारी जी के रहने की व्यवस्था करा दी थी। तिवारी जी ने अवश्य ही दारागज हाई स्कूल से छुट्टी ली होगी और तब अपने परिवार का प्रबन्ध करके कलकत्ते चले गये। इस बीच महापडित राहुल साकृत्यायन ने 14 8 40 के पत्र मे लिखा—

"5/8 का पत्र मिला। आप कलकत्ते चले गये और पढाई मे भी लग गये। यह पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। आपको अपना सारा समय और मनोयोग देकर थेसिस लिख डालनी है। लेक्चर म जाने का मैं विरोध नही करता किन्तु ऐसा नहीं कि थेसिस के काम मे दीर्घसूत्रता हो। राहुल जी तिवारी जी को 1942 तक लगातार प्रेरित करते रहे—

3 1 1941 — अपनी पढाई के बारे मे लिखना। थेसिस लिखनी कब शुरु करोगे? 1941 मे तुम्हें उसे खत्म कर देना है।

29 1 41 — तुम्हारी पढाई चल रही है, यह प्रसन्नता की बात है। दिसम्बर तक थीसिस का काम जरूर समाप्त हो जाना चाहिए। श्रेयांसि बहुविघ्नानि का ख्याल करके मैंने वैसा लिखा था। पुरानी इंडो यूरोपियन भाषाओ का ज्ञान

जरूरी है, यह मै समझता हूँ। और उसके लिये व्यय किया समय बर्बाद नही हुआ यह मैं मानता हूँ।

| 41 — 19 6 का पत्र मिला। भाषा विज्ञान का एम. ए देना कुछ तो 'ओटन लगे कपास" वाली सी बात है। तो भी तुम्हारी कुछ हद तक मजबूरी तथा परिश्रम बिल्कुल निष्फल भी नही एव "गत न शोचामि" का ख्याल करके मै उसे बुरा नहीं कह सकता — थीसिस को मन लगाकर लिखना।

18 9 41 — परीक्षा सन्तोषजनक दी, यह मेरे लिए भी सन्तोष की बात है। साथ ही मै समझता हूँ कि भाषा तत्व पर जो परिश्रम वहाँ किया होगा उसका फायदा थसिस मे होगा।

तुम्हार पश्नों का उत्तर इस प्रकार है—

मल्ल काशी जनपद

किसी एक स्थान की भाजपुरी को लेना चाहिए।

'साहित्य निबन्धावली' को भी छपने का इन्तिजाम कर देना किन्तु यदि उसकी वजह से तुम्हारी थेसिस के काम मे दिक्कत हो तो वैसा न करना।

इससे निश्चित होता है कि तिवारी जी जून 1941 मे एम ए भाषा विज्ञान की परीक्षा दे चुके थ।

25 9 41 — अच्छा है तुम थेसिस समाप्त करो।

9 12 41 — थीसिस का काम जरूर समाप्त कर डालो। ऐसा न हो कि मार्च से भी आगे काम बढ़े। बाहरी परिस्थिति देखते भी अच्छा है कि तुम मार्च तक अपनी थीसिस को यूनिवर्सिटी के सिपुर्द कर दो।

23 1 42 — थीसिस का काम अधूरा न छोड़े।

3 4 42 — थसिस की दो कापियाँ हाथ स करवा ला फिर आजकल के जमाने मे रुपयो को वैसे काम पर खर्च करना सिर्फ फेकना होगा। (राहुल जी मार्च, 1942 तक थीसिस पूरी हुई चाहते थे।)

1941 म तिवारी जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय की एम ए की परीक्षा तुलनात्मक भाषा शास्त्र मे उत्तीर्ण की।

28 मार्च, 1942 को कलकत्ता मे भाषा विज्ञान के सहपाठियो न तिवारी जी को विदाई दी थी और मानपत्र पढा था। इससे लगता है कि तिवारी जी मार्च मे इलाहाबाद लौट आय थे। 1939-42 के बीच 'हिन्दुस्तानी' पत्रिका म भोजपुरी लोकोक्तियो, मुहावरो पर लगातार लिखते रहे।

10 6 42 — थीसिस का क्या हुआ? भूमिका (Introduction) समाप्त हुआ या नहीं? उस डाक से ही तो कलकत्ता नही भेज रहे हो?

किन्तु महापडित राहुल ने 14 6 43 को तिवारी जी को जो पत्र लिखा, उस पर माहेश्वरी विद्यालय कलकत्ते का पता था। अवश्य ही तिवारी जी 1943 की गर्मियो मे कलकत्ता गये होग।

डी0 लिट् की थीसिस

राहुल जी 1941 के प्रारम्भ से ही जिस थीसिस की बात कर रहे थे उसकी शुरुआत 1943 मे हुई। तिवारी जी ने लिखा है कि 1942-43 मे मै कलकत्ते से प्रयाग आ गया।

तो यह है पृष्ठभूमि डॉ0 तिवारी के डी0 लिट् शोध प्रबन्ध की। इसमे डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा डा0 बाबूराम सक्सेना, डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के अतिरिक्त महापंडित राहुल की प्रेरणा, प्रोत्साहन एव आश्वासन प्रमुख रहे।

देश मे द्वितीय विश्वयुद्ध के मेघ छाने लगे थे किन्तु डॉ0 तिवारी अपने संकल्प की दिशा मे लगातार गतिमान रहे। वे इलाहाबाद से दूर कलकत्ते में प्रवासी बनकर रहे– अपने परिवार से दूर।

विद्यार्जन के लिए नाना प्रकार के कष्टो को सहते हुए, अवरोधो को लॉंघते हुए वे अग्रसर होते रहे।

भाषाविज्ञान की डिग्री के बाद : दो वर्ष और

महापंडित राहुल के पत्र से विदित होता है कि जून, 1943 मे तिवारी जी कलकत्ते मे थे। आखिर क्यो?

तिवारी जी ने लिखा है, वही (कलकत्ता मे) रहकर सन् 1943 तक अपनी थीसिस "भोजपुरी भाषा की उत्पत्ति और विकास" लिखने मे लगा रहा। सन 1944 म कलकत्ते से लौट कर मैने अपनी थीसिस प्रयाग विश्वविद्यालय मे प्रस्तुत कर दी जिस पर मुझे डी0 लिट् की उपाधि प्राप्त हुई। दिसम्बर 1946 मे विश्वविद्यालय से डी0 लिट् की उपाधि मिल गई।

इस प्रकार 1930 से प्रारम्भ हुआ भोजपुरी भाषा का अध्ययन का काय सत्र 1945 मे समाप्त हुआ।

15 वर्ष की कठिन तपस्या!! इसी थीसिस को पूरा करने के लिए राहुल जी लगातार कोंचते रहे। अवश्य ही सकल्पपूर्ति पर डॉ0 तिवारी को अपार हर्ष हुआ होगा।

अन्त मे यह थीसिस अपने मूलरूप में (अंग्रेजी मे) Origin and Development of Bhojpuri 1946 मे एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल से छपी। 1984 मे इसका दूसरा संस्करण हुआ।

हिन्दी म यही पुस्तक कुछ सशोधन के साथ 1954 मे बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् से "भोजपुरी भाषा और साहित्य" नाम से प्रकाशित हुई। इसका हिन्दी संस्करण स्वय तिवारी जी ने तैयार किया

इसके प्रकाशन के पीछे एक कहानी है जो इस प्रकार है—

डॉ0 तिवारी को बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् ने भोजपुरी की उत्पत्ति पर कुछ व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित किया। तभी तिवारी जी ने निबन्ध के रूप मे इस पुस्तक को तैयार किया। इसके कुछ अंश व्याख्यान के रूप मे पढे गये। डॉ0 तिवारी ने हिन्दी सस्करण की भूमिका मे उन व्यक्तियो को धन्यवाद दिया है जो इन व्याख्यानो के समय सभापति के रूप मे उपस्थित थे—ये है— शिक्षा मन्त्री आचार्य बदरीनाथ जी वर्मा, पटना विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति बाबू शार्ड़धर सिह बिहार के शिक्षा सचिव श्री जगदीश चन्द्र माथुर, डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद, श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी।

1954 मे प्रकाशित "भोजपुरी भाषा और साहित्य" डॉ0 तिवारी की डी0 लिट् की अग्रेजी थीसिस का अविकल अनुवाद नही है। इसमे भोजपुरी सम्बन्धी अनेक नवीनतम गवेषणाओ का समावेश

किया गया है। इसमें डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या तथा डॉ0 सुकुमार सेन के लेखों, भाषणो तथा ग्रन्थो का पर्याप्त उपयोग हुआ है।

डी0 लिट् की उपाधि 1946 मे मिली किन्तु उसके पूर्व ही डॉ0 तिवारी इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे नियुक्त हो गये।

स्फुट विचार

(अ) भाषा विज्ञान के विषय में चिन्ताएँ

15 जनवरी, 1954	डॉ0 चटर्जी से पता चला कि 11-12 जनवरी की बैठक मे प्रस्तावित कार्यक्रम की रूपरेखा राकफेलर के पास भेज दी गई। यदि वहा से पैसे आ जायें तो भारत की भाषाओं का सर्वेक्षण सम्बन्धी कार्य पारम्भ हो जायेगा।
23 मार्च, 1954	डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा ने जेकोस्लोवेकिया से प्रकाशित जर्नल दिया जिसमे हिन्दी Syntax पर एक अत्यन्त सुन्दर लेख था। वास्तव मे यह कार्य तो हमारे छात्रो को करना चाहिए था किन्तु यहाँ के छात्र तो तुरन्त डाक्टर की डिग्री चाहते है। काम करना नहीं चाहते। अनुसन्धान का ढग भी वे सम्यक रूप से नहीं सीखना चाहते।
8 अक्टूबर, 1954	डिरिंगर की पुस्तक Alphabet का हिन्दी मे अनुवाद हो जाता तो अच्छा था। इससे सामग्री लेकर हिन्दी मे एक पुस्तक लिखने का विचार कर रहा हूँ। हिन्दी वालो को ससार की विविध लिपियो के सम्बन्ध मे ज्ञान होना आवश्यक है।
30 दिसम्बर, 1954	डॉ0 सक्सेना का मत है कि बोलियो म साहित्य रचना करके हिन्दी के साथ प्रतिद्वन्द्विता नही उत्पन्न करनी चाहिए। डॉ0 बाहरी ने स्व0 ग्रियर्सन को भला-बुरा कहा। दश को विभाजित करने के लिए ही उन्होने लिंग्विस्टिक सर्वे म अनक बोलिया को स्वीकार किया। मैंने कहा—हिन्दी द्रुत गति से बढ रही है। उसका क्षेत्र विशाल है। विभिन्न बोलियों से उसका सघर्ष नहीं है। वे हिन्दी की पूरक हैं। जार्ज ग्रियर्सन का उद्देश्य भारतीय भाषाओं एव बोलियो का वर्गीकरण एव विश्लेषण था। वे अद्भुत व्यक्ति थे। उन्हे बुरा-भला कहकर हम आगे नहीं बढ सकेंगे। हमे कार्य करना चाहिए।
5 जनवरी, 1955	आज एक बात पढाते समय नवीन सूझी थी। प्रश्न यह था कि अन्य नव्य भारतीय भाषाओं — बगला, गुजराती, मराठी, असमिया तथा उडिया आदि मे श्रृगारिकता की इतनी बाढ क्यो नही आई जितनी कि हिन्दी साहित्य मे? इसका उत्तर यह था कि सस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य की श्रृगारिकता रिक्थ रूप मे हिन्दी को ही इस कारण मिली कि

	हिन्दी का उदय मध्य देश में हुआ था। चूंकि अन्य नव्य भाषाएं मध्यदेश से दूर पल्लवित हुई थी अतएव उन पर संस्कृत की श्रृंगारिकता का उतना प्रभाव नही पड़ा।
24 जनवरी, 1955	टहलते समय उर्दू तथा हिन्दी का अन्तर स्पष्ट हुआ। हिन्दी तथा उर्दू दोनो शिष्टवर्ग की भाषाएँ हैं किन्तु उर्दू वस्तुत शिष्ट सामन्ती वर्ग की भाषा है। उसका प्रचार और प्रसार इसी वर्ग मे हुआ और इसी वर्ग मे यह उत्पन्न भी हुई। यह सदैव बादशाहों और नवाबो की लाडली रही। हिन्दी को यह सौभाग्य प्राप्त न हो सका। आज जब सामन्त वर्ग का अन्त हो गया तब उर्दू का प्रचार कठिन है।
14-18 मई, 1955	चाहे पूरब हो चाहे पश्चिम, साहित्य का विषय मानव सुख दुख तथा संयोग-वियोग की अभिव्यक्ति ही है। वास्तव मे व्यक्तिवाद और सामाजिकता मे भी विरोध नहीं है क्योंकि साधारणीकरण के कारण दोनो का एकीकरण हो जाता है। सच बात तो यह है कि आधुनिक वादों का आधार विविध दार्शनिक विचारधाराएँ है और उनके आधार पर ही कविताएँ लिखी जाती है।
7 जनवरी, 1956	कभी-कभी अनुभव करता हूँ कि भारत के शिक्षित व्यक्तियो को जितनी भाषाएं जाननी चाहिए, वे नही जानते। हमारे विश्वविद्यालयो मे भाषा सीखने का प्रबन्ध ही नही। यही कारण है कि एक प्रदेश का व्यक्ति दूसरे प्रदेश की समस्याओ को भलीभाँति नही समझ पाता। यह अत्यावश्यक है कि विश्वविद्यालय मे Language Faculty स्थापित की जाय और उसमे देश की विविध भाषाएँ पढ़ाई जायँ।
19 फरवरी, 1956	डॉ0 बाहरी प्रूफ देखने मे अत्यधिक दक्ष है। इन्होने कोषो का अच्छा संग्रह किया है। इसके अतिरिक्त लाहौर मे रहते समय इन्होंने भाषा विज्ञान का जो अध्ययन किया और जो नोट लिये थे, उन्हे भी देखा। बड़ा अद्भुत कार्य है। किन्तु आज इस कार्य का क्या महत्व है? हम लोग भाषा विज्ञान तो पढ़ाते नही। फिर इस ज्ञान का उपयोग ही क्या?
23 मार्च, 1956	बी0 ए0 तथा एम0 ए0 मे भाषा विज्ञान विषयक प्रस्ताव स्वीकृत।
16 मई, 1956	प्रयाग म रहकर भाषा विज्ञान का गम्भीर अध्ययन करना तथा हिन्दी को समृद्ध बनाने के लिए इस विषय पर श्रेष्ठ पुस्तके लिखना यही एकमात्र उद्देश्य है। यदि कोई पद अपने आप आता है और वह मन के अनुकूल है तो उसे अस्वीकार भी नही करना।
23 मई 1956	Stutevart की भाषा विज्ञान की पुस्तक देखने से मालूम हुआ

कि Dialectical Geography पर यूरोप के विभिन्न देशो म कितना श्रेष्ठ कार्य हुआ है। मन मे बडी देर तक सोचता रहा—अपने देश मे आखिर ऐसा काम कब होगा?

25 मई, 1956 — डॉ0 सुकुमार सेन के घर गया। बडी देर तक उनसे भाषा शास्त्र के सम्बन्ध म बाते होती रही।

27 मई, 1956 — आज हिन्दी मे Philology और Linguistics के अन्तर के सम्बन्ध मे लिखता रहा।

16 फरवरी, 1959 — इस समय अमरीका के भाषाशास्त्री तथा इजीनियर इस बात के लिए प्रयत्नशील है कि किस प्रकार मशीन द्वारा भाषाशास्त्रीय विश्लेषण (Linguistic analysis) की जाय। यदि इस कार्य मे इन्हें सफलता मिल गई तो लैटिन और सस्कृत के शब्द रूप तथा धातु रूप सभी मशीन द्वारा आ जावेगे और उन्हे याद करने की जरूरत नही रहेगी।

25 मार्च, 1959 — नईम के साथ वाशिगटन मे Foreign Language Institute देखने गया। यहाँ दूतो को लगभग 100 भाषाओ के अध्ययन-अध्यापन का अच्छा प्रबन्ध है।

16 अप्रैल, 1959 — भाषाओ के वर्गीकरण मे क्या अर्थतत्व को ध्यान म रखा जा सकता है? यह विचारणीय है।

6 मई 1959 — जैकोब्सन ने बताया कि पतजलि ने किस प्रकार वर्ण स्फोट के अन्तर्गत सर्वप्रथम फोनीम को प्राप्त किया था, इसके बाद किस प्रकार आज तक इसका विकास हुआ।

11 मई 1959 — रोमन जैकोब्सन ने ध्वनि के सम्बन्ध में बताया कि वह नाभि से उठती है और इसे किस ध्वनि शास्त्री ने Xray लेकर दिखाया है।

23 जून, 1959 — Linguistic topology प्रो0 मार्टिन पढाते है। यहाँ के इन प्रोफेसरो ने भाषा शास्त्र का कितना मथन किया है, यह देखकर आश्चर्य होता है ... सचमुच पश्चिम के विद्वानो ने काफी साधना और तपस्या की है। इसी रूप मे ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश के लिए हमारे ऋषिया ने भी साधना और तपस्या की होगी।

6 दिसम्बर, 1974 — आज के कई वर्ष पूर्व जब डॉ0 चटर्जी कृत 'भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी' का अंग्रेजी स हिन्दी अनुवाद हुआ था तो इसे पढा था। अब ध्यानपूर्वक पढने से और ही रस आ रहा है। भगवान डॉ0 चटर्जी को शतायु करें।

29 जनवरी, 1978 — श्री किशोरी दास बाजपेयी कृत 'हिन्दी शब्दानुशासन' तृतीय सस्करण पढा। इसमे बागरू, ब्रज, अवधी को भाषाए कहा गया है। इससे बल मिला। बाजपेयी जी के प्रति श्रद्धा का

भाव उमड़ आया क्योंकि मैं भी यही कहता रहा हूं।

17 सितम्बर, 1978 — डॉ0 ग्रियर्सन सचमुच ऋषिकल्प थे। यदि वे भाषा सर्वेक्षण का कार्य न किये होते तो अन्य लोगों से यह काम किमपि न होता। वे कितने विचक्षण बुद्धि के थे। भाषाओं के व्याकरण को समझने की उनकी अदभुत क्षमता थी। जिस तटस्थता से उन्होंने उत्तरी भारत की बोलियों का वर्गीकरण किया है वह अद्भुत है।

(आ) पारिभाषिक शब्दावली

23 अक्टूबर, 1954 — प्रेस क्लब के तत्वावधान में निरंजन लाल भार्गव के गोविन्द भवन में हिन्दी पारिभाषिक शब्दों के विषय में विचार हुआ। बाबू जी ने विषय प्रवर्तन किया। इसके बाद पन्नालाल, फिजिक्स के अध्यक्ष डॉ0 बनर्जी, डॉ0 घोष, डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा आदि ने विचार प्रकट किये। मैंने कहा — अन्तर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली वस्तुतः छल है। इसके विषय में पूना की भाषा परिषद का निर्णय मान्य होना चाहिए कि पारिभाषिक शब्द यथासम्भव संस्कृत से ही बनाये जायँ।

11 जनवरी, 1955 — साढ़े चार बजे अपरान्ह विज्ञान परिषद के समारोह में भाग लेने म्योर कॉलेज गया। सभापति का आसन प0 अमरनाथ झा ने ग्रहण किया। परिषद् के सभापति श्री हीरा लाल खन्ना के उद्योग से इसके भवन निर्माण के लिए लगभग 50 हजार रुपये एकत्र हो गये है। खन्ना जी की इच्छा है कि जब एक लाख रुपये हो जायें तो इसका शिलान्यास कराया जाय। प0 अमर नाथ झा ने वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते हुए कहा आप लोगों का अनुसन्धान विश्व कल्याण के लिए होना चाहिए। पारिभाषिक शब्दों के सम्बन्ध में बाबू पुरुषोत्तम दास जी टण्डन ने केन्द्रीय शासन की इस नीति का खंडन किया कि International Terms अपना लिये जायें। उन्होंने कहा —इस प्रकार के कोई शब्द नहीं है और प्रत्येक देश में अपनी सुविधा और संस्कृति के अनुसार पारिभाषिक शब्द है। हमारे भी अपने शब्द होने चाहिए।

3 फरवरी, 1955 — बाबू जी के घर में बैठक थी। इसमें पारिभाषिक शब्द बनाने के सिद्धान्त पर चर्चा होनी थी। डॉ0 सत्य प्रकाश तथा डॉ0 सन्त प्रसाद टण्डन आये थे। कुछ देर तक चर्चा के बाद 18 या 19 फरवरी को पुनः बैठक बुलाने का निश्चय किया गया।

18 फरवरी, 1955 — बाबू राम सक्सेना के साथ म्योर कॉलेज केमिस्ट्री विभाग गया। वहाँ बाबू जी आये थे। प्रश्न यह था कि केमिस्ट्री के पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद हिन्दी में किस सिद्धान्त के

आधार पर होना चाहिए। बाबू जी का मत है कि राष्ट्रीय मर्यादा के अनुसार पारिभाषिक शब्द हिन्दी म होने चाहिए। हाँ, जहाँ शब्दो के बनाने म कठिनाई हो वहाँ अन्य भाषाओं के भी शब्द रखे जा सकते हैं।

1956 — डॉ0 माता प्रसाद गुप्त बम्बई से आये। भाषा कमीशन के सम्बन्ध मे बातचीत करते हुए पता चला कि कदाचित् अंक अंग्रेजी ही स्वीकार होगे। यह कितनी दुखद बात होगी, इसकी कल्पना भी कठिन है। भारतीय अक सातवी शताब्दि मे अरब पहुँचे और वहाँ स 12 वी शताब्दी मे यूरप और अब हम अपना रहे है यूरप गये अको को।

5

पत्र साहित्य

डॉ0 तिवारी ने अपने गुरुजनो, मित्रों, सम्बन्धियो, शिष्यों[1] आदि को न जाने कितने पत्र लिखे होगे किन्तु वे सब हमें प्राप्त नही हो सके। उनके द्वारा लिखित जो पत्र उपलब्ध है, उनमे महापंडित राहुल साकृत्यायन को लिखे गये 8 पत्र तथा मेरे और मेरी पत्नी के नाम 97 पत्र है। राहुल जी को लिखे गये पत्रो के (1942-43) उपयोगी अश उद्धृत किये जा चुके है।

किन्तु डॉ0 तिवारी के सग्रह मे उनके पास आये जिन अन्य 46 साहित्यकारो के पत्र मिले है, उनकी कुल सख्या 176 है। इनमे राहुल जी के द्वारा लिखे पत्रो की सख्या 86 है।

डॉ0 तिवारी के पास जिनके पत्र आये उनके नाम, तथा तिथियाँ तथा पत्रो की सख्या (सारणी के रूप मे) दी जा रही हैं।

इन पत्रो मे से हम जिन व्यक्तियो के पत्रो के उपयोगी अशो को प्रस्तुत कर रहे है उनके नाम है—(कोष्ठक मे पत्रो की संख्या दी गई है)

श्रीमती कमला साकृत्यायन (2), डॉ0 विद्यानिवास मिश्र (8), डॉ0 महादेव साहा (13), रामधारी सिंह दिनकर (2), डॉ0 कत्रे (1), भदन्त आनन्द कौसल्यायन (2), रामनरेश त्रिपाठी (1), श्रीनारायण चतुर्वेदी (2), डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया (1), डॉ0 हेमचन्द्र जोशी (1), डॉ0 वि0 ए0 चर्निशव (1), डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या (2), डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय (1), डॉ0 कुबेर नाथ राय (1), श्री व्यथित हृदय (1)।

डॉ0 तिवारी जी के नाम जिन साहित्यकारों के पत्र उपलब्ध है, उनके नाम, तिथि तथा पत्रो की सख्या दी जा रही है—

1	डॉ0 सुनीति कुमार चाटुर्ज्या 1948 1963	2
2	भगवत शरण उपाध्याय	1
3	परशुराम चतुर्वेदी	3
4	वृन्दावन लाल वर्मा 1958, 1966	2
5	श्री व्यथित हृदय 1966	4
6	हेमचन्द्र जोशी	2
7.	हजारी प्रसाद द्विवेदी 1965, 1967, 1968	3
8	विनय मोहन शर्मा 1968, 1970	5
9	श्री पहाडी जी	2
10	रामधारी सिंह दिनकर 1964, 1968	2

1 डॉ0 श्रीधर मिश्र ने कृपा करके उन सात पत्रो की प्रतिलिपि मुझे उपलब्ध कराई है जो 1974 से 1984 के मध्य डॉ0 तिवारी ने उन्हे लिखे थे। इसके लिए मै कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इन्हे परिशिष्ट के रूप मे दिया जा रहा है। डॉ0 तिवारी के अन्य शिष्यों से मुझे ऐसे पत्र प्राप्त नहीं हो पाये।

पत्र साहित्य

11	यशपाल 1963	1
12	माखन लाल चतुर्वेदी 1963	1
13	मैथिली शरण गुप्त	1
14	डॉ0 माता प्रसाद गुप्त 1967	1
15	डॉ0 हरदेव बाहरी 1968	1
16	डॉ0 परमेश्वरी लाल गुप्त 1966	1
17	भदन्त आनद कौसल्यायन 1967, 1968, 1976	2
18	बिस्मिल	1 शर
19	क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय 1965	1
20	डॉ0 उमेश मिश्र	1
21	प0 द्वारका प्रसाद मिश्र 1966	1
22	अम्बा प्रसाद सुमन	1
23	पद्मकान्त मालवीय 1963	1
24	जगन्नाथ प्रसाद शर्मा 1965	1
25	प0 सुरतिनाथ मणि त्रिपाठी 1962	1
26	लाल बहादुर शास्त्री 1964	6
27	भगवती प्रसाद बाजपेयी	1
28	विद्यानिवास मिश्र	10
29	कमला सांकृत्यायन 1961	2
30	कृष्णानन्द गुप्त	1
31	डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया 1967	1
32	महादेव साहा	13
33	एम0 एस0 कत्रे 1966	1
34	कुबेरनाथ राय 1962	1
35	डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा 1965	2
36	श्रीनारायण चतुर्वेदी	4
37	बाबूराम सक्सेना 1962	1
38	रामनरेश त्रिपाठी 1961	1
39	शिवनाथ (शान्ति निकेतन) 1962	1
40	श्रीगणेश (चम्पारन)	1
41	किशोरी दास बाजपेयी 1969, 1970	2
42	डॉ0 भोलानाथ तिवारी	1

43	डॉ0 शिव प्रसाद सिंह 1970	1
44	श्री चर्नीशेव	1
45	बारखूदरीव (मास्को)	1
46	राहुल जी	86

कमला सांकृत्यायन के पत्रों से

1 21 कचहरी रोड, दार्जिलिंग

21 11 61

आदरणीय डॉ0 साहब,

बड़े दुःख के साथ लिख रही हूँ कि श्री राहुल जी की पिछले सप्ताह से स्मरण शक्ति जाती रही है। अब वे एक शब्द पढ़कर भी उसका अर्थ समझ नहीं पाते। पिछले वर्ष भी उनकी स्मरण शक्ति मे क्षीणता आ गई थी, पर उतनी नहीं। ठीक भी हो गये थे। पर इस बार तो कष्ट अधिक है। बड़े दुखी और कातर रहते हैं। अपना इलाज करवाना नहीं चाहते। कहते हैं आखिर मरना ही है, इलाज के लिए पैसे अधिक चाहिए, बच्चों को संकट मे डालना नहीं चाहता। क्या करूँ। आप लोग ही मिलकर कुछ उपाय सोचें। मैं उनको दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में अमृतसर ले जा रही हूं। इसी बीच यदि वे ठीक रहे तो पहले प्रयाग लाने का प्रयत्न करूंगी। उनकी अवस्था देखकर बड़ा दुख होता है।

आज तो वे नौसिखिया बच्चों की तरह क, ख पढने का पयत्न कर रहे थे।

भवदीया

कमला सांकृत्यायन

2 जनवाणी प्रेस, 36 वाराणसी घोष, स्ट्रीट, कलकत्ता-7

14 12 61

हम लोग 8 तारीख को यहाँ आ गये थे। उसी दिन श्री राहुल जी की डाक्टरी जाच हुइ उच्च रक्तचाप से पीडित थे। डाक्टर की राय के अनुसार दो चार दिन यहां आराम करने की आवश्यकता पड़ी। किन्तु परसों (12 12 61) से वे संज्ञाहीन होकर बडे हुए हैं। डॉक्टर बराबर देख रहे हैं। आज तीसरा दिन है। अभी होश नहीं आया . आज उन्हे स्थानीय पी0 जी0 हास्पिटल म ले जाना तै हुआ है। दोपहर बाद उन्हें ले जाना होगा प्रयाग आना असभव दीखता है। कृपया श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी को भी खबर दे दे। आज डाक्टर महादेव साहा को यहाँ बुला भेजा है। उनकी इस भयानक बीमारी के कारण मैं बहुत चिंतित हूँ। उधर के समाचारपत्रों म खबर छपवा द।

भवदीया

कमला सांकृत्यायन

डॉ0 विद्या निवास के पत्रों से

गोरखपुर से 4 पत्र

28 3 63 मुझे क्या पढ़ाना है इसकी सूचना पहले से दे दे। वैसे मैं पढ़ाना चाहूगा— Morphology-syntax या संस्कृत का संघटनात्मक व्याकरण या

ndo-European Historical Grammar पर आप जो उचित समझे ..
मैं तो गोरखपुर छोड़ने के लिए कृत-सकल्प हूँ।

25 4 66 — मै छुट्टियों मे गोरखपुर रहूँगा — मेरे पास तो बार-बार (बम्बई) लिखने पर आवेदन पत्र तक नही भेजा, कुछ विद्यार्थियों को भेजना चाहता था।

17 8 64 — मै दिल्ली विश्वविद्यालय के पाध्यापक पद के अन्तर्व्यूह मे गया था। विश्वनाथ बाबू, कात्रे, मीनाक्षी सु0 विशेषज्ञ थे। डॉ0 बाहरी, चन्द्रशेखर (स्थानीय) और मै अन्तर्व्यूह के शिकार। ज्ञात हुआ कि Youngman from Gorakhpur is brilliant no doubt but he is too young and he may have a linguistic bias in Hindi दोनो शेष प्रचण्ड हैं।

कलकत्ते से भी गुरु प्रसाद सिह प्रो0 पद के लिए 28/8 को बुलौवा है। सुना कि आपको Offer दिया गया आपने स्वीकार नहीं किया। गुरु जी ने आज्ञा दी थी कि आवेदन पत्र भेज दो, भेज दिया था। अब आप अगर जा रहे हो तो मेरे 150/- आने जाने के बचे, न जा रहे हो तो . इस पत्र का उत्तर अवश्य दे।

9 8 65 — मुझे विश्वस्त सूत्र से यह सूचना मिली कि खेरा प्रोफेसर पद पर आपको Offer दिया जाने वाला है।

सागर मे सुना कुछ होने वाला नही, पंडित जी गोरखपुर में मुझे रखने के लिए किंवा नष्ट करने के लिए कृत-संकल्प है।

विदेश से 4 पत्र

सिएटल (वाशिंगटन)

8 11 67

मै तो लाचारीवश यहाँ चला आया पर मन कतई नही लगता और यहाँ नौकरी हमेशा के लिए करने का इरादा नहीं।

संस्कृत विश्वविद्यालय मे प्रोफेसरी (भाषा विज्ञान की) खाली है, पर क्या संभावना कहूँ? गुरु जी कहते है कि मुकदमे का फैसला हो जाय तभी कुछ हो सकता है . गोरखपुर वि0 वि0 का रुख और उग्र होता जा रहा है, पूरे परिवार पर उनकी कोप दृष्टि है। प्रो0 कत्रे ने कुछ आश्वासन दिया था, पर वे भी कुछ कर न सके। बहरहाल जून मे वापिस लौटूगा और दो तीन महीने देखूँगा, जब कहीं कुछ न होगा तो एक दो साल के लिए फिर इस विराने देश की शरण लेनी पड़ेगी। अभी आर्थिक स्थिति सुरक्षित रखने के लिए भी दो तीन साल अर्जन जरूरी है। उसके बाद न होगा तो अपने गॉव मे रहूँगा। लिख पढ़ कर जिन्दगी गुजार दूँगा।

भाषा विज्ञान के क्षेत्र मे अर्थ पर दूसरी पुस्तक का अनुबन्ध Mouton & Co से हो गया है। इसी पुस्तक को समाप्त करने पर लगा हूँ, मार्च तक पूरी कर लेना चाहता हूं। हिन्दी का एक संक्षिप्त व्याकरण भी अंग्रेजी मे पूरा कर लूगा। इसके अलावा एक बड़ा काम लगभग पूरा होने जा रहा है —The Indian Poetic tradition (जिसमे वैदिक सं0 से लेकर अपभ्रंश तक 3000 काव्य पंक्तियां का अनुवाद रहेगा और विशद भूमिका रहेगी।) आप किसी से कुछ बात चला सकें तो चलाकर देखिये

सिएटेल

4.12.67

गुरु जी का पत्र पहले ही मिल चुका है।

चूंकि 9 महीने का करार करके आया हूं, इसलिए बाध्य नहीं कर सकता। हाँ कुछ स्थानापन्न व्यवस्था करके अनुकूल करने का यत्न कर रहा हूँ। यहाँ लोगो ने सुनते ही कहना शुरू कर दिया कि आपको हम प्रोफेसर बना देंगे, पर बनारस बनारस और अमरीका अमरीका। मेरे लिए बनारस सर्वथा अनुकूल है। 14-15 मार्च के आस-पास आकर ज्वाइन करूँगा . . .

22 नवम्बर को बर्कले गया था, संस्कृत काव्य शास्त्र पर व्याख्यान देने, पुन: 13 दिसम्बर को तीन हफ्ते के लिए जा रहा हूं—The Indian Poetic Tradition शीर्षक पुस्तक की प्रेस कापी तैयार करने के लिए और Meaning पर अपनी किताब के लिए कुछ References तैयार करने के लिए। आशा करता हूँ कि दोनो पुस्तके मार्च 68 तक प्रकाशक के पास पहुँच जायेगी। बस अमरीका यात्रा की यही सार्थकता रहेगी।

.. क्या आप दो वर्ष के लिए यहां नहीं आना चाहेंगे भारतीय भाषा विभाग की संयोजना के लिए? सोच कर लिखें।

पूना वाले भाषा विज्ञान के क्षेत्र मे कुछ ज्यादा इजारादार होने लगे है क्योकि काम तो वे लोग भी नहीं कर रहे हैं। वस्तुत: अन्धानुकरण से भारत की प्रतिष्ठा नहीं बढ़ेगी।

डॉ0 अमर बहादुर सिंह भी अगस्त सितम्बर तक भारत लौटने की सोच रहे हैं।

भाषा विज्ञान के क्षेत्र मे इस समय सबसे ज्यादा हलचल यूरोप मे है, कुछ लोगो को वहाँ भेजना चाहिए तथा कुछ लोगो को भारत आमन्त्रित करना चाहिए। रूमानिया, हंगरी और चेकोस्लोवाकिया मे इधर कई लोगो ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। उत्तर भारत मे भाषा विज्ञान का अच्छा केन्द्र स्थापित करना चाहिए। आगरा-सागर टूटे ना टूटे, अगर आप बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे भाषा विज्ञान के प्रोफेसर होकर आ जायें तो काफी काम हो सकता है।

सिएटल (वाशिंगटन)

27.2.68

परसों भैया साहब का पत्र मिला कि चि0 लक्ष्मीनारायण तिवारी की माता जी को पक्षाघात का दौरा हुआ, अब कुछ ठीक है।

मै स्वयं एक महीने अस्वस्थ रहा: अस्पताल मे रहा। अब निर्बलता मात्र शेष है। अप्रैल के अन्त मे भारत लौटने का विचार है।

पढ़ाई के अलावा दो काम शुरू करना चाहता हू, एक तो पाणिनीय पद्धति के प्रयोग का काम भारती भाषाओं के भाषान्तर व्याकरण पर किया जाय और दूसरे हिन्दी का अनपर्याय कोश प्रस्तुत किया जाय। मै समझता हूँ वि0 वि0 अनुदान आयोग से अनुदान प्राप्त हो जायेगा।

सिएटेल

15.4.68

वाराणसी स0 वि0 वि0 मे कभी अप्रैल के अन्त तक कार्यभार सम्भाल लूगा.... दो दिन के लिए गोरखपुर ज्वाइन करना जरूरी है और तब बिदा ले लेना है। ग्रह चक्र की पूर्णाहुति के रूप मे पूरी फरवरी अस्पताल मे बीती, अब ठीक हूँ।

विश्वास कीजिए, लक्ष्मीनारायण की पी0 एच0 डी0 मैं बनारस में रहते हुए एक वर्ष मे करा दूगा। सिर पर सवार हुए बिना यह काम न होगा।

डॉ0 महादेव साहा के पत्रो (1958-1969) से

1 स्वाधीनता कलत्ता

18 1 58

आशा है आपरेशन सकुशल हो गया और आप मजे मे हैं हाइड्रोसिल का आपरेशन माइनर आपरेशन समझा जाता है। तीन साल पहले होली के दिन इलाहाबाद मे ही था। अब बसन्त ऋतु के अन्दर ही मुलाकात होगी।

2 एशियाटिक सोसाइटी

2 1 62

इधर कई दिनों से राहुल जी एक दिन कुछ ज्यादा बोलते और एक दिन एक प्रकार से चुप रहते थे। लेकिन परसो और कल बोलते रहे। 100 तक गिना भी। अपना नाम अंग्रेजी म दस्तखत किया। कुछ असलग्न बातें बोल कर लिखाई। 5-6 दिनो से पूरा खाना दिया जा रहा है। कुछ उन्नति दिखाई पड रही है। ब्लड प्रेसर 180/190 है। सूगर पेशाब मे नही। अस्पताल म जो डाक्टर देख रहे थे बाहर गये है। . तब शायद Electric Encephalograph लिया जाय। कभी-कभी राहुल जी कहते है "कुछ समझ म नही आता" फिर उनकी आखो म आंसू आ जाता है। हमारी हालत भी बुरी हो जाती है। अस्पताल मे रोज 70 रुपये का खर्च बैठता है। सब उन्हीं को खर्च करना पड़ता है। राजेन बाबू ने विधान बाबू को लिखा था। उन्होंने रिपोर्ट मगाई है। कमला ने कहा है कि वह सरकार के साथ खर्च मे हाथ बँटाने को तैयार है मगर अभी कुछ हुआ नहीं।

हमारे भूपेन दादा 25/12 को चल बसे। 82 वर्ष के थे। मेरे लिए कलकत्ते का बड़ा आकर्षण खतम हो गया।

सुनीति बाबू सरस्वती के उत्सव मे नही आ रहे है। दोस्त मुझे भी नही जाने देगे। उत्सव सफल हो यही आन्तरिक कामना है।

3 पीटर वेस्ट बेड, एडेन हास्पिटल, दार्जिलिंग

4 5 1962

जुलाई मे इलाहाबाद आ सकता हूँ।

Indo Aryan or Hindi का नया सस्करण आपने देखा होगा। ओम प्रकाश दूसरा संस्करण निकालेगे। दूसरे सस्करण की सामग्री का तर्जुमा महावीर प्रसाद कर रहे हैं सुनीति बाबू ने Indian Lingistics पर एक बड़ी किताब लिखी है। जून तक निकलेगी। उनका Kamala Lectures (Cu) छप रहा है। इसके बाद Wilson Lectures दुरुस्त करके प्रेस मे देगे। एक जापानी विद्यार्थी ने (सुकुमार . का छात्र) जापान मे ODBL की 8-10 फोटोकापियॉ तैयार कराई है।

राहुल जी की हालत पिछले महीने फिर खराब हुई। रक्त या कुछ जरूरी दवाए लेकर आया। डाक्टर के कहने पर उन्हे ऊपर लिखे अस्पताल म भर्ती करा दिया है। Blood pressure और पेशाब वगैरह वे देख रहे हैं। BP कम हुआ है (इस वक्त 180)। BP की वजह से अलोना परिमित भोजन दिया जाता है। खूब सोते हैं। जरूरत पड़ने पर Sedative देते है।

जवाहर लाल ने दो हजार (दो किस्तों मे), राजेन्द्र प्रसाद ने एक हजार, उ0 प्र0 ने डेढ़ हजार दिया है। शायद बिहार सरकार ने भी हजार दिया है। अखबार वाले (हिन्दी) बिना जाने सुने हल्ला मचा रहे है। राहुल जी के अनुरागियो ने भेजा है और भेजने जा रहे है। मेरा ख्याल है कि पैसे (सभी जगह के) कही जमा रखना चाहिए। वक्त पर काम आएगा। बच्चन ने एक फंड खोला है,, मेरा हवाला दिये बगैर आप यह सुझाव लोगो के सामने रख सकते है।

राहुल जी कुल मिलाकर रायल्टी से पाँच हजार सालाना के करीब और मकान के किराये से 1300 सालाना पाते है। परिवार के लिए कम नही है। बैंक मे भी 10 हजार से कम नही होगे।

4 दार्जिलिंग

6 6 62

आज अमृत राय के खत से मालूम हुआ कि आपकी बिटिया का ब्याह 8 को है।

राहुल जी अस्पताल मे है। Blood urea 36 mg in 100 ccg blood है। गुर्दे की गड़बड़ी है। दमा हो रही है। अच्छे है। कलकत्ते से विशेषज्ञ देख गये है और वहाँ ले जाने को कहा है 15 तक। उधर हमारी पार्टी उन्हे मास्को भेजने की तैयारी कर रही है। एकाध महीने के अन्दर इन्तजाम होने की उम्मीद है। उनकी स्त्री साथ जायगी। मै भी राहुल जी को हवाई जहाज पर चढ़ाकर रेल से कलकत्ता जाऊँगा राहुल जी के साथ एक ही केबिन मे हूँ।

5 एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता

6 11 62

21 जुलाई से 31 अगस्त तक दिल्ली मे रहते राहुल जी को दूसरा स्ट्रोक हुआ था। सितम्बर के मध्य तक हालत काफी खराब रही। चलना फिरना-बोलना एक तरह से बन्द हो गया था। अब 20-30 कदम चलते और कुछ बोलते है। कमला को कोर्तमला, बेड को डेबे की तरह बोलते है। पागलपन के लच्छन दिल्ली मे दीख पड़े थे। अब नही है, चार-चार डाक्टर-डाक्टरिने देख रही है, खाना काफी दिया जाता है, फल भी। रूसी स्त्री और बच्चा अभी नहीं मिल सके है क्योकि यहा की स्त्री होना है। यहाँ के बच्चो को देखते रहने के लिए राहुल जी ने कई बार कहा था। अब इन्तजाम कर सका तो देखने जाना है।

सुनीति बाबू अमरीका, जापान, फिलीपाईन्स से दो महीने के बाद लौटे। Indo Aryan or Hindi के दूसरे सस्करण मे जोड़े अश का तर्जुमा महावीर जी ने कर दिया। प्रकाशक को दी गई है।

6 एशियाटिक सोसाइटी

27 11 63

छोटे बाबू को काम मिल गया, हम सब के लिए बड़ी खुशी की बात है। Language and Literature of Modern India (Bengal Publishers 14 Bankim Chatterji Street Calcutta-12) मे निकली है।

मैने Lebdev A grammar of East Indian Pure and mixed dialects एडिट करके छपा दिया है।

, मै हरिनाथ दे (1877-1911) की रचनाए एडिट कर रहा हू। लोग नाम ही जानते है, मरे 52 साल हुए। कुछ नही किया गया है।

16/10 को राहुल जाया सरकारी नौकरी के लिए इन्टरव्यू कर गई है।

दार्जिलिंग म्यूनिसिपल्टी के चेयरमैन ने लिखा है कि यहा राहुल रोड नामकरण हो गया। सड़क उनके घर के करीब तक जाती है।

Hadley और Fergusson के हिन्दोस्तानी व्याकरणो को एडिट करके छपा दूँगा।,

7 एशियाटिक सोसाइटी

26 2 64

आपके यहाँ का एक विद्यार्थी राहुल जी पर रिसर्च कर रहा है। उसकी कई चिट्ठियाँ मिली। हिन्दी मे Duplication बहुत हो रहा है। सस्ते विषय लकर कितने हो विद्यार्थी आनन फानन मे काम खतम करना चाहते है। स्टैंडर्ड निहायत गिरता जा रहा है। नतीजा यह हुआ है कि एम० ए० की बुनियादी डिग्री की कद्र जाती रही है।

Pharr-Homeric Greek फिर छपी है। राहुल जाया को लखनऊ मे नौकरी मिलने की उम्माद है। अप्रैल में सालाना श्राद्ध होगा। दार्जिलिंग मे सड़क का नामकरण हुआ है। सम्मेलन ने कुछ नहीं किया।

भोजपुरी का राहुल अंक निकलने वाला है।

8 एशियाटिक सोसाइटी

21 3 64

सरस्वती मे फेनी मुकर्जी राहुल जी के साथ तिब्बत यात्रा पर लिख रहे है। उनके चरित्र के बारे मे, वहाँ रखे ले रावेन के बारे मे भी लिखा है। राहुल जाया न चतुर्वेदी जी का इसके बारे मे लिखा है। यदीद स्वय अर्थानामरोच्यते तत्र किम्वयं (धर्मकीर्ति) वाली बात है।

अच्छी बिब्लिओग्राफी बना लेने का मतलब होता है आधा रिसर्च पूरा कर लेना। आशा है शुक्ल ने राहुल जी की रचनाओ की पूरी फेहरिस्त बना ली है। एक-एक लेखक का विषय पर कई जगहो पर काम हो, यह अच्छा नहीं। रिसर्चर लकीर के फकीर बन रहे है। अपने अकबर की शौक ले आए सिविल सर्विस ऐसा मजनू कर दिया। ऐसा दौड़ाया लगोटी कर दिया पतलून को बदल कर डाक्टरी पर लागू किया जा सकता है। सुकुमार बाबू रिटायर हुए नया कोई नहीं आया है।

9 एशियाटिक सोसाइटी

5 4 65

सुनीति बाबू को नेशनल लाइब्रेरी मे बगला मिला है। वहीं काम करते हैं। मजे मे है, वर्ष के अन्त तक यूरोप जाएगे।

10 एशियाटिक सोसाइटी

14 1 66

सुनीति बाबू अंग्रेजी म लिखे अपने लेखो को कई खडो मे छपान के लिए तैयार कर रहे है

11 एशियाटिक सोसाइटी

20 4 66

छोटे बाबू क ब्याह मे न्यौता भेजने के लिए बहुत धन्यवाद।

आप जबलपुरवासी और लक्ष्मीनारायण बनारस वाले हो गये। अब घर द्वार छोटे बाबू ही देखेंगे।

सुनीति बाबू इथिओपिया, मिस्र, ग्रीस, रूमानिया, फ्रांस, विलायत, चेकोस्लोवाकिया, जनवरी जर्मनी होकर सोवियत संघ पहुँचे हैं। फ्रांस में उनके गुरु आंतोआमेइए की और फ्रांस की भाषा विषयक समिति की शत वार्षिकी में वे शरीक हुए। विलायत में अपने एकमात्र जीवित गुरु प्रो० हैनिसल जोन्स से मिले।

राहुल पुत्र ईगर का व्याह 9 अप्रैल को लेनिनग्राद में हुआ। निमंत्रण दिया था। बधाइयाँ भेजी हैं।

नामवरसिंह ने कहा कि उससे भगवतशरण उपाध्याय ने राहुल जाया के बारे में भयंकर बातें कही हैं। अब सन्ध्या भाषा का रहस्योदघाटन करें।

संस्कृत और बंगला में श्रीमती क्वाँरी और व्याहता दोनों के लिए आता है। हिन्दी में एक ही अर्थ में क्यों चला? शायद Mrs. की वजह से चला होगा।

12 कलकत्ता

16.9.66

प्रियवर शिवगोपाल जी ने अपनी सम्पादित 'ढगवै कथा तथा चक्रव्यूह कथा' भेजी है। पढ़कर उन्हें लिखूँगा। बहुत मूल्यवान काम कर रहे हैं। मैं कुतबन की 'मृगावती' देखना चाहता हूँ।

शायद अभी तक नहीं निकली है।

सुनीति बाबू ईरान से लौट कर अब जार्जिया (सोवियत संघ) जाने की तैयारी में हैं। ईरान वाले खूब सूअर खा रहे हैं। सरकार ने सासेज का कारखाना खोला है। मुहम्मद की तस्वीर सर्वत्र दिखाई पड़ती है। वहाँ के राजा ने आरिया मिश्र जैसा कोई विरुद लिया है। अवेस्तन और पहल्वी पढ़ाने की व्यवस्था बड़े पैमाने पर की गई है।

13 एशियाटिक सोसाइटी

24.12.69

सुकुमार बाबू का प्राकृत व्याकरण हिन्दी में निकल गया। नये साल की शुभकामनाएं---महादेव

7.6.1939 प्रसन्नता हुई कि आप पाली परीक्षा के लिए पूरी तैयारी कर रहे हैं। थीसिस की योजना भी ठीक है। एक बार लगकर उसे कर डालना ही अच्छा होगा।

उन्होंने कलकत्ते में ही रहकर भाषा शास्त्र का अध्ययन करने और डी० लिट की थीसिस लिखने के लिए प्रेरित किया।

रामधारी सिंह दिनकर के पत्रों से

1 कुलपति, भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

14.12.1964

विश्वविद्यालय का काम इस वर्ष अच्छा चला है। मगर एक साल के अन्दर मैंने एक भी कविता नहीं लिखी। इसलिए इस काम को छोड़ना ही पड़ेगा। दिल्ली जाने में एक बाधा आ गई है। मेरी माँग है कि मैं सरकारी अफसर नहीं बनूँगा। मगर वेतनभोगी तो अफसर ही हो जाता है। सम्भव है वहाँ भी न जाऊँ और सब कुछ त्याग कर घर बैठ जाऊँ।

2 5 सफदरजंग लेन, नई दिल्ली

3 1 1968

जब अलंकरण त्याग का आन्दोलन उठा, लोग मुझसे भी पूछने आये थे। मैंने कहा पद्मभूषण एक नही दो छोड सकता हूँ। मगर पद्मभूषण लौटा देने के बाद हिन्दी सलाहकार बना रहने मे कौन पुण्य होगा?

सबने मेरे प्रस्ताव से (इस्तीफा के) असहमति प्रकट की। इन्दिरा जी 15 मिनट तक बहस करती और समझाती रहीं। मोरार जी ने कहा अब हिन्दी का काम बढेगा आप न जाइये। इन्दिरा जी ने कहा सोच लीजिये कि दक्षिण पर क्या प्रभाव पडेगा। सरकार को कितना कलंक लगेगा। मगर मन अभी तक सभाल म नही है और अब भी भागने का बहाना खोज रहा हूँ। नौ साल तब सरकार यह बहाना करती रही कि विधेयक पास हो जाय तब आपके सभी सुझाव काम मे लाये जायेगे।

धर्म सनह उभयमति घेरी भइ गति सॉप छछूदर केरी

भगवान ने अगर पिछले साल बडे लडके को मुझसे नही छीन लिया होता तो मै भी वही करता तो सब लोग कर रहे है। सुयश का मार्ग भाषण का ही मार्ग है। यहाँ तो शौचालय मे प्राणायाम साध कर बैठना है और ऐसी आशा मे जो बहुत धीरे-धीरे ही पूरी हो सकेगी।

डॉ0 एस0 एम0 कात्रे, डकन कॉलेज पूना का पत्र

4 11 1966

पूना— May I invite your reference to my original request that you should contribute section for the proposed volume on story of Indian Languages for the National Book Trust

let me have your contribution by the end or November and in any case not later than 15th Dec 1966

भदन्त आनन्द कौसल्यायन के पत्रो से

1 हिन्दी नगर, वर्धा

13 1 66

मै 24/1 को प्रात. नागपुर जबलपुर एक्सप्रेस बस से जबलपुर आऊँगा . मेरे साथ सिंहल द्वीप के एक भिक्षु राहुल आ रहे हैं। संस्कृत मे बी0 ए0 (आनर्स) किया है। हिन्दी भी मजे मे बोलने समझने लग गये है। सांकृत्यायन के उत्तराधिकारी होने की क्षमता रखते है।

2 हिन्दी विभाग विद्यालंकार विश्वविद्यालय, केलानिया (सीलोन) -

11 1 1967

पिछली 23 दिसम्बर से वर्धा में ही हूँ। अपने बनाये हुए अतिथि गृह का महमान। बीच-बीच मे नागपुर आदि हो आया हूँ और 22, 23 जनवरी तक इसी प्रकार आना-जाना लगा रहेगा। प्रयाग से "साहित्य वाचस्पति" की सूचना मिल चुकी है। मैं 24, 25, 26 इन तीन दिनो मे किसी भी एक दिन जबलपुर पहुच सकता हूँ . . यह भी असम्भव नही कि 28/1 के लिए आप भी प्रयाग जा रहे हो

मुझे याद हो आई है वह यात्रा जब प्रयाग से वर्धा तक साथ-साथ आये थे। टण्डन जी के साथ-साथ कुल 25 वर्ष हुए किन्तु ते ह्निा दिवसो गत।

रामनरेश त्रिपाठी, कोइरीपुर जौनपुर का पत्र

31 12 61

मालूम हुआ कि आप हिन्दी विभाग के अध्यक्ष होकर जबलपुर विश्वविद्यालय मे चले गये। योग्य व्यक्ति का महत्वपूर्ण आदर होने पर हर्ष तो हो रहा है, पर अब इलाहाबाद आऊँगा तो मिलूँगा किससे? .

मै भी नदी तट का वृक्ष हो रहा हूँ। निराला जी चले गये, राहुल जी रात दिन की चिंता के विषय हो गये है। भगवान उनको दीर्घायु करें। वही तो हिन्दी साहित्यिकों के मुख है जिसे हम दुनिया को दिखा सकते है।

सरस्वती समारोह मे आप इलाहाबाद तो आयेगें ही। मेरा भी विचार समारोह मे भाग लेने का है। यहीं मुलाकात, यदि आया तो होगी।

श्रीनारायण चतुर्वेदी के पत्र

1 लखनऊ

10 8 1962

मै हिन्दी प्रोफेसर के चुनाव के संबंध मे जबलपुर गया था। उसके यात्रा व्यय का 125 62 रु0 का चेक यूनिवर्सिटी ने मुझे भेजा था।

मैंने उस जमीन के पट्टे के संबंध म मुख्य नगर अधिकारी श्री के0 के0 शर्मा से बातचीत की जिस पर द्विवेदी जी की मूर्ति स्थापित की गई है.. .. पट्टे की फीस 32 रुपया जमा कर दी जाय और पट्टे पर मंत्री के हस्ताक्षर हो जायें . आपकी ही ओर से जमीन के लिए मूल आवेदन पत्र भेजा गया था, अतएव यह सब काम आपको ही करना है।

2 53 खुर्शेदबाग, लखनऊ-4

23 10 1975

देवू बाबू सरस्वती की हत्या करने पर तुले हैं। व उस किसी को 10/5 वर्ष के लिए lease पर भी देने को तैयार नही। उन पर हिन्दी वाले कोई दबाव भी नही डालते। मेरे अकेले का प्रभाव काफी नही।

आशा है आपकी पत्नी का स्वास्थ्य ठीक है।

डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया का पत्र

मसूरी

23 11 1977

विश्वकोश मे जो आपका परिचय भेजा था वह खड तैयार है। आपकी फोटो की उन्होंने तत्काल आवश्यकता है किन्तु विडम्बना है कि मेरे पास आपका कोई फोटो नही है। अच्छा रहेगा आप सीधे उन्हें भेज दे। पता

D, .e..a,a A , am D _tt

Director State Institute & Encyclopedic Publications Thyland, Trivandrum-14 (Kerala)-695014

डॉ0 हेमचन्द्र जोशी का पत्र

नैनीताल

23 11 1965

मैंने भाषा विज्ञान सबधी फुटकर लेखको को सशोधित कर एकत्र कर लिए है। आप कृपा कर एक ऐसा प्रकाश ढूंढे जो Royalty नही बल्कि एकमुस्त कुछ रुपए उस किताब का दे दे।

डॉ0 वि0 ए0 चेर्निशोव का पत्र

प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान
अकादमी ऑफ साइसज मास्को (केन्द्र)

19 3 1965

आपने मेरे प्रश्नो के जो उत्तर दिया उससे मै बिल्कुल सन्तुष्ट हूँ — आपने भोजपुरी की लोकप्रियता के कारण स्पष्ट रूप से व्यक्त किये है अन्य बिहारी बोलियों की अपेक्षा। यह बिल्कुल ही स्वाभाविक है कि इतिहास क्रम मे "विहार की राजनीति इधर बराबर भोजपुरी भाषा-भाषियो के अधिकार मे रही।' इतना ही नही मै यह भी कहना चाहूंगा कि आधुनिक खडी बोली हिन्दी की शैली और साहित्य का विकाश पहिल पहल प्रवर्तक तथा प्रतिनिधि भोजपुरी भाषाभाषी थे जैसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द्र डॉ0 हजारी प्रसाद आदि जिसके कारण आधुनिक खडी बोली हिन्दी पर भोजपुरी तथा अन्य बोलियो का काफी प्रभाव हुआ। समसामयिक लेखको मे एक ही का जन्म कौरवी क्षेत्र मे हुआ। यह है विष्णु प्रभाकर जिनका जन्म स्थान बिजनौर जिले के एक गाव मे है

आपने यही बिलकुल ठीक कहा कि "यदि प्रान्तीयता की भावना बढी तो किसी समय ऐसा आन्दोलन हो सकता है।"

डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी के पत्रों से

1 सभापति विधान परिषद पश्चिम बगाल कलकत्ता

जुलाई, 29, 1963

I am pleased with your book Basha Tattwa Ki Rupe Rekha This is the first book of its kind in any modern Indian Language in which the modern methods of linguistics analysis and structural-linguistics as they are being developed in America, have been treated for Indian students I hope in the domain of Hindi scholarship, your book will be recorded with acclamation and will be profitably studied by the present and the next generation of linguistic workers in Hindi

2 श्री पारीस Paris

1 8 1948

सविनय निवेदन है कि यहाँ के आन्तर्जातिय भाषातात्विक तथा प्राच्य-विद् सम्मेलन समाप्त हो गये हैं। भाषातात्विक सम्मेलन मे आन्तर्जातिक क्षेत्रो में सस्कृति पारिभाषिक शब्दो के प्रयोग तथा

हिन्दी के व्यवहार के सम्बन्ध में मैंने कुछ कहा था। पृथिवी की तृतीय भाषा हिन्दी के सबंध में कुछ जिज्ञासा दृष्टिगोचर होती है।

To general seeretary Hindi Sahitya Sammelan Prayag

भगवत शरण उपाध्याय का पत्र

सुदामा सदय, रायविहारी लाल रोड, लखनऊ

20.6.1966

मै पूर्ववत् अपने प्राणधन को निचोड़ता चला जा रहा हूँ। दूसरा चारा ही क्या है? नागरी प्रचारिणी सभा को सिद्धान्तवश छोड़ना पड़ा। चाहता हूँ कि जीवन की अनन्य कृति —History of Indian Culture भारतीय संस्कृति का इतिहास दस जिल्दों मे हिन्दी और अंग्रेजी मे लिख दूँ पर संबल और तदर्थक आहार के अभाव मे लाचार पड़ा हूँ। उसकी खोज मे कलकत्ते जा रहा हूँ 24 को। कन्या के पास ठहरूँगा। c/o श्रीमती चित्रा तिवारी, 595 ओ, ब्लाक, न्यू अलीपुर, कलकत्ता। सरकार के पास इतना धन है, विश्वविद्यालयो के पास भी इतना है पर काम करने वालो की सरपरस्ती उनकी सीमाओ के बाहर है।

तीन खण्डो मे 'भारतीय व्यक्ति कोश' आयोजित किया — पहले मे चारो वेदो, ब्राह्मणा, आरण्यको, उपनिषदो, रामायण, महाभारत, अठारहों पुराणो के देव देवियो, ऋषियो, वीरा सभी व्यक्तियों का परिचय दूसरे और तीसरे में बुद्ध से अद्यावधि ऐतिहासिक व्यक्तियों का। इनमें पहला जो जगल था, समाप्त कर डाला। दूसरे (बुद्ध से 1200 ई0 तक) का भी आधा-सांस्कृतिक-साहित्यिक तैयार कर डाला पर सही प्रकाशक नहीं मिल रहा कि कुछ कर सकूँ। पहले खण्ड के प्रकाशन के लिए हिन्दी निदेशालय में आवेदन पड़ा है पर कुछ पता नही चला। दिल्ली जायं तो श्री चन्द्रहासन से मिलकर बात कर —वे मुझे जानते हैं यद्यपि हम दोनो कभी मिले नही।

डॉ0 कुबेरनाथ राय (एम. ए. साहित्यरत्न) का उत्तेजक पत्र

अंग्रेजी विभाग, नलबारी डिग्री कॉलेज, कामरूप आसाम

19.8.1962

मेरी हिन्दुस्तानी सम्बन्धी आशंका धीरे-धीरे सच होती जा रही है। यद्यपि अभी इसका प्रारम्भ है। यदि हिन्दी के पत्रकार और लेखक साथ देते है तो नेहरू के छौनो का सारा चक्रव्यूह व्यर्थ होगा। हॉ, दुर्दशा तो भोगनी ही होगी। एक महाभारत लड़कर समाप्त किया गया। उसमें चार पीढ़ी—(1 भारतेन्दु 2 द्विवेदी, 3 निराला 4 अद्यतन) गल कर शेष हो गई। शेष तो नहीं कहा जा सकता परन्तु वह अपना काम कर चुकी। इस नये महाभारत में दो पीढ़ी और गलेगी, यदि उक्त तीसरी और चौथी पीढ़ियो ने पराजय स्वीकार न कर लिया तो।

कश्मीरी उत्तर प्रदेश के जोंक है। चाहे कांग्रेस रहे या न रहे परन्तु हरेक भारतीय को यह समझाना होगा। बंगाल और दक्षिण इन कश्मीरियों को खूब समझता है। केवल उत्तर प्रदेश की बुद्धू किसान जनता इस तथ्य को नही समझती कि इन नेताओं का, जिनका नेतृत्व कश्मीरी बन्धु कर रहा है एक अलग वर्ग है जिसके आचार-विचार रहन-सहन से हमारा कोई नाता नही। क्या मजाक है कि बहुमत की भाषा को नष्ट करके उसके सम्बन्ध की डोर उसके सारे प्राचीन उत्तराधिकार से काट करके केवल काश्मीरियो की भाषा देश पर लादो।

वशिष्ठ और परशुराम का ब्राह्मणत्व जब पीडित हुआ था तो भयकर सहार हुआ, आज ब्राह्मणत्व पद पद पर प्रताडित है परन्तु हम सभी सिर्फ पूंछ हिलाना मात्र सीखे है (यहाँ ब्राह्मणत्व से मेरा तात्पर्य वर्ग विशेष से नही)।

"इतिहास" और "भाषा" ये दो चक्र है जिन पर कोई राष्ट्र गतिशील रहता है। इतिहास नष्ट करने का प्रयत्न हुमायूँ कबीर के नेतृत्व में आपक इलाहाबादी पण्डितगण (ताराचद, राम प्र0 त्रिपाठी) कर रहे हैं और भाषा नष्ट करने का प्रयत्न नेहरू का सारा दरबार।

इस भयकर परिस्थिति मे प्रत्येक विद्वान का कर्त्तव्य है कि वह अपनी लेखनी से समारूढ हो। मैं तो अदना आदमी हूँ। मै कुछ कहूँ भी तो कौडी की तीन बात मानी जायगी। "नाम" अल्प होने से कोई अच्छा पत्र मेरी आवाज को प्रकाशित भी नही करेगा। प0 श्रीनारायण चतुर्वेदी ने "सरस्वती" के गत अप्रैल और जुलाई अको मे मुझे स्थान देने की कृपा की है। प्रथम लेख इतिहास लेखन की वर्तमान सक्रान्ति पर है 'इतिहास और शुक सारिका कथा" एव द्वितीय है "आधुनिक सांस्कृतिक पक्षाघात"। परन्तु मेरा प्रयत्न तो "भाग छोट अभिलाष बड जैसा है। मै चाहता हूँ कि वर्तमान सकट काल मे एक सांस्कृतिक समर छेडा जाय। इसमे आप जैसे लोग लिखे। अपने स्तर के मित्रों से चर्चा करे तो कुछ हो सकता है। उदाहरण के लिए मैने प्रथम लेख मे इतिहास सम्बन्धी जिस लीपा पोती की चर्चा की है उसकी वृहद चर्चा दक्षिण और बगाल के अग्रेजी पत्रो मे हुई है। परन्तु हिन्दी जगत मे चुप्पी वर्तमान रही। यदि आत्म चेतना लानी है तो जागरूक होकर हरेक front पर लड़ना होगा। एक वातावरण तैयार करने की आवश्यकता है। इतिहास अपने को पुन दोहराने जा रहा है—इस समाचार को घर घर पहुंचा देना है।

हरेक जाति मे कुछ "श्वान" होते है। हमारे अन्दर उनकी सख्या जरा अधिक हो गई है जो एकाडेमी, पैसे, एम पी शिप एव पार्टी पातिव्रत्य के पीछे देश की गर्दन पर छुरी मारने मे एकबार भी नही हिचकेगे। परन्तु सत्य का स्वर प्रखर अग्नि की तरह है उसकी धार के सामने जो पडेगा कट कर गिरेगा।

यह बात मैं ही नही सोच रहा हूँ बल्कि विदेशी भी जो स्वतत्र वायुमण्डल मे पले हैं ऐसा सोचते हैं। JBS Haldane जो रायल सोसाइटी का President रह चुका है एव विश्वविख्यात प्राणिशास्त्रवेत्ता है Independence Day issue of Illustrated Weekly of India मे क्या लिखता है पढ़ने की चीज है।

I shall not regard India fully independent until its richer classes and those who ape them, stop dressing up like their former foreign rulers And, that goes for the so called 'National Costume' (शेरवानी पायजामा) too, This is rather less slavish imitation of the costume of ruling class in Iran some centuries ago

JBS स्वेज आक्रमण और अणु नीति के विरोध मे ब्रिटिश नागरिकता को त्याग कर भारत की नागरिकता लेकर इस समय कटक मे शोधकार्य चला रहे है। अपने बारे में वह लिखता है—
I am proud man I dress myself like Mahatma Gandhi

उसने dress का उदाहरण देकर सिद्ध किया है कि इस छोटी सी चीज से ही पता चलता है कि भारतवर्ष अभी पूर्ण स्वतन्त्र नही है—Halfway to Intependence और उसका conclusion है —Present administrative system is a ghost of British Empire sitting crowded on the grave there of

ऐसी अवस्था मे आपकी Category के लोगो से विशेष आशा करता हूँ।

आज भाषा पर हस्तक्षेप है तो कल धर्म पर भी होगा। हमारे MPs तो चरित्रहीन हैं, वे दबी जबान से ही कुछ कह सकते हैं। प्रजातंत्र का स्वस्थ विकास नेहरू की महत्वाकांक्षा ने रोक कर समाप्त कर दिया है।

हिन्दू धार्मिक सम्पत्ति कमीशन ने मन्दिर की अर्थनीति के प्रबन्ध की देखरेख के लिए सरकारी नियन्त्रण की बात की है। साथ ही सुझाव दिया है कि trained पुजारी नियुक्त किये जावें और उनकी training की व्यवस्था सरकार करे। जब Pujari Training college खुलेगा तो आप चमारों को admission लेने से रोक कैसे सकते हैं और appointment भी पुजारियों का यही सरकार करेगी तो हरिजनों को preference देना कैसे भूलेगी। प्रकारान्तर से यह धार्मिक हस्तक्षेप होगा। फल होगा कि मन्दिरों से श्रद्धा उठ जावेगी। हिन्दू धर्म की नींव कमजोर करने का एक से एक कुचक्र चल रहा है। यह धार्मिक हस्तक्षेप नहीं तो और क्या है?

श्री व्यथित हृदय (पत्रकार एवं ग्रंथकार) के पत्रों से

ए-26, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली 14

इनके 4 पत्र 26 7 66, 15 9 66 24 12 66, तथा 9 1 1967 के हैं जो डॉ0 उदयनारायण तिवारी को लिखे गये।

"जबलपुर प्रकाशन गृह (खन्ना) ने तीन पुस्तकें प्रकाशनार्थ ली थीं। इनका सर्वाधिकार 500/ पर बेच दिया था। पहले प्रकाशक ने 150/- नकद दे दिये थे वे अब अन्याय कर रहे हैं , यदि ढाई सौ रुपये न दें तो कुछ कम से ही मामला निपटा दें।"

पुस्तकें थीं— निबन्ध विहार, यज्ञ का घोड़ा, अंधों की आँख।

राहुल जी से पत्र व्यवहार

डॉ0 तिवारी ने राहुल जी को जितने भी पत्र लिखे होंगे उनमें से केवल 8 पत्र उपलब्ध हो सके हैं जो उन्होंने 22 9.42 से 25 1 43 के मध्य लिखे थे। उन दिनों द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था। डॉ0 तिवारी प्रायः कलकत्ता में रहते थे। इलाहाबाद में घर ले रखा था जहाँ उनकी पत्नी और बच्चे ही रहते थे, बूढ़े माता-पिता गाँव में ही रह रहे थे और कभी-कभी ही इलाहाबाद आते थे। पत्रों में तिवारी जी या तो अपने पठन-पाठन या फिर राहुल जी के साहित्य के पठन की बात लिखते रहे।

1 9 42	अब इलाहाबाद शान्त है किन्तु घर की खोज-खबर कुछ भी नहीं मिल रही है। आनन्द जी भी यहाँ आ गये हैं। कृपया रास्ता खुलते ही यहाँ चले आवें।
22 9 42	बूढ़े माता-पिता तथा पितृव्य गाँव में कुशल से हैं। इलाहाबाद लाने पर शायद न आवें। विश्वनाथ महोबे से आने वाले हैं। 'दर्शन-दिग्दर्शन' के सम्बन्ध में आनन्द जी से परामर्श करूंगा।
23 12 42	'विश्व की रूपरेखा' प्रेस में चली गई है। 'वोल्गा से गंगा' के प्रूफ देख रहा हूँ। निराला जी को उनका पत्र दे आया। इधर मार्क्स का जीवन पढ़ा। मस्तिष्क पर बड़ी गहरी छाप पड़ी है।
28 12 42	अभी निराला जी यहीं हैं और रहेंगे भी। पता — द्वारा श्री नारायण चतुर्वेदी, Education Expansion officer, Daraganj, Allahabad.

6 1 43 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' को दुबारा पढ़ रहा हूँ। बाप र बाप! किताब है कि आफत! पढ़ते वक्त मालूम होता है कि "नया यान" चल गया। मैं तो विचारों से परिचित हूँ किन्तु कुछ लोग जो सचमुच घबडा उठे है . इसकी प्रतियाँ प्रयाग म आ पहुँची है और बिक भी रही है। लोक युद्ध पढ़ा। अब 'मानव समाज' का अध्ययन होने वाला है। निराला जी वाला नोट पढ़ा। सर्वथा उपयुक्त है।

20 43 नागपुर गया था। वहाँ श्री कमला नारायण जी से मुलाकात हुई थी। वे पटना के ग्रेजुएट है। असमिया के विद्वान। मातृभाषा भोजपुरी है। वे आपको लिखगे।

'विश्व की रूपरेखा' कृष्णा प्रेस भेज दी गई। प्रूफ यहाँ पर डॉ0 सत्य प्रकाश देखगे।.. पचास-साठ रुपये देने होगे।

25 1 43 डाक्टर सत्यप्रकाश से कल मिला। प्रूफ की ही सुविधा के लिए उन्हे 'विश्व की रूपरेखा' पुस्तक दी गई है वे केवल कमिस्ट्री के डाक्टर हैं। ये कदाचित सबका सम्पादन भी नही कर सकते। मार्च तक पुस्तक प्रकाशित हो जानी चाहिए। 'दर्शन दिग्दर्शन' का arrangement ठीक नही है। विशाल भारत' मे आपकी टिप्पणी देखी। बहुत बढ़िया जवाब है। अधिक लिखना उचित नही था।

15 2 43 मै आठ दस दिनो के लिए बनारस चला गया था। सुनीति बाबू ने बुलाया था। थीसिस के बारे मे। सात दिन मे बहुत काम हुआ। 10-12 दिन का काम और है। इसके लिए कलकत्ता जाना होगा। मार्च मे 10-15 दिन रहकर पूरा कर लूँगा।

मन के प्रतिकूल होते हुए भी प्रतिवर्ष परीक्षा सम्बन्धी कार्य करना पड़ता है क्योकि पैसे के बिना एक दिन भी काम चलने वाला नही है।

अप्रैल मे थीसिस टाइप करा लूँगा। अदाजन 400 से ऊपर टाइप किय पृष्ठ होगे। देखे टाइप वाले को कितने पैसे देने पडते हैं। उसके बाद 200/- फीस के साथ यूनिवर्सिटी को देना है।

श्री निराला जी स प्राय भेट हो जाया करती है।

माता जी भी यहाँ आ गई हैं।

डॉ0 तिवारी के इन थोड पत्रों स राहुल जी के पटना तथा बम्बई प्रवास के कुछ पक्ष उजागर होने है तो साथ ही डॉ0 तिवारी के अपने परिवार और थीसिस के बारे मे।

किन्तु राहुल जी ने 1934 से लेकर 1961 तक डॉ0 तिवारी को अनेकानेक पत्र लिखे जिनमे वे अपनी पुस्तको के बारे म, तिवारी जी की पढाई, थीसिस, परिवार के बारे मे तरह-तरह के प्रसगो को उठाते रहे है।

ये पत्र तिवारी जी की जीवनी के इस कालखण्ड पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालने वाले हैं। यही नही ये राहुल जी तथा तिवारी जी की पारस्परिक घनिष्ठता को भी बताने वाले है। तिवारी जी राहुल जी की व्यक्तिगत बातो से पूर्णतया अवगत रहे। यदि वे राहुल जी पर कोई पुस्तक लिखे होते तो उससे राहुल जी की अनेकानेक अतरंग बातो का खुलासा सम्भव होता। खैर!

इस तरह राहुल जी के 106 पत्र है जिन्हें तिवारी जी ने सभाल कर रखा था। ये छपरा हजारी बाग, देवली, नगर, कलिम्पोग, चिनी (शिमला), नैनीताल, दार्जिलिंग, मसूरी, उत्तरकाशी तथा जापान, लेनिनग्राद एवं लन्दन से 1934-56, 1961 के मध्य लिखे गये।

पहला पत्र 6 मई 1934 का है आगे तिथिवार पत्रों के मुख्य अश अकित है।

राहुल जी के पत्रो से

16 3 1934	बौद्धगान, दोहाकोश के लिए मगही व्याकरण तैयार करना है (पुन 16 9.34 को वैज्ञानिक अनुशीलन, पुन 20 3 36 को काम करने के लिए लिखा)
19 3 1934	भोजपुरी के पुराने कागज पत्रो को खोजने के लिये विशेषतया राजवशों स, बलिया मे सम्मेलन कराने, तिवारी जी के लेख के छपने के बारे मे।
15 5 35	जापान के रहन सहन का विस्तृत विवरण, 'बाईसवी सदी' का प्रकाशक ढूँढिये, (23 3 36 को पुन)। भदन्त जी को भी पत्र। 'साम्यवाद ही क्यों' के कवर का प्रूफ भेजवाये।
15 9 35	रूस के रास्ते से तेहरान पहुँचा। आज अस्फहॉ जा रहा हूँ। काबुल के रास्ते लौटना होगा।
21 1 1936	आज बरियारपुर (मुगेर) जा रहा हूँ। मुगेर जिला साहित्य सम्मेलन का सभापतित्व करना है। 12 को भेंट होगी।
4 2 1936	गॉव के पुस्तकालय के लिए पुस्तके लेगे कृषि सम्बन्धी पुस्तके अवश्य रहे। शिवरात्रि मे नेपाल जाना है। निर्बलता चली गई।
27 2 36	भोटिया ऊन की लोई . . उसके बारे मे लिख दे। 'मेरी जापान यात्रा' और 'दीर्घ निकाय' के अन्तिम प्रूफ आपको देखने है। दीर्घनिकाय का इडक्स भी।
20 3 1936	'जापान' का प्रूफ देखकर लौटा दिया। अन्तिम proof देखकर print order दे दीजियेगा। दीर्घनिकाय 8 अप्रैल तक भेजूँगा, उसके अन्तिम प्रूफ को अच्छी तरह देखकर प्रिंट आर्डर कर दे। "तिब्बत मे सवा वर्ष" अलग रजिस्ट्री से भेज रहा हूँ।
23 3 1936	काठमांडो मे तिब्बत के लिये रवाना हूँगा। 'जापान यात्रा की 200 प्रतियाँ ग्राम पुस्तकालय भेज दे।
26 4 1936	तिब्बत यात्रा का वर्णन। दीर्घ निकाय का print order आपके ऊपर। पूछना कि क्या पाडे जी 'मेरी तिब्बत यात्रा' छाप सकेंगे।
2 7 1936	पिछले तीन महीनो मे ससार मे क्या हुआ, इसकी कुछ खबर नही। शरीर स्वस्थ रहा (बर्फ की वर्षा का वर्णन)
25 8 36	प्रमाण वार्तिक की एक दूसरी वृत्ति (मनोरथ) की नकल कर रहा हूँ। अक्टूबर तक लौट आऊगा।
15 11.36	15-17 दिसम्बर बलिया रहूँगा। प्रयाग कब आऊँगा, कह नही सकता।
14 12.1936	सरस्वती म लेख तब दूगा जब 4 रुपया प्रति पृष्ठ दे। पूछकर लिखना।
28 12 36	आनंद जी सारनाथ लौट गये।
9 1 1937	तुम्हारे पास शायद (नागरी प्रचारिणी में छपे जेतवन और श्रावस्ती वाले लख का reprint हो, नहीं तो कही से ढूँढ़कर ला जर्नल पेस भेज देना।
9 2 1937	प्रूफ आपके देख लेने से मुझे सुभीता होगा। डॉ0 शरवास्की का पत्र कल आया। गर्मियो मे लेनिनग्राड जाना है।

2 5 1937 पुरातत्व निबंधावली में हिन्दी मगही के विकास वाले निबंध में खड़ी हिन्दी का केन्द्र सिर्फ बिजनौर जिले को रखिये। बदायूँ ब्रजभाषा के क्षेत्र के भीतर है।

30 5 1937 तुम्हारे यहाँ 113° गर्मी है। यहाँ आनंद जी का सर्दी के मारे नाक में दम है — (ईरान से) — यह जगह 11000 फुट ऊँची है। जौ गेहूं के खेत अभी-अभी बोये हैं। आनंद जी सितम्बर तक यहीं रहेंगे। गर्म पानी मिलने पर भी हफ्ते से हफ्ते में नहाने की इच्छा रखते हैं . आशा है प्रयाग में कुछ वर्षा हो गई होगी तुम्हें गर्मी से बचने का मौका।

25 6 1937 जायसवाल साहेब की अवस्था बिगड़ रही है अत 28 को प्रयाग होते हुये पटना जाऊँगा। चिट्ठी पटना ही भेजना।

6 7 1937 गणेश पांडे से पूछें कि 'साम्यवाद ही क्या'? को छापना है या नहीं। न छापना हो तो कह दें। 400/- की कमी है।

7 7 1937 आनंद जी प्रयाग आने के लिये व्यग्र हैं, तुम्हारे ही लिये। कोई प्रकाशक ढूँढ़िये जो हमारे ग्रन्थों के द्वितीय संस्करण छाप सके। पहले पाँच सौ रुपये दे दें।

15 7 1937 पंडित श्री नारायण के द्वारा इंडियन प्रेस को मेरी पुस्तकों के प्रकाशन के लिये कहें तो अच्छा है। शीघ्र नया संस्करण चाहिए। और भी अपनी पुस्तकों का मैं कापीराइट दे दूँगा। रायल्टी पर ठीक करें जिसमें से 7-8 सौ रुपये तत्काल मिलने चाहिए।

एक बार फिर तिब्बत हो आऊँ।

इस साल कई वर्ष बाद आम मिला।

शिव प्रसाद सिंह को लिख देना कि 'तिब्बत के सवा वर्ष' और 'मेरी तिब्बत यात्रा' के अनुवाद को जितनी जल्दी हो सके, कर डालें।

24 7 1937 तिवारी जी को लिखे हैं कि तीन अध्यायों का उर्दू अनुवाद हो गया। क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो 'साम्यवाद ही क्यों' का जल्दी से उर्दू अनुवाद कर डाले।

23 7 1937 "सतमी के बच्चे" नाम से दस कहानियों का संग्रह छपा देना चाहता हूँ—कल पूरी हो जावेगी। 'विस्मृति के गर्भ' उपन्यास छप रहा है। 'जादू का मुल्क, सोने की ढाल, सतमी के बच्चे और लद्दाख यात्रा—ये चार पुस्तकें छापने के लिये हैं, किसी से बात करें। शर्त 25% रायल्टी (500/- पेशगी) और 100 कापियाँ।

24 7 1937 'ईरान' का फाइनल प्रूफ आपके पास जावेगा।

18 8 1937 4-5 सितम्बर का प्रयाग पहुँच जाऊँगा। मेरा Visa तेहरान में प्रतीक्षा कर रहा है।

गणेश पांडे से कहें 20% रायल्टी पर चारों पुस्तकें ले लें। पुरातत्व के इण्डेक्स शीघ्र दे दें।

30 8 1937 500/- रुपयों का प्रबन्ध नहीं हो सका है।

डॉ० बदरीनाथ को सूचित कर दें, .. 4-8 सितम्बर तक वहाँ रहने की सूचना पत्रों में भी दे दें। अब कुछ लेख लिखवाने हैं।

15 9 1937 "जापान" की प्रतियों को बदल कर अपेक्षित पुस्तक कनैला भेज दें।

9	स् ... [illegible]
? 10 1937	लॉ जर्नल प्रेस से कह द "जीने के लिये " के दो प्रूफ तैयार रखे। डाक्टर बद्रीनाथ को भी सूचना द दे।
13 10 1937	(ईरान से पत्र) इंडियन प्रेस स 300/- भिजवाने के लिय लिख द।
8 11 1937	अपना समाचार लिखना। पाली एम ए की तैयारी कर रहे हो क्या? शिवगामी की पढ़ाई कैसी हो रही है? सारनाथ के स्कूल के recognition की यदि खबर हो तो लिखना।
2 12 1937	लेख कई दिमाग मे है — दानखाते मे नही जावेगे। 'विशाल भारत' और 'सरस्वती' मे हर महीने लेख छपते रहेगे। एक जोड़ी जूता जरूर भेजना। अपने पढ़ने-पढ़ाने की बात लिखो।
31 3 1938	गणेश पांडे "लद्दाख यात्रा" नहीं छापना चाहते हो, तो कह दे लौटा दे। दूसरे को द देंगे।
7 4 1938	"सोवियत भूमि" लिखी जा चुकी है। लॉ जर्नल प्रेस भेजगा।
21 7 38	बहुत अच्छा है — आप पाली एम0 ए0 की तैयारी करते है। उसके बाद साल भर पेरिस रहने का निश्चय कर ले। डॉक्टर हो आवें। दृढ़ सकल्प होने पर 1500 - रुपये का कहीं न कहीं से प्रबन्ध हो जावेगा। तिब्बत की यह अन्तिम यात्रा अधिक कष्टप्रद रही।
7 6 1939	प्रसन्नता हुई कि आप पाली परीक्षा के लिये पूरी तैयारी कर रहे है। थीसिस की योजना भी ठीक है। एक बार लगकर उसे कर डालना ही अच्छा होगा। साहित्यिक काम बंद है, राजनीतिक काम मे सारा समय लग रहा है। "क्या करे" की एक कापी कनैला भिजवा दे और दो कापियाँ रख। जीने के लिय के लिए प्रकाशक ढूँढिये।
28 10 1939	'जीने के लिये' का प्रूफ देख लेना। उपन्यास मे कहीं-कहीं कानून से बचने के लिये कुछ अंश हटाना है।
27 3 1940	अचानक यहाँ से हजारी बाग भेजा जा रहा है। मुझे पुस्तको के लिय रुपया की जरूरत होगी। 500/- भजवाने का प्रबन्ध कर देना।
14 8 1940	5/8 का पत्र मिला। आप कलकत्ते चले गये और पढ़ाई मे लग भी गये। यह पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। आपको अपना सारा समय और मनोयोग देकर 'थीसिस' लिख डालनी है। लेक्चर मे जाने का मैं विरोध नहीं करता किन्तु ऐसा नहीं कि थीसिस के काम मे दीर्घसूत्रता हो। 'पुरातत्त्व निबन्धावली' को मंगला प्रसाद पारितोषिक मे भेजवा देना। मार्च के बाद से लोला के पास से कोई उत्तर नहीं आया।
2 9 1940	सांस्कृत्यायन वंश वाला लेख अंग्रेजी हिन्दी दोनो मे भेज रहा हूँ। हिन्दुस्तानी मे भेज दीजियेगा।
19.12 1940	हिन्दी साहित्य पर समालोचनात्मक ग्रंथ की आवश्यकता है। हिन्दी म केमिस्ट्री फिजिक्स पर निकली पुस्तको तथा पारिभाषिक शब्दो के कोश के नये संस्करण की सूची और पता भेज सको तो अच्छा।

3 1 94। देउला से, विधशेखर भट्टाचार्य से पूछ कि प्रमाणवार्तिक स्ववृत्ति टीका के प्रकाशन का अन्तिम निश्चय हुआ या नहीं।

अपनी पढाई के बारे मे लिखना। थीसिस लिखनी कब शुरु करोगे? 1941 म तुम्हें उसे खत्म कर देना चाहिये।

दो सेर अच्छा मीठा खमीरा तवाकू पार्सल द्वारा भजो।

20 1 1941 तुम्हारी पढाई अच्छी तरह चल रही है यह प्रसन्नता की बात है। दिसम्बर तक थीसिस का काम जरूर समाप्त हो जाना चाहिए। श्रेयासि बहुविघ्नानि का ख्याल करके मैने वैसा लिखा था। पुरानी इडोयूरोपियन भाषाओ का ज्ञान जरूरी है यह म समझता हूँ। और उसके लिये व्यय किया शक्ति बर्बाद नहीं हुआ यह मैं मानता हूँ।

मुझे एक ग्रामोफोन खरीद कर भेज दो (सैकन्डहैड ही सही, एक दर्जन रिकार्ड। "जातक" हिन्दी के जितने फाम छप चुके हो, भिजवाना।

22 3 1941 लाला की चिट्ठी आई थी। लिखना पढ़ना बद है। गर्मी बहुत पड रही है।

1 1941 19 6 का पत्र मिला। भाषा विज्ञान को एम ए लेना कुछ तो 'आटन लागा कपास' वाली सी बात है। ता भी तुम्हारी कुछ हद तक मजबूरी तथा परिश्रम बिल्कुल निष्फल भी नहीं एव गत न शोचामि" का ख्याल करके मै उसे बुरा भी नहीं कह सकता थीसिस को मन लगाकर लिखना।

साहित्यिक निबधावली' के लिये प्रकाशक खुद ढूँढ लो।

लाला और इगोर की खबर देने के बारे मे बिहार सरकार को लिख रहा हू जब घर ही नहीं तो उन्हे मँगवाने की बात कैसे लिखूँ? दर्शन के ग्रथ लिखने का काम शायद अगस्त मे शुरू करूँ।

13 9 1941 फाउटनपेन मिल गई

परीक्षा सन्तोषजनक रही, यह मेरे लिये भी सन्तोष की बात है, साथ ही मै समझता हूँ कि भाषा तत्व पर जो परिश्रम वहाँ किया होगा उसका फायदा थसिस म होगा। तुम्हारे प्रश्नो का उत्तर इस प्रकार है—

मल्ल, काशी जनपद

किसी एक स्थान की भोजपुरी को लेना चाहिए।

'वैज्ञानिक भौतिकवाद' के बारे म बातचीत हो जाने पर लिखना, 92 Elements का मुझे चार्ट चाहिये।

'साहित्य निबधावली' को भी छपवाने का इन्तिजाम कर देना किन्तु यदि उसकी वजह से तुम्हारी थीसिस के काम मे दिक्कत हो तो वैसा न करना।

25 9 1941 अच्छा है तुम थेसिस को समाप्त करो।

14 11 1941 हम लोगो ने 7 नवम्बर को भूख हड़ताल तोड दी। शायद बिहार लौटना भी पडे।

'दर्शन दिग्दर्शन' का पूर्वार्द्ध समाप्त कर दिया। अन्तिम (चौथी) पुस्तक 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' रह जायेगी।

9 12 1941 थीसिस का काम जरूर समाप्त कर डालो। ऐसा न हो कि मार्च से भी आगे काम बढ़। बाहरी परिस्थिति देखते भी अच्छा है कि तुम मार्च तक अपनी थीसिस को यूनिवर्सिटी को सुपुर्द कर दो।

मेरी पुस्तकें सम्मेलन से, कहीं से भी प्रकाशित होनी चाहिए। दूसरे प्रकाशकों से भी बात करना।

23 1 1942 थीसिस का काम अधूरा न छोड़ें।

हिन्दुस्तानी एकेडमी से छपी 'भारतीय दर्शन का इतिहास' की एक प्रति मुझे चाहिये।

3 4 1942 थेसिस की दो कापियाँ हाथ से करवा लो ... फिर आजकल के जमाने में रुपयों को वैसे काम पर खर्च करना सिर्फ फेंकना होगा।

(18 4 1942 को आनंद जी के पत्र में तिवारी जी के पास विश्व भौतिक तथा दर्शन दिग्दर्शन भेजने के लिये लिखा।)

10 6 1942 सिंह सेनापति समाप्त कर दी।

'वोल्गा से गंगा' कहानियाँ लिख रहा हूँ। थीसिस का क्या हुआ? Introduction समाप्त हुआ या नहीं, उसे डाक से ही तो कलकत्ता नहीं भेज रहे हो?

28 8 1942 'मानव समाज' का आधा छप गया।

"हुंकार" अगले सप्ताह से निकलेगा। मैं सम्पादक हुआ।

15 9 1942 सिंह सेनापति छप रहा है।

19.11 1942 'वोल्गा से गंगा' के जितने फर्मे छपे, भिजवाते रहे।

ओम प्रकाश रिसर्च स्कालर खड़ी बोली की dialect पर D-Phil के लिये खोज कर रहे हैं। उनकी रिसर्च में तुम्हें भी दिलचस्पी लेनी चाहिए।

14 6 1943 दर्शन दिग्दर्शन'-के प्रूफ देख रहा हूँ। (तिवारी जी माहेश्वरी विद्यालय, कलकत्ता में ठहरे थे।

बम्बई 28 4 1944 सरदार पृथ्वी सिंह की जीवनी लिख रहा हूँ। हिन्दी कवि सूक्ति मुक्तावली छपनी है।

23 5 1944 सूक्ति मुक्तावली में तुम्हें भी सहायता करनी होगी।

18 6 1944 सरदार पृथ्वी सिंह छपने लगा है।

5 6 1947 भारत आने के लिये मैं कितना छटपटा रहा हूँ। अगले मास के आरम्भ में यहां से प्रस्थान निश्चय है।

22 5 1948 आशा है शब्दकोश टाइप हो गया होगा। मेरे पास उसकी कापी भेजते वक्त खूब गत्ते के पार्सल में भेजें, नहीं तो टूट जावेगा।

2 6 1948 सत्यनारायण कुटीर में कभी दीपक नहीं कभी पंखा नहीं। लेखक भी मनमानी करते हैं। क्या बात है?

8 5.1949 दो मई का पत्र मिला। बड़ी प्रसन्नता हुई ये सुनकर कि 'हिन्दी भाषा की भूमिका' में हाथ लगा दिया। मैंने भी 'मधुर स्वप्न' में हाथ लगा दिया है।

50 मैने हेपी वैली मसूरी, मकान अग्रिम रुपये लेकर खरीदा है। इसीलिये खर्च मे बड़ी सावधानी की आवश्यकता है।

25 3 1951 मै राष्ट्रभाषा वाले 'चीनी स्वय शिक्षक' प्रकाशित करने के लिये उत्सुक हूँ। डाक्टर पाचौ लिखने को तैयार हैं। मै समझता हूँ यदि डाक्टर पाचौ और डाक्टर उदयनारायण तिवारी सम्मिलित हो जायँ तो काम बन जाये।

10 4 1951 चीनी स्वय शिक्षक के बारे मे एक पत्र लिख चुका हूँ। किन्तु उत्तर नही मिला।

19 4 1951 "बिहारी भाषाएँ" पर ग्रियर्सन से आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

'दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा' समाप्त हो रही है। 'कुमायूँ परिचय' टाइप हो रहा है। वहाँ दूसरे प्रकाशक से बात करे।

23 4 51 कमला परियार का विशारद परिणाम निकल गया , पाली में अनुत्तीर्ण हो गई पाली कापी का फिर से दिखवाइये। बेचारी का एक वर्ष बर्बाद हो जायेगा।

26 11 1951 घर बॉधने का बोझ अब मालूम हो रहा है। इनकम टैक्स वालो ने 5800/- टैक्स लगा दिया। 'मध्य एशिया का इतिहास' समाप्त कर दुहरा रहा हूँ। 'रूस मे पचीस मास' आज समाप्त होने जा रहा है। गढ़वाल परिचय, कुमाऊँ परिचय दक्खिनी हिन्दी काव्य धारा रायल्टी के अग्रिम पाने के झझट मे पड़ी हैं।

क्या कर रहे हो? लक्ष्मी नारायण क्या कर रहे है? उच्चो कैसे है?

2 7 1953 पटना से आपके जामाता के आने की प्रतीक्षा करते रहे। चिरजीव लक्ष्मी नारायण के ब्याह के लिये बधाई।

18 7 1956 मैं पिछले छह महीनो से 'ऋग्वैदिक आर्य' और अकबर लिखने मे व्यस्त रहा।

6 12 1961 अप्रैल तक के लिये मैंने विश्वविद्यालय से छुटटी ले ली है। फरवरी के अन्त मे सिहल चला जाऊँगा। वहॉ से भी बच्चो को पैसे भेजता रहूँगा।

मेरे नाम डा0 तिवारी द्वारा जबलपुर से लिखे गये पत्र

मेरे पास आये पत्रो के आधार पर (6 3 1962 से 16 2 72 तक)

27 4 1963 प्रसन्नता की बात है कि आप मृगावती सम्मेलन को दे आये।

5 4 1963 बिहारी सतसई वाला कार्य भी समाप्त करे।

19 3 1963 विश्व भारती यूनिवर्सिटी (शान्ति निकेतन) के कार्य से एक सप्ताह के लिए जा रहा हू। पत्नी भी जावेगी।

18 7 1963 तीन दाँत उखड़वाने पड़े।

10 12 1964 15 दिसम्बर को पूने जा रहा हूँ। 24 दिसम्बर की रात को भोपाल जाना है। 30 दिसम्बर को प्रयाग पहुँचूगा।

10 6 1964 3 जून को त्रिवेन्द्रम से मदुरा आये — सीधे रामेश्वर गये। रामेश्वरम से धनुष कोटि से मदुरा से त्रिचनापल्ली, त्रिचनापल्ली से 8 जून को मद्रास।

17 जून को कटक से पुरी कोणार्क। 14-20 जून मैसूर मे भाषण देना तथा 25 जून तक प्रयाग पहुँचेगे।

3.7.1964 — इधर विक्रम विश्वविद्यालय के कार्य से दो दिनों के लिए उज्जैन तथा भोपाल चला गया था।

विहारी सतसई वाला कार्य अब शीघ्र समाप्त होना चाहिए।

10.5.65 — Summer School of Linguistics पचमढ़ी 9 मई से 12 जून तक चलेगा। वहाँ से 14 जून को इलाहाबाद पहुँचूँगा।

24.5.1965 — डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा जबलपुर के वी. सी. हो गये।

7.2.1965 — गौंडा वाली पुस्तक यहाँ मिल गई है। 20 जुलाई को प्रातः अलोपीबाग आकर ले लें।

16.8.1965 — इधर मैं एक सप्ताह तक उदर-विकार से पीड़ित था। तीन दिनों से खूब वृष्टि हो रही है।

21.9.1965 — तुम्हारी (रामकुमारी की) अम्मा यहाँ से 27 सितम्बर को इलाहाबाद जा रही हैं।

23.12.1965 — आज मैं अन्नामलाई विश्वविद्यालय के सेमिनार में जा रहा हूँ। 4-5 जनवरी तक लौटूंगा। 7 जनवरी को दीक्षान्त समारोह हो रहा है। (15 दिन बाद लौटकर आये)

"तुम्हारे यहाँ जैसा भी चुनाव हो उसकी चिन्ता मत करना। तुमको रीडर बनने तथा आगे बढ़ने से रोक कौन सकेगा? प्रत्येक मनुष्य के जीवन का एक ढाँचा (Structure) होता है और उसी के अनुसार वह जीवन में आगे बढ़ता है। जब उन्नति का समय आता है तब कोई शक्ति रोक नहीं पाती।"

13.10.1967 — 4 अक्टूबर से नवरात्र का आरम्भ हुआ था, मैंने यहाँ सप्तशती का पाठ 4 अक्टूबर से ही आरम्भ किया था और कल 12 अक्टूबर को समाप्त किया।

16 अक्टूबर की रात में प्रयाग पहुँचने का कार्यक्रम बना रहा हूँ।

हम लोग अब अपने जीवन की अन्तिम अवस्था में हैं और ईश्वर की कृपा से ही एक-एक दिन कटते जा रहे हैं।

27.8.1968 — तुम्हारी (राम कुमारी की) माँ अत्यधिक कमजोर हो गई हैं। 17 दिनों तक अस्पताल में रहकर ही उन्हें कल यहाँ लाया। (नोट : 10 अगस्त को दिल के नीचे धड़कन हुई।)

20.1.1969 — इधर मैं सागर विश्वविद्यालय के माडरेशन के सिलसिले में सागर में था। डॉ0 कृष्णदत्त वाजपेयी के घर ठहरा था। डॉ0 भगीरथ मिश्र तुम्हारी (राम कुमारी की) थीसिस की प्रशंसा कर रहे थे ...

25 जनवरी को प्रयाग पहुँच रहा हूँ। 27 जनवरी को लखनऊ विश्वविद्यालय में लिंग्विस्टिक्स के प्रोफेसर का चुनाव है।

13.8.1969 — आशा है तुम्हारी पुस्तक अब प्रकाशित हो गई होगी।

4.9.1969 — 27 अगस्त को तुम्हारी (रामकुमारी की) माँ का रक्तचाप कम हो गया था।

27.9.1969 — दशहरे में प्रयाग आने का कार्यक्रम बना रहे हैं।

14 2 1970	26 फरवरी से अलोपीबाग मे श्रीमद्‌भागवत का सप्ताह आरभ होने जा रहा है। 4 मार्च को हवन, 5 मार्च को ब्रह्मभोज तथा 7 मार्च को मित्रो का भोज है।
28 3 1970	29 3 1970 को इलाहाबाद पहुंच रहा हू। 30 मार्च को तूफान से पटना जाऊँगा। मै अपने साथ "तुलसी शब्द चिन्तन" (जबलपुर विश्वविद्यालय का एक शोधनिबन्ध) ले आ रहा हूँ। घर से तुम उसे मॅगा लेना।
28 8 1970	डॉ0 शिवगोपाल जी का पत्र मिला। 31 अगस्त को उन्हे दिल्ली जाकर 1 सितम्बर मे अपना कार्यभार सभालना है।
12 9 1970	(दिल्ली पते पर) चि0 डॉ0 शिवगोपाल जी सस्नेह आशीर्वाद आपका 3 सितम्बर का पत्र मिला जीवन म थोडी बहुत सुविधा-असुविधा होती रहती है जिसके कारण सुख-दुख भी होता है किन्तु इसे बहादुरी से झेल जाना चाहिए।
2 10 1970	इस बार हम दशहरे पर पयाग नही जा रहे।
12 11 1970	7 नवम्बर को तुम्हारी (राम कुमारी की) माँ की तबियत खराब हो गई। बाई पसली म धडकन होने लगी जिससे दर्द हो गया।
18 11 1970	डॉ0 शिवगोपाल जी 25 नवम्बर की रात मे मेरे साथ ही मोती लाल बनारसी दास के यहाँ भोजन कर और रात मे वहीं रह जायॅ।
7 12 1970	23 दिसम्बर का दिल्ली मे साहित्य अकादमी की बैठक है।
15 12 1970	17 दिसम्बर को बम्बई मे All India Linguistic Conference है। मै आज यहाँ से बम्बई जा रहा हूं। वहाँ 18-19 जनवरी को भाषा-विज्ञान की संगोष्ठी है।
29 12 1970	अब तक आयुष्मान बबुआ का अन्नप्राशन सम्पन्न हो गया होगा। पूने-बम्बई की यात्रा से लौटने के बाद 22 से 25 दिसम्बर तक सख्त बीमार था। मुझे लगातार वमन (कै) होता था। हम लोग फरवरी के अतिम सप्ताह तक इलाहाबाद पहुँचने का कार्यक्रम बना रहे है।
2 1 1971	बबुआ का अन्नप्राशन कर डाले।
28 1 1971	5 फरवरी की सध्या को मोती लाल बनारसी दास के यहाँ चले आवें तो भेट हो जायेगी। रात म वही रह जाइयेगा।
10 4 1971	इधर 5 दिनो के लिए पटने चला गया था। वहॉ बिहार राष्ट्र भाषा म कुछ भाषण देना था।
20 6 1971	21-22 जून को मै साहित्य अकादमी की बैठक म भाग लेने के लिए दिल्ली मे ही था। 6 जून को 3 बजे हृदयगति रुक जाने से डॉ0 राजबली पाण्डेय का देहान्त हो गया।
8 9 1971	यह प्रसन्नता की बात है कि डॉ0 शिवगोपाल जी दिल्ली का कार्य सम्पन्न करके पुन प्रयाग आ रहे हैं।

हम दोनो दुर्गापूजा के अवकाश में 25 सितम्बर को प्रयाग पहुँचने का कार्यक्रम बना रहे हैं।

16 2 1972 शनै शनै बुढ़ापा आ रहा है अतएव कुछ न कुछ तो होगा भी। वैद्य की दवा से लाभ है किन्तु थोड़ा ही।

मद्रास में रीनू के आपरेशन के समय के पत्र (1977)

29 9 1977 राधेश्याम द्विवेदी अपनी पत्नी के साथ चिरंजीव नर्सिंग होम आये और वह तार लाये जिसमे रीनू के सफलतापूर्वक आपरेशन का उल्लेख था।

(24 सितम्बर को तुम्हारी माता बेहोश हो गई थी)

30 9 1977 आयुष्मती मीनू बी0 एस-सी0 मे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुई है। उसका नाम एम0 एस-सी0 केमिस्ट्री मे लिखाया जा रहा है।

1 10 1977 डॉ0 सुन्दरम आप लोगो से अवश्य मिलेगे।

11 10 1977 मेरे प्रिय शिष्य डॉ0 सुन्दरम आपकी सहायता कर रहे है जानकर हर्ष हुआ।

12 10 1977 कल से नवरात्र का आरम्भ है और कलश स्थापना का दिन है अत 10 बजे तक तो कील, कवच एव अर्गला के साथ पाठ करने मे लग जाऊँगा। इसके बाद एक घटा विश्राम होगा।

28 10 1977 आपने भगवान व्यंकटेश्वर का दर्शन तिरुपति जाकर कर लिया यह बहुत अच्छा हुआ।

4 11 1977 मेरी ओर से डॉ0 एन0 सुन्दरम के प्रति आभार व्यक्त करे। उनके साथ होने से आप लोगो को काफी सुविधा रही, इससे मै अत्यन्त प्रसन्न हूँ।

12 नवम्बर शनिवार को हम लोग कावेरी गगा के पहुँचने पर स्टेशन पर उपस्थित रहेगे।

मेरे नाम डॉ0 तिवारी द्वारा विदेश से लिखे पत्र

फिलाडेल्फिया

24 सितम्बर, 1956

2 सितम्बर से पत्र लिखना शुरू किया और 23 सितम्बर तक 4 पत्र लिख चुका किन्तु घर से एक पत्र का भी उत्तर नहीं आया . मुझे सबसे चिन्ता तुम्हारी (रामकुमारी की) माँ की है। उनको वात रोग के लिए मै इजेक्शन दिलाने को डॉ0 ब्रज बिहारी के यहाँ लिवा जाता था। चि0 लक्ष्मी नारायण के स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे भी मै बहुत चिन्तित हूँ। मै कैलीफोर्निया जाकर उनके यहाँ आने का बन्दोबस्त करूँगा।

यहाँ पढ़ने लिखने की बड़ी सुविधा है। सेकण्डरी शिक्षा (हाई स्कूल शिक्षा) उत्तीर्ण होकर छात्र सीधे विश्वविद्यालय मे प्रविष्ट हो जाते है। हाई स्कूल के बाद माँ बाप लड़को की पढ़ाई का खर्च बिल्कुल नही देते। यहाँ इतना काम है कि पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय के प्राय 16 हजार लड़के स्वय कमाते, खाते और पढ़ते हैं। लड़के दो तीन घटे प्रतिदिन काम करके प्राय 150-200 डालर तक महीने कमा लेते है।

अधिकांश लड़के तो ठाट बाट से रहते है और उनके पास अपनी-अपनी मोटरकारे है। परिवार

के साथ यहा रहने मे विशेष सुविधा है यह इतना स्वतत्र सुरक्षित तथा समृद्ध देश है कि मैंने तो कल्पना भी नही की थी।.. यहॉ पढाई का ढग, खान पीने की व्यवस्था अच्छी है और फिर यदि आदमी संयम और कायदे से रहे तो रुपये भी कमा सकता है।

मैने 'भारत' तथा 'अमृत पत्रिका' में अपनी यात्रा का विवरण भेजा है। कल पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय के सम्बन्ध मे एक लेख (सचित्र) 'सरस्वती' मे भी प्रकाशित करने के लिए भेजा है।

इधर श्री राहुल जी सितम्बर में भारत लौटने वाले थे, यदि लौट आयें हों तो उनका पता लिखना।

पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय फिलाडेल्फिया

14 10 1958

कल अपना यात्रा सम्बन्धी दूसरा लेख भेजा..

डॉ0 शिवगोपाल जी निराला जी के यहाँ तो कभी-कभी जाते होगे। पूज्य निराला जी से मेरा प्रणाम कहे और उनका कुशल समाचार लिखें।

मेरे अध्ययन का काम जोरो से चल रहा है। सोमवार से वृहस्पति तक प्रतिदिन विश्वविद्यालय जाना पडता है। यहाँ मुझे फोनेटिक्स का अच्छा ज्ञान मिल रहा है।

फिलाडेल्फिया

25 नवम्बर, 1958

इधर मै Anthropological Society तथा South Asian Language कमेटी की बैठक म भाग लेने वाशिंगटन चला गया था।

.....मुझे निराला जी की एक उत्कृष्ट कविता चाहिए। एक पृष्ठ पर मूल कविता लिखी हो, दूसरे पृष्ठ पर उसका अंग्रेजी मे अनुवाद हो। यदि निराला जी कोई ऐसी कविता का अनुवाद कभी लीडर अथवा किसी अन्य पत्रिका में छपा हो और उसकी कटिंग तुम्हारे पास हो तथा आसानी स मिल जाय तो उसे भेजना।

इसी प्रकार श्री सुमित्रानन्दन पन्त तथा श्रीमती महादेवी वर्मा की कविताएँ तथा उनका अनुवाद भी मुझ चाहिए।

फिलाडेल्फिया

24 जनवरी, 1959

मैने डॉ0 बनारसी प्रसाद सक्सना को कभी पत्र लिख दिया था कि विशेष परिस्थिति मे बिहारी सतसई की प्रतियाँ तुम्हे दे दे .. प्रतियो का वंशवृक्ष भी तैयार करना पड़ेगा।

मैं 22, 23 अगस्त तक भारत अवश्य पहुच जाऊँगा। मैं चाहता हूँ कि जनवरी-फरवरी 1960 तक तुम (रामकुमारी मिश्र) अपनी थीसिस अवश्य द दो।

यहाँ का मेरा काम 20 जनवरी को समाप्त हो गया। आज एक बक्स घर, कलकत्ते होते हुए भेजा है। पैक करने मं बडा कष्ट हुआ। फिर जहाज का भाड़ा लगभग 50 डालर लगेगे।

मै 26 जनवरी को इधर के विश्वविद्यालयों-येल हर्नर्फ, हार्टफोर्ड आदि का निरीक्षण करने जा रहा हूँ।

5 फरवरी को 9 बजे के वायुयान से यहाँ से रवाना होकर उसी दिन 9 बजे शिकागो पहुँच रहा हूँ। 5 से 9 तक शिकागो मे रहना है।

9 फरवरी को 11-35 पर शिकागो से पुन॰ वायुयान से उडना है और उसी दिन संध्या समय सैनफ्रासिस्को को पहुँच जाना है। वहाँ से बर्कले जाना है। बर्कले में ही कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय है। 10 जून तक यही रहना है। अब पत्र वही लिखना।

हमारे Foundation वालो का कहना है कि मै बराबर अन्य विश्वविद्यालयो मे जाकर वहा के Linguistics के पठन-पाठन का निरीक्षण करूँ, परसो 300 डालर का चेक खाली भ्रमण करने के लिए आया है।

बर्कले, कैलीफोर्निया

मार्च 3, 1959

मै अपने फाउडेशन के आदेशानुसार पूर्वी अमेरिका के विश्वविद्यालयो को देखने गया। मैं न्यू हैवन मे येल विश्वविद्यालय देखने गया। इसी के पास हार्टफोर्ड सेमिनरी का विश्वविद्यालय था जहा डॉ0 ग्लीसन से मिलना था। . वहाँ मै कालीचरण बहल के साथ ठहरा था।

5 फरवरी को मैने फिलाडेल्फिया से बिदाई ली और मैंने सीधे सैनफ्रासिस्को का हवाई जहाज से टिकट लिया। फिलाडेल्फिया से 1000 मील पश्चिम शिकागो है और लगभग 3000 मील पश्चिम सैनफ्रासिस्को। चूंकि शिकागो विश्वविद्यालय से मुझे निमत्रण मिला था अत॰ मैं 5 फरवरी को आ गया। 6 फरवरी को मै शिकागो शहर तथा यहाँ का दर्शनीय स्थान देख आया।

7-8 फरवरी दावत-जाफत मे व्यतीत हुआ और मै 9 फरवरी को पुन वायुयान से सैनफ्रांसिस्को के लिए यात्रा करने के लिए तैयार हुआ किन्तु उस दिन देखा कि बर्फ की आँधी आ गई है 9 फरवरी को कोई भी हवाई जहाज शिकागो हवाई अड्डे पर नही उतरा 10 फरवरी को विक्षुब्ध प्रकृति कुछ शान्त हुई और मुझे यहाँ वायुयान मिल गया। उसी दिन मै सैनफ्रांसिस्को आ गया। हवाई अड्डे पर डॉ0 गुम्पर्ज अपनी मोटर लिए खडे थे। उसके साथ बर्कले आ गया। सैनफ्रांसिस्को से यह 20 मील दूर है। यहाँ की आवोहवा बहुत अच्छी है। विश्वविद्यालय के दरवाजे पर हो कार्लटन होटल है जहाँ ठहरा हुआ हूँ। भोजन पास के इटरनेशनल हाउस मे करता हूँ जहाँ श्री जगदेव चौधरी 24 फरवरी को आये। मुझे ठहरने के लिए सत्तर डालर यहाँ देने पड़ते है।

मैं 10-15 जून तक यहाँ रहूँगा और मेरा पता यही रहेगा। इसके वाद Summer School of Linguistics मे जाना है।

फिलाडेल्फिया की अपेक्षा यह प्रदेश हरा भरा है तथा सुहावना है। चारो ओर देवदारु के वृक्ष है। यहाँ बर्कले मे तथा सैनफ्रासिस्को मे रामकृष्ण मिशन का वेदान्ताश्रम है जहाँ रविवार को वेदान्त पर भाषण होते है। यहाँ नियमित रूप से जाता हूँ।

लिंग्विस्टिक सर्वे के अनुवाद के प्रकाशित होने की बात तो कई व्यक्तियो ने लिखी है

एक बात और Modern Indian Literature की जो गोष्ठी यहाँ होने वाली थी और जिसके लिए तुमने निराला, पन्त तथा महादेवी की मूल कविताएँ तथा उनका अंग्रेजी अनुवाद भेजा था वह इस महीने के अन्तिम सप्ताह में 23, 24 मार्च को अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में होगी। मुझे पुन वायुयान से 3000 मील की यात्रा करनी पडेगी। यदि जयशकर प्रसाद की किसी कविता के मूल तथा उसके अंग्रेजी अनुवाद को भेजते जो अच्छा था।

मृगावती के सम्बन्ध मे श्री प्रहलाद दास को शीघ्र पत्र लिखूँगा।

बर्कले

अप्रैल 16, 1959

गत 22 मार्च को अमरिका की राजधानी वाशिंगटन (यहाँ से 2400 मील दूर) गया था। वहाँ साउथ एशिया कमेटी का वार्षिक अधिवेशन था। वहीं मुझे अपना निबन्ध The traditional value in Modern Hindi Literature पढ़ना था। मैंने अपने को प्रसाद, निराला, पन्त तथा महादेवी तक ही सीमित रखा। परमेश्वर की दया से निबन्ध अच्छा बन गया था और लोगों को पसन्द आया। निबन्ध अंग्रेजी में था।

वहां से मैं 26 मार्च को लौटा। 27 मार्च को यहाँ से लगभग 500 मील दूर लास ऐंजीलेस चला गया था। यहां प्रशान्त महासागर के तट पर स्थित सैडियागो, एनसिनक्स, माउटवाशिंगटन, हालीवुड आदि सुन्दर स्थानों को देखा। यात्रा में लगभग 8 दिन लगे।

15 जून तक यहाँ रहूँगा। इसके बाद Summer School of Linguistics के लिए मिशिगन जाऊँगा। वहाँ 25-26 जुलाई तक रहना है तथा उसके बाद लन्दन के लिए चल देना है।

हिन्दी प्रोफेसर का Application फार्म मिला, भरकर भेज दूँगा।

'अन्तर्वेद' पत्रिका मिली। बहुत सुन्दर निकली है। इसके Folklore तथा anthropology की बहुत अच्छी सामग्री है। भारत में इसका क्या मूल्य है किन्तु यहां वाले इसका महत्व जानते हैं। मैंने आदि से अन्त तक पढ़ डाला। एक प्रति लाइब्रेरी को दे दिया, दूसरी डॉ0 गुम्पर्ज को तथा तीसरी डॉ0 रामकरण शर्मा ले गये।

अच्छा किया 4 प्रतियाँ भेजीं।

मैं अपने साथ Folklore तथा anthropology की काफी पुस्तकें ला रहा हू।

भारत आकर खूब काम करना है।

ऐन अर्बोर (मिशिगन)

25 जून, 1959

मैं बर्कले से 16 जून को डॉ0 गुम्पर्ज के साथ उनकी मोटर पर ऐरिजोना स्टेट के टूसन नगर में चला गया था। ऐरिजोना बर्कले से लगभग 1000 मील दूर है। इतनी लम्बी यात्रा मैंने कार से इससे पहले नहीं की थी। मार्ग रेगिस्तान होकर था और कहीं-कहीं 118° की गर्मी पड़ रही थी और इलाहाबाद की गर्मी की याद दिलाती थी किन्तु रात बहुत सुखद मालूम पड़ती थी, वैसी ही जैसी जयपुर में होती है।

टूसन से लगभग 2500 मील शिकागो तक साउथ पैसिफिक रेलवे से आया, लगभग 40 घंटे लगे अब एक महीने (ऐन अर्बोर) यहीं रहना है। 27-28 जून तक यह देश छोड़कर वायुयान से लन्दन पहुँच जाना चाहता हूँ। या तो लन्दन फ्रांस-रोम बम्बई होते हुए या लन्दन, जर्मनी, मास्को-ताशकन्द होते हुए दिल्ली आऊँ।

उधर दो रूसी तरुण भारत आये थे, एक का नाम था चर्नीकाव और दूसरे का वर्खुर्दारोफ।

इधर अमरिका में इतना घूम लिया कि अब कहीं भी जाने को जी नहीं चाहता। यहाँ मेरे पास ही कलकत्ते के श्री सुहास चटर्जी हैं—कलकत्ता विश्वविद्यालय के भाषाशास्त्र के एम0 ए0 हैं।

यहाँ बर्कले में 13 जून को गोरखपुर विश्वविद्यालय के वी0 सी0 बी0 एन0 झा आये थे।

बिहारी सतसई तथा मृगावती का काम भली-भॉति हो गया, इससे बहुत प्रसन्नता हुई। अब वहाँ आकर तुम्हारी (रामकुमारी को) थीसिस का काम भी शीघ्र सम्पन्न करना है . अब तो इलाहाबाद मे पानी यदा कदा बरसने लगा होगा, इससे कुछ ठंड हो गई होगी। यहाँ तो गर्मी का नाम भी नही है और बिजली के पखे की शायद कभी यहॉ जरूरत ही नही पडती।

मीनू को सीरियल फुड दो, शायद सिविल लाइन्स मे मिले। मै प्रसन्न हूं।

अन अर्बोर (मिशीगन)

जुलाई 27, 1959

कल सध्या समय 3 45 के वायुयान से अमेरिका से विदाई लेकर लन्दन चला जाऊँगा। 28 जुलाई को 11 बजे लन्दन पहुँच जाऊँगा। 6 अगस्त तक लन्दन मे रहूँगा। पुन पेरिस (फ्रास), जनेवा ज्यूरिख (स्वीटजरलैड), स्टुटगार्ट, म्यूनिक (जर्मनी) होते हुए 19 अगस्त को वियना (आस्ट्रिया) पहुँच जाऊँगा। दो दिन वियना मे रहकर 21 अगस्त को मास्को पहुँचूँगा और 27 अगस्त तक वहाँ रहकर 28 अगस्त शुक्रवार को 8 बजे रात को एअर इडिया से दिल्ली के लिए रवाना हूँगा और ताशकन्द होते हुए 29 अगस्त को 12 बजे दिल्ली पहुँचूँगा।

पुन: 29 अगस्त की रात को जनता से दिल्ली से रवाना होकर 30 अगस्त को प्रात: काल प्रयाग पहुँच जाऊँगा। यही कार्यक्रम है।

ज्यूरिख

15 अगस्त, 1959

7 अगस्त को लन्दन से पेरिस आया और वहॉ से जिनीवा होते हुए ज्यूरिख पहुँचा हूँ। कल यहॉ से स्टुटगार्ट जाऊँगा। पुन म्यूनिक, वियना होते हुए 21 अगस्त को 2-15 PM के आस्ट्रियन एअर लाइन्स के फ्लाइट न0 901 से वियना से प्रस्थान करूँगा और उसी दिन 10 बजे रात मे मास्को पहुँच जाऊँगा। इडियन इसटीटयूट के डाइरेक्टर को मेरे पहुँचने का समय तथा फ्लाइट नंबर आदि एयर लेटर भेज देना। मैं प्रसन्न हूँ।

छात्रो के नाम डॉ0 तिवारी के पत्र (डॉ0 श्रीधर मिश्र द्वारा मेरे पास प्रेषित)

'गुरुवर डॉ0 उदय नारायण तिवारी ने न केवल प्राध्यापन काल मे अपने पत्रों द्वारा लेखन शोध आदि के लिए मार्ग-दर्शन किया, बल्कि जीवन के विषम संकट काल मे भी उन्होंने अपने पत्रों द्वारा मेरा मार्ग दर्शन किया, साथ ही धीरज, साहस, आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाने और कुछ पुस्तके पढ़ने के लिए कहा। उनकी दृष्टि और पद्धति बडी मनोवैज्ञानिक थी। वे अपने छात्रो को अपना अग मानते थे। इसलिए उनका कल्याण चाहते थे, उनकी उन्नति चाहते थे! इसलिए गुरुवर डॉ0 तिवारी के छात्रो को लिखे पत्रो का विशेष अर्थ महत्व है। वे पत्र साहित्य के सार्थक उदाहरण है। जैसे प0 जवाहर लाल नेहरू द्वारा अपनी पुत्री इन्दिरा गांधी को लिखे पत्रो का सग्रह 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' सामान्य पत्र न होकर जीवन, जगत, ज्ञान के पत्रक है, उसी प्रकार डॉ0 तिवारी जी द्वारा अपने छात्रो को लिखे पत्र अध्ययन, अध्यापन, शोध, लेखन, शिक्षा जगत मे पत्रक हैं। इन पत्रो मे जीव शिक्षा प्राध्यापन आदि के सूत्र मिलेंगे यहाँ केवल गु [illegible] डा0 ति [illegible] द्वारा मुझे लिखे कुछ पत्रों का ही उल्लेख करूँगा

पत्र 1 अप्रैल 1974

गुरुवर डॉ0 तिवारी जी का अप्रैल 74 का एक पत्र है, जिसमे उन्होने मुझे डी0 लिट् उपाधि के लिए शोध कार्य करने, इसकी आवश्यकता तथा अनुसधान की शिक्षा दी है। गुरुवर ने लिखा कि अब तक जो शोध कार्य हुए है, उन्हे देख लेना। उस वर्ष गुरुदेव ने दक्षिण भारत की यात्रा मे एक रात मेरे निवास (12, त्रिपाठी सदन, जोगेश्वरी, बम्बई 19) मे विश्राम किया था। उन्होने समीप से देखा कि मै जीवन के कटु यथार्थ से सघर्ष कर रहा हूँ। 13 जून, 1970 को बच्ची के जन्म के दूसरे दिन मेरी पत्नी का हृदय आघात से निधन हो गया। परिवार पर जैसे बिजली गिरी हो! अपनी स्थिति क्या लिखूँ? मेरी स्थिति समीप से देखकर गुरुवर ने लिखा, "एक बात और। मन की वृत्तियो काम, क्रोध आदि से सघर्ष मत करो, अपितु उन्हे बदलने की कोशिश करो। इधर पाकेट सिरीज मे आचार्य रजनीश की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है—'अन्तर्यात्रा', इसे अवश्य पढ़ो।

गुरुवर डॉ0 तिवारी जी एक दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक ढग से जीवन और घटनाओ का विश्लेषण करते थ और समझते थे।

पत्र 2 23-4 74

गुरुवर ने अपने इस पत्र में लिखा कि अभी परसो ही तुम्हे पत्र लिख चुका हूँ। अब तुम डी0 लिट् के अधिनिबंध की तैयारी में जुट जाओ और यथाशीघ्र (दो वर्ष के भीतर) यह उपाधि प्राप्त कर लो। राजनीति मे पडकर उखाड-पछाड करने की अपेक्षा अध्ययन में सलग्न रहना श्रेष्ठ है।

गुरुवर ने यह भी लिखा कि मैंने अपने पिछले पत्र मे लिखा है कि चित्तवृत्तियो से लड़ो नही, उन्हे परिवर्तित करो। आचार्य रजनीश की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है -- "अन्तर्यात्रा। पाकेट बुक सिरीज म, इसका दाम बहुत कम है। अवश्य पढो। बम्बई मे इस बार तुम्हारे घर जाकर बहुत सुख मिला। बच्चों को आशीर्वाद।

शिक्षा, शोध के वर्तमान सदर्भ में इसका विशेष महत्व है। गुरुवर परम्परावादी ही नहीं, एक आधुनिक जीवन्त व्यक्ति थे। उनके पत्र सूत्रवत् होते थे। उनका जीवन नियमित था।

पत्र 3 - सन 1977 के लगभग

सन् 1977 के लगभग जब मैंने गुरुदेव डॉ0 तिवारी जी को सूचित किया कि डी0 लिट0 का शोध प्रबंध 'हिन्दी गद्य साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' का लेखन पूर्ण हो गया तो उन्होंने लिखा कि इस सवाद से अत्यन्त हर्ष हुआ कि तुम्हारा डी0 लिट का अधिनिबध समाप्त हो गया। अपनी पत्नी को भी तुम्हारा पत्र सुना दिया। वह बहुत प्रसन्न हुई। दृढ सकल्प तथा निष्ठापूर्वक जो कार्य किया जायेगा, वह अवश्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होगा। अब तुम्हे ज्ञात होगा कि बम्बई जैसे कोलाहल-पूर्ण नगर म भी शान्तिपूर्वक कार्य किया जा सकता है। वास्तव मे मनुष्य के लिये आतरिक शान्ति की आवश्यकता है।

फिर इलाहाबाद जा कर गुरुवर को शोध प्रबध दिखलाया। गुरु परिवार अपने छात्रो को अपने परिवार का सदस्य ही मानता था। उनके सुख-दुख से वे प्रभावित होते थे। महानगरों के प्राध्यापको, लेखको, चिन्तको को गुरुवर डॉ0 तिवारी जी के इस पत्र से दिशा मिलेगी।

पत्र 4 14 7 1979

मई, 1979 मे मुझे डी0 लिट् की उपाधि मिली और उसी वर्ष जून मे मेरी पुत्री नीला का विवाह सम्पन्न हुआ, जो दुनिया का सबसे कठिन काम है, इन दोनो शुभ समाचारो से प्रसन्न होकर गुरुवर डॉ0 तिवारी जी ने 14 7 1979 को आशीर्वाद, स्नेह, प्रोत्साहन भरा पत्र लिखा कि तुम कर्मठ व्यक्ति हो और सफलता सदैव कर्मठ व्यक्तियो को ही मिलती है। अधिनिबंध के साथ तुमने अत्यधिक परिश्रम किया था। तुम्हें द्विगुणित सफलता मिली। इस वर्ष तुम कन्या से विवाह से मुक्त हुए और डी0 लिट् की उपाधि भी प्राप्त हुई, ये दोनों उपलब्धियाँ एकसाथ मिली। यह परम सुख की बात है। 2 जुलाई मे मैने जीवन के सतहत्तरवे वर्ष मे प्रवेश किया है। अब बुढ़ापे का भार मालूम पड़ने लगा है। पत्नी दो वर्ष मुझ से छोटी हैं। वह पचहत्तर वर्ष की हैं। वह पहले से बेहतर हैं किन्तु चारपाई से उठकर वह जमीन पर चल नहीं पाती यह दुख की बात है किन्तु अपना वश ही क्या है?

गुरुवर दार्शनिक थे। वे आदरणीय डॉ0 राजेन्द्र बापू के विचारो के पक्षधर थे। गुरुवर कहा करते थे —

हारिये न हिम्मत, बिसारिये न हरि नाम।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये।।

आज भी इस पत्र मे अध्ययन, शोध तथा जीवन सत्य प्रकट हुआ है। यह पत्र हमसे कुछ कहता है।

पत्र 5 15.6.1980

गुरुवर ने मेरी पुत्री नीला के गौना होने तथा मुझे डी0 लिट उपाधि की प्राप्ति से अति प्रसन्न होकर यह पत्र लिखा कि बेटी का गौना हो गया और वह अपने घर चली गयी। इस समाचार से प्रसन्नता हुई। कन्या का पति-गृह मे रहना ही समीचीन है। तुम अत्यंत कर्मठ और भाग्यशाली हो। एक ओर कन्या का विवाह सुचारु रूप से सम्पन्न हो गया दूसरी ओर डी0 लिट् की उपाधि भी मिल गयी। यह सब भगवान की कृपा है।

हम दोनो (मै तथा मेरी पत्नी) सम्प्रति ठीक है। पके आम का क्या ठिकाना? न जाने कब डाल से गिर पड़े। इसके लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। , लड़के की पढ़ाई पर बराबर ध्यान रखो और बीच-बीच मे पत्र लिखा करो।

गुरुवर का यह पत्र कई दृष्टियो से महत्वपूर्ण है। इससे दीन-दुनिया और अध्यात्म की शिक्षा मिलती है। गुरुवर शुभ कार्य की सराहना करते थे। इसके साथ ही कर्त्तव्यबोध के लिए सचेत भी करते थे। सतो के कथन के अनुसार गुरुवर डॉ0 तिवारी जी सच्चे, कुशल, निर्माता-कुम्हार के एक उदाहरण थे। सतो ने ठीक कहा है—

गुरु कुम्हार सिष कुम्भ है, गढ़-गढ़ काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दे, बाहर बाहै चोट।।

पत्र 6 19 9 1983

मेरे पुत्र अनिल कुमार का विवाह हिन्दी गद्य के प्रथम चार लेखको मे से एक श्री सदल मिश्र के परिवार मे सम्पन्न हुआ। इस शुभ समाचार से प्रसन्न होकर गुरुवर डॉ0 तिवारी ने लिखा कि तुम बड़े भाग्यशाली हो कि ऐसे अच्छे कुल मे विवाह हुआ। मैंने अपने एक शिष्य (डॉ0 नागेन्द्र नाथ

पाण्डेय) से सदल मिश्र पर पी0 एच0 डी0 की थीसिस लिखवाई है। उसने यह सिद्ध किया है कि सदल मिश्र ने ही गिलक्रिस्ट को सबसे पहले खडी बोली का नाम सुझाया। इसके अतिरिक्त उसने यह भी सिद्ध किया है कि सदल मिश्र ही हिन्दी गद्य, विशेषकर फोर्ट विलियम कालेज के, गद्य प्रवर्तक है

कविवर प्रदीप जी को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई थी कि मै डॉ0 उदयनारायण तिवारी का शिष्य हूँ। उन्होंने सगर्व कहा कि मै भी डॉ0 तिवारी जी का शिष्य रहा हूँ। उन्हे मेरा प्रणाम लिखियेगा। कवि पदीप जी का प्रणाम स्वीकार करते हुए गुरुवर डॉ0 तिवारी जी ने लिखा कि कविवर श्री प्रदीप से मेरा स्नेहसिक्त आशीर्वाद कहना और यह भी कहना कि उनकी पूर्ण स्मृति है और आज भी उनके पति वैसा ही स्नेह है जैसा वह मेरे साथ जब थे। अपने शिष्यो की उन्नति और समृद्धि का समाचार सुनकर मुझे अपार हर्ष होता है।

तुम्हारे पुत्र तथा बहू को मेरा सस्नेह आशीर्वाद। मैंने अब जीवन के जीवन के 81वे वर्ष मे प्रवेश किया है।

इस पत्र मे गुरुवर डॉ0 तिवारी जी के जीवन, व्यक्तित्व का गंगाजल के समान पवित्र, पावन, जीवनदायी स्वरूप प्रकट हुआ है। सच तो यह है कि जो भी गुरुवर डॉ0 उदयनारायण तिवारी के सम्पर्क म आया, उसके जीवन का उदय हुआ।

पत्र 7 . 14.4 1984

गुरुवर डॉ0 तिवारी जी के अंतिमपत्र से उनके स्वास्थ्य, उनकी मन स्थिति पर प्रकाश पडता है किन्तु उस स्थिति में भी गुरुवर अपने छात्रो को आशीर्वाद देते रहे। उन्होने 14 4 1984 को लिखा कि इधर होली के अवसर पर लगभग 15 दिनो तक पत्नी सख्त बीमार थीं। बचने की कोई आशा नही थी, किन्तु भगवान कृपा से बच गई। इस समाचार से अत्यन्त हर्ष हुआ कि तुम्हारा फ्लैट (ए 2/10 स्वजन 404 , गोकुलधाम, बम्बई 63) बनकर तैयार है तथा मई म गृह प्रवश हाने जा रहा है। अब जब बम्बई मे ही बसना है तो वहाँ घर अवश्य बनना चाहिए। आज तुम्हारी पत्नी होती ता फ्लैट, बहू तथा लड़के को देखकर कितना प्रसन्न होती किन्तु यह सुख, सौभाग्य देखने को उन्हे अवसर नहीं मिला। खैर, तुम्ह ही जो थोडा अवसर मिल रहा है इसी को भगवत्कृपा मानना। मैं भी धीरे-धीरे निर्बल हो रहा हूँ। यह अवस्था का प्रभाव है। अपने लिए, अपनी बहू और बेटे के लिए मेरा हार्दिक आशीर्वाद स्वीकार करो।

⑥

परिशिष्ट

इस पुस्तक की स्रोत सामग्री

डायरियॉ/चित्र/पत्र आदि

1954 से 1983 के बीच की कुल 30 डायरियो मे से 21 डायरियो मे विवरण हैं। शेष 10 मे या तो नोट्स है या कुछ भी नही है। 1959 में जब वे विदेश मे थे तो वहाँ की डायरी विस्तार से है। बीच के कुछ वर्षों की डायरियॉ नही है। 1954 (1), 1955 (1), 1956 (1), 1957 (x), 1958 (x), 1959 (1), 1960 (x), 1961 (1), 1962 (1), 1963 (1), 1964 (x), 1965 (x) 1966 (x), 1967 (1) 1968 (3), 1969 (1), 1970 (3), 1971 (x), 1972 (1), 1973 (2) 1974 (2), 1975 (1), 1976 (1), 1977 (1), 1978 (3), 1979 (x), 1980 (x), 1981 (2) 1982 (1) 1983 (1)।

तिवारी जी के कुछ चित्र भी है—उनमे विदेश जाते समय का चित्र। सम्मेलन मे भी उनका अच्छा सा चित्र है। अब हिन्दुस्तानी एकेडमी मे भी है। एक चित्र मेरे घर मे है। उनके अपने अलोपी बाग के भवन मे चित्र होंगे।

तिवारी जी के रेडियो टॉक (साक्षात्कार) का एक कैसेट भी है।

टिप्पणी

1. 1950 से आगे के कुछ वर्षों की डायरीनुमा रजिस्टर है जिसमे कटिंग चिपकी हैं। इनके टंडन जी पर लिखी लेखमाला उल्लेखनीय है। उपर्युक्त मे से कुछ डायरियो मे केवल कुछ मासो के विवरण है।
2. डायरियो के अतिरिक्त डॉ0 तिवारी के हाथ के लिखे लोकसाहित्य के नोटस 3 कापियो म है।
3. कलकत्ता म भाषा विज्ञान कक्षाओ मे तैयार किये गये नोट्स भी हैं।
4. जबलपुर विश्वविद्यालय की प्रशासनिक फाइले (1962-66) भी है।
5. तिवारी जी द्वारा लिखे गये पारिवारिक पत्र है।
6. तिवारी जी के पास विद्वानो के आये पत्र हैं। डॉ0 तिवारी के सग्रह मे राहुल जी के 106 पत्र तथा विभिन्न विद्वानो के 90 पत्र मिले हैं।
7. प्राचीन भोजपुरी पत्रो की पाण्डुलिपिया हैं।
8. लल्ली प्रसाद पाण्डे द्वारा डॉ0 तिवारी के पास रखे गये पत्र, जिनमे उनके 15 पत्र निजी तथा 80 पत्र महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्राप्त पत्र है।
9. शोक समाचारो की एक फाइल।

रिप्रिंट

डॉ0 तिवारी के Notes तथा Reprints भी हैं।

पुस्तकें

डॉ0 तिवारी की सारी पुस्तके वर्ष 2000 म साहित्य सम्मेलन का दान मे दे दी गई है जो सम्मेलन सग्रहालय दूसरे मजिल मे सुरक्षित है। पाठक उसे वहाँ देख सकते हैं।

डॉ0 उदयनारायण तिवारी द्वारा पठित पुस्तके

1983	अम्बा प्रसाद सुमन गीता एक नव्य चिंतन[1] हनुमान प्रसाद पोद्दार का जीवन चरित
1982	कन्हावत का कुछ अश। श्याम मनोहर पाण्डेय की चनैनो की भूमिका। श्रीनारायण चतुर्वेदी कृत 'उर्दू क्या है'।
1981	डॉ0 बाहरी कृत 'भोजपुरी की शब्द सम्पदा' 'डा0 घटगे की पुस्तक Historical Linguistics and Indo-Aryan Languages बाबूराम सक्सेना की 'दक्खिनी हिन्दी', गणेश चौबे की 'दुई सवाल'
1978	किशोरीदास बाजपेयी - हिन्दी शब्दानुशासन। बाल मुकुन्द गुप्त, स्मारक ग्रन्थ प्रथम भाग
1977	Freedom at Midnight, भाषा विज्ञान की पुस्तक
1976	रूपककार वत्सराज, विष्णु प्रभाकर का आवारा मसीहा, हरिहर निवास द्विवेदी कृत दिल्ली के तोमर, रजनीश कृत जीवन और सुख
1975	डॉ0 घटगे की Historical Lingustics पूरी की। विवेकानन्द जी कृत वेदान्त पर व्याख्यान, चिन्मयानन्द कृत Meditation of Life
1974	यशपाल कृत उपन्यास, मेरी तेरी उसकी बात। आचार्य रजनीश कृत अन्तर्यात्रा (तिबारा पढ़ा), अमृतलाल नागर कृत चैतन्य महाप्रभु, पद्मलाल पुन्नालाल बक्शी कृत आत्मकथा, सुनीति कुमार चटर्जी कृत भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, डॉ0 सुरेश त्रिपाठी कृत सस्कृत व्याकरण दर्शन
1973	आचार्य रजनीश की पुस्तके साधना पथ आदि, वियोगी हरिकृत तटस्थ कौन, श्रीनारायण चतुर्वेदी आधुनिक हिन्दी साहित्य का आदिकाल, आचार्य रजनीश कृत प्रेम है द्वार प्रभु का
1972	अरविन्द और उनकी साधना द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी प्रणीत वारेन हेस्टिंग्स, शिव प्रसाद सिंह कृत उत्तर योगी
1968	शिव प्रसाद सिंह कृत अलग-अलग वैतरणी, रामकृष्ण जीवन चरित (पढ रहा हूँ), गोपीराज कविराज की जीवनी
1967	डॉ0 सत्येन्द्र कृत लोक साहित्य विज्ञान
1963	श्री रामकृष्ण वचनामृत का रोज पाठ
1962	डॉ0 राम विलास शर्मा कृत भाषा और समाज

विदेश मे

---

[1] डा0 तिवारी अपने पीछे 2 पुत्र, 2 पुत्रियाँ, पत्नी घर, पुस्तकालय छोड गये। घर का बँटवारा कर गये। घर के मूल रूप मे परिवर्तन भी किया। पत्नी तथा दोनो पुत्र दिवगत हो चुके हैं। केवल 2 पुत्रियाँ जीवित है जो इलाहाबाद मे हैं।

1959 What is language, किताबें नौरस, परमहंस योगानन्द का आत्म चरित आइस्टाइन कृत The world as Isee it, हेराल्ड हाफ डिंग कृत A History of Modern Philosophy, J H Greenberg Essays in Linguistics Gopal of Shri Ram Krishna, जे० सी० चटर्जी कृत Phonetics, Allen कृत Comparative Grammar of Greek & Latin, Spiritual Talks American English (Structure), नाइडा कृत Linguistic Interlude, मार्डक कृत Anthropology

1956 स्टुटवर्ट की भाषा विज्ञान की पुस्तक राहुल कृत लेनिन का जीवन, ब्लाक तथा ट्रेगर की पुस्तक Outline of Linguistic Analysis, भाषा विज्ञान सम्बन्धी 9 पुस्तकें खरीदी। (कई पुस्तकें पढ रहा हूँ ब्लूमफील्ड, ग्लिसन, स्टुटवार्ट)।

1955 कन्हैया लाल मुंशी स्वप्न सिद्धि की खोज, फणीश्वर रेणु मैला आंचल

1954 भारतीय आर्य भाषाएं तथा हिन्दी डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी, अंग्रेजी मे भाषा विज्ञान की पुस्तके, राहुल कृत आत्मकथा भाग 1-2, प्रसिद्ध नारायण सिंह बलिदानी बलिया, गाधी साहित्य, सोकोलोव कृत फोक लिटरेचर। कात्रे कृत Historical Linguistics in Indo Aryan, डिरिंजर की पुस्तक Alphabet, डॉ० गुलेरी की पुरानी हिन्दी।

डॉ0 तिवारी की डायरियों से विद्वानों, परिचितों की मरण तिथियों की जानकारी (36 मृत्युओं की सूचना)

3 फरवरी 1954	बहुत से लोग माघ मेला की भीड़ में मरे। 300 से अधिक लाशें।
18 मार्च 1954	12 बजे द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी की मृत्यु 77 वर्ष की आयु मे
15 अक्टूबर 1954	बाबू पारसनाथ सिंह का पटना में देहान्त
25 अक्टूबर 1954	रफी अहमद किदवई की मृत्यु
13 जनवरी 1955	बाबूराव पराड़कर का निधन
6 जनवरी 1956	श्रीराम बाजपेयी की मृत्यु
17 फरवरी 1956	डॉ0 मेघनाद साहा के निधन पर विश्वविद्यालय मे शोकसभा
19 फरवरी 1956	आचार्य नरेन्द्र देव का देहान्त
15 जून 1959	प्रभाकर ठाकुर के पत्र से पता चला कि गिरजा दत्त शुक्ल गिरीश की मृत्यु हो गई
25 फरवरी 1961	प0 दयाशकर दुबे का निधन
15 सितम्बर 1967	डॉ0 उमेश मिश्र का निधन
12 अक्टूबर 1967	डॉ0 राम मनोहर लोहिया का निधन
9 नवम्बर 1967	डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद का निधन
29 नवम्बर 1967	प0 जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल का निधन
7 अप्रैल 1970	इटावा मे प्रताप नारायण का निधन
20 नवम्बर 1970	सर सी0 वी0 रामन का निधन
30 नवम्बर 1972	डॉ0 एहतशाम हुसैन का निधन
23 अप्रैल 1973	डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा का निधन
2 सितम्बर 1973	श्री ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल का देहान्त
15 अक्टूबर 1973	डॉ0 ताराचन्द का निधन
16 जनवरी 1974	रघुवर मिट्ठू लाल शास्त्री का निधन
4 मार्च 1974	श्री क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय का निधन
19 जून 1974	सेठ गोविन्द दास का निधन
5 सितम्बर 1974	गोपीकृष्ण गोपेश का निधन
15 अप्रैल 1975	डॉ0 राधाकृष्णन का निधन
2 जून 1975	श्री बालकृष्ण राव का निधन
23 नवम्बर 1975	श्री बिस्मिल इलाहाबादी का निधन
29 मई 1977	डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी का निधन
9 अप्रैल 1981	श्री कृष्णदास की मृत्यु
13 अगस्त 1981	किशोरीदास वाजपेयी की मृत्यु
6 अक्टूबर 1981	श्री भगवतीचरण वर्मा की मृत्यु
3 मार्च 1982	श्री रघुपति फिराक की मृत्यु
9 अगस्त 1982	डॉ0 भगवत शरण उपाध्याय की मृत्यु
24 अगस्त 1982	डॉ0 रामप्रसाद त्रिपाठी की मृत्यु
16 नवम्बर 1982	विनोबा भावे का 88 वर्ष की आयु में निधन
29 नवम्बर 1982	महाबीर प्रसाद लखेड़ा का निधन
जून 98	डॉ0 ट[illegible] का स्वर्गवास 22/4 को 95 वर्ष के थे

डा0 तिवारी की पहली भेंट या पहली बार यात्रा

2 जनवरी 1954	श्री व्यथित हृदय के द्वारा अतर्रा मे दिये कटु भाषण का उल्लेख श्रीनाथ सिंह द्वारा महादेवी के विरुद्ध अपशब्द
6 जनवरी 1954	ठाकुर गोपाल शरण सिंह की जयन्ती
14 जनवरी 1954	पहली बार झूसी का अखाड़ा देखा
17 जनवरी 1954	श्री रघुपति सहाय फिराक की गजले सुनी
21 जनवरी 1954	राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तथा डॉ0 मोती चन्द से भेट
24 जनवरी 1954	करपात्री जी व्याख्यान देते हुए
30 जनवरी 1954	प0 परशुराम चतुर्वेदी का सन्तमत पर व्याख्यान
9 मार्च 1954	प0 कृष्णदत्त बाजपेयी से नागरी प्रचारिणी की रजत जयन्ती से लौटते ट्रेन पर भेट। चित्रकला, मूर्तिकला पर बाते
23 मार्च 1954	डॉ0 रामचरण मेहरोत्रा घर आये। रसायन की पुस्तक छप रही है
7 मार्च 1954	सिविल सर्जन डॉ0 चन्द्रशेखर मिश्र से भेट
17 अप्रैल 1954	गाजीपुर जनपद सम्मेलन में गुरुभक्त सिंह भक्त से भेट
28 जुलाई 1954	इला चन्द्र जोशी, वाचस्पति के साथ सुमित्रानंदन पन्त के यहाँ
29 जुलाई 1954	बालकृष्ण शर्मा नवीन : बस्ती सम्मेलन
6 अगस्त 1954	चन्द्र बली पाण्डेय, तुलसी जयन्ती मे
16 अगस्त 1954	बच्चन जी कैम्ब्रिज से वापस आये—(के0 पी0 स्कूल से ही जानता हूँ, मैं इण्टर मे था, इनके लम्बे केश थे।
5 सितम्बर 1954	प0 रामनरेश त्रिपाठी से भेट
1 जनवरी 1955	पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र से मिला, दिल्ली मे
4 फरवरी 1954	सत्याचरण शास्त्री से भेट
12 फरवरी 1955	जयचन्द्र विद्यालंकार से भेट
17 फरवरी 1955	डॉ0 बी0 एन0 प्रसाद से भेट
20 फरवरी 1955	प्रभु दत्त ब्रह्मचारी तथा देवरहवा बाबा से भेट
28 मार्च 1955	श्रीपत राय के यहाँ साहित्यिकी मे भाग लेने गया
1 जनवरी 1956	बिनोबा का उल्लेख। द्वारका प्रसाद मिश्र का भी उल्लेख
30 जनवरी 1956	अमृतराय के घर गया
30 जनवरी 1956	भोला नाथ तिवारी आये
13 फरवरी 1956	ठाकुर कमलधारी सिंह कमलेश से भेट

17 फरवरी, 1956	मेघनाथ साहा की मृत्यु के समय याद आया कि एक बार साहा मेरे घर पर राहुल से मिलने आये थे, चटर्जी भी थे
8 मार्च 1956	सत्यकाम जी का स्वागत
18 मार्च 1956	सुधाकर पाण्डे तथा जगन्नाथ प्रसाद शर्मा आये
7 जनवरी 1959	नामवर सिंह को अमरीका से पत्र लिखा
14 फरवरी 1959	रामधारी सिंह दिनकर को पद्म भूषण मिलने पर बधाई
14 जून 1959	वी0 एन0 झा का अमेरिका में स्वागत
28 अगस्त 1959	रूस में डॉ0 केसरी नारायण शुक्ल से मिला
27 फरवरी 1959	रामसिंह तोमर आये
30 जून 1970	लीडर प्रेस में मुकुन्द देव शर्मा से भेंट
17 सितम्बर 1970	रामकिंकर जी का रामचरित मानस पर भाषण सुना
23 जनवरी 1972	विष्णुकान्त शास्त्री के बंगलादेश विषयक लेखों की प्रशंसा
16 अगस्त 1972	पहली बार अरैल गया
8 अगस्त 1975	गाजीपुर के प्रसिद्ध लेखक विवेकीराय आये
6 जून 1982	शकुन्तला सिरोठिया आईं
14 जुलाई 1982	स्वामी सत्यप्रकाशानन्द घर आये
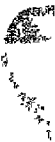
डॉ0 तिवारी की विभिन्न सम्मेलनों में सहभागिता

1 जनवरी 1954	बासुदेव सिंह (प्रतापगढ़) के साथ अन्तर्रा सम्मेलन में भाग लेने गया। बाबू वृन्दावन लाल वर्मा सभापति हैं।
6 मार्च 1954	डॉ0 बाहरी के साथ नागरी प्रचारिणी की रजत जयन्ती मे भाग लेने गया।
17 अप्रैल 1954	गाजीपुर जनपद सम्मेलन में गया। मैं सभापति था। उद्‌घाटन कमलापति त्रिपाठी ने किया। गुरु भक्त सिंह भक्त आये थे।
5 जून, 1954	साहित्य सम्मेलन का देहरादून अधिवेशन जिसका उद्‌घाटन राहुल जी द्वारा हुआ। तभी राहुल जी के साथ मसूरी गया।
11 अक्टूबर 1954	एनी बेसेन्ट हाल में 'परिमल' द्वारा आयोजित काव्य पर्व मे महादेवी वर्मा का उद्‌घाटन भाषण।
5 नवम्बर 1954	बस्ती सम्मेलन। मगहर गया।
28 दिसम्बर 1954	भारतीय हिन्दी परिषद के जयपुर अधिवेशन मे गया। (10 वर्ष पहले जयपुर गया था)।
16 जनवरी 1955	हिन्दी साहित्य सम्मेलन में कोश समिति की बैठक
20 जनवरी 1955	कोश समिति की बैठक
14-18 मई 1955	फर्रुखाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन
1 जनवरी 1956	हिन्दी परिषद अधिवेशन नागपुर। तभी वर्धा की सैर
20 जुलाई 1967	हिन्दी निदेशालय में प्रयोग कोश समिति की बैठक
6 जनवरी 1968	मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन अधिवेशन छतरपुर
8 दिसम्बर 1968	मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल की बैठक
10 दिसम्बर 1970	पुणे मे भाषा विज्ञान कांग्रेस। डॉ0 अमर बहादुर के यहाँ रुका। सुनीति बाबू तथा बाबूराम सक्सेना भी गये।
27 फरवरी 1972	साहित्य अकादमी की बैठक रवीन्द्र भवन मे जहाँ चटर्जी तथा सुकुमार सेन से भेंट
8 जुलाई 1972	अरविन्द जयन्ती बनारस मे थी। भाग लेने महादेवी जी के साथ गया
1 सितम्बर 1972	मथुरा मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन अधिवेशन में सभापतित्व का भार
9 जनवरी 1975	विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर गया
2 फरवरी 1977	लिंग्विस्टिक सर्किल की बैठक
12 मई 1978	गंगानाथ झा इंस्टीट्यूट मे बैठक
17 मई 1981	लखनऊ मे उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन अधिवेशन

नोट—23 जुलाई, 1984 को हिन्दी संस्थान लखनऊ की बैठक मे गये जो अन्तिम यात्रा थी।

तिवारी जी की कुछ स्मृतियाँ (डा0 तिवारी की डायरियों से)

3 फरवरी 1954 — 8 वजे पत्नी श्री सोमेश्वर के साथ साधुओ का जुलूस देखने गई। काका जी भी कुछ लोगो के साथ गये। काका जी भीड मे दबते-दबते बचे और पत्नी तो ऑसू भरी ऑखे लेकर लौटी। उन्होने कई व्यक्तियो नवयुवको को भीड़ मे मरते देखा था।

6 फरवरी 1954 — बूढ़े बिशुन चौबे काका जी के साथ बलिया जा रहे है। उनका गला भर आया। अपने लडकपन से मैं इस व्यक्ति को देख रहा हूँ, गम्भीर और सज्जन।

8 फरवरी 1954 — आज निराला जी का जन्म दिन है। अतएव बहुत से लोग उनका अभिनन्दन करने आये। उनके दाहिने पैर में वात रोग हो गया है अतएव वह सूज गया है। निराला जी हम सभी लोगों से प्रेमपूर्वक मिले। 9 वजे कवि सम्मेलन हुआ जिसमें जगदीश गुप्त ने ब्रजभाषा के दो छन्द सुनाये। निराला जी ने प्रसन्न होकर फूलो का एक गुच्छ दिया। इसके बाद निराला जी ने स्वरचित कविता गाकर सुनाई।

11 फरवरी 1954 — श्री महादेव साहा से राहुल जी का समाचार मिला। बुरी दशा है.. अब वे जीवन से निराश से हो रहे हैं—कह रहे हैं मेरा अब कार्य समाप्त हो रहा है।

26 फरवरी 1954 — प0 चन्द्रबली पाण्डेय आये। इधर प0 हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना में कई लेख लिखे हैं। कहने लगे यह अशुद्धियों का डाक्टर है। किन्तु मैंने इन लेखों को नही देखा। देखना चाहता हूँ।

18 मार्च 1954 — द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी 77 वर्ष के थे। उनका जन्म स0 1934 मे हुआ था। सन् 1925 से उनके सम्पर्क मे आने का अवसर मिला था। मेरे घर के सामने ही उनका मकान था। वे 2 30 बजे प्रात उठ जाते। आपने लगभग 200 पुस्तके लिखी।

10 अप्रैल 1954 — आज महाष्टमी के उपलक्ष्य मे अनेक व्यक्ति अलोपशंकरी का दर्शन करने आ रहे है। बचपन मे आज के दिन ही अपने गॉव के निकट शकरपुर की भवानी का दर्शन करने जाया करता था और खुशी मे रातभर नीद नही आती थी कि कल रामनवमी का मेला दिनभर देखूँगा किन्तु अब तो "गई सु बीत बहार" की बात है।

12 अप्रैल 1954 — दोपहर के बाद निराला जी के पुत्र मिले। वे श्रीमती महादेवी वर्मा से मिल आय थे। श्रीमती महादेवी का व्यक्तित्व मैं ऊँचा मानता हूँ और मुझे प्रसन्नता है कि उनके प्रति मेरी जो उच्च भावना है उसकी पुष्टि ही होती रही है।

30 मई 1954 — देहरादून अधिवेशन के लिए श्री राहुल जी का उद्‌घाटन भाषण आ गया

है, बहुत सुन्दर है, केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय की खूब खबर ली है।

19 जुलाई 1954 — मेरे पुराने सहपाठी बलिया के श्रीराम इकबाल आये। मैंने उनका स्वागत किया।

16 अगस्त 1954 — इधर बच्चन जी कैम्ब्रिज वि0 वि0 से अग्रेजी मे डी0 फिल0 करके आये है। वे क्षीण दीख रहे थे। यो उनका व्यक्तिगत जीवन काव्य की अपेक्षा पवित्र है। श्री बच्चन को मै उस समय से जानता हूँ जब व के0 पी0 स्कूल मे हाई स्कूल के छात्र थे। उस समय मै इण्टर का छात्र था। उस समय बच्चन इलाचन्द जोशी की भाँति लम्बे केश रखे हुए थे। वे अच्छे छात्रो मे थे किन्तु एम0 ए0 मे तृतीय श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए। इसके बाद उन्होने बनारस से बी0 टी0 की और अग्रवाल विद्यालय मे हिन्दी के अध्यापक भी रहे। इसी समय डॉ0 अमरनाथ झा उनकी कविताओं की ओर आकृष्ट हुए और इन्हें वि0 वि0 म स्थान मिला।

29 अगस्त 1954 — बलिया के श्री राम सिहासन सहाय "मधुर" आये।

25 सितम्बर 1954 — दिल्ली से कलकत्ता जाते हुए स्टेशन पर डॉ0 चटर्जी ने बताया 'हिन्दुस्तानी कल्चरल सोसाइटी की ओर से श्री सुन्दर लाल "ऑक्सफोर्ड कनसाइज डिक्शनरी" का अनुवाद करा रहे हैं। श्री मौलाना आजाद ने उन्हे 60 हजार रुपये दिये है। प्राय सभी सदस्यो की राय है कि सुन्दर लाल वाला कोश बिल्कुल रद्दी है। उसने ठुसियना, नकुचियाना जैसे शब्द बनाये हैं। उनसे प्रधानमन्त्री नेहरू प्रसन्न नहीं है।"

12 अक्टूबर 1954 — श्री नागार्जुन भोजन करने आये। भोजनोपरान्त बड़ी देर तक बच्चो को अपनी थालिग यात्रा का विवरण सुनाते रहे।

13 अक्टूबर 1954 — बलिया से दो छात्र आये हैं। इनमे से एक मेरे मिडिल के सहपाठी श्री हरिमोहन यादव का पुत्र है। उससे मिलकर पुरानी स्मृति जागृत हो उठी।

15 अक्टूबर 1954 — बाबू पारसनाथ सिनहा का पटना मे देहावसान। वे हिन्दी के केवल अनन्य भक्त ही न थे, अपितु मेरे घनिष्ठ मित्र भी थे।

18 अक्टूबर 1954 — श्री राहुल जी बिना पूर्व सूचना के आ पहुँचे। वे तो घर के आदमी हैं। हाल मे आकर चारपाई मे लेट गये। कुशलक्षेम के बाद बतलाया कि वे सरहपाद के 'दोहा कोष' का सम्पादन कर रहे है।

20 दिसम्बर 1954 — निराला असाधारण प्रतिभा के व्यक्ति हैं। वे सर्वतत्र स्वतत्र तो हैं ही साथ ही वे इतने भावप्रवण व्यक्ति है कि उनका असतुलित हो जाना स्वाभाविक है। एक बार निराला जी ने लिखा था, गांधी जी यदि अण्डे खाते। इस पर उस समय कुछ लोग क्षुब्ध हुए थे। और लोगो की धारणा थी कि उनकी गाधी जी मे श्रद्धा नही है किन्तु जब गाधी जी हरिजन एवार्ड को लेकर जेल मे उपवास करने लगे तो निराला जी उतने दिनो तक रात्रि म सो न सके और बराबर टहलते रहे ... विभिन्न वस्तुओं को देखने की दृष्टि अपनी थी। यही मौलिकता कवीन्द्र रवीन्द्र मे भी थी।

14 जनवरी 1955	आज राहुल जी का पत्र आया। लिखा है—18 दिसम्बर से कलेजे मे दर्द शुरू हो गया। जनवरी के प्रथम सप्ताह में बम्बई मे रहते डाक्टर को दिखाया। जाडों में मसूरी छोडना पडेगा।
5 जून 1955	रामकुमारी ने 'कदली और अमोला' तथा 'घुदुक्का' कहानियो को खड़ी बोली म लिख डाला है। जब इनकी संख्या 20 हो जावेगी तो भोजपुरी कहानियो के अन्तर्गत इन्हें प्रकाशित करूँगा।
17 फरवरी, 1956	डॉ0 मेघनाद साहा की मृत्यु। डॉ0 साहा एक बार श्री राहुल से मिलने मेरे घर पर आये थे। एक बार डॉ0 चटर्जी ने उनसे मेरा परिचय कराते हुए कहा था—ये मेरे शिष्य हैं और इनकी मातृभाषा भोजपुरी है। डॉ0 साहा ने कहा —I fear him He may not use his cudgel वैज्ञानिक होते हुए भी भारत के प्राचीन इतिहास तथा Linguistic Survey आदि का उन्होने गम्भीर अध्ययन किया था।
24 फरवरी 1956	गाँव से विश्वनाथ का तार आया कि पिता की हालत खराब है। वे देखना चाहते हैं।
17 अप्रैल 1959	आखिर गगा मे डूबते समय (अप्रैल 1928 मे) उसी शिव न तो बचाया था। अमरीका मे भी अब मैं समझ गया उन्ही का हाथ था। उस दिन न्यूयार्क मे रात में लुइस को शिव ने ही तो भेजा था।
22 अप्रैल 1959	जब मैं विगत जीवन पर दृष्टिपात करता हूँ तो उसमे एक विचित्र क्रम पाता हूँ और उसमे परमेश्वर का हाथ पाता हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है कि मेरी अमरीका यात्रा लिंग्विस्टिक्स के लिए नही हुई है, अपितु भगवान के दर्शन के लिए हुई है।
19 जून 1959	रात मे स्वप्न मे बाबू जी (स्वर्गीय प0 शिवपूजन तिवारी) मिले। मैंने पूछा-आपको पैसे चाहिए? कहने लगे केवल आठ रुपय किराये के। काशी जाना चाहता हूँ। क्या स्वप्न मे ये शिव तो नही थे?
21 जून 1959	गत रात बड़की माई को स्वप्न मे देखा। देखता हूँ — गाँव पर 'उदे नाथ बाबा' के चबूतरे पर है। कुछ और लोग भी सो रहे हैं। माई को देखते ही बड़े जोर से मै रोने लगा। बड़की माई कहने लगी—तुम रोते क्यो हो? क्या मैं तुमसे नाराज हूँ? इतने मे ही ऑखे खुली। क्या यह दुर्गा या देवी तो नही थी?
13 फरवरी 1961	बाबू जी आजकल इस बात से अत्यधिक दुखी हैं और चिन्तित हैं कि केन्द्रीय सरकार रोमन अको को प्रचलित करना चाहती है।
25 फरवरी 1961	प0 दयाशंकर दुबे नही रहे। दुबे जी बी0 ए0 तथा एम0 ए0 (अर्थशास्त्र) मे मेरे गुरु थे। उनका अतुल स्नेह मुझे प्राप्त था। मैं "प्रभा" मे दुबे जी के कई लेख पढ चुका था।
27 फरवरी 1962	बोलपुर यात्रा। इसके पूर्व 1932 मे कवीन्द्र रवीन्द्र का दर्शन करने यहाँ आया था
8 अप्रैल 1964	आज अपने साथ बाबू जी (स्व0 पूज्यवर प0 शिवपूजन तिवारी) का

तैलचित्र इलाहाबाद ले आया। जबलपुर के कलाकार श्री पण्ढरकर ने इसे 100/मे बनाया।

19 अप्रैल 1967 आज रामनवमी है। अपने गॉव के पास शकरपुर के मेले का स्मरण हो आया। बाबा (स्वर्गीय गती तिवारी) की भी याद आई। किस प्रेम से लड़कपन मे अपने ओसारे के बाहर उनके साथ चारपाई पर सोता था और रात मे अचानक उठकर देखता था कि सबेरा हुआ या नही। बात यह थी कि शीघ्र तैयार होकर भगवती जी के मेले मे जाना था। आज अवस्था के साथ वह उत्साह समाप्त हो गया।

12 अक्टूबर 1967 रेडियो मे सुना कि डॉ0 राम मनोहर लोहिया का निधन हो गया . देश से एक बहुत बडा निर्भीक व्यक्ति उठ गया। डॉ0 लोहिया मुझे आज से कई वर्ष पूर्व पुरुषोत्तम पार्क मे ले गये थे। वहॉं हिन्दी की सभा थी, जिसका मैने सभापतित्व किया था , राष्ट्रभाषा का उज्ज्वल नक्षत्र अस्त हो गया। राजर्षि टण्डन के बाद डॉ0 लोहिया हिन्दी के प्रबल समर्थक एव स्तम्भ थे।

17 अगस्त 1968 आज साढ़ेचार-साढ़ेपॉच बजे विचित्र स्वप्न देखा, गॉव का रुग्ण नाई सखी, जो कई वर्ष पूर्व अपरलोक मे चला गया है परम स्वस्थ है,. इसके बाद एक लम्बे कद के साधु व्यक्ति को देखा। मैने समझा गॉंव का स्वर्गीय भाट बुझावन है किन्तु उससे वह सर्वथा भिन्न था।

23 जून 1972 आत्माराम जी के साथ पीपरपॉंती गया। गॉव का नक्शा बिल्कुल बदल गया है। सम्प्रति मेरे गॉव मे पॉच ट्यूब वेल लगे हैं। मेरे घर मे बिजली आ गई है और बिजली का पखा भी है।

28 मई, 1973 आज अलोपीबाग का बडका सोमवार का मेला था। अब धीरे-धीरे यह मेला क्षीण होता जा रहा है।

3 अगस्त, 1973 रोलैण्ड रोड (कलकत्ता) पर अपने पुराने छात्र श्री ब्रज बिहारी राय मिले। डॉ0 सुकुमार सेन तथा चटर्जी से भेंट की। चटर्जी 85 वर्ष के हैं।

16 जनवरी 1974 रघुबर मिट्ठूलाल शास्त्री के निधन का समाचार पढा। शास्त्री जी से भारतीय दर्शन का कुछ अश मैंने पढ़ा था। 1938 मे जब पाली मे एम0 ए0 की परीक्षा (कलकत्ता विश्वविद्यालय) की तैयारी कर रहा था तो बौद्ध दर्शन को समझने के लिए भारतीय दर्शन (आस्तिक दर्शन) पढ़ने की आवश्यकता प्रतीत हुई। गुरुवर प0 क्षेत्रेश चन्द्र जी चट्टोपाध्याय की सलाह से उस समय मै शास्त्री जी से पढ़ने गया था।

21 जनवरी 1974 बचपन में गॉंव में जब घर मे हरी मटर होती थी और उसकी दाल बनती थी तो मुझे यह बिल्कुल अच्छी नही लगती थी। तब केवल मेरे लिए मेरी मॉ अलग से अरहर की दाल बनाती थी। उन दिनो हरी मटर 1-2 पैसे/सेर मिलती थी।. आज डेढ़ रुपये किलो है।

4 मार्च 1974 प0 क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय का निधन। उनके चरणो में वेद, अवेस्ता एव पुरानी फारसी के कुछ अश पढ़ने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था

26 मई 1974	लल्ली प्रसाद पाण्डेय का जन्म स0 1940 मे हुआ था। वे मुझसे 30 वर्ष बडे है। अपने भाजे के पुत्र के साथ अपनी जन्मभूमि सागर जाना चाहते है।
22 अक्टूबर 1974	आज से 40 वर्ष पूर्व अलोपीबाग मे बिजली नहीं थी। तब 5-6 बजे के बीच दल निकल पड़ता था किन्तु अब तो 8 बजे के पहले दल बख्शी से उठता ही नही।
17 अप्रैल 1975	आज डॉ0 राधाकृष्णन का निधन हो गया। जब वे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे 1939-1942 मे दर्शन के अध्यापक थे और मै अपने रिसर्च के सिलसिले म वहाँ था तो प्राय उनका भाषण सुनता था।
15 मई 1975	आज प्रतापगढ़ के मानव लकडबग्घा का समाचार पढ़कर अत्यन्त दुख हुआ। यह मनुष्य लकडबग्घे की खाल पहनकर बच्चो को रक्त व्यापार के लिए उठा लाता था।
2 जून 1975	श्री बालकृष्ण राव का निधन। उन्हे मै तब से जानता था जब वे गवर्नमेट स्कूल मे सातवी आठवी कक्षा के छात्र थे। उस समय मे दारागज हाई स्कूल मे अध्यापक था। वे आई0 सी0 एस0 हुए थे। उसे त्याग कर इलाहाबाद आये। पुनः दो विश्वविद्यालयो के कुलपति बने।
26 जनवरी 1976	अतीत और भविष्य के चिन्तन को छोड़कर कर्म मे प्रवृत्त हुआ। बहुत आनन्द आ रहा है।
19 मार्च 1976	सम्प्रति मेरे तीन गुरु जीवित हैं — डॉ0 बाबूराम सक्सेना, डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी तथा डॉ0 सुकुमार सेन। शेष गुरुजन दिवंगत हो गये है।
6 जुलाई 1976	बलिया की कचहरी गया। बैनामा रजिस्ट्रेशन हुआ। सन् 1909-1910 मे मेरी नानी श्रीमती सिमिरखा देवी ने पाण्डेपुर की जमीन मेरे नाम हित्वा लिख दिया था। उस समय मेरे छोटे भाई विश्वनाथ पैदा नहीं हुए थे। (जन्म तिथि 1914) बालिग होने पर उन्हे आधे का हकदार बना दिया था। बासडीह मे पत्नी के नाम जो खेत है वह चकबन्दी मे चला गया।
2 जुलाई 1977	आज जन्म दिन है। 1903 मे अपरान्ह मे मेरा जन्म ननिहाल पाण्डेपुर मे हुआ था। मेरा जन्म दिन कभी नहीं मनाया गया। इधर दो तीन वर्षों से मेरे छात्र गोविन्द स्वरूप फूलमालाएँ, फल, मिठाई लेकर आते है।
23 जुलाई 1977	पीपरपाँती से श्री रामदेव चौबे नामक लड़का आया था। यह धनी चौबे का पोता है। गाँव का पहला लड़का है जो हाई स्कूल /इण्टर दानो मे प्रथम आया है। गणित मे 88 अक मिले हैं।
28 मई 1978	आज संध्या सोहबतिया बाग गया। वहाँ के रौजा पर मेला था। प्राचीन समय मे सड़क के उत्तर वाले तालाब पर नरसिह भगवान का मन्दिर था। उसे तोड़कर उसके पास तुर्कों ने रौजा बनवाया। ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

	के प्रथम रविवार को यहाँ मेला लगता है और उसके दूसरे दिन सोमवार को अलोपीबाग के बड़का सोमवार का मेला लगता है।
2 जुलाई 1978	मै अपने नानी के घर पाण्डेयपुर मे पैदा हुआ था। मेरा जन्म दिन 2 जुलाई 1903 है। सर्टीफिकेट मे 1 जुलाई 1905 लिखा है।
3 मार्च 1981	मीनू तथा उसकी नवजात बच्ची को देखा। गत तीन पुश्त से मेरे वश म नाती या नातिन के बच्चे या बच्ची का मुख देखने का अवसर किसी को नहीं मिला। यह पहला अवसर था।
6 अक्टूबर 1981	श्री भगवती चरण वर्मा नही रहे। 1926 से मेरा सम्बन्ध था जब वे एम0 ए0 प्रीवियस के छात्र थे। उन दिनो मै बी0 ए0 मे था तथा दारागज की गोष्ठी का मत्री था। भगवती बाबू इस गोष्ठी के सदस्य थे।
2 जुलाई, 1982	आज के दिन 3 30—4 00 बजे सध्या मेरा जन्म पाण्डेपुर ननिहाल मे हुआ था। नाना गत हो चुके थे। नानी श्रीमती सिमिरखा देवी मौजूद थी।
10 नवम्बर 1983	आज छठ है। आज गाँव पर उत्सव होता था। बगली पर सब स्त्रियाँ गाती हुई जाती थीं। स्त्रियाँ जल तक नही ग्रहण करती थीं। पूरे दिन सूर्य को अर्घ्य देकर जलपान करती थीं। यह व्रत सम्भवत· शकद्वीपीय ब्राह्मणो द्वारा इस देश म प्रचलित किया गया था।

मे अपनी जा समृद्ध शिष्य परपरा सस्थापित की है वह इसी बात का प्रमाण है कि आप अपने शिष्यो को पुत्रवत् मानते है और हर तरह से उनकी मदद के लिए प्रस्तुत रहते हैं। यही कारण है कि आप की शिष्य परपरा न कवल उपर्युक्त विश्वविद्यालयों मे ही सीमित है बल्कि देश-विदेश के अन्य विश्वविद्यालयो तक भी विस्तृत है।

सरस्वती के वरद पुत्र!

अत मे आप जैसे ऋषि तुल्य, प्रकाण्ड भाषाविद्, राष्ट्रीय एव अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान आचार्य और प्रोफेसर के सम्मुख हम पुन पुन· श्रद्धावनत हैं और आपके सुखद सपर्क से अपने को भी सम्मानित अनुभव करते हुए आपके स्वस्थ दीर्घ जीवन की ईश्वर से कामना करते हैं।

प्रस्तुतकर्ता

प्रयाग के साहित्यिक बन्धु एव आपके शिष्य

प्रयाग मार्च एक, इक्यासी

परिशिष्ट

30 वर्षों की वर्षानुवर्ष गतिविधियां (समीक्षा)

1954 — माघमेला, अतर्रा सम्मेलन एकेडमी, राहुल जी की दुरवस्था, निराला जन्म दिन, चाय चक्र, नागरी प्रचारिणी की रजत जयन्ती, रेडियो टाक, निराला का सरकारी सहायता, गाजीपुर जनपद सम्मेलन, कोश समिति की बैठक, देहरादून सम्मेलन, मसूरी यात्रा, बद्रीनाथ यात्रा, उत्तर प्रदेश सम्मेलन बस्ती / मगहर, पुस्तक लेखन/ सशोधन, पुस्तके पढ़ना, परिमल काव्य पर्व, राहुल का आगमन टण्डन जी से भेट, पारिभाषिक शब्द चर्चा, गृह परिवर्तन (जार्ज टाउन से अलोपीबाग), फ्रेंच का अभ्यास, जयपुर हिन्दी अधिवेशन, ग्रियर्सन की प्रशसा।

1955 — प्रात काल घूमना, विश्वविद्यालय जाना, मीटिंग मे सम्मिलित होना। घर बनाना व गृह प्रवेश, लड़को को लेकर चिन्ता, पुत्री की शादी की चिन्ता। आर्थिक स्थिति गम्भीर।

साहित्यिक गोष्ठियो मे भाग लेना/फर्रुखाबाद हिन्दी साहित्य सम्मलन।

श्रीनारायण चतुर्वेदी, टडन जी, पाठक जी, सम्मेलन, निराला, राहुल, महादेव साहा मुख्य विषय रहे। पुस्तक का प्रूफ/फ्रेंच का अभ्यास, क्रोध का आना।

पारिभाषिक शब्दो पर चर्चा

1956 — प्रात 4 बजे उठना, टहलना

पुणे समर स्कूल, नागपुर हिन्दी परिषद, रीवां यात्रा, रेडियो टाक, दो पुस्तके छपी, 2 पुरस्कार मिले।

भाषा विज्ञान के अध्ययन के प्रति प्रगाढ़ अभिरुचि

1959 — नियमित रूप से स्नान, प्रार्थना, व्यायाम। 6 30 बजे उठकर 7 30 बजे तैयार। विदेश यात्रा, वहाँ जमकर अध्ययन / लेखन, ब्रह्मचारी राथवेल ने क्रिया योग का जो प्रथम सूत्र बताया उसी के अनुसार ध्यान लगाना।

1961 — राहुल जी की बीमारी, निराला जन्म दिन, टडन जी

1962 — दिल्ली यात्रा, जबलपुर की तैयारी, हीरक जयन्ती समारोह (सरस्वती का), जार्ज टाउन से पुराने मकान मे आना, निराला जन्म दिन। भाषाशास्त्र पुस्तक लेखन। शान्ति निकेतन यात्रा।

1963 — पुस्तक अनुवाद (मैक्समूलर की), भाषा शास्त्र पुस्तक को पूरा करना। रेडियो टाक

1964 — दिल्ली-जोधपुर यात्रा, पंचमढ़ी ग्रीष्मकालीन कार्यशाला (मई-जून मे)

1967 — प्रात उठकर, नित्यकर्म से निवृत्त होकर प्रार्थना, फिर टहलना, कक्षाएँ लेना (सप्ताह मे चार दिन)

दिल्ली यात्रा,

968 — [illegible] यात्रा गया (Ex[illegible] lecture भोपाल यात्रा पुस्तक छपने [illegible]
[illegible]

1970	पत्नी की बीमारी, कमजोरी, गर्दन टॉग मे दर्द, पढाने के अलावा प्रबन्ध परीक्षक, प्रश्न पत्र बनाने, उत्तर पुस्तके जॉचने मे व्यस्तता, जबलपुर विश्वविद्यालय मे चल रहा झगडा। रायपुर यात्रा, पुणे भाषा विज्ञान काग्रेस, पुस्तक छप रही है। श्रीमदभागवत कथा
1972	पुस्तक लेखन, जबलपुर से इलाहाबाद स्थानान्तरण, इलाहाबाद मे यू0 जी0 सी0 लेक्चरशिप, अध्यापन कार्य जुलाई से, आत्मकथा लेखन, मथुरा मे उत्तर प्रदेश साहित्य सम्मेलन अधिवेशन
1973	ध्यान, शून्य समाधि का अभ्यास, राजनीतिक बाते भी लिखनी शुरू की, लेख लिखे, भाषा विज्ञान पर पुस्तक, अध्ययन (रजनीश साहित्य), कलकत्ता यात्रा, 30 जून को यू0 जी0 सी0 लेक्चर समाप्त
1974	क्रोध का दौरा, पुस्तक पठन, भाषा विज्ञान लेखन
1975	पत्नी को बीमारी, झूसी का स्कूल, शोध प्रबन्ध पढना, पर्चे बनाना, कापी जॉचना, रजनीश साहित्य, नागपुर यात्रा
1976	झूसी स्कूल, पत्नी को बीमारी, स्वय की कमजोरी, लिग्विस्टिक स्टडी सर्किल, जनऊपुर जमीन की बिक्री। बलिया जाना। श्रीनारायण सारस्वत सम्मान।
1977	चुनाव चर्चा, लिंग्विस्टिक सर्किल, रीनू की बीमारी, पत्नी की बीमारी, लेखन पठन, रेडियो टाक।
1978	वाराणसी मे अध्यापन (जनवरी-मार्च) के सिलसिले मे बनारस आना-जाना, लिंग्विस्टिक सर्किल। रेडियो टाक, पटना मे Visiting Professor (15 जुलाई से दिसम्बर पर), पटना सपत्नीक गये।
1981	गठिया से पीडित, घूमना बन्द, लिखावट खराब, डायरी मे कम बाते, कलकत्ता मे भाषण, सम्मेलन विवाद, राजनीतिक बातें, रेडियो टाक, लेख लिखाये, प्रूफ देखा, हिन्दी संस्थान से पुरस्कार
1982	मीटिंग, अनुवाद, लेख लिखना, बीमारी, अपनी पुस्तक के प्रूफ देखना
1983	राजनीतिक समाचार, ग्रियर्सन की पुस्तक का अनुवाद, अपनी तथा पत्नी की बीमारी (लगातार बीमारी बढ़ रही थी), उत्तर पुस्तिकाएँ जॉचना, पुस्तके पढना, रेडियो वार्ता, गया जाकर पिंडदान, सम्मान, विश्व हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

डॉ0 उदयनारायण तिवारी के निर्देशन में विभिन्न विश्वविद्यालयों से पीएच0 डी0 एवं डी0 लिट् उपाधिप्राप्त शिष्यों के नाम

पीएच0 डी0

स्व0 डा0 सत्यव्रत सिन्हा — इलाहाबाद विश्वविद्यालय
डा0 महावीरसरन जैन — इलाहाबाद विश्वविद्यालय
डा0 रामकुमारी मिश्रा — इलाहाबाद विश्वविद्यालय
रेव0 डा0 मैथ्यू वेच्चुर — इलाहाबाद विश्वविद्यालय
डा0 कैलाश मिश्रा — इलाहाबाद विश्वविद्यालय
डा0 गोविन्दस्वरूप गुप्त — इलाहाबाद विश्वविद्यालय
डा0 गगाचरण त्रिपाठी — इलाहाबाद विश्वविद्यालय
डा0 श्रीमती बिन्दु अग्रवाल — इलाहाबाद विश्वविद्यालय
डा0 शालिग्राम शर्मा — इलाहाबाद विश्वविद्यालय
डा0 शिवनन्दन कपूर — इलाहाबाद विश्वविद्यालय
डा0 कैलाश नारद — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 सुभाषचन्द्र मिश्रा — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 श्रीमती विमला जैन — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 लक्ष्मीप्रसाद तिवारी — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 कमलनारायण दुबे — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 श्रीमती श्यामा मालवीय — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 स्वराज्यमणि अग्रवाल — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 रामदयाल कोष्टा — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 पूरनचन्द्र श्रीवास्तव — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 गोकर्णनाथ शुक्ल — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 गुरुचरण पाठक — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 शिवकुमार मलय शर्मा — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 श्रीमती मजु अवस्थी — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 कैलाश नारायण तिवारी — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 श्रीमती गीता चौधरी — जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 हरप्रसाद स्थापक — जबलपुर विश्वविद्यालय

डा0 आत्माराम त्रिपाठी	जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 श्रीधर मिश्र	बिहार विश्वविद्यालय
डा0 नागेन्द्र नाथ पाण्डेय	बिहार विश्वविद्यालय

डी0 लिट्

डा0 भोलानाथ तिवारी	जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 महावीरसरन जैन	जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 लक्ष्मीप्रसाद तिवारी	जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 त्रिलोचन पाण्डेय	जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 वल्यापानी अर्जुनन	जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 शारदा प्रसाद वर्मा	जबलपुर विश्वविद्यालय
डॉ0 सुरेश वर्मा	जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 भगत सिंह	जबलपुर विश्वविद्यालय
डा0 श्रीधर मिश्र	बिहार विश्वविद्यालय

भाषा शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान श्री डा0 उदयनारायण तिवारी

(लेखक—रामनारायण उपाध्याय)

अभी-अभी पिछले वर्ष तुलसी-जयन्ती के अवसर पर जब डा0 उदयनारायण तिवारी खण्डवा आये, तो मैं उनसे मिला था। पहले तो मन में बड़ा भय था कि भाषाशास्त्र का यह प्रकाण्ड विद्वान कहीं अपने विषय की तरह ही कठोर न हो, लेकिन जब उनसे मिला तो उनके सहज सरल स्वभाव से अत्यन्त ही प्रभावित हुआ। वे बड़ी आत्मीयता से मिले। दोपहर को घर आये। मेरे निमाड़ी पर किये गये कार्य के बारे में पूछते रहे और घण्टों घर-परिवार से लगाकर देश-विदेश की चर्चा करते रहे।

मैंने जब उनसे कहा, कि लोकसाहित्य की खोज, शोध व अध्ययन की दृष्टि से हाथरस में जिस अन्तरजनपदीय परिषद की स्थापना की गई थी, वह अपने ढंग का श्रेष्ठ कार्य था लेकिन वह कार्य भी आगे नहीं बढ़ सका तो बोले हम लोग प्रारंभ शूर तो हैं लेकिन किसी भी काम को अंत तक निभाना नहीं जानते। मैं विद्यालयों में देखता हूँ कि डिग्री तो सब चाहते हैं लेकिन काम करना कोई नहीं चाहता। मैं भाषाशास्त्र का अध्ययन करने के लिये पूरे एक वर्ष तक यूरोप में रहा हूँ वहाँ पर जैसा काम हो रहा है, वैसा अपने यहाँ कहीं भी देखने को नहीं मिलता है। प्रत्येक देश को अपने लोक साहित्य पर गर्व है। स्काटलैण्ड एक छोटा सा देश है, लेकिन यदि आप किसी स्काट को अंग्रेज कह दें, तो वह तुरन्त कहेगा, "नहीं नहीं मैं स्काट हूँ। मेरी अपनी भी भाषा है।

मैंने पूछा — आपके विदेश जाने का क्या उद्देश्य था? बोले —मैं भाषाशास्त्र का अध्ययन करने की दृष्टि से यूरोप गया था। मैं एक वर्ष तक अमेरिका में रहा, वहाँ से इंग्लैण्ड, जर्मनी और रूस भी गया था। समूचे यूरोप से, अमेरिका ही एक ऐसा देश है, जहाँ पाणिनी-प्रणाली पर नवीन भाषाशास्त्र का अध्ययन किया जा रहा है। वैसे तो हमारे देश में भी प्राचीन काल से संस्कृत व्याकरण का सूक्ष्म और शास्त्रीय अध्ययन हुआ था और भारत के प्राचीन वैयाकरण पाणिनी, पतंजली और कात्यायन ने भाषा संबंधी अनेक तत्वों का ऐसा अन्वेषण किया था जिससे आज के भाषाशास्त्री भी प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं तथापि वैज्ञानिक रूप से इस देश में भाषाशास्त्र का अध्ययन बीम्स, हार्नले ग्रियरसन, ट्रम्प, काल्डवेल, ब्लाख एवं टर्नर की कृतियों से ही प्रारंभ हुआ। इन्हीं की पद्धति का अनुकरण करते हुये रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर, सुनीति कुमार चटर्जी और तारपुरवाला आदि विद्वानों ने भारतीय आर्य भाषाओं एवं भाषाशास्त्र का गंभीर अध्ययन किया। आधुनिक युग में भाषाशास्त्र को प्रगति देने वालों में डा0 कत्रे का स्थान प्रमुख है। सन् 1953 में उन्हीं के प्रयास से भारत के कुछ चुने हुये भाषा शास्त्रियों एवं शिक्षाविशारदों की एक सभा पूना के डेक्कन कालेज में बुलाई गई थी जिसका सभापतित्व लंदन विश्वविद्यालय के प्राच्य एवं अफ्रिकी विभाग के अध्यक्ष डा0 सर राल्फ लिली टर्नर ने किया था और जिसका खर्च "रोकेफेलर फाउण्डेशन" ने उठाया था। उसने भारत की लिंग्विस्टिक सोसायटी को भी सहायता दी थी। इसी सहायता से सन् 54 से 59 तक पूना के डेक्कन कालेज तथा भारत के अन्य स्थानों में ग्रीष्म एवं शरदकालीन अध्ययन सत्र चलते रहे। इसी सिलसिले में सन् 1956 में मुझे भी डेक्कन कालेज पूना में हिन्दी भाषा के उद्भव एवं विकास पर व्याख्यान देने के लिये बुलाया गया था और मैंने उस अवसर का लाभ उठाकर डा0 फेयरबैंक्स एवं डा0 फर्ग्युसन की कक्षाओं में वर्णनात्मक भाषाशास्त्र का अध्ययन किया था। तब मुझे लगा कि इस प्रणाली में ऐसे अनेक नवीन तत्व हैं जिनको ग्रहण करना आवश्यक है, और तभी से मैं उस दिशा में प्रवृत्त हुआ और उसके बाद तो मैं रोकेफेलर फाउण्डेशन की तरफ से सन् 1959-60 में भाषाशास्त्र के अध्ययन एवं अनुसंधान के लिये अमेरिका भी गया था।

मैंने पूछा —इन दिनों आप क्या लिख रहे हैं? बोले "मैं नवीन पाणिनी-प्रणाली पर भाषाशास्त्र पर एक अध्ययनग्रंथ तैयार कर रहा हूँ, जिसमे भाषाशास्त्र का सर्वेक्षण एव व्याख्यात्मक भूमिका रहेगी (यह ग्रंथ अब प्रकाशित हो चुका है)। मेरे "भोजपुरी और उसका साहित्य" ग्रंथ का अनुवाद अंग्रेजी मे रायल एशियटिक सोसायटी द्वारा प्रकाशित हुआ है। मेरा दूसरा महत्वपूर्ण ग्रंथ "हिन्दी का उद्भव और विकास" है।

मैंने जब उनके गॉव के बारे मे पूछा, तो बोले मेरे गॉव का नाम "पीपरपाँती" है। वहाँ से नजदीक ही, ज्येती नामक गॉव के श्री परशुराम चतुर्वेदी है। उसके पास "ओझा बलिया" के डा0 हजारी प्रसाद है। वही "चिरैया कोट" के राहुल सास्कृत्यायन थे। ये सब गॉव पाँच मील के अदर है।

मैंने कहा — यह एक आश्चर्यजनक सयोग की बात है कि पाच मील के अंदर भारत के सर्वश्रेष्ठ 5 विद्वान हुये। बोले—सचमुच इसमे उस भूमि का ही प्रताप है। हमारे यहाँ सहज ही हर व्यक्ति 5 भाषाओं का ज्ञाता होता है। भोजपुरी हमारी मातृभाषा है। इसी से जन्म से आती है। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है, इसलिये सहज ग्राह्य है। अंग्रेजी हमारी स्कूली भाषा है, इसलिये उसे पढ़ना पड़ता है। संस्कृत हमारे खून मे से आई है, और बगला सस्कृत के नजदीक होने से सीख ही लेते हैं। इस तरह हमारे यहाँ का हर साहित्यिक सहज ही पाँच भाषाओं का पडित बन जाता है। इसी से भोजपुरी दो-दो प्रांतों के मन पर राज्य करती है। एक यू0 पी0 व दूसरे विहार। फिर हमारे यहाँ का कोई भी आदमी जब एक दूसरे से मिलता है, तो हिंदी या अंग्रेजी मे बात नहीं करता वरन भोजपुरी मे ही बोलता है। राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू और महापंडित राहुल सास्कृत्यायन भी जब मिलते थे तो भोजपुरी मे ही बात करते थे। इसी से हमे हमारी लोक भाषाओं पर गर्व है।

हमारे बाबू जी

डॉ0 रामकुमारी मिश्र

बाबू जी का जन्म बलिया जिले के सागरपाली गॉव के निकट पांडेपुर नामक ग्राम मे हुआ था जो उनका ननिहाल था। इनके जन्म के पूर्व अपनी अन्य सन्तानो की अकाल मृत्यु के भय से नानी सिमिरखा देई ने इस बार अपनी पुत्री लहेश्वरी को मायके मे ही रखकर शिशुजन्म की योजना बनाई। मृत्युभय से, लौकिक टोटका के अनुसार बालक को जन्म के बाद न तो घर का नया वस्त्र धारण करने दिया गया, न ही घर मे गुड़ तेल जैसी आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था की गई। अन्य घरो से मॉगी हुई वस्तुओ को ही बालक के लिए आशीर्वाद रूप में ग्रहण किया गया। तत्कालीन रीति के अनुसार बाबू जी की दाहिनी नाक भी छेद दी गई जिससे वे दीर्घायु बनें।

ज्यों ज्यो बाबू जी बढ़ने लगे, वे अपने पैतृक गॉव पीपरपॉती आने जाने लगे। उन्हे ननिहाल की तुलना में पैतृक स्थान अधिक प्रिय लगता। वे बताया करते थे कि ननिहाल मे रहते हुए अपने पितामह गति तिवारी और पितृव्य शिवपूजन तिवारी की बहुत याद आती थी अत वे अपनी माता लहेश्वरी देवी से बारबार यही कहते कि अपने घर चलो। वे चलने के लिए मचल जाते और लोटते लोटते दूर बगीचे तक चले जाते। तब नानी, मामा अथवा पडोस के लोग मनाने जाते और उनसे झूठे ही कहते—"यह देखो तुम्हारे बाबा का ही घर है।" पर बालक कहता, "नही, यह मेरा घर नही है—कहाँ है यहाँ ठाकुर जी वाला घर"? तब सभी लोग ठहाका लगाने लगते।

बाबू जी की माता लहेश्वरी धार्मिक प्रवृत्ति की थी। वे अपने मातृपक्ष के इष्टदेव गणेश जी को कभी नही भूली। उनका मायके जाने का अभिप्राय होता था गणेश जी की विशेष पूजा-अर्चना करना और मनौती पूरी करना। यह क्रम जीवन भर चलता रहा।

बड़े होने पर बाबू जी अपने पैतृक गृह पीपरपाँती मे आ गये। आरभ से कुशाग्र बुद्धि और विद्याव्यसनी होने के कारण उनकी नानी ने अपना खेत घरद्वार बाग-बगीचा अपने नाती के नाम कर दिया

बाबू जी को अपने घर मे सयुक्त परिवार का भरपूर स्नेह मिला। उनके पिता प० हनुमान तिवारी को केवल अक्षर ज्ञान था। वे खेती कराते और गाय-बैल की देखभाल करते थे। किन्तु थे बहुत ही सरल और उदार प्रवृत्ति के। कभी-कभी वे हलवाहे को मजदूरी के एवज मे इच्छानुसार अनाज बाँध लेने को कह देते। इस पर उन्हे अपने अग्रज की डाँट खानी पडती।

बाबू जी के पितृव्य शिवपूजन तिवारी संस्कृत के पंडित थे। उन्होने सत्सग से ज्ञान एव अनुभव प्राप्त किया था। वे अपने विवाहित पुत्र आदित्य और अपनी एकमात्र पुत्री दीपा को खो चुके थे इसलिए मानसिक रूप स क्षुब्ध रहते थे। अत उन्होंने अपने अनुज हनुमान तिवारी के पुत्र-पुत्रियो को अपना मानकर उनका लालन-पालन किया, उन्हे सुयोग्य बनाया। उन्होने सभी का विवाह करके अपने दायित्व का निर्वाह किया।

उन्होने अपने दरवाजे पर नीम का पेड लगा रखा था जहाँ देर रात तक गाँव के लोग एकत्र होकर बाते करते थे। उनके घर के पीछे चमारो की बस्ती थी। वे उन्हे सभी प्रकार की सुख-सुविधाए पहुचाते रहे। वे तान्त्रिक थे — शिव तथा शक्ति के उपासक अत निम्नवर्ग के सभी लोग उनके भक्त थे

घर पर बाबा शिवपूजन जी का कडा अनुशासन था। उन्हे घर को लडकियों का पड़ोस मे घूमना-फिरना नापसन्द था, अत प्राय· पड़ोस की लड़कियाँ ही उनके घर पर आती और सीना-पिरोना तथा अक्षर ज्ञान प्राप्त करती। घर का आँगन और पिछवाड़ा विस्तृत था अत पडोस की लड़कियो को घूमने-फिरने मे आनन्द आता।

चूँकि खेती केवल नाममात्र की थी और उससे इतने बडे परिवार का भरण-पोषण सम्भव नही था अत वे अर्थागम के लिए पुरोहिती और कथावाचन करते थे। उन्होने अपने मन में निश्चय कर रखा था कि वे अपने अनुज के पुत्रों को अवश्य ही मवन्सफ (मुन्सिफ) बनायेगे क्योंकि गाजीपुर कचहरी मे उन्हे वकीलो से काफी हुज्जत करनी पडती थी।

बाबू जी बाल्यकाल से अपनी प्रखर बुद्धि के लिए प्रसिद्ध हो चुके थे। वे दीयट पर तेल का दीपक जला कर पढ़ते थे। यह दीयट बहुत समय तक सुरक्षित था। गाँव वालों का कहना था कि बाबू जी रात में देर तक पढ़ते रहते थे अत· गाँव मे चोरो का आना-जाना बन्द था।

बाबू जी इलाहाबाद से प्राय गाँव जाते रहते थे। उनकी माता ही नहीं बल्कि घर की अन्य महिलाएँ उन्हे अत्यधिक प्यार करतीं। वे खाने-पीने का विशेष प्रबन्ध करती, जलपान के समय मिठाई या बताशा देती पर बाबू जी अपनी चारो बहनों के साथ उसे बाँट कर ही खाते। उन्होने अपनी बहनो के सुख-दुख का सदैव ध्यान रखा। उन्होने लडकियो और लडको मे कभी कोई भेदभाव नही बरता। वे गाँव की लडकियो से भी उतना ही स्नेह करते जितना कि अपनी लडकियो से। वे लडकियो की शिक्षा के पक्षधर थे।

बाबू जी दारागज स्कूल में अध्यापक थे। मेरी माँ हम सभी भाई बहनो को लेकर इलाहाबाद मे बाबू जी के पास आ गई थी। लक्ष्मीनारायण भइया दारागज म्युनिसिपल स्कूल में पढ़ते थे और वही बहन राजकिशोरी दारागज के मोती महल म्युनिसिपल स्कूल मे पढ़ती थी जो कक्षा छह तक था। इसी स्कूल मे मेरा भी नाम कक्षा ब में लिखाया गया। हम दोनों पैदल ही अलोपीबाग से दारागज प्रतिदिन पढ़ने जाया करती थीं। बाबू जी दारागज स्कूल जल्दी-जल्दी पैदल चल कर स्कूल में पढ़ाने जाते मै उनसे पहले घर से खाकर दारागज पढ़ने के लिए चल देती पर चाल धीमी होने के कारण अभी रेलवे पुल के समीप पहुँची होती कि देखती, पीछे से बाबू जी आ रहे हैं। वे पूछते तुम नगे पैर तो नहीं हो। कभी-कभी कुर्ते की जेब से एक पैसा मेरे हाथ में रखकर कहते, "कुछ खा लेना"। मै उसमे से 1/2 पाई की मटर तथा 1/2 पाई की 6 फुलकी खाकर तृप्त हो जाया करती थी। चप्पलों के बारे मे इसलिए पूछते क्योंकि अक्सर मैं खेलते-खेलते अपने चप्पल भूल जाती थी।

मैं अपनी दो छोटी जुड़वाँ बहनो के साथ गुडिया खेलती तो लोहे के तवे पर मिट्टी की रोटी मिट्टी का हलुवा बनाती। बाबू जी हमारे खेल को देखकर खुश होते। रात मे हम उनके पास

लेटत तो घुटनों पर लेकर खेलाते समय गाते—

ए पट मौं का बा?

माटी क हलुआ, बसिया रोटी, आम के पना।

और पूछते-पूछते गाना को बढ़ाते जाते, खूब हँसते और हँसाते। वे दिल खोलकर हँसते

मैं प्रायः रात म बाबू जी के पास सोती। जब कभी भदन्त आनन्द कौसल्यायन जी घर पर आते तो गर्मी मे घर की छत सीचने का काम हम दोनों भाई-बहन करते। रात में हम भी बाबू जी क इधर-उधर लटते। आनन्द जी कहते, "अब लाफिंग एक्सरसाइज शुरू हो, और दोनों खूब हँसते

बाबू जी प्रायः बच्चों से बातें करते खुश होते और अपने बचपन को याद करते-करते आत्मविभोर हो उठते। मेरी बड़ी पुत्री मीनू बचपन में अपने ननिहाल अलोपीबाग म रही। वह अपने नाना-नानी मामा, मौसी से इतनी घुल मिल गयी थी कि जब कभी बीच मे मेरे पास अशोक नगर आती तो भेट करके तुरन्त वापस चली जाती। एक बार रात मे रुक गई तो दूसरे दिन प्रातःकाल बाबू जी मेरे घर आये और कहा, "बेटी। मीनू को भेज दो, वहाँ सब लोग इसके बिना उदास है!"

जब भी मेरे बच्चे बाबू जी के यहाँ रात मे रुकते तो वे उन्हे पास लिटा कर कहानी सुनाते। कहानियाँ कई थी, जैसे कदली अमोलवा, सोन चिरइया, झझन बछेड़ा, बड़ा सियार, बढ़ई बढ़ई खूटाचीर, चिरई अउरु सियार, खसी अउरु हुडार, हथिया पर चढल भइया हितवा रे आदि। बाबू जी हँसोड रुचि के अनुसार बच्चों को हँसाने वाली कुछ प्रमुख कहानियाँ सुनाते जिनकी आवृत्ति का मुख्य कारण आनन्द लेना था। बाबू जी पूरे ताल, लय, सुर, आरोह-अवरोह के साथ सुनाते थे जिससे यथास्थान बल प्रयोग होने से सुनने मे खूब मजा आता था। जैसे "चिरई अउरी बढ़ई कहानी मे—

'एगो रहिल चिरई उ कतहूँ से एगो बूँट (चना) पवलसि। उ ओके दरे खातिर चकरी मे डललसि ओये से बूँट के एगो दालि त बाहरि आ गइल अउरु दोसर कि ओहि मे रहि गइल। चिरई परेसान होके बढ़ई के पास गइलि अउरु कहलसि—"बढ़ई बढ़ई, खूँटा चीर। खूँटा में मोरि दालि बा। का खाईं। का पीहीं। का ले परदेस के जाईं।" त बढ़इया कहलसि तोहारा एगो दालि खातिर हम खूटा चीरे जाईं? इहाँ से। फेरु चिरई राजा किहाँ गइलि, अउरि कहलसि—राजा राजा बढ़ई डाँडो। बढ़ई ना खूटा चीर। का खाईं। का पीहीं। का ले परदेस के जाईं। त राजा का चिरई पर दाया आ गइल अउरु उ चिरई से कहलनि, चल, हम चलतानी। जब बढ़ई सुनलसि कि राजा ओके डाँडे (दण्डित) आवतारे तउ डर का मारे कहे लागल —हम के डाँडो मारो जनि कोई, हम खूँटा चीरबि लाई

और क्रमशः कहानी आगे बढ़ती जाती और बच्चों की जिज्ञासा कहानी के अन्त म होता।

दूसरी प्रिय कहानी 'बड़ा सियार' की होती जिसमे बडा (पूँछकटा) सियार और गाय की दोस्ती का वर्णन होता—

'एगो बंडा सियार रहल। एकदिन ओके एगो गाइ मीललि। उ गाइ के घरे ले आइल अउर खूटा मे बान्हि दिहलसि अउरु बाहर से एगो टाटी लगा दिहलसि जेसे गाइ के केहू देखे ना पावे जब सियरा गाइ खातिर घासि लेके बाहर से आवे त गाइ से कहे — तुम सुरही गाइ, हम बंडा सियार। तुम कुटुर कुटुर, हम घुटुर घुटुर दूध पीते जायें। तब उ गाइ अपना मुँह से टाटि खोलि देइ अउर ओकरा आगे सियरा घासि डालि देइ आर गाइ कुटुर कुटुर घासि खाये लगे अउरु सियरा गाइ के दूध घुटुर घुटुर पिये लागे। रोज-रोज दूध पीयत-पीयत सियरा मोटा के धकुना हो गइल। त दोसर सियारन का अजरज भइल कि इ बंडा सियरवा कइसे मोटा के धकुना भइल बा। उ सभ बाडवा से पुछलनि कि आरे भाई! तु कइसे एतना मोटाइल बाड। बॉडा बड़ा होसियार रहल। उ कहलसि आरे हम रोज बन मे जाइले अउरु काँट कुस पर रउदीले आही से मोटाइल तानी। सियारो जगल जाइके काँट-कूस पर रऊद। उन्हनी का देहि से लोहू चुवे लागल। उ रो रो के सियरा के गरियावे लगलनि। ऊ सभ एका बाँधि के सियरा के चोरी के पता लगावे गइले अउरु देखले कि इ त रोज गाइ के दूध पी पी के मोटाइल बा। सब बढ़ई से एगो मुँगरी बनवलनि अउरु गाइ के टाटी का पाछ

लुकाइ गइलनि। जब सियरा अइलसि अउरु टाटी खोले खातिर गाइ से कहलसि तुम सुरही गाइ इम बड़ा सियार। तुम कुदुर कुदुर हम घुदुर घुदुर दूध पीते जाय। गाइ अपना मुँह से टाटी खोल क जब घास चरे लागलि अवरू बॉड़ा सियार गाइ का थन म मुँह लगा के दूध पीयेल लगलनि त सभ सियार मिलि के ओही मुगरी स बड़ा के मारे लगलनि अवरु मुआ के आपन बदला ले लिहलनि।

"चिरई अवरु सियार' कहानी सुनाने मे बाबू जी को बड़ा मजा आता था।

"एगो रह चिरई। उ एगो फेड का खोना मे अड़ा दिहलसि। एगो सियार रोज ओही फेड का नीचे आवे अउरु चाहे कि चिरई के बच्चा जइसे ओह अंडा मे से निकले हम ओकर आपन अहार बनाई। उ ललचा क राज ओही फेड के लग आवे अउरु चिरई से कहे–मोर मुह कइसन। अउरु चिरई कहे-इन्दर चन्द गाबिन्द जइसन अउरु देह मुरारि अइसन। सियरा खुसी का मारे चिरई के बाति सुनि के चलि जाइल करे। असल मे चिरई बड़ा हुसियार रहलि। उ आपन अडा से के बच्चा क निकरो के बाट जोहनि रहे कि कब बच्चा निकसे हम उन्हनी के ले के फुर से उड़ि जाई अवरु सियरा उन्हनि के खाये ना पावे। बाट जोहत जब एक दिन फेडा का नीचे ठाढ़ सियरवा चिरई से फेरु पुछलसि ---- मोर मुँह कइसन। तब चिरई खिसिया के कहलसि ---- तोर मुह सियारे क फोकला अइसन। अवरु ई कहि के चिरई आपन बच्चन समेत फुर्र से उड़ि गइल अवरु सियरा आपन मुह लेके रहि गइल।"

"हथिया पर के चढल भइया हितवा' कहानी बडी मार्मिक होती। बाबू जी बड़े मनोयोग स सुनाते।

'एगो रहलि चिरई। ऊ किसान के खेत से रोज रोज दाना चूग जाइ। एक दिन किसान अपना खेता मे जाल फइला दिहलनि अउरु चिरई ओही मे फॅसि गइली। अब का करसु। रोवे लगली। किसान खिसिया क बोल लागल — रहु-रहु अब ताहारा के घरे ले जाइबि। धोअबि। काटबि। छउकबि। अउरु खाइबि। चिरई घबरा के रोये लगली। किसान चिरई के जाल ले के घरे चललसि। राह मे राहगीर मिलले। चिरई आपन दुख कहि-कहि रोवे लगली। एगो राजा ओही राहता से हाथी पर चढि के जात रहले। चिरई रो रा के कहे लगली — हथिया पर के चढ़ल भइया हितवा रे। गंगा जमुन बीचे मोर खोतवा। रामा सुमिरि-सुमिरि रोवॅल होइहैं मोर बचवा। चिरई के रोवल सुनि के राजा किसान से कहलनि—ए भाई, तूं ई हाथी ले ल। बाकी चिरई के छोरि द। एकर बाचा रोवत होइहे। बाकी किसान कहे लगलनि — ना, ना। हम एक घरे ले जाइबि। धोइबि, काटबि। छॅउकबि अउरु खाइबि। किसान चिरई के जाल लिहले घरे जात जात घोडा पर चढ़ल सवार अउरु कई लोगन से चिरई के रोयल सुनले। बाकी केहू के बात ना मनले। घर अबही दूर रहल। उ थाकि के भूखल पियासल एगो इनार पर बइठि गइलनि। ऊँहा एगो आदिमी बइठि के सातू खात रहे। चिरई ओके देखि के रोवे लगली। सतुआ के खइनिहरवा भइया हितवा रे। गंगा जमुन बीचे मोर खोंतवा। रामा सुमिरि सुमिरि रोअत होइहें मोर बचवा।

चिरई के रोवल सुनि के ओह आदिमी का दाया आ गइल। उ किसान से कहलनि—ए भाई। चिरई बाड़ा रोअलिया। तूँ सतुआ ले ल। आपन भूख पियास मिटाव अउरु एके छोडि द। भूख पियास के मारल किसान पानी से हाथ पॉव धोके थकान मिटवले अवरु बइठि के सतुआ खाए लगलनि। चिरई के जाल खोलि दिहले अउरु चिरई ओमे से फुर्र से उड़ि गइली।"

एक और कहानी बाबू जी कहते। यह "खसी और हुडार" की थी। इसमे वे हुंडार (भेडिया) की चालाकी और ताकत को खसी (बकरी) जो हिम्मती थी, परास्त करती है।

एगो रहलि खसी। ऊ घासि अउरु पत्ता, चारा खा खा के मोटा गइली। एगो रहल हुडार। उ खसी का हिरिट पुहुट देखि-देखि के ओक खाए खातिर ललचाये लागल। उ सोचलसि कि एकरा से कउनो ज[illegible] से पहिले दो ती फ़ल गाह लें एके खा पाइबि एक [illegible] हुड़ार खसी का लगे जाके [illegible] लागल 'खसी खसी खसी कवन बन चरी कवन फल खाया जो एतना

खसी हुडार के चाल्हाकी जानि गइलसि कि ई हुडार हमके खाये खातिर हमके फुसलावे आइल बा। उ हिम्मत कइके ओहि जवाब दिहलसि-रहिले अरन बन खाइले मकोय, सात हुडार मोरि चरबन्हि होय। अउरू जब खसी के मुह से इ बात सुनलसि त भय का मारे कापे लगलसि अउरु उहा से चल्लसि पराइ।'

हमारे घर मे तोता या कुत्ता-बिल्ली, गाय थे। बाबू जी स्वय तोते को नहलाते, उसे दाना देते कुत्ता-बिल्ली को स्वयं खाना खाने के बाद खाना खिलाते। एक बार की बात है। एक बिल्ली और उसका एक बच्चा दोनो साथ-साथ रोटी लेने आये। दोनो के सामने उन्होने रोटी डाली। बिल्ली बड़ी थी, वह अपना हिस्सा जल्दी खा गई। मैंने कहा-बाबूजी! अब बिल्ली झपटकर बच्चे का हिस्सा ले लेगी। बाबू जी बोले — नही, देखना वह नही झपटेगी! मैंने पूछा क्यो? वे बोले—रोज ही देखता हू वे आपस मे लडाई नही करते।

वे तोते को जाडो मे रजाई ओढाते और गर्मी मे कूलर मे सुलाते। बाबू जी ने गाय भी पाल रखी थी। जाडे मे वे गाय या बछड़े को ठड से बचाने के लिए बोरा ओढ़ाते या आग सुलगाते।

बाबू जी को सादा भोजन प्रिय था। वे फल, सब्जी बडे चाव से खाते किन्तु आलू उन्हे विशेष प्रिय था। वृद्ध हो जाने पर भी पर्याप्त आलू खाते थे। उन्हे कभी डायबटीज की शिकायत नही हुई। जाडे के दिनो मे बथुआ विशेष प्रिय था। अरवी के भी व्यंजन बनवाते और खाते। जाडे में बाजरे की रोटी मे घी लगवाकर खाते। मक्का, जौ, गेहूँ का दलिया भी उन्हे अधिक प्रिय थे। वे दही या मट्ठा के साथ इन्हे खाने मे आनन्दित होते। सोते समय प्रतिदिन गरम दूध लेते किन्तु दही उन्हे अधिक प्रिय थी। चीनी की तुलना मे गुड़ को विशेष रूप से पसन्द करते। गर्मी मे सोकर उठने के बाद गुड़ खाकर ठंडा पानी पीते। प्राय: जाडो मे गुड और अदरक की चाय (नही तो गुरुकुल की चाय) पीते। रात मे भूलकर भी चावल न खाते। गर्मी मे आम और जाडे मे अमरूद खाते। उन्हे भोजन मे पूरन पूरी तथा कटहल की सब्जी, पकवानों में पुआ और रोट, कढ़ी मे फुलौरा या सूखा फुलौरा, बैंगन का भाजा, आलू के पराठे के साथ टमाटर का सूप, मटर की कचौडी, रायता भी बहुत प्रिय था। गर्मियों मे वे सत्तू खाते। कभी-कभी फुटेहरी और मकुनी भी बनवाते।

बाबू जी मे अपनी चीजों को सँभालकर रखने की आदत शुरू से ही थी। उनके पास छठे दर्जे और आठवे दर्जे की पुस्तक सुरक्षित थी। उनका परकाल (सेट स्क्वायर्स) वृद्धावस्था तक वैसे ही रखा था। किन्तु वे रुपया पैसा रखने मे लापरवाह थे। हमारी अम्मा ही रुपये-पैसा रखती और समय-समय पर निकालकर उन्हे देती। बाबू जी लिखने-पढ़ने, सभाओ मे जाने मे व्यस्त रहते और अम्मा घर का पूरा कार्यभार सँभालती।

यद्यपि वे अपने मुहल्लेवालों को बहुत कम जानते थे किन्तु यदि कोई सहायता माँगने आता तो उसकी मदद अवश्य करते। वे माघ मेला के अवसर पर बलिया से आने वालो के लिए रहने का प्रबन्ध करते और उनसे गाँव के हाल चाल पूछते रहते। वे अतिथियो का भरसक सत्कार करते। राहुल जी, नागार्जुन जी, निराला जी, सबों की आवभगत करते रहे।

बाबू जी ने अपनी मातृभाषा भोजपुरी और अपनी मातृभूमि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी दोनो ही के लिए आजीवन यथाशक्ति कार्य किया– लेख लिखे, पुस्तकें लिखीं, व्याख्यान दिये। उन्हे हिन्दी जगत मे काफी सम्मान भी मिला किन्तु भाषा विज्ञान के क्षेत्र मे उनके कार्य को उनकी मृत्यु के बाद एक तरह से भुला दिया गया। उनके शती वर्ष पर मैं उनका स्मरण करके अत्यधिक भावविभोर हूँ।

❑ ❑ ❑

अभिनन्दन पत्र

परमादरणीय डा0 उदयनारायण तिवारी

मान्यवरेषु,

आज वसन्त की इस सध्या मे हम प्रयाग के लोग आपकी उस सुदीर्घ साहित्य-साधना का स्मरण करते हुए, जिसके लिए उत्तर-प्रदेश हिन्दी संस्थान ने आपको अपने विशेष मानद पुरस्कार से पुरस्कृत किया है, हर्षातिरेक से गद्-गद है और आपका हार्दिक सम्मान तथा अभिनन्दन करते है। हमारा यह निश्चित विश्वास है कि उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान ने आपका सम्मानित करके स्वय को भी गौरवान्वित किया है।

ऋषि परंपरा के जीवंत प्रतीक।

प्रयाग की ऋषि परंपरा से हम सब परिचित हैं और किसी न किसी रूप में आज भी हम उससे प्रेरणा लेते रहते है। आप उस ऋषि परपरा के साक्षात रूप है जिनकी साहित्य-साधना ऋषि भारद्वाज की तप-साधना की भाँति ही दूर-दूर तक विख्यात हुई है और स्थान-स्थान पर अपनी कीर्ति पताका फहराती रही है।

भाषा के पण्डित-आचार्य!

आप आचार्य होने के साथ ही साथ भाषा के पण्डित भी हैं और पिछले चालीस वर्षों से बराबर हिन्दी भाषा तथा उसकी विभिन्न बोलियो के अध्ययन मे लगे हुए है जिसका एक मूर्त्त एव ठोस रूप "हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास" तथा "भोजपुरी भाषा और साहित्य" जैसे भाषा विज्ञान के अनेक दुर्लभ ग्रथों मे दखने को मिलता है। अपने इन ग्रंथो में आपने हिन्दी तथा भोजपुरी का न केवल मौखिक विवेचन प्रस्तुत किया है, बल्कि भाषा-विज्ञान के सम्बन्ध में भारतीय दृष्टिकोण का भी उदघाटन किया है।

सजग पाठक और आलोचक।

आप यद्यपि प्रमुख रूप से भाषाशास्त्री है; किंतु साहित्य के अध्ययन विश्लेषण में भी आपकी गहरी दिलचस्पी है। समय-समय पर हिन्दी के अनेक ग्रंथो, तथा ग्रंथकारो के सम्बन्ध म अपनी बेबाक टिप्पणियाँ लिखकर आपने आलोचना के क्षेत्र को महत्वपूर्ण रूप से समृद्ध बनाया है तथा उसे एक विशिष्ट दिशा दी है।

शिष्यवत्सल गुरु।

आप अपन शिष्यो के प्रति कितने वत्सल हैं इसे आपका शिष्य ही जानता है। आज के विषम माहौल के जीवन में ऐसे गुरु बहुत कम ही मिलते हैं जो अपने शिष्यों को इतनी आत्मीयता और [illegible] के लेकिन आप प्रया[illegible] लेकर जबलपुर विश्व[illegible] तक के अपने लम्बे कार्य काल

में अपनी जो समृद्ध शिष्य परपरा संस्थापित की है वह इसी बात का प्रमाण है कि आप अपने शिष्यो को पुत्रवत् मानते है और हर तरह से उनकी मदद के लिए प्रस्तुत रहते हैं। यही कारण है कि आप की शिष्य परपरा न केवल उपर्युक्त विश्वविद्यालयो मे ही सीमित है बल्कि देश-विदेश के अन्य विश्वविद्यालयो तक भी विस्तृत है।

सरस्वती के वरद पुत्र!

अत मे आप जैसे ऋषि तुल्य, प्रकाण्ड भाषाविद्, राष्ट्रीय एव अतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान आचार्य और प्रोफेसर के सम्मुख हम पुन: पुन: श्रद्धावनत है और आपके सुखद सपर्क से अपने को भी सम्मानित अनुभव करते हुए आपके स्वस्थ दीर्घ जीवन की ईश्वर से कामना करते है।

प्रस्तुतकर्त्ता

प्रयाग के साहित्यिक बन्धु एव आपके शिष्य

प्रयाग मार्च एक, इक्यासी

सुप्रसिद्ध भाषाविद्

डा० उदयनारायण तिवारी

(व्यक्तित्व और कृतित्व)

डा० शिवगोपाल मिश्र